ग्रंथ रहस्य

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र

ॐ

गुरवे नमः

ॐ गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः ।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः ।।
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः ।

जय माँ रिद्धि–सिद्धि आपको स्वामी सहित कोटी कोटी बार नमन्

जय माँ शारदे

श्री बटुकाय नमः

ॐ दुर्गायै नमः
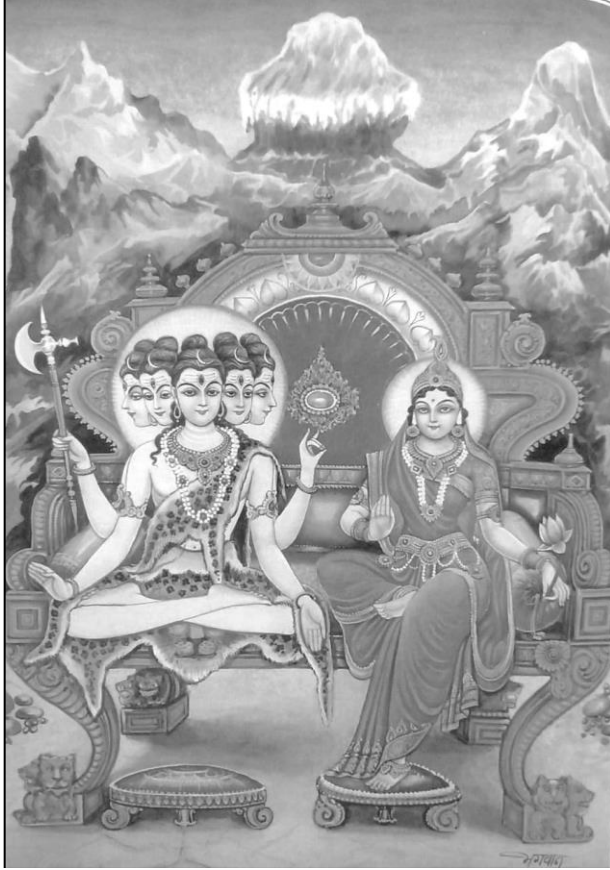
ह्रीं
श्रीसदाशिवाय नमः
ओं नमो नीलकण्ठाय

वैशाख कृष्ण पक्ष त्रयोदशी
अनंत विभूषित श्री महंत स्वामी
श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज,अयोध्या

भगत्कृपा से ही जीव की सद्धर्म एवं सत्कर्म में प्रवृत्ति होती है। समय का सदुपयोग होना ही चाहिए। अन्न का एक कण एवं समय का एक क्षण बर्बाद नहीं होना चाहिए। भगत्स्मरण एवं चिन्तन में समय व्यतीत हो, ये अच्छी बात है।

"ग्रन्थ रहस्य" एक दिव्य कल्पवृक्ष नामक चिंतामणि (पंचपदीमंत्रमय ग्रंथ) अनमोल समय के सदुपयोग का ही प्रसाद है, इसमें विभिन्न पुराणों, वेदों एवं अन्य अधिकांश सद्ग्रन्थों का संग्रह किया गया है। अच्छा है, जिज्ञासुओं के लिए एक जगह पर ही बहुत सी कल्याणमयी एवं रहस्यममयी गूढ़ बातें पढ़ने को मिल जायेंगी। अक्षयरुद्रजी और उनके सहयोगी भगवन्त दयाल बड़ोनिया जी को धन्यवाद।

इस पावन ग्रन्थ के लिए शुभाशीष!

श्री श्री 1008 परम पूज्य स्वामी
श्री नृत्य गोपाल दास जी महाराज
(संत शिरोमणी वैष्णव कुल भूषण
श्रीराम जन्मभूमि न्यास अयोध्या एवं
श्रीकृष्ण जन्मभूमि न्यास मथुरा अध्यक्ष)

शुभकामनाएँ

वर्तमान में हम मूल्यों से दूर अध्यात्म से विमुख होते जा रहे है। सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने की आकांक्षा तथा भौतिक सुख–समृद्धि पाने का लालसा में जीवन अत्यधिक व्यस्त हो रहा है, फल प्राप्ति की असुविधा व असफलता से मन में संत्रास, घुटन एवं कुण्ठा उत्पन्न होने लगी है; इन सब मानसिक और दैहिक कष्टों से मुक्ति का रास्ता एवं उसका निदान अध्यात्म प्रशस्त करता है और यह अध्यात्म ''ग्रन्थ रहस्य एक दिव्य कल्पवृक्ष'' में प्रत्यक्ष एवं शाश्वत रूप से अवलोकित होता है। पुस्तक में संकटों, कर्ज, दरिद्रता, बीमारियों एवं बाधाओं को दूर करने के विभिन्न मन्त्र, स्तोत्र, अनुष्ठानपूर्वक उपाय तथा आध्यात्मिक चिन्तन का दिव्यतर विवरण दिया गया है। अद्वैत ज्ञाननिष्ठ गुरु, विभिन्न धार्मिक पर्वों एवं तीर्थ–स्थलों के माहात्म्य को भी वर्णित करने के साथ–साथ मानव मन की जिज्ञासाओं को शांत करने का अतुलनीय प्रयास इंजीनियर अक्षयरुद्र जी ने ''ग्रन्थ रहस्य'' एक दिव्य कल्प वृक्ष में किया है। आशा है कि लेखक की **'अक्षय आनन्द' एक अद्वितीय कृति** की भांति यह पुस्तक भी पाठकगणों के हृदय–अंतःकरण एवं बुद्धि में प्रवेश कर चित्त को विश्रांति प्रदान करेगी।

''ग्रन्थ'' के सार्थक प्रकाशन के लिये लेखक अंशभूत शिव को बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।

डॉ. पद्मा शर्मा

सहायक प्राध्यापक,

शास. स्नातक महाविद्यालय, शिवपुरी मध्यप्रदेश

राह देख रहा हूँ

कल्याण हेतु, हे तत्त्वेश!
सेतु रामेश! बना रहा हूँ।
करने रावणत्व का क्षरण,
ग्रन्थ रहस्य रच रहा हूँ।
रक्षा करो हे गौरीश!
हरण–सीता रोकने हेतु,
दिव्य अवतरण कर रहा हूँ।
मनोहर सुरभि सर्वव्याप्त हेतु,
बस राह देख रहा हूँ।
हर स्वरूप से निश्चित मैं ही,
कर्मफल भोग रहा हूँ।
काश हो जाऊँ शिव सा शुद्ध,
करते हुए नित्य विनति,
ग्रन्थ रस चख रहा हूँ।
जपते हुए पंचाक्षर, पंचपदी,
गोपीजनवल्लभचरणान् शरणं प्रपद्ये
हे सर्वेश! प्रिय राधेश!
राह देख रहा हूँ ।

जानकर ऊँ सर्वमय,
सर्वमय होकर मैं ही,
अद्वैत तत्त्व में रम रहा हूँ।
भेद बुद्धि त्यागकर,
एकत्व सुख पा रहा हूँ।
शिवत्व रहे सतत् इस हेतु,
तत्त्वचिंतन कर रहा हूँ।
हे भूतेश, प्रिय नागेश!
अब तो बस,
राह देख रहा हूँ।

प्रभु अभी तक आये क्यों नहीं?
हे नाथ! आज भी राह देख रहा हूँ।

हे ऊँ कार! अद्वैत भुवनेश!
हे चिदानंदस्वरूप! हे शिवमाधव!
मात्र प्रीत्यर्थे आपके ही,
कर संकलित,
ग्रंथ रहस्य लिख रहा हूँ।
यह कार्य आपका ही,
बस मैं तो,
कलम चला रहा हूँ।
बस
राह देख रहा हूँ।
राह देख रहा हूँ।
राह देख रहा हूँ **—अंशभूत शिव 11.09.2024**

अनुक्रमणिका

(23) समूचे कुल का उद्धार :	
(24) किस वार में क्या करें? :	
(25) महाकाल के दर्शन मात्र से अकाल मृत्यु से मुक्ति :	
(26) मात्र 6 माह में इच्छा पूर्ण :	
(27) भक्तों के दर्शन एवं स्पर्श मात्र से तत्क्षण ही पवित्रता :	
(28) श्री राम सारूप्य मुक्ति का सरलतम उपाय :	
(29) माधुर्य पूर्ण जीवन के लिए महान मधुरम् मंत्र :	
(30) रां रामाय नमः से मनचाही कामना सिद्ध : कवि सम्राट रोग नष्ट खोयी हुई प्रभुता पुनः प्राप्ति विद्यानिधि **श्री राम सा पुत्र पाने हेतु** संपूर्ण पापों से मुक्ति हेतु	
(31) हरि मंत्र (ऊँ नमो नारायणाय) क्रमशः जाप की दिव्य महिमा : मंत्र शुद्धि स्वर्ग लोक ''सूर्यलोक से ध्रुवलोक तक'' हरि समीप गमन निर्मल ज्ञान हरिमय स्थिर बुद्धि श्रीहरि सारूप्य पद परम शांति एवं परम पद	
(32) परम पद के लिए ऊँ नमः शिवाय 'महा औषधि' :	
(33) काल, नाग, भूत–प्रेत एवं पतन का प्रमुख कारण काम भाव को	
नष्ट करने हेतु सरल उपाय :	
(34) दिन–रात की निष्पापता का उपाय :	
(35) मात्र नित्य 1 अध्याय से रूद्रलोक, गीता माहात्म्य एवं कामनापूर्ति हेतु संयमपूर्वक गीता जी की अनुष्ठान विधि :	
(36) ज्ञान एवं ज्ञानी की महिमा एवं परम फल :	
(37) तुलसी पत्र महिमा :	
(38) बदरी नाथ परम प्रसाद की महिमा :	
(39) बहन को दिए दान का महान फल :	
(40) अतिथि की सेवा से महान फल :	

(1.1) पराशक्ति की महानतम महिमा :

पराम्बा ही आदिशक्ति है उनसे श्रेष्ठ कोई नही। केवल उनके स्वरूप ही उनके समान हैं। एक भगवती भुवनेश्वरी (जगदम्बा) ही ऐसी हैं जिन पर किसी का शासन लागू नहीं होता। वही ब्रह्मा, विष्णु एवं महारूद्र की एक मात्र जननी है, सदाशिव जी की प्रिय भार्या एवं एक मात्र उनकी लीला सहचरी हैं। साक्षात् उन्हीं की स्वरूपभूता पार्वती, राधा, लक्ष्मी, शारदा तथा गायत्री नामक पंचक प्रकृति है। समस्त दैत्यों, असुरों का संहार कर हमारी रक्षा में हरपल तत्पर रहने वाली माँ एकमात्र भुवनेश्वरी जी ही हैं। उनकी प्रसन्नता का दिव्य बीजमंत्र ह्रीं है। जो समस्त बीजमंत्रों का स्वामी है, परंतु जगदम्बामय इन पंचक प्रकृति में से किसी भी एक स्वरूप की पूजा से भी माँ की आज्ञा एवं अद्वैत तत्त्व के कारण संपूर्ण फल पाया जा सकता है।

मूल प्रकृति केवल एकमात्र भगवती जगदम्बा ही है। उनके सकाश से जगत् की उत्पत्ति के समय दो महाशक्तियाँ प्रकट हुई। एक प्रकृति श्रीराधा जो श्रीकृष्ण के प्राणों की अधिष्ठात्री देवी है और दूसरी प्रकृति महाशक्ति श्रीदुर्गा जो श्रीकृष्ण की बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी है। परम माँ की स्वरूपा इन दोनों के स्मरण से कुछ भी शेष नहीं रहता और शीघ्र ही भोग्य पदार्थ, अनासक्ति तथा मुक्तावस्था प्राप्त हो जाती है।

मेरी प्रकृति मेरी माता

मेरी प्रकृति मेरी माता,
जिसमें है ब्रह्माण्ड समाता।
आपसे बड़ा नहीं है कोई,
जो बनाती किस्मत सोई।
मेरी प्रकृति मेरी माता,
जिसमें है ब्रह्माण्ड समाता।

सबसे पुराना तुमसे नाता,
तुम ही मेरी भाग्य विधाता।
हे माँ तुम! प्रकृति पंचक,
वात्सल्य मूर्ति अद्वैत दाता।
मेरी प्रकृति मेरी माता,
जिसमें है ब्रह्माण्ड समाता।

जब भी तेरे दरबार में जाता,
उर आनन्द सर्वमय समाता।
आदि देवी तुम हो शक्ति,
पावन करती देकर भक्ति।
मेरी प्रकृति मेरी माता,
जिसमें है ब्रह्माण्ड समाता।

करती मेरी सदा रखवाली,
जैसे उपवन रखता माली।
जब नवदुर्गा महा पर्व आता,
जीवन में उमंग जगाता।
मेरी प्रकृति मेरी माता,
जिसमें है ब्रह्माण्ड समाता।

अतः पंचक प्रकृति एवं इनकी स्वामिनी श्रीभुवनेश्वरी जी का सदैव ध्यान करते रहें। श्रीमद्देवीभागवत् के 11वें स्कन्ध में देवी की महान पूजन के फलों का वर्णन किया गया है, जिसको करके कोई भी अपना महाकल्याण कर सकता है।

1. **श्री जगदम्बा को जो आम या ईख के रस से वेदपाठ के द्वारा स्नान कराता है उनके घर से लक्ष्मी और सरस्वती कभी नहीं जाती।**
2. श्री जगदम्बा को जो दूध युक्त कलश से वेदपाठ के द्वारा स्नान कराता है, वह 14 इन्द्रों की मृत्यु तक अर्थात् 1 कल्प तक क्षीर सागर में निवास करता है।
3. दही से स्नान कराने वाला पुरूष दधि–कुण्ड का अधिपति होता है।
4. भगवती को मात्र दो रेशमी वस्त्र अर्पित करने पर वायुलोक प्राप्त हो जाता है।
5. भगवती को मात्र केसर, कस्तूरी की बिन्दी, सिन्दूर, एवं चरणों के लिए महावर अर्पित करने मात्र से देवताओं का स्वामित्व प्राप्त करके इन्द्रासन प्राप्त होता है।
6. भगवती को मात्र मनोहर पुष्प अर्पित करने पर कैलास लोक प्राप्त हो जाता है।
7. श्री जगदम्बा को जो चन्दन से बिल्वपत्र के तीनो पत्तों पर **ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः** लिखकर अर्पित करता है वह सदा सुखी रहता है तथा वह ब्रह्माण्ड का स्वामी होता है। उस पर कोई भी संकट नहीं आता और जगतवासी उसको आश्चर्य के साथ देखते है कि ऐसा क्या है उसके पास जो उसकी सदा रक्षा होती है।
8. ब्रह्मामय प्रजापति पद के लिए 1 करोड़ कुंद पुष्पों से पूजन अनिवार्य है।
9. **साक्षात् ब्रह्मापद (जो साक्षात् हरि के तुल्य समझे जाते हैं जिनकी पत्नि सावित्री है।) के लिए कोटि मल्लिका अर्थात् बेला और मालती अर्थात् चमेली से माँ भुवनेश्वरी जी की पूजा अनिवार्य है।**

10. **साक्षात् विष्णु पद के लिए 10 करोड़ मल्लिका और मालती से माँ भुवनेश्वरी जी की पूजा अथवा शिवपुराणानुसार 2 करोड नमः शिवाय मन्त्र का जाप अनिवार्य है।** यह देव दुर्लभ पद का ज्ञान देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। श्री नारायण जी ने कहा है कि साक्षात् भगवान विष्णु जी भी इसी पूजा के कारण श्री हरि पद को प्राप्त कर चुके हैं।
11. साक्षात् सूक्ष्म ब्रह्म अर्थात् सूत्रात्मा पद के लिए एक अरब मल्लिका और मालती से माँ भुवनेश्वरी जी की पूजा अनिवार्य है, इससे निश्चित है कि सूक्ष्म ब्रह्म पर श्रीहरि एवं ब्रह्मा की तुलना में माँ भुवनेश्वरी की विशेष कृपा होती है; क्योंकि जो जितना माँ का सान्निध्य प्राप्त करता है उतना ही कृपा एवं दया का पात्र होता है।
12. गुग्गुल, चंदन, कृष्ण अगुरु और घृत से युक्त धूप महादेवी को अर्पित करने से माँ हमें तीनों लोकों का स्वामी बना देती है।
13. श्री जगदम्बा की 1 प्रदक्षिणा मात्र से चक्रवाक पक्षी भी 28 इन्द्रों/28 मनुओं की आयु पर्यंत स्वर्ग का भोग प्राप्त कर लेते हैं। फिर इन्सान की तो बात ही निराली है।

श्रीमद्देवी भागवत् के 1 या 1/2 श्लोक के नित्य जाप की भी महान महिमा है। मात्र एक या आधे श्लोक के नित्य पाठ से भी माँ कृपा दृष्टि बनाये रखती है।

नमः प्रणवरूपायै नमो ह्रीं कार मूर्तये।
नानामन्त्रात्मिकायै ते करूणायै नमो नमः।।

और भी विस्तार चाहिए तो तीनों देवों की माँ जगत् जननी भुवनेश्वरी का शब्द विग्रह श्रीमद्देवी भागवत के ग्यारवें स्कन्ध के 17,18 अध्याय का पाठ या श्रवण अवश्य करें।

माँ जगदम्बा के मात्र 32 नामों में भी अनन्त शक्ति समाहित है। कोई यदि भयंकर संकट में फस जाये (राजा वध की आज्ञा दे दे, वन में हिंसक जानवरों द्वारा घेर लिया जाये, अचानक नाव डूबने लगे, कोर्ट कचहरी में फसता नजर आए, भयंकर गरीबी आ जाए, कर्ज हो जाए या कोई मार्ग नहीं दिखाई दे रहा हो, परिवार में भयंकर संकट उत्पन्न हो गया हो, किं बहुना कैसी भी स्थिति हो.....) तो इन 32 नामों के स्मरण (1000, 10,000 या सवा लाख अनुष्ठान) मात्र से संकट से मुक्त हो जाता है। दीपावली की रात्रि को 108 बार, इन 32 नामों की माला को जपने से विशेष अनुकंपा प्राप्त होती है एवं नवदुर्गा में भी की गई शेरावाली साधना से शीघ्र ही भौतिक एवं धार्मिक दोनों क्षेत्र में महान प्रगति होती है। जन्म–जन्मान्तरों से संचित एवं वर्तमान के भयंकर से भयंकर पाप तो बिना अनुष्ठान के भी मात्र नाम स्मरण से ही भस्म हो जाते हैं। इन नामों के नित्य कम से कम एक बार श्रवण मात्र से माँ भुवनेश्वरी साधक के लिए दिव्य रक्षा कवच प्रदान करती है, यदि इन नामों के

साथ नित्य तीनों संध्या के समय दुर्गा कवच का पाठ किया जाए तो त्रिलोक में उसका कोई भी कुछ भी अनिष्ट नहीं कर सकता।

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।।

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता।।

दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी।।

दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।

8 अष्टवसु, 12 आदित्य, 66 कोटि स्कन्द, 11 करोड़ रूद्र, विद्येश्वर, 7 करोड़ मंत्र (पदधारी), ब्रह्मा, विष्णु, महारूद्र (6 गुणों से युक्त अर्थात् भगवान), महेश (महान ईश्वर) आदि सभी इन्हीं पराशक्ति से शक्तिमान हैं, इनकी उपासना करने वाला पृथ्वी पर शतायु के बाद देहान्त उपरान्त मणिद्वीप धाम में रहते हुए करोड़ों ब्रह्माओं के शरीर को नष्ट होता हुआ स्पष्ट देख सकता है।

इनकी कृपा से साधक साक्षात् हरि और महारूद्र देव का स्वरूप होकर पृथ्वी पर एवं सर्व लोकों में पूजित होता है। अतः परम हित चाहने वाले सदा आदिशक्ति या अन्य स्वरूपा शक्ति (मोक्षदायिनी माँ षोडशी अर्थात् श्रीललिता, श्रीराधा, माँ ब्रह्मचारिणी अर्थात् पार्वती या शैलपुत्री जिन्हें स्कन्दमाता या महागौरी भी कहते है, माँ लक्ष्मी अर्थात् श्रीकमला, माँ शारदा, माँ गायत्री, सुरभि, मनसा, स्वाहा, षष्ठी, पृथ्वी, तुलसी, स्वधा, संतोषी, महाकाली चंद्रघण्टा, कूष्माण्डा, कात्यायनी, कालरात्री, काली, तारा, छिन्नमस्ता, त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, गंगा, वैष्णोदेवी, सीता, रूक्मणी, ऋद्धि–सिद्धि, शाकम्भरी, शताक्षी, भ्रामरी, रक्तदंतिका, हैमवती, मंगलचण्डी, देवसेना, सिद्धिदात्री या अन्य स्वरूप) की शरण में रहें। स्मरण रहे महान पुण्य भी मोक्ष में बाधक होते है अतः महानादि कार्य करके संपूर्ण कर्मफल भगवती को अर्पित करते चलें इसी में परम हित है।

पद्म पुराण स्वर्ग खण्ड एवं अन्य पुराणों में बताया है कि ''परमेश्वर या पराशक्ति'' ब्रह्मज्ञानी (अद्वैत ज्ञानी), सद्‌गुरु, भक्त, नित्य गीता–पाठ कर्ता, शिवयोगी, अनन्य द्वैतवादी भक्त या योग्य ब्राह्मण अथवा पतिव्रता स्त्री के शरीर में अपनी पूर्ण कलाओं एवं सर्वशक्तियों के साथ निवास करते हैं, परंतु यदि इनकी प्राप्ति न हो पाए तो ही केवल सांसारिक मूर्तियों में इष्ट की कल्पना करके पूजा, सेवा की जाना चाहिए अन्यथा उपासक अल्प फल का भागी होता है।

मात्र एक ब्रह्मज्ञानी (अद्वैत ज्ञानी) को भिक्षा देने से ही संपूर्ण जन्मों के पाप तत्क्षण भस्मीभूत हो जाते है तथा सभी प्रकार के दानों, व्रतों, यज्ञों एवं पृथ्वी भर के सभी तीर्थों के फल प्राप्त हो जाते हैं। ब्रह्मज्ञानी को दिया दान ही विमल अर्थात् सर्वोपरि दान कहा जाता है। एवं साक्षात् माँ की आज्ञा से इन अद्वैत ज्ञाननिष्ठ की पूजा, अल्प गेंहु के मात्र एक दाने भर से ही से समस्त दानों, व्रतों, यज्ञों एवं पृथ्वी भर के सभी तीर्थों के फल की तुलना में कोटि –कोटि गुना फल प्राप्त हो जाता है। **देवी के और भी अनेकों रहस्यों को जानने के लिए आप हम सबके 18वें ग्रंथ देवी रहस्य का अवलोकन करें।**

(1.2) कर माला और गायत्री–

कर माला और गायत्री कृपा –

प्रातःकालके जपके समय दोनों हाथोंको उत्तान, सायंकालमें औंधे और मध्याह्नकालमें हृदयके पास करके जप करना चाहिये। अनामिका अंगुलीके दूसरे पोरवे अर्थात् मध्यसे आरम्भ करके कनिष्ठिकाके आदि–क्रमसे तर्जनीके मूलपर्यन्त 'करमाला' कही गयी है। मात्र एक पुरश्चरण के बाद किसी भी शक्तिपीठ पर केवल हजार गायत्रीका जप करनेसे महापापी ब्राह्मण भी पवित्र हो जाता है मन, वाणी और इन्द्रियोंके संयोगसे उत्पन्न हुआ एक दिन का पाप एक हजार गायत्रीका जप करनेसे नष्ट हो जाता है। परंतु गायत्री मेरे पास है इस संबल पर पाप करना भी अपराध है। अनजाने या भूल से हुए पाप हेतु ही ईश्वर रक्षा करते हैं जानबूझकर पाप का मार्जन संभव नहीं। एक और चारों वेदोंका अध्ययन और उनकी पुनः–पुनः आवृत्ति एवं दूसरी ओर गायत्रीका जप रखकर तुलना करनेपर गायत्रीका जप ही उत्तम सिद्ध होता है।

(2.1) चौबीस व 28 नामों का अद्वितीय माहात्म्य–

पहले 24 नाम श्रवण करें– ये 24 नाम भगवान श्रीकृष्ण के हैं। नित्य प्रातःकाल जो भी इन नामों का स्मरण करता है वह सर्वथा सुखी और विजयी होता है । भगवान धर्म देव ने कहा है कि – इन नामों के जप से निश्चित ही मृत्यु के समय श्रीहरि प्रभु का स्मरण हो जाता है

जिससे गोलोक निश्चित ही मिलता है इन नामों का नित्य जप करने पर उस भक्त का कभी भी अधर्म में मन नहीं लगता ।

जो इन नामों का प्रातःकाल स्मरण करेगा उसे देखते ही सारे पाप, संपूर्ण भय तथा संपूर्ण दुख उसी तरह भय से भाग जायेंगे जैसे गरुड पर दृष्टि पड़ते ही सर्प पलायन कर जाता है। यह मेरा वरदान है।जो कभी मिथ्या नहीं होगा। यह नाम पुकार कर भगवान धर्म देव प्रभु श्रीकृष्ण के चरणों में नतमस्तक हो गए।

श्री कृष्ण
श्री विष्णु
श्री वासुदेव
श्री परमात्मा
श्री ईश्वर
श्री गोविन्द
श्री परमानन्द
श्री एक
श्री अक्षर
श्री अच्युत
श्री गोपेश्वर
श्री गोपीश्वर
श्री गोप
श्री गोरक्षक
श्री विभु
श्री गौओं के स्वामी
श्री गोष्ठ निवासी
श्री गोवत्स पुच्छधारी
श्री गोपों और गोपियों के मध्य विराजमान
श्रीप्रधान
श्रीपुरुषोत्तम
श्रीनवघनश्याम
श्रीरासवास
और
श्रीमनोहर

ब्रह्म वैवर्त पुराण ब्रह्म खण्ड अध्याय 3 में प्रमाण देखें कि इन नामों को भगवान धर्म देव ने किस प्रसंग में वर दिया या इनकी फलश्रुति क्या है जो हम बता चुके। अतः गोलोक की

कामना वाले भक्तों को श्री राधा या श्रीयुगल की प्रसन्नता के लिए प्रत्येक दिन प्रातःकाल किसी भी अवस्था में ये नाम जपना ही चाहिए और स्नान के बाद शुद्धि के बाद भी एक बार जपें तो महासुख होगा।

एक हजार कन्यादान एवं एक करोड़ गो दान का पुण्य : (श्रीविष्णोरष्टाविंशति नाम स्तोत्रम्)

1. श्रीहरि के इन 28 नामों का तीनों काल जप करने से जपकर्ता 100 अश्वमेध यज्ञों,
2. एक हजार कन्यादान
3. एवं एक करोड़ गो दानों का पुण्य फल
4. तथा पूर्ण निष्पापता पाकर महाकल्याण का भागी होता है। इस 28 नामात्मक स्तोत्र को श्रीविष्णोरष्टाविंशति नाम स्तोत्र कहते है। इस सवा तीन श्लोकों के दिव्य स्तोत्र का नियम पूर्वक जो भी अनुष्ठान करता है, वह श्री हरि की कृपा से विशेष ज्ञान प्राप्त कर पूर्ण हो जाता है। सुनिए–अर्जुन ने पूछा, हे श्री हरि! आपके 1000 नामों (विष्णुसहस्त्रनाम) के फल के तुल्य कुछ रहस्यगत नाम बताइए जिससे कलियुग के मनुष्यों की शीघ्र ही रक्षा हो एवं विधिपूर्वक जप से शीघ्र ही संपूर्ण कामनाएं सिद्ध हो, तथा निष्काम स्मरण से मोक्ष मार्ग प्रशस्त हो।

तब प्रभु ने कहा–

मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम्।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्।।
पद्मनाभं सहस्त्राक्षं वनमालिं हलायुधम्।
गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरूषोत्तमम्।।
विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम्।
दामोदरं श्रीधरं च वेदांगं गरूडध्वजम्।।
अनन्तं कृष्णगोपालं जपतो नास्ति पातकम्।
गवां कोटिप्रदानस्य अश्वमेधशतस्य च।।
कन्यादानसहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः।

अतः इन नामों को नित्य या कम से कम कृष्ण जन्माष्टमी या उत्पन्ना एकादशी के दिन को अनिवार्य रूप से त्रिसमय में जपना ही चाहिये।

हे श्री कृष्ण! हमें आप सा विशुद्ध कर दीजिये, पावन कर दीजिये, मन को निर्मल बना दीजिये, हम आपके हैं वही करो जिससे हमारा वास्तविक कल्याण हो।

हे कृष्ण! संताप सारे हर।

एक उपाय इतना कर,
हे कृष्ण! संताप सारे हर।
त्रिविध तापों से मुक्ति देकर,
जीवन शिव सा पावन कर।
एक उपाय इतना कर,
हे कृष्ण! संताप सारे हर।

भरकर आनन्द जीवन में,
बैकुण्ठ सा पावन कर।
देकर भक्ति गुरुदेव की,
आत्मा में विश्रान्ति भर।
एक उपाय इतना कर,
हे कृष्ण! संताप सारे हर।

मृत्यु से हुआ जीव परेशान,
जानकर मृत्युंजय कैसा डर।
नारायण जप त्यागने वाला,
जीव बता तू कैसा नर।
एक उपाय इतना कर,
हे कृष्ण! संताप सारे हर।

दामाद ढूंढने क्यों जाता है,
कृष्ण! से बड़ा कौन दूजा वर।
सुत को भक्त गर नहीं बनाना,
चुल्लु भर जल में डूबकर मर।
एक उपाय इतना कर,
हे कृष्ण! संताप सारे हर।

क्यों चिंता तू करता है,
सब कुछ मिलेगा धैर्य तू कर।
बन राधा कल्याण ही होगा,
क्यों छोड़े कृष्ण का दर।
एक उपाय इतना कर,
हे कृष्ण! संताप सारे हर।

सर्वप्रिय कृष्ण! दुर्बुद्धि हर,
अंशभूत का चित्त मर्यादित कर।
कसम आपको भक्तों की,
अंशभूत को शिवराम सा कर।
एक उपाय इतना कर,
हे कृष्ण! संताप सारे हर।

हे कृष्ण! संताप सारे हर।

(2.2) तीन कर्मफल

जो द्विजजातिके पुरुष श्रेष्ठ कुलमें जन्म लेकर कुत्ते और गदहे, बिल्ली आदि अतिपापयोनी के जीवों को पालते हैं, शिकारमें बहुत प्रेम रखते तथा अपवित्र स्थानमें जाकर नित्य मृगोंको मारा करते हैं, ऐसे लाखों अधम प्राणियोंको मरनेके बाद यमदूत 'प्राणरोध' नामक नरकमें गिराकर बाणोंसे छेदते हैं। दुर्नीतिपूर्ण मार्गपर चलनेवाले उन व्यक्तियोंकी बड़ी भारी दुर्दशा होती है। जो दम्भी या नीच मनुष्य दम्भके लिये यज्ञका आयोजन करके उसमें पशुओंकी हिंसा करते हैं, उन्हें इस लोकसे जानेपर यमराजके दूत 'विशसन' नामक नरकमें गिराकर असह्य कोड़ोंसे पीटते हैं। जो द्विज कामसे मोहित होकर सगोत्र स्त्रीके साथ समागम करता है, उस मूर्ख व्यक्तिको यमराजके दूत वीर्यसे भरे हुए 'लालाभक्ष' नामक नरककुण्डमें गिराकर बलपूर्वक वीर्य पिलाते हैं।

–श्रीमद्देवीभागवत महापुराण

(3) विष–व्याधि से रक्षा हेतु :

जो भी व्यक्ति विषमय मार्गों (अर्थात् जहाँ सर्प, बिच्छू आदि हों) से गुजरे। वह यदि गरूड़ शिला (बदरी क्षेत्र में हरि की सवारी बनने हेतु इस शिला पर बैठकर गरूड़ जी ने महान तपस्या की थी) का स्मरण मात्र बिना यम–नियम, व्रत आदि के भी करता है तो उसके पास भूलकर भी जहरीले जीव–जन्तु नहीं आते तथा जो माँ मनसा देवी के 12 नामों (वैष्णवी, शैवी, मनसा, आस्तिक माता, नागेश्वरी, नागभगिनी, विषहरी, सिद्धयोगिनी, महाज्ञानयुता, जगतगौरी, जरत्कारू, जरत्कारू प्रिया) का नित्य स्मरण करता है, उसका मार्ग सर्पादि दूर से ही त्याग देते है, एवं किसी भी प्रकार की विष, व्याधि उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

(4) मात्र एक श्लोक से 24 घण्टे (दिन रात्रि के आठों पहर) के पाप भस्म :

श्री हरि की नाभि 'नारद पुराण' की भांति श्री हरि का हृदय 'पद्म पुराण' की दिव्य महिमा है। इसके भूमि खण्ड के मात्र 1 श्लोक से श्रवण करने मात्र से ही आठों पहर के भयंकर पाप भी उसी प्रकार भस्मीभूत हो जाते हैं जैसे कि अग्नि की एक चिंगारी करोड़ों योजन में फैले हुए घास–फूस को पल भर में भी भस्मीभूत कर देती है। हम यहाँ केवल एक ही श्लोक का दर्शन इस 'ग्रन्थ रहस्य' एक कल्प वृक्ष में करा रहे हैं। कृपया स्नान कर पवित्र होकर ही इस श्लोक का स्वाध्याय अथवा संतश्री के मुख से या कम्प्यूटर अथवा मोबाइल आदि के माध्यम से श्रवण करें। इस श्लोक का वर्णन भूलकर भी नास्तिक, निंदक एवं स्त्री लंपट से न करें।

तारणाय मनुष्याणां संसारे परिवर्तताम्।
नास्ति तीर्थं गुरूसमं बन्धच्छेदकरं द्विज।।

इस खण्ड के एक अध्याय के मात्र एक बार श्रवण या स्वाध्याय मात्र से 1000 गो दान एवं यज्ञ आदि का वही फल प्राप्त होता है जो कि विशेष पर्व या त्यौहार के समय पर विशेष क्षेत्र में गो दान आदि से होता है। संपूर्ण भूमि खण्ड (125 अध्याय से युक्त) के श्रवण अथवा स्वाध्याय से रोग, दुःख एवं शत्रुओं का नाश हो जाता है। इस पुराण के स्वर्ग खण्ड की भी दिव्यतम महिमा है।

(5) मात्र एक बार पाठ करने से धन–धान्य से सदा के लिए संपन्न :

उत्तम सदगुरू से गुरूदीक्षा लेकर जो श्री गणेश जी का स्मरण करके मात्र एक बार ही कलियुग के परमवीर, परमभक्त अंजनी पुत्र द्वारा कही हुई श्री सीताराममय स्तुति रूपी स्कंद पुराण **ब्राह्मखण्ड सेतु माहात्म्य में वर्णित दिव्य पाठ का पठन, स्वाध्याय या श्रवण करता है, वह भविष्य में इसी जन्म में ही धन–धान्य से सदा के लिए संपन्न हो जाता है;** इस स्तुति को जो मात्र एक बार भी पाठ कर लेता है वह महान ऐश्वर्य, अनेक क्षेत्र, धान्य, दूध देने वाली गाय, आयु, विद्या, मनोरमा भार्या (या ब्रह्मचर्य में दृढ़ स्थिति) तथा श्रेष्ठ पुत्र (या अनन्य भक्ति युक्त शिष्य) प्राप्त कर लेता है, उसके संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं वह नरक में नहीं जा सकता, ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है। परंतु गुरूमंत्र का नित्य कम से कम 21 बार स्मरण एवं तीन वर्ष में कम से कम एक बार सदगुरु परमात्मा के दर्शन अनिवार्य हैं। इतने सरल उपाय को भी न कर सको तो आपके जीवन को धिक्कार है। इतने सरल उपाय को भी न कर सके तो धन, यश, पद या भक्ति आदि का 40 दिन या 6 मास का अनुष्ठान कैसे होगा? यह स्तोत्र निम्नलिखित है।

हनुमान्‌जी द्वारा भगवान् श्रीराम और माँ सीताका स्तवन

सूतजी कहते हैं–परम दयालु दशरथ–नन्दन श्रीरामचन्द्रजी की ओर देखकर हनुमान्‌जी ने पृथ्वी पर दण्ड की भाँति गिरकर साष्टांग प्रणाम किया और हाथ जोड़कर श्रवण–सुखद स्तोत्रों द्वारा भगवान् जानकीनाथ का स्तवन किया।

हनुमान्‌जी बोले–सबकी उत्पत्ति के आदिकारण सर्वव्यापी श्रीहरिस्वरूप श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है। आदिदेव पुराण पुरूष भगवान् गदाधर को नमस्कार है। पुष्पक के आसन पर नित्य विराजमान होने वाले महात्मा श्रीरघुनाथजी को नमस्कार है। प्रभो! हर्ष में भरे हुए वानरों का समुदाय आपके युगल चरणारविन्दों की सेवा करता है, आपको नमस्कार है। राक्षसराज रावण को पीस डालने वाले तथा सम्पूर्ण जगत् का अभीष्ट सिद्ध करने वाले श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है। आपके सहस्त्रों मस्तक, सहस्त्रों चरण और सहस्त्रों नेत्र हैं, आप विशुद्ध विष्णुस्वरूप राघवेन्द्र को नमस्कार है। आप भक्तों की पीड़ा दूर करने वाले तथा सीता के प्राणवल्लभ हैं, आपको नमस्कार है। दैत्यराज हिरण्यकशिपु के वक्षःस्थल को विदीर्ण करने वाले आप नृसिंहरूप धारी भगवान् विष्णु को नमस्कार है। अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठाने वाले भगवान् वराह! आपको नमस्कार है। बलि के यश को भंग करने वाले आप भगवान् त्रिविक्रम को नमस्कार है। वामनरूपधारी भगवान् को नमस्कार है। अपनी पीठ पर महान् मन्दराचल धारण करने वाले भगवान् कच्छप को नमस्कार है। तीनों वेदों की सुरक्षा करने वाले मत्स्यरूपधारी भगवान् को नमस्कार है। क्षत्रियों का अन्त करने वाले परशुरामरूपी राम को नमस्कार है। राक्षसों का नाश करनेवाले आपको नमस्कार है। राघवेन्द्र का रूप धारण करने वाले आपको नमस्कार है। महादेवजी के महान् भयंकर महाधनुष को भंग करने वाले आपको नमस्कार है। क्षत्रियों का अन्त करने वाले क्रूर परशुराम को भी त्रास देने वाले आपको नमस्कार है। भगवन्! आप अहल्या का सन्ताप और महादेवजी का चाप हरने वाले हैं, आपको नमस्कार है। दस हजार हाथियों का बल रखने वाली ताड़का के शरीर का अन्त करने वाले आपको नमस्कार है। पत्थर के समान कठोर और चौड़ी बाली की छाती छेद डालने वाले आपको नमस्कार है। आप मायामय मृग का नाश करने वाले तथा अज्ञान को हर लेने वाले हैं, आपको नमस्कार है। दशरथजी के दुःख रूपी समुद्र को सोख लेने के लिये आप मूर्तिमान् अगस्त्य हैं, आपको नमस्कार है। अनन्त उत्ताल तरंगों से उद्वेलित समुद्र का भी दर्प दलन करने वाले आपको नमस्कार है। मिथिलेश नन्दिनी सीता के हृदयकमल को विकसित करने वाले सूर्यरूप आप लोकसाक्षी श्रीहरि को नमस्कार है। हरे! आप राजाओं के भी राजा और जानकीजी के प्राणवल्लभ हैं, आपको नमस्कार है। कमलनयन! आप ही तारक ब्रह्म हैं, आपको नमस्कार है। आप ही योगियों के मन को रमाने वाले 'राम' हैं। राम होते हुए चन्द्रमा के समान आह्लाद प्रदान करने के कारण 'रामचन्द्र' हैं। सबसे श्रेष्ठ और सुखस्वरूप हैं। आप विश्वामित्रजी के प्रिय हैं, खर नामक राक्षस का हृदय विदीर्ण करने वाले हैं, आपको नमस्कार है। भक्तों को अभयदान देने वाले देवदेवेश्वर! प्रसन्न होइये। करूणासिन्धु

श्रीरामचन्द्र! आपको नमस्कार है, मेरी रक्षा कीजिये। वेदवाणी के भी अगोचर राघवेन्द्र! मेरी रक्षा कीजिये। श्रीराम! कृपा करके मुझे उबारिये। मैं आपकी शरण में आया हूँ। रघुवीर! मेरे महान् मोह को इस समय दूर कीजिये। रघुनन्दन! स्नान, आचमन, भोजन, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि सभी क्रियाओं और सब अवस्थाओं में आप मेरी रक्षा कीजिये। तीनों लोकों में कौन ऐसा पुरूष है, जो आपकी महिमा का वर्णन या स्तवन करने में समर्थ हो सकता है। रघुकुल को आनन्दित करने वाले श्रीराम! आप ही अपनी महिमा को जानते हैं।

करुणानिधान श्रीरामचन्द्रजी की इस प्रकार स्तुति करके वायुपुत्र हनुमान्ने भक्तियुक्त चित्त से सीताजी का भी स्तवन किया।

'जनकनन्दिनी! आपको नमस्कार करता हूँ। आप सब पापों का नाश तथा दारिद्रय का संहार करने वाली हैं। भक्तों को अभीष्ट वस्तु देनेवाली भी आप ही हैं। राघवेन्द्र श्रीरामको आनन्द प्रदान करने वाली विदेहराज जनककी लाड़िली श्रीकिशोरीजी को मैं प्रणाम करता हूँ। आप पृथ्वी की कन्या और विद्या हैं, कल्याणमयी प्रकृति भी आप ही हैं। रावण के ऐश्वर्य का संहार तथा भक्तों के अभीष्ट का दान करने वाली सरस्वती रूपा भगवती सीता को मैं नमस्कार करता हूँ। पतिव्रताओं में अग्रगण्य आप श्रीजनकदुलारी को मैं प्रणाम करता हूँ। आप सब पर अनुग्रह करने वाली समृद्धि, पापरहित, और श्रीविष्णुप्रिया लक्ष्मी हैं। आप ही आत्मविद्या, वेदत्रयी तथा पार्वतीस्वरूपा हैं, आपको मैं नमस्कार करता हूँ। आप ही क्षीरसागर की कन्या और चन्द्रमा की भगिनी कल्याणमयी महालक्ष्मी हैं, जो भक्तों पर कृपाप्रसाद का प्रसाद करने के लिये सदा उत्सुक रहती हैं, आप सर्वांगसुन्दरी सीता को मैं प्रणाम करता हूँ। आप धर्म का आश्रय और करूणामयी वेदमाता गायत्री हैं, आपको मैं प्रणाम करता हूँ। आपका कमलवन में निवास है, आप ही हाथ में कमल धारण करने वाली तथा भगवान् विष्णु के वक्षःस्थल में निवास करने वाली लक्ष्मी हैं, चन्द्रमण्डल में भी आपका निवास है, आप चन्द्रमुखी सीतादेवीको मैं नमस्कार करता हूँ। आप श्रीरघुनन्दन की आह्लादमयी शक्ति हैं, कल्याणमयी सिद्धि हैं और कल्याणकारिणी सती हैं। श्रीरामचन्द्रजी की परम प्रियतमा जगदम्बा जानकी को मैं प्रणाम करता हूँ। सर्वांगसुन्दरी सीता का मैं अपने हृदय में सदैव चिन्तन करता हूँ।'

श्रीसूतजी कहते हैं–द्विजवरो! इस प्रकार हनुमान्जी भक्तिपूर्वक श्रीसीताजी और श्रीरामचन्द्रजी की स्तुति करके आनन्द के आँसू बहाते हुए मौन हो गये। जो वायुपुत्र हनुमान्जी द्वारा वर्णित श्रीराम और सीता के इस पापनाशक स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करता है, वह सदा मनोवांछित महान् ऐश्वर्य का उपभोग करता है। अनेक क्षेत्र, धान्य, दूध देने वाली गौएँ, आयु, विद्या, मनोरमा भार्या (अथवा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत में दृढ़ स्थिति) तथा श्रेष्ठ पुत्र (अथवा महान आज्ञाकारी शिष्य) प्राप्त करता है। इस स्तोत्रका एक बार भी पाठ करने वाला मनुष्य इन सब वस्तुओं को निःसन्देह प्राप्त कर लेता है। इसके पाठ से मनुष्य नरक में नहीं पड़ता है, उसके ब्रह्महत्या आदि बड़े–बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। वह सब पापों से मुक्त हो देहावसान होने पर मोक्ष पा लेता है। इसी प्रकार गौरीशंकर जी की भी युगल स्तुति है जो आप हम सबकी पुस्तक स्तोत्र निधिवन में देख सकते हैं।

(6) 1 बूँद पान करने का अनंत फल :

गुरूचरणामृत की मात्र 1 बूँद के पान करने पर उतना फल मिलता है जितना सातों समुद्र पर्यन्त के सारे तीर्थों (गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी तथा क्षिप्रा आदि) में 10–10 हजार बार स्नान करने से भी नहीं मिलता। अतः संसार में मत भटको और एक मात्र अद्वैतयुक्त ज्ञानी गुरु नाथ के हो जाओ।। अद्वैतयुक्त गुरु के हो जाओ।। अद्वैतयुक्त गुरु के हो जाओ।।

(7) माया तथा मोह के नाशार्थ :

तजि माया सेइअ परलोका।
मिटहि सकल भवसंभव सोका।।

माया तथा मोह के नाश हेतु इस दोहे को संपुटित बनाकर स्वयं या निर्लोभी ब्राह्मण के द्वारा संपूर्ण श्री राम चरित मानस 5 बार जपे। ऐसा करने से शीघ्र ही मायावत् भ्रमित दृष्टि का नाश हो जाता है एवं वास्तविक शुद्ध दृष्टि रूपी सर्वमय प्रभु के अपरोक्ष दर्शन होने लगते हैं।

(8) धन–धान्य हेतु तथा शत्रु नाश के लिये श्री महालक्ष्मी स्तोत्र :

जो इन्द्र कृत श्री महालक्ष्म्यष्टक रूपी महा स्तोत्र (8 श्लोक से युक्त) का संयम–पूर्वक सुबह, शाम दोनों समय पाठ/श्रवण/या लेखन करते हैं एवं देवी के प्रीत्यर्थे शुक्लपक्ष तीज अथवा अष्टमी का व्रत करते हैं, वे एक वर्ष में ही धन–धान्य से संपन्न हो जाते हैं। मात्र एक समय नित्य पाठ से उसे अर्थात् पाठकर्ता को पाप छू भी नहीं सकते। वह भयंकर पूर्व पापों से भी शीघ्र ही मुक्त हो जाता है एवं विश्व में सुपूजित होता है। इस महा स्तोत्र के त्रिकाल पाठ से भयंकर शत्रु भी नष्ट हो जाते है। दीर्घायु तक यश पाकर वह देहान्त के पश्चात् आद्यशक्ति जी के परम धाम को पाकर परम पद पाता है।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 1।।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 2।।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 3।।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 4।।

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 5।।

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 6।।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 7।।

श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। 8।।

(9) भविष्य को अनुकूल बनाने का सबसे सर्वोत्तम उपाय :

सर्वफलदायी परमोत्तम स्तोत्र :

कोई भी व्यक्ति यदि अपना भविष्य जानना चाहे तो मूलांक पद्धति नारद पुराण या जन्मकुंडली से जान सकता है। परंतु यदि किसी को प्रतिकूल भविष्य लगे तो गुरूदीक्षा लेकर दीक्षागुरू में ब्रह्म बुद्धि (वैसे भी तत्त्व रूप से सर्वमय ब्रह्म ही ब्रह्म है।) करके गुरूमहिमा का (स्तोत्र रूप गुर्वष्टक या कुलार्णव तंत्र की इष्ट चरण पादुका स्तोत्र या गुरूगीता रूपी गुरू सान्निध्य संबंधी स्तोत्र) 1008 बार या कम से कम 108 बार गान/पाठ करके नित्य 1 पाठ अवश्य करें। साथ ही गुरूचरणामृत को मस्तक पर धारण करें इससे सर्व प्रकार से अनुकूलता प्राप्त होती हैं। अनेकानेक भक्तों ने गुरूसेवा से निष्पापता पाकर भगवान तक को पुत्र बना लिया है फिर सामान्य संकट तो यूं ही चुटकियों में नष्ट हो जाते हैं। भक्तों ने गुरूगीता रूपी परम स्तोत्र से मात्र 16 दिनों के अनुष्ठान से ही हनुमान जी से वार्तालाप तक की है फिर आपकी परेशानी की बात ही क्या है?

—श्रीगुरूगीताजी

स्मरण रहे प्रभु दर्शन प्रारब्ध में हो या न हो परंतु यदि आप नियम पूर्वक मंत्रादि का अनुष्ठान करते हो तो निश्चित जानिये कि आपको फल मिलना ही है। कोई भी जीव श्रीगुरूगीता की पूजा से ब्रह्मा तक बन सकता है; फिर अन्य सिद्धियों की बात ही क्या है?

फिर यहाँ पर तो साक्षात् माँ भुवनेश्वरी की आत्मा अर्थात् श्रीगुरूगीता जी के पाठ की बात की जा रही है।

हाँ, कभी–कभी पूर्व के घोर पाप हो तो समय अवश्य लग सकता है परंतु हिम्मत न हारने पर (माधवाचार्य जी की भांति) सर्वस्व संभव है। भागीरथ जी भी तपस्या से ही गंगा को पृथ्वी पर ला सके। महाविराट के रोमकूपों में जितने असंख्य ब्रह्माण्ड हैं, उन सभी ब्रह्माण्डों में श्री गुरुगीता जी से बड़ा और समान भी अन्य कोई भी स्तोत्र नहीं।

(10) मनोभिलाषित अन्न–भोजन हेतु शिवप्रिया अन्नपूर्णा कवच :

जो मनोभिलाषित अन्न–भोजन आदि पदार्थों की कामना एवं कांति, पुष्टि, धन, आरोग्य, यश की इच्छा करता है उसे शिव प्रिया अन्नपूर्णा जी का ''10 श्लोकी कवच का'' पाठ (विनियोग, न्यास ध्यानादि करके) अवश्य जपना चाहिए। इससे मधुर एवं सर्वोत्तम भोजन प्राप्त होता है तथा धर्म, अर्थ, काम के साथ मोक्ष हेतु वैराग्य एवं ज्ञान की भी प्राप्ति होती है।

(11) मनोभिलाषित अन्न–भोजन हेतु शिवप्रिया अन्नपूर्णा मंत्र :

ऊँ ह्रीं भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णायै स्वाहा।
ऊँ ऐं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे

ममाऽभिलषितमन्न देहि स्वाहा ।

(12) ज्ञाननिष्ठ गुरू चरणपादुका के स्मरण मात्र से संपूर्ण महान फल :

देवालय, चैत्य वृक्ष, चौराहा, विद्या–वृद्ध–पुरूष अर्थात् गुरू और देवता इनको दाहिने हाथ तरफ करके चलना या बैठना चाहिए। यदि उनको बायें तरफ करके चलते हैं तो भयंकर दोष है। यात्रा काल में मार्ग में बायीं तरफ मंदिर या संत दिखाई दे तो प्रभु की चरण पादुका का स्मरण करे वह दोष मिट जायेगा एवं संत दर्शन का महान तथा पूर्ण फल भी प्राप्त होगा।

प्रभु की चरण पादुका का स्मरण मात्र से कोटि–कोटि यज्ञों, कोटि–कोटि तीर्थों, कोटि–कोटि तपस्याओं, व्रतों एवं कोटि–कोटि दानों (गोदान, भूमिदान एवं कन्यादानादि) का महाफल तत्क्षण ही साधक को प्राप्त हो जाता है। –मार्कण्डेय पुराण

और कुलार्णव तंत्र

अतः जो भी शिष्य संपूर्ण फलों को पाना चाहे वह प्रभु, माँ भगवती या परम गुरू की चरण पादुका का स्मरण नित्य कम से कम 11 बार अवश्य करें।

(13) वज्रवत शरीर, 'जेल से मुक्ति' तथा यक्ष, राक्षस के भय नाश हेतु :

15 श्लोकी श्री गणेश कवच का तीनों संध्याओं में पाठ करने वाले का शरीर श्री गणेश जी की अनुकंपा से वज्रवत कठोर हो जाता है एवं 21 दिनों में नित्य 21 पाठ करने से जेल के बन्धन से मुक्ति मिलती है।

इस श्री गणेश कवच को भोजपत्ते पर लिखकर जो बुद्धिमान कंठ में पहनता है, उसका किसी भी प्रकार का कोई भी यक्ष, भयंकर राक्षस एवं पिशाच कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

(14) अचल लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए :

ब्रह्माण्ड पुराण में साक्षात् श्री महादेव एवं पार्वती संवाद के अनुसार ''साक्षात् श्री राम प्रभु ने अनन्य चिरंजीवी परम भक्त विभीषण जी से कहा है कि–''हे भक्तराज! रविवार को पीपल की जड़ के पास बैठकर जो आगामी कलियुग के परमोत्तम वीर श्री हनुमान जी के दिव्य कवच का स्वाध्याय/पाठ करता है, वह संग्राम में विजय पाता है तथा अचल लक्ष्मी का स्वामी बन कर महाकल्याण का भागी होता हे। ।

(15) तीनों लोकों को जीतने एवं वीरता पाने हेतु :

10 श्लोकी अक्षय कवच अर्थात् गोपाल कवच को जो त्रिकाल समय में जप करता है। वह त्रिलोक का स्वामी एवं परम वीर हो जाता है। श्री गुरु के स्मरण एवं ध्यान के साथ पाठ करने से साधक शीघ्र ही अक्षय फल प्राप्त कर लेता है।

(16) इंद्रादि देवताओं का स्वामी तथा परम धनवान बनने हेतु :

श्री स्कन्द पुराण में वर्णित 27 श्लोकी अमोघ शिव कवच को धारण/पाठ करता है वह इंद्रादि देवताओं का स्वामी तथा परम धनवान हो जाता है। मौत के करीब पहुँचने वाला/वाली भी इस परम कवच के अनुष्ठान–संकल्प से 100 से भी अधिक वर्ष तक जीवित रहते हैं।

(17) मृत्युंजय मंत्र परम पावन महिमा :

1. रोगों से मुक्ति के लिए कम से कम 11000 (ग्यारह हजार) या मध्यम स्तर हेतु सवा लाख मृत्युंजय मंत्र अनिवार्य है।

2. भय से छुटकारा पाने हेतु :

भय से छुटकारा पाने हेतु कम से कम 11 माला जप करना चाहिए।

3. सुपुत्र की प्राप्ति हेतु :
शिव जैसे सुपुत्र की प्राप्ति हेतु कम से कम सवा लाख मंत्र अनिवार्य है।

4. देश के शत्रुओं के नाश हेतु :
देश में हैजा फैल जाए या शत्रु देश पर आक्रमण कर दे या भ्रष्टाचार देश पर भयंकर रूप से होने लगे तो एक करोड़ की संख्या में ब्राह्मणों द्वारा जप करवाने से सत्ययुग जैसा वातावरण निर्मित हो जाता है।

डूबने से, जलकर मरने से, विषधर जंतु से काटने से होने वाली मृत्यु से बचने के लिए 10 हजार मंत्र (महामृत्युंजय) जप करे या उत्तम ब्राह्मणों से करवाएं। राज्य प्राप्ति, प्रचुर धन–धान्य के लिए सवा लाख मंत्र का जाप करे परंतु लक्ष्मी हेतु बिल्व फल से हवन, ब्रह्मज्ञान हेतु पलाश की सुविधा से, सौन्दर्य हेतु खैर की समिधा से, रोग–क्षय हेतु 3–3 दुर्वाओं से, पाप विनाश हेतु तिल से, शत्रु नाश हेतु सरसों से, यश के साथ लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु खीर से, मृत्यु से निवारण हेतु दही से हवन का।

स्मरण रहे सदाशिव (रूद्र के भी पिता; क्योंकि त्रिदेवों की जननी परम भुवनेश्वरी जी सदाशिव की ही पराशक्ति हैं) ही एकमात्र अनुग्रह कर्ता और त्रिदेवों पर शासन करने वाले हैं; परंतु कृपावश (भक्त वत्सलता हेतु) उन्होंने यह भी अधिकार दे रखा है कि जो भी ब्रह्मा, विष्णु या महेश जी या ब्रह्मवेत्ता ज्ञानी की अनन्य भक्ति करेगा उसे मेरी ही सेवा, पूजा, दर्शन का फल प्राप्त होगा।

(18) देवी भागवतमय कृष्ण जन्माष्टमी महिमा :

जो प्राणी कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष अष्टमी रोहिणी नक्षत्र) का व्रत करता है या करवाता है, वह सौ जन्मों के पापों से मुक्त होता है तथा वह बैकुण्ठ में दीर्घकाल तक रहता है, तदुपरांत उत्तम योनि में जन्म लेने पर उसे प्रभु श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति प्राप्त हो जाती है, जिससे वह परम कल्याण को पाकर धन्य हो जाता है।

(19) जाप या कीर्तन से करोड़ों जप का पुण्य :

प्रभु क्षेत्र में नाम जाप या कीर्तन से करोड़ों गुना जप का पुण्यफल प्राप्त होता है। जो नारायण क्षेत्र में हरि या इष्ट शिव का 10000000 (1 करोड़) बार जाप करता है वह जीवन्मुक्त हो जाता है। और यदि किन्हीं गलतियों के कारण कर्ज, शोक या अन्य दुःखों के कारण अनुष्ठान में मन न लगे तो मात्र ब्रह्मचर्य या उपवास के साथ दोनों संध्याओं में किसी विशेष स्तोत्र के माध्यम से मात्र 3–4 मिनिट की प्रार्थना अवश्य करें वैसे भी स्तोत्र एवं कवच की महिमा भी महान होती है। इतना भी न बन सके तो मात्र अपने पवित्र भावों के माध्यम से

भी प्रार्थना की जा सकती है; परंतु स्मरण रहे महापुरूष के द्वारा कथित स्तोत्र की सुनवाई अति शीघ्र होती है।

हे शिव! पार लगा दो।

हे शिव! पार लगा दो,
डूबते को बचा लो।
हे नाथ! करूँ मैं क्या?
इतना तो बता दो।
मध्य में अटका मैं,
अब तो पार लगा दो,
हे शिव! पार लगा दो।
हे शिव! पार लगा दो।

मन बुद्धि को समझा दो,
कृपा से अंकुश लगा दो।
परम प्रिय मेरे गोपेश,
ऐसी लीला रचा दो,
तन से भी रहूँ सुन्दर,
मन को शिव बना दो,
हे शिव! पार लगा दो।
हे शिव! पार लगा दो।

अभिन्न तत्त्व में रमा दो,
आप सा पावन बना दो।
जानता शरीर से शुद्ध नहीं,
पर आत्मा को शुद्ध बना दो,
कल्मष जो चढ़ी जन्मों से,
कृपा से शम्भु हटा दो,
हे शिव! पार लगा दो।
हे शिव! पार लगा दो।

(20) तीर्थ चाहते हैं :

जो अद्वैत ज्ञाननिष्ठ हो, अनन्य भक्त हो या शालग्राम शिला (चारों वर्णों में सभी के लिए पवित्र भूमि पर रखकर) के जल या गंगा जल को नित्य पान करता है। उस पुण्यात्मा पुरूष का स्पर्श संपूर्ण तीर्थ चाहते हैं। (देवी भागवत)

(21) महा तीर्थ :

जलमय तीर्थ तीर्थ नहीं हैं और न ही पत्थर, मिट्टी की मूर्ति ही वास्तविक देवता है। अहो! सच्चे देवता तो प्रभु के अनन्य भक्तों को मानना चाहिए, जिनके दर्शन और स्पर्श से तुरंत पवित्रता आ जाती है। वास्तव में भक्त महान होते हैं, वे ही गीता ज्ञान के श्रवण के योग्य बनते है।

उनकी आँखों से अपने इष्ट के वियोग में सतत् अश्रुधारा रूपी झरने का प्रवाह होता रहता है, वैसे भक्त की पहचान भी यही है। उनकी स्थिति जल बिन मछली की भाँति होती है। ऐसा सच्चा भक्त जिसका भी पुत्र होता है वह माता–पिता महान भाग्यशाली होते है। ऐसा भक्त सतत् 6 वर्षों की इष्ट–भक्ति, गुरुसेवा तथा सत्संग से ही प्रभु कृपा से परोक्ष अभिन्न ज्ञान को भी अपरोक्ष ज्ञान में परिवर्तित कर प्रभु का साक्षात् स्वरूप हो जाता है। ऐसा विरही जहाँ रहता है, वह भूमि भी अपना भाग्योदय मानकर ईश्वर को धन्यवाद देती है। ऐसे अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ भक्तों को मैं अंशभूत शिव आज मकर संक्रांति पर्व पर कोटि–कोटि साष्टांग प्रणाम करता हूँ।

रोते नयना क्या सुख पाया।

हे कान्हा! 'विरह' क्यों बनाया,
इसने मुझे बहुत रुलाया।
अश्रु झरते जैसे झरना,
रोते नयना क्या सुख पाया,
हे कान्हा! 'विरह' क्यों बनाया।
रोते नयना क्या सुख पाया।

मिलन में है आनन्द अपार,
विरह में होती अश्रु कतार।
क्यों कृष्णा मेरे मन भाया,
यशोदा का भी लाल कहाया।
हे कान्हा! 'विरह' क्यों बनाया।
रोते नयना क्या सुख पाया।

राधा का तू प्रेम प्यारा,
भक्तों का हृदय–निराला।
नटखट तेरी कैसी माया,
इसने जीव को बहुत नचाया।
हे कान्हा! 'विरह' क्यों बनाया।
रोते नयना क्या सुख पाया।

कोमल हृदय देखकर तूने,
अग्नि में घी काहे डाला।
विरह अग्नि सहन न होती,
प्रेम ने फिर भी मन ललचाया।
हे कान्हा! 'विरह' क्यों बनाया।
रोते नयना क्या सुख पाया।

(22) प्रत्येक जन्म में राजा पद :

देवी भागवत के 9वें स्कंध में वर्णित धरा स्तोत्र के जप से अनेक जन्मों तक राजा बनते हैं। इसे पढ़ने मात्र से पृथ्वी दान का पुण्य (योग्य ब्राह्मण को) प्राप्त हो जाता है, पृथ्वी के अपहरण से, दूसरे के कुएँ को बिना उसकी आज्ञा के खोदने से, अम्बुवाची योग में पृथ्वी को खोदने से, पृथ्वी पर वीर्य त्यागने से तथा दीपक रखने जो पाप होता है उस पाप के नाश हेतु यह स्तोत्र अवश्य जपे।

श्रीमद्देवी भागवत में ये उपाय ''प्रत्येक जन्म में राजा बनने का उपाय'' साक्षात् श्रीनारायण प्रभु ने बताया है। कृपया इस स्तोत्र को पवित्र होकर ही स्वाध्याय करें।

श्रीनारायण उवाच :

जय जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे।
यज्ञसूकरजाये च जयं देहि जयावहे।
मंगले मंगलाधारे मांगल्ये मंगलप्रदे।।
मंगलार्थं मंगलेशे देहि मे भवे।
सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे।
पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।।

पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे।
सर्वशस्यालये सर्वशस्याढये सर्वशस्यदे।।
सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे।
भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे।।
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे।।
(श्रीमद्देवीभागवत 9/9/52–58)

अर्थात्–श्रीनारायण : हे नारद! यह स्तोत्र परम पवित्र है जो पुरूष प्रातःकाल इसका पाठ करता है, उसे बलवान् राजा होने का सौभाग्य अनेक जन्मों के लिये प्राप्त होता है। इसे पढ़ने से मनुष्य पृथ्वी के दान से उत्पन्न पुण्य के अधिकारी बन जाते हैं। पृथ्वी दान के अपहरण से, दूसरे के कुएँ को बिना उसकी आज्ञा लिए खोदने से, दूसरे की भूमि का अपहरण करने से जो पाप होते हैं, उन पापों का उच्छेद करने के लिये यह परम उपयोगी है। मुने! पृथ्वी पर वीर्य त्यागने तथा दीपक रखने से जो पाप होता है, उससे भी पुरूष इस स्तोत्र का पाठ करने से मुक्त हो जाता है।

वास्तव में भूमि माता की बहुत महिमा है। जो पुरूष त्रिकाल संध्या से युक्त योग्य ब्राह्मण को एक विश्वा मात्र भी भूमि दान करता है, वह भगवान् शिव के मन्दिर निर्माण के पुण्य का भागी बन जाता है। फसलों से लहलहाती भूमि को ब्राह्मण के लिये अर्पण करने वाला सत्पुरूष उतने ही वर्षों तक भगवान् विष्णु के धाम में विराजता है, जितने उस जमीन के रजःकण हों। जो कामान्ध व्यक्ति एकान्त में पृथ्वी पर वीर्य गिराता, उसे वहाँ की जमीन में जितने रजःकण हैं, उतने वर्षों तक 'रौरव' नरक में रहना पड़ता है।

(23) समूचे कुल का उद्धार :

जो उपासक अगहन (मार्गशीर्ष) के महीने में शंख में तीर्थ का जल लेकर उसकी 1 बूँद से भी मुझे नहलाता है वह अपने समूचे कुल को तार देता है। गीता में भी मार्गशीर्ष मास को मैंने अपना स्वरूप घोषित किया है।

(24) किस वार में क्या करें? :

तेल लगाना	:	परम शुभ–बुधवार एवं शनिवार शुभ–सोमवार निषेधःमंगल, गुरू, शुक्र, 6,11,12,15

नए वस्त्र धारण	:	परम शुभ–शुक्रवार शुभ–रविवार, बुध, गुरुवार सामान्य–सोमवार
नए जूते धारण	:	शुभ–सोम, बुध, शुक्रवार सामान्य–गुरुवार, शनिवार
नए आभूषण धारण	:	शुभ–रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार सामान्य–मंगलवार

(25) महाकाल के दर्शन मात्र से अकाल मृत्यु से मुक्ति :

पृथ्वी पर नैमिषारण्य और पुष्कर तीर्थ उत्तम हैं। कुरूक्षेत्र तीनों लोकों में उत्तम है। कुरूक्षेत्र से 10 गुना भूमि (पुण्य हेतु) काशीपुरी है और काशी से भी 10 गुना महाकाल वन है। गुरुदीक्षा लेकर महाकाल के दर्शन एवं स्मरण मात्र से अकाल मृत्यु एवं अन्य भय तत्क्षण ही दूर हो जाते हैं।

–अवन्ती क्षेत्र खण्ड सूत जी वाणी : स्कंद पुराण नागर खण्ड उत्तरार्ध

(26) मात्र 6 माह में इच्छा पूर्ण :

मात्र 6 माह के श्रीगणेश स्मरण से महान से भी महान इच्छा पूर्ण हो जाती है। नारद पुराण में वर्णित श्री गणेश जी के 12 नामों से युक्त संकट नाशक गणपति स्तोत्र की महान महिमा है। इस स्तोत्र के माध्यम से श्री गणेश जी का स्मरण 6 मास तक करने से महानतम इच्छाएं पूर्णता को प्राप्त करती है एवं एक वर्ष तक के त्रिकाल पाठ से महासिद्धि प्राप्त होती है। स्तोत्र अग्रलिखित है ।
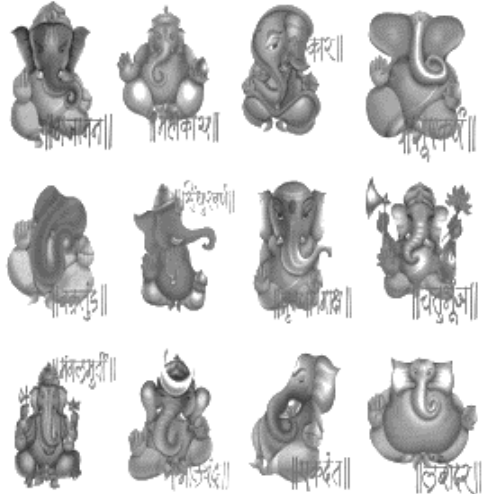
|| नारद उवाच ||

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकं ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये।।
प्रथमं वक्रतुंडं च एकदंतं द्वितीयकम।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम।। 1।।
लंबोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम ।। 2।।
नवमं भालचंद्रं च दशमं तु विनायकम।
एकादश गणपति द्वादशं तु गजाननम ।। 3।।

(27) गुरु, ज्ञानी तथा भक्तों के दर्शन एवं स्पर्श मात्र से तत्क्षण ही पवित्रता :

महादेव और पार्वती संवाद (स्कंद पुराण ब्राह्मखण्ड चातुर्मास्य माहात्म्य शिव पुराण तथा देवी भागवत का सार) : हे पार्वती! मनुष्य सद्गुरू के उपदेश और कृपा से ही भक्ति तथा ज्ञान को प्राप्त करता है जिसने गुरू को प्रसन्न कर लिया समझो उसने समूचे देवों, पितरों और ब्रह्माण्ड को प्रसन्न कर लिया और वह अनन्य भक्ति पाकर तत्क्षण ही विप्र शिरोमणी हो जाता है, तब उसके लिए समस्त विहित–अविहित कर्म, कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य नष्ट हो जाते हैं। शास्त्रों की आज्ञा नष्ट हो जाती है। वह स्वच्छंद विहारी मुक्त अवस्था का ही स्वरूप मानने योग्य है।

श्री हरि ने कहा है कि मेरे भक्त (आत्म समर्पण कर्ता भक्त न कि ऐसा जो कि घर परिवार, धन, स्त्री, परस्त्री गमन या महल की आसक्ति में रमा हो) के दर्शन एवं स्पर्श मात्र से जातिगत ब्राह्मण भी शुद्ध हो जाते हैं। जो ब्राह्मण पाप में रत है पीपल को काटकर महापाप मोल लिया है। वैदिक क्रिया छोड़कर राजा के यहाँ सेवा रूपी पाप करते हैं। असत्य में डूबे हैं तथा निंदक हैं, गो को पीड़ा देने वाले हैं वे (जातिगत विप्र) भी मेरे भक्तों के दर्शन एवं स्पर्श मात्र से तत्क्षण ही पवित्र हो जाते हैं अतः मेरे भक्तों की मेरे ही समान पूजा की जाना चाहिए, उन्हें पुरस्कार देना चाहिए उनसे ही प्रसाद ग्रहण करना चाहिए। ऐसा करने से शीघ्र ही भक्ति उत्पन्न होकर कालान्तर में अद्वैत ज्ञान सिद्धि भी प्राप्त होती है और साधक सूतजी, वशिष्ठजी, श्रृंगी ऋषि, कौशिक, वेदव्यास, रैदास की भांति जातिगत ब्राह्मण न होते हुए भी विप्रों से भी उच्च स्तर का भी (शिवपुराण के अनुसार) ब्रह्मज्ञानी (वज्रसूचिक उपनिषद अनुसार) हो जाता है। विप्र शिरोमणी और साक्षात् ब्रह्म हो जाता है। स च पूज्यो यथा ह्यहम के अनुसार प्रभु के समान पूज्यनीय हो जाता है। शशक पृष्ठ से गौतम, उर्वशी अप्सरा से वसिष्ठ, कुंभ (कलश) से अगस्त्य ऋषि की उत्पत्ति (जो कि ब्राह्मण दंपती से पैदा नहीं हुए)

हुई उनका नाम उपनिषदों और पुराणों में शामिल कर उन्हें ब्रह्मज्ञानी, विप्र शिरोमणी कहा गया।

जब साक्षात् श्रीहरि कह रहे हैं कि वह (भक्त) जातिगत ब्राह्मणों को भी पवित्र कर देता है एवं साक्षात् शिव कह रहे हैं कि वह (भक्त) ब्राह्मणों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ (विप्र शिरोमणी) है तो संसार के गंदे और तुच्छ विचारों से क्या मतलब?

(28) श्री राम सारूप्य मुक्ति का सरलतम उपाय :

श्री राम जी की सारूप्य मुक्ति का सबसे सरलतम उपाय ''अध्यात्म रामायण'' के अरण्य काण्ड के अष्टम सर्ग में वर्णित है। वह है–श्री जटायु भक्त द्वारा श्रीराम जी की दिव्य स्तुति, जो कि मात्र 10 श्लोकों में समाहित है, जिसको नित्य–प्रतिदिन सुनने **(अनपढ़ व्यक्ति भी मोबाइल, सीडी या कम्प्यूटर द्वारा मात्र 2 मिनिट का समय निकालकर श्रवण कर सकता है।)** लिखने (निरक्षर भी देख–देखकर नकल कर सकता है) अथवा पढ़ने मात्र से श्री जटायु की भांति महान साकेत धाम (जो ब्रह्मा आदि लोकपालों द्वारा पूजित है) प्राप्त हो जाता है।

(29) माधुर्य पूर्ण जीवन के लिए महान मधुरम् मंत्र :

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

जो भी स्त्री या पुरूष रूपात्मा वृन्दावन के महान से भी महान मधुरमय स्वामी श्री दामोदर कृष्ण जी के इस मन्त्र को नित्य 108 बार या 40 दिनों में सवा लाख जपता है, वह अपने जीवन को माधुर्य पूर्ण बनाकर अक्षय परमानन्द युक्त परम सौभाग्यशाली हो जाता है।

(30) रां रामाय नमः से मनचाही कामना सिद्ध :

वैष्णवों एवं तत्त्वदृष्टि वालों के लिए यह अमोघ मंत्र है, इसके उच्चारण मात्र से जानकर या अनजाने में किए हुए महापातक या उपपातक तत्काल नष्ट हो जाते है। परंतु सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि के लिए विनियोग, न्यास ध्यानादि नारद पुराण पूर्व भाग तृतीय पादांतर्गत अनिवार्य है।

इस मंत्र के ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छंद, श्रीराम देवता रां बीज तथा नमः शक्ति हैं।

1. जो प्रतिदिन प्रातःकाल इस अमोघ मंत्र रूपी षड़क्षर मंत्र का जप करके जल पीता है वह संपूर्ण पापों से मुक्त होकर एक वर्ष में **कवि सम्राट** हो जाता है।
2. इसी मंत्र से अभिमंत्रित अन्न भोजन करे, इससे श्रीराम आज्ञा से बड़े से बड़े **रोग भाग** जाते हैं।
3. जो शाकाहारी होकर जल के भीतर खड़ा होकर एक लाख रां रामाय नमः जपता है तथा बेल के फूलों की दशांश आहुति देता है वह अपनी **खोयी हुई प्रभुता** सहज ही प्राप्त कर लेता है।
4. दूध पीकर 1 लाख जप नदी तट पर या गो–शाला में करे एवं घृतमय खीर से आहुति दे तो जपकर्ता **विद्यानिधि** पाकर महानता पा लेता है।
5. गंगातट के समीप उपवास पूर्वक 1 लाख जप करे एवं बेल के फूलों से दशांश आहुति दे तो जपकर्ता राज्यलक्ष्मी प्राप्त कर लेता है।
6. साक्षात श्री राम सा पुत्र पाने हेतु :

मार्गशीर्ष के महिने में कन्द, मूल, फल मय उपवास करे एवं शुद्ध जल के भीतर खड़ा होकर एक लाख रां रामाय नमः जपे एवं अग्नि में खीर की आहुति दे तो जपकर्ता पिता अथवा व्यक्ति साक्षात् श्री राम सा पुत्र पाकर श्री दशरथ जी जैसा पावन हो जाता है।

रामाय नमः से पहले एक बार **क्लीं**, एक बार **ह्रीं,** एक बार **ऐं**, एक बार **श्रीं**, एक बार तारक प्रणव ऊँ जोडने पर हमें शेष 5 महामंत्र भी प्राप्त होते हैं, जो महान रक्षक हैं।

मुख्य बिन्दु :

जो श्री राम जी के जपानुष्ठान (एवं मैया जानकी का महामंत्र श्री सीतायै स्वाहा जप, पूजा) के बाद श्री राम परिवार के अनन्य भक्त श्री हनुमान, सुग्रीव, भरत, विभीषण, लक्ष्मण, अंगद, शत्रुघ्न एवं जाम्बवान इनका क्रमशः पूजन नहीं करता, वह पूर्ण फल नहीं पा सकता। अतः यदि नित्य भी प्रभु श्रीराम जी के साथ इन सभी की पूजा हो जाए तो आशातीत परम लाभ पाकर सभी अक्षय आनन्द में सदा के लिए रमण करने लगें। ऊँ रामाय नमः, ह्रीं रामाय नमः, रां रामाय नमः, श्रीं रामाय नमः, क्लीं रामाय नमः, ऐं रामाय नमः, जय शिव (गुरु) तत्त्व, जय शिव (गुरु) तत्त्व, जय शिव (गुरु) तत्त्व।

(31) हरि मंत्र (ऊँ नमो नारायणाय) क्रमशः जाप की दिव्य महिमा :

नारद पुराण पूर्व भाग तृतीय पाद में वर्णित पूर्ण विधि अर्थात विनियोग, पाँचो अंगों का न्यास, 10 आवृत्तिमय न्यासादि रूपी विभूति पंजर न्यास, 12 आदित्यों सहित 12 मूर्तियों के न्यास का पालन करते हुए जो ऊँ नमो नारायणाय रूपी महान मंत्र का जाप कर होमादि करता है, वह मंत्रों की निश्चित संख्या के अनुसार निम्नानुसार दिव्यतम फल पा लेता है।

ऊँ नमो नारायणाय के 1 लाख जप से **आत्मशुद्धि**

ऊँ नमो नारायणाय हरि मंत्र के 2 लाख जप से **मंत्र शुद्धि**

ऊँ नमो नारायणाय हरि मंत्र के 3 लाख जप से **स्वर्ग लोक (सूर्य से ध्रुवलोक तक)**

ऊँ नमो नारायणाय हरि मंत्र के 4 लाख जप से **श्री हरि समीप गमन**

ऊँ नमो नारायणाय हरि मंत्र के 5 लाख जप से **निर्मल ज्ञान**

ऊँ नमो नारायणाय हरि मंत्र के 6 लाख जप से **हरिमय स्थिर बुद्धि**

ऊँ नमो नारायणाय हरि मंत्र के 7 लाख जप से **श्रीहरि सारूप्य पद**

ऊँ नमो नारायणाय हरि मंत्र के 8 लाख जप से **परम शांति एवं परम पद पा लेता है।**

जो प्रतिदिन प्रातःकाल इस ऊँ नमो नारायणाय रूपी अष्टाक्षरी मंत्र का कम से कम 25 बार जप करके ''बिना मंत्र सिद्धि के भी'' जल पीता है वह संपूर्ण पापों से मुक्त तथा निरोगी हो जाता है, परंतु स्मरण रहे साधारण (अभक्त शूद्रों) एवं द्वैतभावी स्त्री एवं पुरूषों को यह महामंत्र बिना ऊँकार के ही जपना चाहिए। इस मंत्र के ऋषि नारायण, गायत्री छंद, वासुदेव देवता ऊँ बीज नमः शक्ति हैं। ये मंत्र हरि भक्तों के लिये प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है।'

–नारद पुराण पूर्व भाग तृतीय पाद

(32) परम पद के लिए ऊँ नमः शिवाय 'महा औषधि' :

त्रिदेव के गुरु एवं स्वामी श्री सदाशिव प्रभु के स्मरण में अनन्त शक्ति है, उनके चिन्तन से प्राणी शीघ्र ही सर्वलाभ प्राप्त कर लेते हैं।

कोई भी व्यक्ति 100 लाख (1 करोड़) पंचाक्षरी का जाप करने पर साक्षात् ब्रह्माजी का पुत्र होकर उन्हीं के समान हो जाता है। 200 लाख अर्थात 2 करोड़ से हरि (नारायण) प्रभु का पुत्र होकर उन्हीं के सदृश, 3 करोड़ से महारूद्र प्रभु का पुत्र होकर उन्हीं के समान सदृश, 4 करोड़ पंचाक्षरी (ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय–ऊँ नमः शिवाय जप) से गुणों और शक्तियों में महेश्वर तुल्य, 5 करोड़ से साक्षात् सदाशिव के तुल्य हो जाता है। –शिवपुराण

नारद पुराण साक्षात् हरिमय है, इसमें परम सदाशिव (परम पशुपति) के अनुग्रह से विभिन्न–विभिन्न जीवों अर्थात् पशुओं का माया, कर्म एवं मल से रहित होकर 7 करोड़ (मंत्र) पद पाना, आठ विद्येश्वर पद यहाँ तक कि 'ईश पद' की योग्यता के विषय में भलीभांति वर्णन किया गया है। उपनिषदों में भी पाँचो महान सुकृत्यों के निर्गुण स्वामी प्रभु सदाशिव जी की सर्वोच्च स्थिति का मनोहर वर्णन है। त्रिदेवों के स्वामी एकमात्र वे महाआशुतोष ही हैं। इस पुस्तक के प्रथम बिन्दु में साक्षात् ब्रह्मा एवं हरि पद पाने का सरल उपाय भी बताया गया है; परंतु जो करता है, पाता मात्र वही है, अन्य नहीं।

(33) नाग, भूत–प्रेत, काल, एवं पतन का प्रमुख कारण काम भाव को नष्ट करने हेतु सरल उपाय :

नाग, काल, भूत–प्रेत को नष्ट करने हेतु भूतेश्वर शिव जी की भक्ति अनिवार्य है। क्योंकि वे आशुतोष काल के भी काल, महाकाल, मृत्युंजय, नागेश, कामारि एवं सर्वेश हैं। परमब्रह्म सदाशिव जी की महान महिमा है। परब्रह्म सदाशिव जी ही साक्षात् महारूद्र नाम से लीलारत हैं। इस तथ्य को अनन्य हरि भक्त नारद जी ने स्कंद पुराण में माहेश्वर खण्ड में बताया है कि–

हे पार्वती के पिता जी! मैं वीणा बजाकर आपको शिवजी का गोत्र बता रहा हूँ इनका गोत्र नाद एवं कुल भी नाद है। प्रभु परब्रह्म शिव न तो किसी कुल में पैदा हुए हैं और न ही किसी में इतना साहस है कि कोई इनका गोत्र बता सके। वे निराकार परब्रह्म नादमय हैं। इनका गोत्र और कुल तो ब्रह्मा आदि देवता भी नहीं जानते फिर दूसरे (जो स्वयं को ब्रह्म न मानकर साधारण मानते हैं) की तो बात ही क्या है? और पार्वती साक्षात् भुवनेश्वरी ही हैं। भोलेनाथ कुल रहित होने से एक नाम अकुलीन से भी प्रसिद्ध है। इनके अति सूक्ष्म अंशमात्र

से मोहित होकर ऋषि लोग तो क्या ब्रह्मा, विष्णु, कोटि रुद्र एवं स्कंद आदि भी इनके स्वरूप को यथावत् नहीं जान सकते।

(34) दिन–रात की निष्पापता का उपाय :

गणपति अथर्वशीर्ष का पाठ शाम को करने पर दिन के समस्त पाप भस्म हो जाते हैं तथा प्रातःकाल करने पर रात्रि के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, जो दोनों समय पाठ करता है। (उत्तर दिशा में मुख करके) वह निष्पाप होता है। पाप उसका स्पर्श भी नहीं कर सकते तथा वह सर्वज्ञ हो जाता है। गणेश जी विघ्नहर्ता देवता हैं। उनकी पूजा से संपूर्ण भोग पदार्थ सहज ही प्राप्त हो जाते हैं जो चतुर्थी को व्रत रखकर इस महा स्तोत्र का पाठ करता है उसको महान विद्या एवं परम विवेक प्राप्त होता है। जीवन की सारी विघ्न बाधा नष्ट हो जाती है अतः श्री गणेश जी का स्मरण अनिवार्य रूप से करते रहे।

(35) मात्र नित्य 1 अध्याय से रूद्रलोक एवं गीता माहात्म्य :

श्री गीता जी की पुस्तक, पाठ और दिव्य महिमा :

भगवान के श्रीमुख से मार्गशीर्ष शुक्ल ग्यारस को श्रीमद्भगवद् गीता का प्रादुर्भाव हुआ था। जहाँ श्रीगीता की पुस्तक होती है और पाठ होता है वहाँ प्रयाग आदि सर्व तीर्थ निवास करते हैं। (पाठक को अन्य तीर्थों में जाने की जरूरत नहीं पड़ती) तथा उस स्थान पर देवता, ऋषि, योगी, नाग, नारद, ध्रुव सहित बाल गोपाल श्री कृष्ण पार्षदों सहित शीघ्र रक्षा करने में तत्पर रहते हैं। गीता परम विद्या है। मैं इसी ज्ञान के आश्रय से तीनों लोकों का पालन करता हूँ। जैसे कमल के पत्ते को जल स्पर्श नहीं करता वैसे ही **श्रीगीता का ध्यान (चिंतन) करने से महापाप भी स्पर्श नहीं करते।**

जो मनुष्य कार्तिक मास में नित्य (प्रतिदिन) गीता का पाठ (पूर्ण, आधा, 1 अध्याय, 1 श्लोक, 1/2 श्लोक या 1/4 श्लोक ही सही) करता है उसके पुण्यफल का वर्णन 'खासकर दसवें अध्याय के विषय में 'मैं (वेदव्यास जी के ब्रह्मज्ञानी शिष्य सूतजी) नहीं कर सकता। गीता के समान कोई शास्त्र न तो हुआ है न ही होगा। एकमात्र (18 अध्याय से युक्त कृष्ण गीता या गुरू महिमा से युक्त परम शास्त्र गुरूगीता) ही सदा सब पापों को हरने वाली और मोक्ष देने वाली है। गीता के 1 अध्याय पाठ से ही मानव नरक से मुक्त हो जाता है। श्री वाराह पुराण में गीता जी की दिव्य फलश्रुति (सभी 18 पाठों का अति संक्षिप्त माहात्म्य) है। इसके स्वाध्याय या श्रवण मात्र से संपूर्ण पाप भस्म हो जाते हैं।

18 अध्याय (700 श्लोक) के पाठ (जाप) से ज्ञानसिद्धि प्राप्त होती है और देहान्त के बाद परम पद पाता है।

9 अध्याय (संपूर्ण 18 अध्यायों का आधा) जप पाठ करे तो गाय दान का पुण्य प्राप्त होता है, 6 अध्याय नित्य करें (लगभग 150–200 श्लोक) तो गंगा स्नान का फल {स्मरण रहे श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन से 4/34 पर जिन ब्रह्मनिष्ठ गुरू की सेवा हेतु कहा है उन गुरू (ब्रह्मदाता गुरू) के चरणामृत की मात्र 1 बूँद पान करने से ही शिष्य सप्त सागर पर्यन्त की समस्त पवित्र तीर्थ नदियों में 10000–10000 कर स्नान करने का पुण्य तत्क्षण} पा लेता है, 3 अध्याय अर्थात् छठवें भाग से सोमयोग का फल पा लेता है। 1 अध्याय का भी नित्य पाठ करता है वह रूद्रलोक पा लेता है तथा वहाँ शिवजी का गण बनकर (जो कि कालान्तर में श्रीलोमश मुनि भी बनेंगे) चिरकाल तक निवास करता है।

42 श्लोकी दशम अध्याय की अमोघ महिमा "अद्वैतमय कैवल्या हेतु"

जिसमें ब्रह्मा जी के हंस का कालापन दूर होकर पुनर्जन्म में ब्रह्मज्ञानी बनने, श्री भोलेनाथ के द्वारा आठों पहर अपने हाथ का सहारा देना तथा 10वें अध्याय के जप में संलग्न कमलिनी को लांघने के कुफल का वर्णन, फिर श्रवण मात्र से शापादि का समूल नाश महारुद्र द्वारा भृंगीरिटी को भलीभांति महिमा बताई गयी है।

1 श्लोक नित्य जपता है वह 1 मन्वंतर (1 इंद्र की आयु, 1 मनु की आयु तक) तक मानव बनता है। जो मात्र 1/2 या 1/4 श्लोक भी जपता है वह रुद्रलोक न पाकर मात्र 10 हजार वर्ष तक चंद्रलोक को प्राप्त करता है। स्मरण रहे सोमवार का व्रत करने वाला भी चंद्रलोक पाता है। वास्तव में अधिक का फल अधिक ही होता है।

यदि कोई मृत्यु के अवसर पर श्रवण कर ले तो मानव जन्म प्राप्त होता है एवं संपूर्ण कर्मफल मुझको अर्पित कर। परोक्ष ज्ञान से ज्ञान का हृदयंगम रूप सर्वमय ध्यान श्रेष्ठ है (जिसे अपरोक्ष ज्ञान भी कहते हैं) अतः सदा मेरे अद्वैत ज्ञान में रमण करो।

कामनापूर्ति हेतु संयमपूर्वक गीता जी की अनुष्ठान विधि :

1. भयंकर संकट दूर :

संहारक्रम : 18,17,16वां अध्याय प्रथम दिन/15,14,13 द्वितीय दिन/12,11,10 तृतीय दिन/9,8,7 चतुर्थ दिन/6,5,4 पंचम/3,2,1 षष्टम दिवस; इस क्रम से संहार क्रम है। अनुष्ठानमय नित्य 3 पाठ से '40 दिन में 120 पाठ' महान से भी महान भयंकर संकट दूर हो जाते हैं।

2. गरीबी/दरिद्रता दूर :

स्थिति क्रम : 6,7,8/9,10,11/12,13,14/15,16,17/18,5,4/3,2,1 इस क्रम से चालीस दिन तक नित्य 3 पाठ से 120 पाठ हो जायेंगे, जो कि भयंकर गरीबी दूर कर शान्ति प्रदान करते हैं।

3. प्रजा/वंश विस्तार हेतु :

सृष्टि क्रम : 1,2,3/4,5,6/7,8,9/10,11,12/13,14,15/16,17,18 इस क्रम से चालीस दिन तक नित्य 3 पाठ रूप से अनुष्ठान करने पर उत्तम संतान के रूप में सृष्टि की वृद्धि होती है।

4. श्लोक चुनकर सवा लक्ष जप :

9/22 श्लोक को 40 दिन में आसन, दिशा, समय एवं संयमपूर्वक सवा लाख जपने पर प्रभु सहज ही संपूर्ण योगक्षेम वहन करते है। स्मरण रहे जो प्रभु का अनन्य भक्त हो गया, उसे योगक्षेम के लिए अन्य जप, तप की आवश्यकता नहीं होती।

5. समभाव हेतु :

12वें अध्याय का 17वां, 18वां या 19वां श्लोक सवा लाख जप, 40 दिनों तक नियम से मंत्र (नित्य बराबर अर्थात् न अधिक न कम) जपने से समदर्शिता प्राप्त होती है। स्मरण रहे 2, 4 दिन जपने मात्र से वह फल प्राप्त नहीं होता जो कि चालीस दिन वाले व्यक्ति को होता है ।

व्यक्ति के कर्म चाहे जैसे भी रहे हों, परंतु जो शिव या हरि प्रीत्यर्थे मात्र 1 अध्याय श्रीमद्भगवद गीता जी का नित्य स्वाध्याय करता है वह पूर्णतः निष्पाप होकर महादेव का अक्षय धाम रूद्रलोक प्राप्त कर साक्षात् कार्तिकेयजी की भांति हो जाता है।

यथार्थ में गीता तत्त्व एवं माहात्म्य महान है।

आइये हम यहाँ श्रीमद्भगवद् गीता जी के अद्भुत दिव्य माहात्म्य का वर्णन करते हैं जिसके स्वाध्याय मात्र से हम सब कुछ सहज ही में पा लेते हैं।

1. जहाँ गीता की पुस्तक का नित्य पाठ होता है, वहाँ महान से भी महान तीर्थ प्रयाग, वृन्दावन, बदरी या परम सायुज्य का हेतु श्री काशी आदि साक्षात् परम तीर्थ निवास करते हैं।
2. साधक को शापादि नहीं छू सकते।

3. गीता जी का नित्य पाठ करने वाले को अन्य स्थल जनित तीर्थों की आवश्यकता नहीं होती।
4. चाहे व्यक्ति ने स्नान नहीं किया हो; परंतु परमात्मा की सभी विभूतियों का अर्थात विश्वरूप का चिन्तन करता है तो वह स्नान किए हुए की तुलना में भी सहस्त्र गुना विशुद्ध माना जाता है। और यदि स्नान करके ध्यान एवं हरि पूजा करके गीता पाठ करता है तो वह परम कल्याण को प्राप्त होता है।
5. गीता पाठ करने वाला चाहे किसी भी प्रकार के प्राणी के घर भोजन करता हो, चाहे किसी भी प्रकार के प्राणी से दान लेता हो, फिर भी पाप का एक अंश भी उसे स्पर्श नहीं कर सकता।

गीता तो वास्तव में गीता है, जो अद्वितीय, निर्मल एवं साक्षात् श्रीकृष्ण है, हरि है, राम और साक्षात् महारुद्र, महेश तथा सदाशिव ही है। गीता रूप में साक्षात् माँ भुवनेश्वरी, श्री राधे, श्री उमा, साक्षात् रमा, प्रत्यक्ष भारती, भूमि, सावित्री, ऋद्धि–सिद्धि, संतोषी, मनसा, षष्ठी, श्री मंगल चण्डिका आदि परम कल्याण स्वरूपा तथा साक्षात् परब्रह्म गुरुतत्त्व ही है।

हे श्री गीता मैया! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

हे माँ! मुझे भी आपके स्वामी श्री कृष्ण सा परम, परम, परम निर्मल बना दो, विशुद्ध बना दो, साक्षात् यशोदा का लाड़ला कान्हा बना दो।

(36) ज्ञान एवं ज्ञानी की महिमा एवं परम फल :

भक्ति की पराकाष्ठा ही ज्ञान (अद्वैत रूपी अपरोक्ष ज्ञान जिसे उपनिषद में परम भिक्षा कही है।) है। यदि भक्ति करने पर भी किसी मेरे भक्त को ज्ञान प्राप्त न हो तो वह मेरे दिव्य मणिद्वीप में जाता है। वहाँ अनासक्ति पूर्वक दिव्य भोग भोगने के बाद उसे मेरी कृपा से सहज ही सम्यक ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जिस ज्ञान (अभेद ज्ञान) के प्रभाव में वह सदा के लिए कैवल्य पद पाकर अमर हो जाता है। ज्ञान ही मुक्ति का अचूक साधन है। (तभी तो श्रीकृष्ण जी ने भी 4/34 गीता में ज्ञानवान की शरणागति स्वीकार करने का कहा है।) इसमें कोई संदेह नहीं। जिसे मात्र वैराग्य प्राप्त हो गया। (संसार के दु:खों को देखकर और प्रभु को पाने की उत्कंठा मात्र तीव्र रूप से जाग्रत हो गयी) वह यदि मृत्यु को प्राप्त हो गया तो ब्रह्मलोक में 1 कल्प तक रहता है तदुपरांत शुद्ध आचरण वाले श्रीमान् (ज्ञाननिष्ठ ब्रह्मज्ञानी) के घर में जन्म लेकर अभ्यास करके मुक्त हो जाता है अतः हे हिमालय पर्वतराज! ज्ञान प्राप्त

करने के लिए ही ब्रह्मदाता गुरू (जो कि केवल्या दाता परमेश्वर है।) की तन–मन–धन से सेवा करना चाहिए। अनेक जन्मों के सत्प्रयत्न से ही ज्ञान (अभिन्न ज्ञान अद्वैत रूपी ब्रह्म विद्या, जिसे आत्मज्ञान का विशुद्ध नाम ब्रह्मज्ञान भी कहा जाता है।) की उपलब्धि होती है। कई जन्मों के पुण्य से ही मुमुक्षा जाग्रत होती है फिर वह (उपनिषद अनुसार) ज्ञाननिष्ठ (परात्पर ब्रह्म, **स चः पूज्यो यथा ह्यहम्**) की शरण में जाकर ब्रह्म ही हो जाता है।

श्रीमद्देवीभागवत सप्तम स्कंध–माँ दुर्गा एवं हिमालय संवाद

जैसे मेरे लिए (शिव के लिए) कुछ साध्य नहीं, कोई विहित–अविहित नहीं वैसे ही उस ज्ञानयोगी (जो और जैसे भी हो पर गुरूकृपा से अद्वैतवादी हो) के लिए कुछ भी अनिवार्य नहीं वे स्वतंत्र हैं। वे ही परात्पर ब्रह्म और परम संन्यासी हैं। वज्रसूचिक उपनिषद के अनुसार वे ही परम विप्र हैं। यह चारों वर्ण सामान्य श्रेणी के लोगों को बंधन में रखने के लिए बनाए गए हैं; परंतु जैसे ही सर्वमय ऊँ कार दर्शन (सोऽहं भी, तत्त्वमसि भी, एक मात्र एक ही सत्ता) रूपी आत्मज्ञान होता है वह बंधन से परे होकर साक्षात् परात्पर ब्रह्म, प्रभु का स्वरूप ही हो जाता है। उस ज्ञानयोगी को सदा सेवा, पूजा, दान देना चाहिए; परंतु वे विप्र भी महायोग्य होते हैं जो 24 लाख गायत्री से युक्त हो। तभी तो कहा है कि एक शिवयोगी को भिक्षामात्र देने से कोटि–कोटि जातिगत ब्राह्मणों की सेवा के समान फल तत्क्षण प्राप्त हो जाता है। ब्राह्मण वर्ण रहित योगियों में सूतजी प्रधान हैं जो गुरूकृपा से साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हुए।

मनुष्यों को तीर्थों की खोज न करते हुए ज्ञानी महापुरूष {जो कि गुरू में शिव बुद्धि करने के कारण ब्रह्मविद्या के अधिकारी (देवी भागवत से) होकर ब्रह्मविद्या (वेद, उपनिषद) के रहस्य को पाकर अद्वैतमय, सर्वज्ञ, सर्वमय शिवमय हो गए हैं} की खोज करना चाहिए फिर वे ज्ञानी चाहे श्मशान में मिले चाहे तीर्थों में। स्मरण रहे ज्ञाननिष्ठ गुरू की कृपा से जितनी पवित्रता आती है उतनी अन्य किसी भी माध्यम से नहीं। यह रहस्य श्रीकृष्ण भागवत के दसम स्कन्ध के 11, 12, 13 श्लोक में स्पष्ट लिखी है तथा यह भी लिखा है कि–संत पुरूष ही वास्तव में तीर्थ और महान देवता हैं; क्योंकि तीर्थ तो बहुत सयम तक सेवा करने से पवित्र करते हैं; परंतु संत पुरूष तो दर्शन मात्र से ही कृतार्थ कर देते हैं।

अग्नि, सूर्य, चंद्रमा, तारे, पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और उनके अधिष्ठातृ देवता उपासना करने पर भी पाप का पूरा–पूरा नाश नहीं कर सकते; क्योंकि उनकी उपासना से भेद बुद्धि नहीं मिटती वह और भी बढ़ती है; परंतु ज्ञाननिष्ठ शीघ्र ही अद्वैत तत्त्व में स्थित करके ब्रह्म ही बना देते हैं। साक्षात् सूर्य, साक्षात् पृथ्वी और इनके अधिष्ठाता ही बना देते हैं और आगे क्या कहे साक्षात् शिव ही बना देते हैं।

(37) तुलसी पत्र महिमा :

गीता, पुराण पाठ या ब्रह्मचर्य के अलावा तुलसी जी की भी दिव्य महिमा है। तुलसी की पत्ती को मुख में रखकर तिल और कुश के आसन पर मरने वाला साधारण एवं पुत्र विहीन कर्ममार्गी अर्थात् गृहस्थ व्यक्ति भी विष्णु लोक जाता है। ऐसी ही रूद्राक्ष की भी दिव्य महिमा है अतः तुलसी एवं रूद्राक्ष या दोनों में से एक अवश्य धारण करें।

(38) बदरी नाथ परम प्रसाद की महिमा :

बदरी क्षेत्र में भगवान विष्णु के प्रसाद का एक दाना भी मिल जाए तो उसे ग्रहण करने पर वह समस्त पापों को उसी प्रकार शुद्ध करता है जैसे भूसी की आग सोने को तपाकर शुद्ध करती है। अनेक ऋषि/मुनियों की वाणी अनुसार जिस पाप के लिए प्राणों का अंत ही प्रायश्चित कहा जाता है। वह पाप भी बदरी क्षेत्र में प्रभु का प्रसाद खाने पर भस्मीभूत हो जाता है और सालोक्य मुक्ति सुलभ हो जाती है।

यदि प्रसाद ग्रहण करते–करते प्रभु का स्मरण तथा एकादशी व्रत से अनन्य भक्ति प्राप्त हो जाए तो सायुज्य मुक्ति भी प्राप्त हो जाती है।

(39) बहन को दिए दान का महान फल :

जो भी भाई यम–द्वितीया के दिन अपनी सौभाग्यवती बहिनों को वस्त्र, गहने आदि से सन्तुष्ट करता है, उसके पास अगली यम द्वितीया तक कोई भी कलह नहीं आता और शत्रु भय का सामना नहीं करना पड़ता। यह वरदान स्वयं यमदेव ने बहिन यमुना जी को दिया है। अतः यदि हम सौभाग्य से भाई बन गये हो तो इतना सरल उपाय नहीं छोड़ना चाहिये। हम अपनी पत्नि या पुत्रों को बहिन की तुलना में हजारों गुना तृप्त करते रहते हैं, क्या एक या दो बार बहिन को पूर्ण रूपेण संतुष्ट नहीं करोगे?

cgu ls j{kk

(40) अतिथि की सेवा से महान फल :

जो गृहस्थ अतिथि का अपमान करता है वह देवताओं के अपमान का पाप प्राप्त करता है। जिस गृहस्थ के घर से अतिथि निराश होकर जाता है वह अपना पाप देकर बदले में पुण्य ले जाता है। अतिथि को सन्तुष्ट करने से (गृहस्थ के ऊपर) सब देवता सन्तुष्ट हो जाते हैं। अतिथि को आसन देने से ब्रह्मा, जल देने से शिवजी तथा भोजन खिलाने से हरि प्रसन्न होते

हैं जो गृहस्थ अतिथि का आदर नहीं करता उसके 100 वर्ष के सत्य, तप, स्वाध्याय, दान और यज्ञ फल नष्ट हो जाते हैं।

(41) चरण पादुका की महान महिमा :

जो भी प्रभु (गुरु रूपी परमेश्वर) की चरण पादुका का 1 वर्ष तक पूजन करता है उसे ब्रह्म ज्ञान प्राप्त होता है। (स्कंद पुराण) द्वारकेश्वर में स्थित शूद्री तीर्थ और ब्राह्मणी तीर्थ के पास जाकर पूजन से भी यह फल प्राप्त हो जाता है; परंतु गुरू कृपा की महिमा की तुलना अन्य किसी भी महिमा से आंकी नहीं जा सकती।

(42) कर्मफल और कुछेक स्वप्न फल

●जो गुरू पात्र शिष्य को उसकी जिज्ञासा पर भी (समयानुसार या संध्याआदि से निवृत्त होकर)समाधान नहीं करता और ज्ञान न होने पर भी गुरुपूर्णिमा पर उसे अपने ही बंधन में जकड़े रहना चाहता है अन्यत्र भी जाने नहीं देता वो गुरु बैल बनाया जाता है। फिर बैल योनी के बाद मानव योनी।

●जो शिष्य अपने परम गुरु से ज्ञान या उत्तम उपदेश पाकर उससे हुंकार से बोलता है या उनकी निंदा करता है उसको ब्रह्मराक्षस बनना पड़ता है ।

●जो पत्नि 'पति से पहले' (अति मजबूरी न हो या पति भूखा बैठा हो और किसी भी प्रकार के भौतिक कार्यों के कारण .....) भोजन कर लेती है और अकेली ही मिठाई चट कर जाती है या दूध को फूककर उसे अशुद्ध करती है वह बिल्ली बनकर ,बिल्ली योनी में कष्ट पाकर

फिर से स्त्री बन जाती है न कि 84 का भ्रमण

●जो पति अपनी पत्नि की आँखों में धूल झोंककर परायी स्त्री का सेवन करता है उसको नरक में गिराकर दंड के बाद नपुंसक बनाया जाता है फिर पुनः मानव योनी में पुरुषत्व

●जो क्वांरी कन्या का शील,मान भंग करके ,विवाह का लोभ देकर शारीरिक शोषण करता है वो अगले जन्म में स्त्री बनाकर विवाह के कुछ सालों बाद ही विधवा हो जाता है और अपने को स्त्री भाव समझकर (घुटघुटकर) रोता है।

●दूसरों की अमानत पचा लेने पर ..अगले जन्म में (चूंकि 4लाख बार मानव बनना है) उसकी पत्नि का गर्भ गिर जाता है या बच्चा जन्म लेकर मर जाता है, यह सब दण्डात्मक कार्यवाही सूक्ष्म शक्तियाँ ही करती रहती हैं।

स्वप्न फल देखें अब –

1. जामुन देखने पर प्रसन्नता का समाचार
2. चोली पहनो तो आप परम वीतरागी हो जाओगे।
3. देवी काली के दर्शन से इष्ट के चरणों में भक्ति भाव बढे।
4. चप्पल दिखे तो यात्रा होगी ।
5. पगड़ी बांधना अर्थात उन्नति होगी।
6. चाची सपने में दिखे तो प्रतिष्ठा मिले पर चाचा दिखे तो घर में क्लेश हो।
7. दादा मर जाये सपने में तो प्रसन्नता हेतु अच्छा समाचार मिलता है। और दादी मरती हुई दिखे तो लाभ ।
8. नानी दिखे जीवित तो अपना प्रेम प्राप्त होगा ही। और नाना से सद्भाव आये।
9. सखा दिखे तो मिलन की संभावना
10. शत्रु दिखे तो धन लाभ।
11. प्रेमी दिखे तो शीघ्र मिलन हो (पर वह प्रेमी अविवाहित हो अन्यथा मिलन से पाप लगेगा तथा अविवाहित भी समीप आये तो मर्यादा के साथ रहें कुवांरी कन्या का उपभोग भी पाप है)
12. भीगना देखे तो सुख।
13. अपने को भागना (रनिंग) देखें तो संकट समाप्त
14. नदी दिखे तो सुखमय जीवन आरंभ पर नाला दिखा तो संकट आता है।
15. दीपक प्रज्वलित से महान प्रसिद्धि मिले।
16. पिता दिखे तो सुरक्षित समय
17. माता दिखे तो शान्ति का कालखण्ड
18. कुत्ते या कुत्ता झपटे तो विजय हों , शत्रु हार जायेंगे।
19. पर कुत्ते भोंके तो लोगों की छींटाकशी , काट ले तो हानि।
20. कुत्ता आज्ञा माने सपने में तो शत्रु अधीन रहे। पर कुत्ता दिखे पर कुछ न करे तो दूर या पास का शत्रु दिखे
21. गिद्ध दिखे तो प्रसन्नता मिले
22. रोगी दिखे तो कष्ट दूर
23. कफन दिखे तो आयु लाभ
24. युवा स्त्री दिखे तो अच्छा समय
25. पढ़ाई दिखे तो मान सम्मान वृद्धि
26. लिंग दिखे तो महान पुरस्कार और सम्मानोपाधि
27. अभिनेता या नायक या प्रसिद्ध कलाकार दिखे तो आपकी कीर्ति में अतुलनीय वृद्धि
28. नल चालु दिखे तो तत्काल 10–15 लाभ

29. वर्षा (आफिस या कार्यक्षेत्र के पास) तो सुख सुविधा उपलब्ध पर घर पर ही वर्षा दिखे तो ठीक नहीं।
30. चश्मा दिखे तो ज्ञान विज्ञान बढ़े।
31. घर में आग दिखे तो सरकारी धन लाभ
32. नंगा मुर्दा सपने में दिखे तो पाप नष्ट
33. नाखून दिखे तो धन आयेगा।
34. बड़े नाखून से शत्रु हारेगा व धन भी आयेगा।
35. नाखून काटना अर्थात कर्ज दूर होगा , रोग भी चला जायेगा।
36. मोमबत्ती से प्रेम प्राप्त
37. साईकिल से योजना सफल
38. हस्ताक्षर से व्यापारिक संबंध अच्छे हो
39. दुल्हन से सुख आये
40. रोटी से सफलता प्राप्त, प्याज या आम से धन लाभ, शर्बत से सुदृढ प्रेम
41. भैंस से मुश्किल हल पर भैंसा से कठिन जीवन कुछ समय तक
42. चावल से गम दूर
43. अंगूठी से धन लाभ
44. उड़ना सपने मे तो यात्रा सफल होगी आपकी।
45. परी अर्थात रहस्यमयी उन्नति यात्रा अर्थात कार्य सिद्ध
46. तैरना अर्थात उन्नति
47. दांत देखना अर्थात स्वास्थ्य लाभ पर दांत गिरना अर्थात रोग।
48. शौचालय कक्ष अर्थात योजना सफल
49. नर्स से रोग समाप्त
50. इष्ट मूर्ति से आयु बढ़े पर इष्ट मूर्ति की चोरी या मूर्ति खंडन से आयु क्षय , चारपाई से झूठा प्रमाणित हो।
51. केश देखना अर्थात स्वास्थ्य लाभ
52. साधु या संत के दर्शन अर्थात शान्ति और आनंद
53. सपने में भोजन फेंकना अर्थात रोग दूर ।54. सांप डसे या पतंग उड़ाओ तो तो धन लाभ पर पतंग रखी हो न उड़ रही हो तो धन क्षय
54. दियासलाई से अद्‌भुत उन्नति तथा तितली दिखे तो शीघ्र ही प्रेमिका के दर्शन सुनिश्चित भले ही 10 वर्ष से न दिखी हो।
55. इमारत दिखे तो अद्‌भुत तरक्की व सेठ बनें
56. नेता (प्रसन्न) कलेश समाप्त
57. पूरी से सुख मिले। वन दिखे तो राज्य प्रतिष्ठा
58. परिक्रमा से भक्त बन जायेगा

59. मुर्दे को नहलाने से आप भलाई कार्य करेंगे ।
60. हंसने (मुस्काने) प्रसिद्धि मिलेगी।
61. छत्र देखने से अभिलाषा पूर्ण
62. नीलकंठ, सिंहासन, सारस से सफलता
63. पान खाना अर्थात समाज में मान मिलेगा।
64. बालक से अच्छा समय
65. तालाब अर्थात शुभ
66. आकाश से उन्नति

(43) वास्तविक तीर्थ सेवन का महान फल :

महाकाल शांतिपर्व 263.40 का सार है कि अपने आपको (अपना पूर्ण शिव स्वरूप, आत्म स्वरूप, ब्रह्म स्वरूप जो कि एक ही बहुत हुआ है सर्वमय ब्रह्ममय है। मैं तत्त्व शरीर, जाति, वर्ण नहीं अपितु विशुद्ध चैतन्य शिव ही है।) जानना ही तीर्थ है। अतः तीर्थ दर्शन (पत्थर, काष्ठ आदि की तीर्थ मूर्ति और जल) की इच्छा से देशाटन मत कर अपितु ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान हेतु गीता 4/34 श्री कृष्ण आज्ञा से ब्रह्मवेत्ता की शरण ग्रहण कर फिर चाहे वह तीर्थ में मिले, चाहे श्मशान में, चाहे अन्य एकान्त गुफा या घर में, मात्र अद्वैत रूपी परम भिक्षा की प्राप्ति ही परम धर्म है।

(44) तीर्थ में पाप वज्रलेप :

अन्य स्थान में किया पाप तीर्थ में विनष्ट हो जाता है किन्तु तीर्थ या गुरू स्थान में किया पाप वज्रलेप (अमिट) होता है अतः वहाँ पाप न करे।

(45) मात्र एक ही पुत्र से उद्धार संभव :

अधिक पुत्रों की इच्छा करने वाले मूर्ख हैं। संतान यदि एक ही ब्रह्मज्ञानी हो जाए तो वह कोटि–कोटि संतानों से श्रेष्ठ पूरे परिवार का उद्धार कर देने का माध्यम बन जाती है; परंतु 7–8 संतानें तो क्या करोड़ों भी पैदा होकर अज्ञान, पाप, अंधकार में लिप्त होकर माता–पिता, समाज की इज्जत को बर्वाद करे तो क्या लाभ? एक महान विचारक ने भी सार रूप से स्पष्ट ही लिखा है।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।

(46) गुरू में शिव बुद्धि करने मात्र से ही कल्याण :

कौन कहता है कि शिव, हरि एवं ब्रह्मा जैसे शक्तिशाली त्रिदेवों के दर्शन मात्र जाप, कीर्तन एवं तपस्या (व्रतादि) से ही होते हैं। जो गुरु परमात्मा की महिमा नहीं जानता वह तो कुछ न कुछ कहेगा ही, यदि गुरूदेव को ब्रह्म मानकर या पति को परमेश्वर जानकर सेवा मात्र की जाए तो तीनों देवता और साक्षात् परमवीर अंजनी पुत्र भी शिशु बनकर गोद में खेल सकते हैं। गुरूसेवा और पति सेवा तपस्या, यज्ञ, पूजा, नित्य करोड़ों का दान, तीर्थ तथा जाप से भी अधिक फलदायी है। तभी तो सदाशिव जी ने कहा है कि हे दुर्गा! गुरूसेवा (शिव बुद्धि युक्त) से वह सब कुछ (अणिमादि अष्ट सिद्धि, त्रिदेव के दर्शन एवं चित्त की विश्रांति भी) पा सकता है।

(47) अधिक का फल अधिक ही :

अधिक का अधिक ही फल मिलता है अर्थात् अधिक गुरूसेवा करने से फल भी अधिक ही होता है। क्रमशः सेवा से कोई ब्रह्मा का पुत्र, तो कोई हरि का पुत्र, कोई महारूद्र, महेश कृष्ण या सदाशिव प्रभु का बेटा, तो कोई रूद्रगण या कृष्ण–पार्षद हो जाता है। और भी अधिक सेवा एवं उनके अद्वैत ज्ञान का श्रवण करे तो साक्षात् ब्रह्मा, 7 करोड़ मंत्रों का इष्ट या साक्षात् हरि ही हो जाता है। मात्र 3 वर्ष के गुरु सान्निध्य से शिष्य प्रत्यक्ष हरि या सदाशिव सदृश ही हो जाता है और कैवल्या में स्थित ब्रह्म होकर शाश्वत् आनन्द में रमण करता है।

(48) वास्तविक त्याग से दिव्य फल :

सब कर्मों के फलों के त्याग को ही वास्तविक और परम त्याग कहते हैं। (महा. भीष्म 42.2) अतः यदि इसी जन्म में कल्याण चाहिये तो अपने संपूर्ण कर्मों के फलों को आज ही प्रभु को अर्पित कर कल्याण कर लेना चाहिये; क्योंकि त्याग से ही परम सुख रूपी दिव्य फल प्राप्त होता है, संग्रह से नहीं। संग्रह से मानव इतने सुखी नहीं होते जितने दुःखी उस संग्रह युक्त वस्तु की रक्षा करने से होते हैं। संग्रह को त्याग करने से मात्र समाज में अल्प समय की निन्दा हो सकती है; यह भी हो सकता है कि आपको रोटी, कपड़े और झाड़ू आादि की थोड़ी बहुत मशक्कत करना पड़े; परंतु अनन्य भक्ति की स्वतन्त्रता, प्रभु प्राप्ति एवं परम शांति केवल आपके खाते में ही होती है, भोगी के खाते में नहीं।

(49) बुद्धिमान की पहचान :

1.बुद्धिमान पुरूष संकट आने से पहले ही जाग उठता है ''महाभारत आदि पर्व 232.1'' अर्थात् भविष्य के दुःख की संभावना को देखकर वर्तमान में ही निष्पाप होने के लिये कम से कम 6 माह तक सतत् अनुष्ठान या अन्य उपाय अवश्य करता है, फिर भले ही उसे इन लगातार 6

माहों की कमाई या अन्य स्त्री आदि के क्षणिक सुखों को ही क्यों न छोड़ना पड़े? सच है जान है तो जहान है अन्यथा स्त्री, पुत्र, प्रेमी और धनादि भी बेकार है।

जान (स्वयं पूर्णतत्त्व) है तो जहान (आनन्द–तत्त्व) है।

जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।
स्त्री, पुत्र प्रेमी भी,
स्वार्थ के संसार है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

प्रथम कर्त्तव्य निष्पापता,
और भक्ति, गुरुतत्त्व महान है।
जो चाहता ऐश्वर्य को,
झूठा उसका मान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

अद्वैत ज्ञान सागर ही,
एकमात्र अमृत पान है।
सर्वमय कैवल्या ही,
ब्रह्मनिष्ठ की शान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

उपनिषद और गीता वाणी,
मुक्ति की परम खान है।
प्रवृत्ति मय कर्मकाण्ड ही,
पुनरागमन–पहचान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

क्षणिक सुखों में क्या रखा है,
संयम, ब्रह्मचर्य महान है।
विचारधारा हाड़–मांस की,
ले लेती जान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

मायापति की कर ले सेवा,
भोग्य–भाव बेजान है।
जो न करता गुरु की सेवा,
वह पशु समान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

पहचान अपना रूप परम,
तू कितना धनवान है।
फिरता क्यों मोह–पथ में,
गुरु–तत्त्व ही भगवान है।
जान है तो जहान है ,
शेष सब बेकार है।
क्यों जीव तू भूल रहा,

शिवत्व गंतव्य स्थान है।
मूल रूप से देना ही तो,
ज्ञान ही दिव्य दान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

पापी यदि करता विवाह,
आठ पहर ही काम है।
संघर्ष तो देखो दारा में,
कितना रखता ध्यान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

निगुरा दामाद क्यों चुना,
जो चहुँ ओर बदनाम है।
पुत्री क्यों नहीं मीरा सी,
क्या कुभाव की तुझे आन है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

पापपुन्ज से दुर्घटना घटती,
रहा नहीं बात मेरी मान है।
पत्नि भी होती विधवा,
काहे का गुमान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

भज ले अब तो राम–राम प्यारे,
यदि परिवार बनाना महान है।
व्यर्थ का चिन्तन त्याग दे अब तो,
यदि ध्रुव सी चाह संतान है।
जान है तो जहान है,
शेष सब बेकार है।

2. "मैं आपसे प्रेम करता हूँ" जिसने यह वचन ईश्वर के अलावा कभी भी किसी भी नारी से नहीं कहा। ऐसा व्यक्ति ही बुद्धिमान है। ऐसे मानव पर श्रीहरि एवं शिव हरपल अनुग्रह करते हैं। ऐसा प्रभु प्रेमी सोऽहं रूपी अपनी सत्ता को जानकर सदा परम आनन्द का भागी होता है।

3. जो नाशवान स्त्री रूप या अन्य दुर्गन्ध युक्त वॉडी के चिन्तन को त्यागकर सतत् मात्र ईश्वर के ध्यान में तत्पर है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली एवं महान बुद्धिमान है।

(50) भूमि पर शयन करने का फल :

जाने या अनजाने में भी कार्तिक में भूमि पर शयन करने वाला मनुष्य युग–युग के पापों का नाश कर डालता है।

(51) पुष्पों का उद्यान लगाने का प्रतिफल :

पुष्पों का उद्यान लगाने मात्र से 10 हजार वर्षों तक ध्रुवलोक प्राप्त होता है।

(52) ऐसे श्राद्ध करने पर महापाप :

पुत्रहीन ब्राह्मण को श्राद्ध के लिए न चुने। यदि योग्य ब्राह्मण न मिले तो पुत्र को या छोटे–भाई को या अपने को ही श्राद्ध में नियुक्त करे। ऐसी स्त्री जो गर्भपात करने वाली हो, रजस्वला हो, सूतक से युक्त हो, व्रत का नाश करने वाली हो, को प्रणाम न करे।

(53) दिशा शूल उपाय एवं इष्ट कवच के प्रभाव से शुभ यात्रा :

शनि, सोम का पूर्व में, गुरूवार को दक्षिण में, सूर्य शुक्र को पश्चिम में, बुध मंगल को उत्तर दिशा में शूल रहता है परंतु आवश्यक कार्य करना पड़े तो रवि को घी, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरू को दही, शुक्र को यव, शनि को उड़द खाकर यात्रा करना भी शुभ होता है और यदि आप इष्ट कवच का पाठ करके यात्रा करते हैं तो बिना वार देखे, बिना कुछ खाए (क्योंकि सारा फल कवच में है।) यात्रा की जा सकती है।

(54) ऐसे ब्राह्मण को कभी प्रणाम न करे :

पाखण्डी, पतित संस्कार भ्रष्ट, वेद या ज्ञान बेचकर भोगों को भोगने वाला, कृतघ्न, पाप परायण ब्राह्मण को कभी प्रणाम न करे अन्यथा समझें आपका दानादि व्यर्थ ही गया।

(स्कंद पुराण, वैष्णव खंड, भूमि, वाराह खंड)

(55) पाप की कमाई के दान का फल :

(तिर्यक योनि एवं इसी योनि में भोग) कर्मयोगी मानव 'परिवार के पोषण आदि अनिवार्य वस्तुओं में धन का उपयोग करने के बाद' बिना इच्छा के, बिना स्वार्थ के जो सुपात्र को दान करता है वही परम दान है। कुछ सकाम भाव (कि बदले में पुनः वापिस हमें मिलेगा, प्रभु दान का फल देंगे ही ऐसा विचारकर) दान करने पर उसका फल इहलोक में ही मनुष्य योनि में ही मिलता है। जो दयालु, जितेन्द्रिय, योनि दोष से मुक्त, भक्त, ब्रह्मज्ञानी, सद्गुरू अथवा सद्गुण से परिपूर्ण हो, गीता पाठ में संलग्न हो, वही प्रतिगृह (दान लेने का) का परम अधिकारी है। **श्रेष्ठ पुरूषों को दिया दान परलोक में स्वर्ग आदि के रूप में एवं धरती पर राजा पद (अर्थात् ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन) रूप में भोगा जाता है।** सकाम भावी दान इहलोक में क्षणिक काल तक भोगा जाता है, परंतु पाप की कमाई का दान तिर्यक योनि पाकर भोगा जाता है।

(56) सज्जन की शोभा :

नीतियों में महान नीति भर्तृहरि नीति है जिसके अनुसार कान की शोभा ज्ञान से है कुंडल से नहीं, हाथ की शोभा दान से है कंगन से नहीं, सज्जन परोपकार से शोभित होता है चंदन के लेप से नहीं।

(57) भगवान का परम निवास स्थान :

हे भक्त नारद! मैं न तो बैकुण्ठ में रहता हूँ और न योगियों के हृदय में ही। मैं तो मेरे अनन्य भक्त (पराभक्ति से युक्त) के अंतःकरण में (अद्वैत रूप के कारण) सदा ही विद्यमान रहता हूँ।
–स्कंद पुराण ब्राह्म खण्ड (हनुमान जी को श्रीरामोपदेश)

इस स्कंद पुराण के ब्राह्म खण्ड को जो भी मात्र एक बार बिना फल की इच्छा के स्वाध्याय करता है, वह प्रभु का साक्षात् पुत्र ही मानने योग्य है।

(58) अपरिग्रह व्रत से परम शांति :

जिसने अपरिग्रह व्रत अपना लिया है अर्थात् केवल शरीर संबंधी कर्म करके शेष भोगों की सामग्री का परित्याग कर अथवा भोग्य भाव से त्याग कर या समस्त कर्मों में स्वार्थ भाव का त्याग कर संपूर्ण कर्मफलों का त्याग कर दिया है, वही कर्मयोगी है, जो पापों को प्राप्त नहीं होता। ऐसे व्यक्ति के अंतःकरण में ही अनन्य भक्ति प्राप्त होकर कालान्तर में विज्ञानोदय (अद्वैत का हृदयंगम) प्रकट होता है और वह विज्ञानमय भक्त तत्क्षण ही साक्षात् मेरी समता पाकर मेरा ही स्वरूप हो जाता है; क्योंकि वह भलीभांति जान लेता है कि सर्वमय मात्र एक ही ब्रह्म है।

मैं आत्मा हूँ (ब्रह्म अर्थात् शिव ही हूँ।) शरीर या अन्य नहीं फिर जाति, वर्ण से मेरा क्या संबंध है? ऐसे आत्मज्ञानी के (सर्वमय ब्रह्ममय रूपी अद्वैत विज्ञान से गीता 4/34 का पालन करने के कारण गुरूकृपा होने पर) सारे बंधन एवं नियमादि की आज्ञा नष्ट हो जाती है। अनन्य भक्ति मात्र (यदि ज्ञान न हो तो भी) से भी साधक (भक्त) विप्र शिरोमणी कहा जाने लगता है तथा ज्ञाननिष्ठ तो साक्षात् शिव स्वरूप ही हो जाता है।

जब सब कुछ यहाँ छोड़ना ही है (1 पल का भरोसा नहीं) फिर क्यों हमें जगत का परिग्रह नहीं त्याग देना चाहिये? अर्थात् संग्रह को त्यागकर सदा एक मात्र प्रभु (गुरूतत्त्व अर्थात् परम प्रणव) का ही ध्यान या अद्वैत तत्त्व का ही आत्मा (स्वयं ब्रह्म) में सतत् अभेद दर्शन करके परम शांति प्राप्त करना चाहिए।

छोड़ना 'सबको' एक दिन होगा

छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
कितनी भी तू कर ले संचय।
चिता में एक दिन जलना होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

सारे राजन् यहीं समा गये,
मौत को अपने गले लगा गये,
परिग्रह नहीं अब करना होगा।
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

किस बात की दिखाता शान,
ईंट पत्थरों का झूठा मान,
सकाम धर्म से दुःखी होगा।
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

अद्वैत न मानकर संतों का,
बोझ जगत का ढोना होगा।
कर ले प्रीत कितनी भी,
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

कल्याण हेतु एक दिन सबको,
कार्तिकेय जैसा बनने हेतु,
जड़भरत सा विचरना होगा।
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

उपनिषद से होकर अभिन्न भावी,
यजन से मुक्त अब होना होगा।
माया के मिथ्या बंधन सारे,
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

मणिद्वीप आनन्द पाना होगा,
होकर एकाकी परम सत्ता से,
शिव ही सबको होना होगा।
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

सत्य शाश्वत पाना होगा,
आनन्द सरिता में होकर प्रवाहित,
दुःखों से मुक्त अब होना होगा।
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

पुत्र–परिवार या नारी रूप की,
आसक्ति से बचना होगा।
देख सर्वमय रूप अनोखा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

भोगार्थ भाव से नाश ही होगा,
भक्ति–ब्रह्मचर्य खास ही होगा।
न मानो गर अंशभूत कहता फिर भी,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

बिरले भू पर 'इंसा नेक' ,
महाभारत का लहू तू देख।
दंभ से निश्चित मरना होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा

शिव–गुरू का करके चिंतन,
पद कैवल्या पाना होगा।
जला चिता में चिंता सारी,
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

मिलकर सबको रहना होगा,
सीखकर सर्व–कुटुम्ब एकता।
द्वैत से मुक्त होना होगा।
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

शिव गोद में सोना होगा,
गर्भ से मुक्त होना होगा।
मान ले अब तो प्यारे बन्धु,
छोड़ना सबको एक दिन होगा,
छोड़ना सबको एक दिन होगा।

(59) पुराण–दान का माहात्म्य एवं श्रीमद्भागवत् महिमा :

पूर्वकाल में पुराण की मात्र एक ही महाप्रति थी, जिसके श्लोकों की संख्या सौ (100) कोटि अर्थात् एक अरब थी। हरि स्वरूप श्री वेदव्यास जी ने इसे 4 लाख श्लोक में बाँटकर 18 भागों में विभाजित कर दिया। देवलोक में अभी भी 100 करोड़ श्लोक के विस्तार से युक्त पुराण मौजूद है। पुराण संबंधी विस्तार और भी जानना चाहे तो स्कंद पुराण के प्रभास खण्ड में देखें। इस खण्ड में प्रत्येक पुराण के दान की भी महान महिमा दर्शायी गयी है।

अनेक जन्मों की तपस्या का फल :

श्रीमद्भागवत के सेवन से भयंकर पापात्मा या भटकती हुई आत्मा भी मोक्ष को प्राप्त कर लेती है। चारों वर्णों के लोग इस परम ग्रन्थ के सेवन (स्वाध्याय या श्रवण) से कल्याण को प्राप्त होते हैं। अनेक जन्मों तक साधना करते–करते जब मनुष्य पूर्ण सिद्ध हो जाता है, तब उसे श्रीमद्भागवत (निष्काम भाव की भावना के साथ) नामक परम वैराग्यमय महापुराण प्राप्त होती है। उद्धव जी ने भी यह भागवत कथा सुनी और श्रीकृष्ण (इष्ट) के परम प्रिय हो गए। श्रीकृष्ण जी ने स्वयं ही उद्धव जी को यह पावन ग्रन्थ भागवतजी की प्रेरणा दी तभी से उसी के प्रभाव से उद्धव जी बदरिकाश्रम में रहकर यहाँ की व्रज की लताओं और बेलों में निवास कर अनन्य भक्तों का कल्याण करते हैं।

(60) कर्मफल को प्रभु के लिए अर्पित कर गुरुभक्ति करना परमोत्तम कर्म शेष साधारण मात्र :

कर्मफल को प्रभु को अर्पित करना एवं अनन्य गुरुभक्ति कर उनकी ब्रह्मवाणी श्रवण परमोत्तम कर्म है। भक्तिमय या मोक्ष रूपी अद्वैत–विद्या एवं प्राणदान, गो, महल, मन्दिर, भूमि, कूप, घर, सुवर्ण, इन वस्तुओं का दान भी उत्तम है। अन्न (गेहूँ, चना आदि), बगीचा, वस्त्र तथा अश्व आदि वाहन मध्यम दान है। छाता, आसन, जूता–चप्पल, बर्तन, दही, मधु, दीपक, काष्ठ और पत्थर यह कनिष्ठ दान है। यह स्कंद पुराण में माहेश्वर खण्ड में स्पष्ट वर्णित है। जिसे देकर

बाद में पश्चाताप किया जाए (कि हे भगवान मैंने वह दान क्यों किया यदि नहीं करता तो पत्नि, पुत्र, गृह निर्माण आदि भौतिक भोगों के लिये काम आता) ऐसे दान का फल नष्ट हो जाता है, जो अपात्र को दिया जाए वह दान भी कोई मतलब नहीं रखता; क्योंकि वह इहलोक तक सीमित होता है। जो अश्रद्धा से (यह समझकर कि नहीं दूँगा तो पता नहीं क्या समझेगा मेरा दोस्त ही है) दिया जाए उस दान भी कोई अर्थ नहीं।

कर्मफल को प्रभु को अर्पित करने वाले परमोत्तम मानव को जो एक ग्रास पका भक्ष्य भोजन भी करा देता है वह मात्र इसी पुण्य से अपना महाकल्याण कर लेता है।

(61) परम कल्याण का स्वरूप :

जो व्यक्ति प्रत्येक प्राणी के प्रति समदर्शिता का भाव रखता है, ज्ञाननिष्ठ के चरणों का अनन्य सेवक है तथा उस ब्रह्मज्ञानी की हर सुआज्ञा मानता है, वह शिवत्व में स्थित गुरुदास मनुष्य न होकर साक्षात् परमेश्वर का ही स्वरूप है, यदि ऐसा व्यक्ति जाति का म्लेच्छ भी हो तो भी उसकी सेवा सुश्रुषा करने के लिये हमेशा तत्पर रहना चाहिये।

(62) कोडियो की महिमा :

कोडियो की महिमा दिव्य है, इसे हल्दी से रंगकर पीले कपडों में बांध दे। इससे लक्ष्मी का आकर्षण हाता है अर्थात् लक्ष्मी प्राप्ति में इनका महान योगदान होता है।

(63) सात दिनों की तपस्या से अनन्त साक्षात्कार अर्थात् बलराम प्रभु दर्शन :

श्रीमद्भागवत् 6:16:18–25 में वर्णित 8 श्लोकी महाविद्या का पाठ मात्र 7 दिनों तक नियमपूर्वक व्रत सहित से साक्षात अनन्त संकर्षण प्रभु के दर्शन हो जाते हैं जो कि ब्रह्मादि के भी स्वामी एवं परम रक्षा करने वाले हैं। संकर्षण प्रभु की महिमा को साधारण व्यक्ति किसी भी काल में नहीं जान सकता, इसी कारण श्री हरि सदा श्री संकर्षण प्रभु अर्थात् 'शेषनाग जी' के साथ ही प्रकट होते हैं।

(64) गुरू प्रसाद महिमा :

ब्रह्महत्या, गो घाट, मदिरा पान, चोरी, गुरू–पत्नि गमन, निन्दा, असत्य, कम नापा तोली, व्रत भंग, शरणागत को त्यागने का पाप आदि भयंकर पाप भी भगवान विष्णु के (बदरी क्षेत्र का) प्रसाद से तत्क्षण भस्म हो जाते हैं। स्मरण रहे धर्मग्रन्थों में सद्गुरू (ब्रह्मदाता) साक्षात् परमेश्वर शिव बताए गये हैं। वह ब्रह्मा, कृष्ण, विष्णु, महारूद्र, महाकृष्ण, सदाशिव एवं परब्रह्म

है। अतः कोई यदि बदरी क्षेत्र न जा पाये तो मात्र ब्रह्मनिष्ठ दीक्षागुरू के हाथ से प्रसाद (1 दाना भी) ग्रहण कर ले तो भी सारे पाप एवं मल नष्ट होकर वह विशुद्ध मोक्ष को पा लेता है।

देवी भागवत में हिमालय जी को माँ भुवनेश्वरी जी ने जो उपदेश गुरूतत्त्व पर दिया है, उस सार को देखा जाए तो ब्रह्मदाता ही साक्षात् परमेश्वर है। उस स्वरूप की पूजा से मैं मेरी अपेक्षा भी कोटि गुना फल देती हूँ इसलिए सर्वमय अद्वैत की सत्य भावना करने के बावजूद भी गुरू (शिव) में द्वैतभाव से ही सेवक बनकर सेवा करना चाहिए। गुरू प्रसादी से भयंकर पापपुंज भी अतिशीघ्र भस्म होते हैं।

गुरू में शिव बुद्धि करके सेवा करने मात्र से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। कुभाव, पाप, ताप, प्रारब्ध जनित पीड़ा एवं सारे मल नष्ट हो जाते हैं।

(अ) गुरूर्विश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चयः (वे साक्षात् परब्रह्म एवं विश्वनाथ हैं।)

(आ) अत्रिनेत्रः शिवः साक्षात् द्विबाहुश्च हरि स्मृतः। योऽचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरूः कथितः प्रिये। (गुरू ही शिव, महारूद्र, विष्णु तथा ब्रह्मा हैं, वे शरीर नहीं अपितु आत्मतत्त्व हैं जो सदा कल्याणकारी महाविराट ही जानने योग्य है।)

(इ) जो व्यक्ति प्रभु और गुरु को जब तक एक तत्त्व स्वीकार नहीं कर लेता तब तक उसे मुक्ति नहीं मिलती, फिर भले ही प्रवचनकर्ता कुछ तो भी मार्ग ही क्यों न बताते रहे?

शिवजी (लीलावश किसी स्वरूप से) यदि नाराज हो जाए तो ब्रह्मनिष्ठ गुरू (रूप से वही मूल शिवजी) बचा लेते हैं; परंतु गुरू (एकत्व धारी ब्रह्मविद्या युक्त) नाराज हो जाएं तो कोई भी नहीं बचा सकता, अतः कोशिश करे कि हर हाल में गुरू के समीप रहकर गुरू सान्निध्य ले, दान आदि से तृप्त कर प्रसाद चढ़ाकर उन्हीं के हाथ से प्रसाद (अंश) प्राप्त करें। यदि नित्य उनके पास नहीं जा सकते तो गुरूगीता रूपी पराविद्या के पाठ से भी अनुग्रह वश प्रभु का शाश्वत आनन्द एवं सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

(65) अक्षय फल :

सत्य युग की प्रवेश तिथि	:	**कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष का नवमी**
त्रेता युग की आदि तिथि	:	**वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया**
द्वापर की प्रवेश तिथि	:	**माघ कृष्ण पक्ष की मौनी अमावस्या**
कलियुग की आदि तिथि	:	**भाद्र कृष्ण त्रयोदशी**

इनमें किया गया दान, होम आदि अक्षय फल दाता है; परंतु गुरूगीता जी के पाठ से सदा ही गुरू सान्निध्य फल प्राप्त होने से अक्षय फल (अनंत फल) प्राप्त होता है। प्रत्येक युग

में 100 वर्षों तक सतत् दान या यज्ञ आदि करने से जो फल प्राप्त होता है वही 100 वर्ष का फल इस तिथि को करने मात्र से प्राप्त हो जाता है।

ब्रह्माजी के 1 दिन (1 कल्प अर्थात् 14 मनुओं की उम्ररूपी 14 मन्वंतर) में 14 मनु बदल जाते हैं। प्रत्येक मन्वंतर की शुरूआत निम्न तिथियों से होती है इस कारण इन तिथियों में दान–पुण्य भी अक्षय फल देने वाला होता है....

(1) आश्विन शुक्ल पक्ष की नवमी

(2) कार्तिक की द्वादशी

(3) चैत्र की तृतीया

(4) भाद्रपद की तृतीया

(5) फाल्गुन की अमावस्या

(6) पौष की एकादशी

(7) आषाढ़ की दसमी

(8) माघ की सप्तमी

(9) श्रावण कृष्णा अष्टमी

(10) आषाढ़ की पूर्णिमा

(11) कार्तिक पूर्णिमा

(12) फाल्गुन पूर्णिमा

(13) चैत्र पूर्णिमा

(14) ज्येष्ठ पूर्णिमा

(66) निरोगता हेतु सप्तमी तिथि की महिमा :

भगवान सूर्य सबसे पहले माघ मास की सप्तमी को रथ पर आरूढ़ हुए थे अतः इस (रथ सप्तमी) तिथि को जो भी दान, यज्ञ, प्रभु या सूर्य स्तुति करता है, वह धनवान, कीर्तिमान एवं निरोगी हो जाता है। सूर्य देव (स्वयं ऊँ सूर्य देव चोला से) इस तिथि में किए गए तप, जप व्रतादि से महान संतुष्ट होते हैं।

(67) ज्ञाननिष्ठता ही सर्वोपरि :

अद्वैतमय ज्ञाननिष्ठ के अभाव में मूर्ति की; परंतु मूर्ति के अभाव में भगवद् बुद्धि से पीपल (हरि स्वरूप) तथा वट वृक्ष (शिव स्वरूप) की पूजा की जानी चाहिए। शालग्राम शिला के चक्र में हरि निवास करते हैं तथा शिवलिंग में शिव। अतः प्रयत्नपूर्वक शालग्राम शिला और शिवलिंग की अर्चना करके (सदाशिव प्रीत्यर्थे) कल्याण तत्त्व पाना चाहिए। पलाश ब्रह्माजी के अंश से उत्पन्न हुआ है। जो पलाश के पत्ते में (कार्तिक मास में) भोजन करते हैं। इस प्रयास मात्र से ही विष्णु लोक प्राप्त होता है। तुलसी के अभाव में आंवले के नीचे पूजा करना चाहिए।

(68) रोग नष्ट करने हेतु :

प्रतिपदा तिथि में माँ भुवनेश्वरी की षोडश उपचार से पूजा करके गो–घृत अर्पित करना चाहिए खासकर नवदुर्गा की प्रतिपदा को। फिर यह योग्य ब्राह्मण को दे दे, स्वयं न ग्रहण करे।

(69) दीर्घायु हेतु :

माँ शेरावाली को द्वितीय तिथि में शर्करा का भोग लगावे, फिर ब्राह्मण को दे दे।

(70) दुःख दूर करने हेतु :

तृतीय तिथि को माँ भुवनेश्वरी जी की षोडश उपचार से पूजा करके गो, दूध अर्पित करे फिर इसे योग्य ब्राह्मण को दे दे; ऐसा करने से संपूर्ण दुःख दूर हो जाता है।

(71) विघ्न दूर करने हेतु :

माँ भुवनेश्वरी को चतुर्थी तिथि में मालपुआ का नैवेद्य अर्पित करे, फिर उसको योग्य ब्राह्मणों को खिला दे, इससे भयंकर विघ्न भी शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

(72) बुद्धि में वृद्धि हेतु :

पंचमी तिथि को केला का भोग लगाए एवं उसको ब्राह्मण को अर्पित कर दे। इसी उपाय में बुद्धि, विवेक जाग्रत होती है।

(73) सुंदरता एवं 'शोक के नाश' हेतु :

माँ शेरावाली भुवनेश्वरी जी को षष्ठी तिथि को मधु का भोग लगा कर ब्राह्मण को दान देने से रूप की सुंदरता प्राप्त होती है अर्थात् सौन्दर्य निखरता है तथा सप्तमी को गुड़ के नैवेद्य से शोक दूर होता है।

(74) शोक–संताप दूर हेतु :

अष्टमी को नारियल का भोग माँ भुवनेश्वरी जी को चढ़ाए, फिर प्रसाद रूप में ब्राह्मण, भक्त अथवा ज्ञानी ;अद्वैत ज्ञाननिष्ठ रूपी परम विप्र या अनन्य भक्त नामक महाविप्र) को दे दे तो शोक संताप नष्ट हो जाते हैं तथा नवमी को धान के लावा से पूजा कर ब्राह्मण को दान देने से लोक एवं परलोक का अक्षय सुख प्राप्त होता है।

(75) यमलोक भय दूर :

दसमी तिथि को माँ दुर्गा जी को काले तिल का नैवेद्य अर्पित करे, फिर ब्राह्मण को दे। इससे यमलोक का भय नहीं होता।

(76) पितृ उद्धार हेतु सरल उपाय :

पूर्णिमा या अमावस्या के दिन भगवती जगदम्बा को शुद्ध खीर का भोग लगाकर केवल योग्य ब्राह्मण को ही दे तो पितरों का उद्धार हो जाता है।

(77) पग–पग एक अश्वमेध :

ज्ञान मार्ग (सर्वमय अद्वैत भावमयता अर्थात् गुरुतत्त्व या श्री अभिन्न ज्ञान का पर्याय ब्रह्मविद्याद्ध पर चलते समय 1–1 पग पर अश्वमेध यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है।

(78) लीपने मात्र से महा लोक :

दिव्य लोक में आनन्द पाने का सबसे सरल तरीका : (वराह पुराण, अध्याय 139)

प्रभु वराहनाथ–हे देवि पृथ्वी!

(अ) मंदिर को लीपते समय मनुष्य जितने पग चलता है, उतने हजार वर्षों तक वह दिव्यलोक में आनन्द करता है। अर्थात् 1 कदम से वह एक हजार वर्षों तक दिव्य लोक पाता है।

(आ) 3 वर्षों तक मंदिर लीपने का कार्य जो भी सकाम भाव से करता है, वह धन, धान्य पाकर कृतकृत्य हो जाता है।

(79) मुक्ति ;अर्थात् यथार्थ ज्ञान) किसे प्राप्त?

यदि मुक्ति की इच्छा रखते हो तो असंयम एवं विषयों को विष के समान त्याग कर अपरिग्रह युक्त हो जाना चाहिए तथा भौतिक दृष्टि त्यागकर सर्वमय आत्मचिंतन अर्थात् परम अनुभूति करते हुए सर्वमय पवित्र प्रणवमय दृष्टि होना ही चाहिए।

–अष्टावक्रगीता

अध्यात्म उपनिषद भी कहता है–"जिसके द्वारा ब्रह्मतत्त्व जान लिया गया है, संसार के प्रति उसकी दृष्टि पूर्ववत नहीं होती, इसलिए यदि वह संसार को पूर्व के समान (भेद दृष्टि से) देखता है तो यह जानना चाहिए कि वह अभी तक ब्रह्म के अद्वितीय भाव (ब्रह्मभाव) को समझा नहीं है; बहिर्मुख है।

ब्रह्मज्ञान की अवस्था में दृष्टि ब्रह्मदृष्टि हो जाती है सामान्य नहीं रहती। चाहे कोई भी घटना घटती रहे वह ऐसी लगती है जैसे कि स्वप्न था जो समाप्त हो गया या टेलीविजन का सीरियल था जो काल्पनिक या नकली होने से कोई तात्पर्य नहीं रखता। पातंजल योगदर्शन के व्यास भाष्य में लिखा है–पृथ्वी पर खड़ा हुआ मनुष्य नीचे पृथ्वी पर खड़े लोगों को देखता है। ऐसे ही प्रज्ञारूपी प्रासाद पर खड़ा हुआ महान पुरूष स्त्री, पुत्रादि के कारण शोक करने वाले लोगों को देखता है। कहने का तात्पर्य है कि यदि हमें परम कल्याण चाहिए तो सर्वमय शिव दृष्टि रखना ही होगा।

–1/47 का व्यास भाष्य

(80) विशुद्ध ज्ञान :

गृहस्थ–संन्यासादि सभी आश्रमों से 'अनन्य भक्ति एवं अद्वैत ज्ञान मार्ग ही सर्वोपरि'

मानव तन एवं मन कल्याण के लिए है भोग भोगने के लिए नहीं। अतः जहाँ तक हो प्रभु कार्य करते रहो। प्रभु कार्य अर्थात् परम विशुद्ध मानव रूपी ब्रह्म की परम सेवा, क्योंकि भूखे, प्यासे के अतिरिक्त शेष परम फल मात्र ब्रह्मवेत्ता की सेवा से होता है साधारण से नहीं।

कर्मयोगी भी निष्पाप होने तथा सर्वोपरि कल्याण के लिए महालक्ष्मी या प्रभुमय शिवगीता जी के 6 माह युक्त अनुष्ठान से पाप भस्म करके (ताकि दुर्घटना न हो, स्त्री को बांझपन का दुःख न झेलना पड़े या किसी पूर्व पाप के कारण मिथ्या कलंक का सामना न करना पड़े, बालक को कष्ट न हो, भूत–प्रेत की पीड़ा न हो, पूर्व कुकर्म फल के कारण खतरनाक रोग न हो) धन कमाकर, महापतिव्रता नारी से विवाह करके घर–गृहस्थी में भी स्वार्थ बुद्धि नहीं रखते। पत्नि, बच्चों, गाय, पशु आदि में प्रभु को देखकर (न कि शरीर से प्रीति रखकर) ही

पालन–पोषण करते हैं उनकी सेवा यदि स्वार्थ बुद्धि से (कि मैं सेवा नहीं करूँगा; धन, वस्त्र, भोजन नहीं दूँगा तो वह मेरा कार्य कैसे करेगा? या मुझे सुख नहीं देगी ऐसा सोचकर) करोगे तो सेवा का कोई पुण्य फल नहीं होगा। अतः जो भी करो भगवान के लिए (स्वार्थ त्याग कर) करो। देकर किसी से भी लेने की इच्छा मत करो। प्रभु की कृपा से बस दाता बनने का माध्यम बनो, सत्संग श्रवण करो। गुरूसेवा करो। इस परम सेवा से ही आप सारे वाजपेय, अश्वमेध यज्ञों, तीर्थों, महान–महान दानों का तप, कीर्तन, अनाथालय एवं गौशाला निर्माण आदि का फल तत्क्षण प्राप्त कर लोगे और आप कल्याण का ही स्वरूप कहलाओगे।

दुष्ट स्त्री/दुष्ट पुरूष का परिणाम भयंकर होता है अतः दुष्टों से सदा बचने का प्रयास करे। श्रीमद्भागवत में साक्षात् श्री हरि ने कहा है कि, जिस गृहस्थी में स्त्री (पत्नि) कलह प्रिया, मुख दुष्टा, योनि दुष्टा हो उसके पति के लिए जंगल ही घर से बढ़कर सुखदायी है जिस पुरूष को पतिव्रता स्त्री प्राप्त नहीं हुई समझो कि उसे (किसी पापफल के स्वरूप में) साक्षात् राक्षसी एवं जरावस्था प्राप्त हुई है जो कि नित्य उसे खोखला करके श्मशान तक शीघ्र ही पहुँचाती है।

पतिव्रता स्त्री हर किसी कर्ममार्गी (गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास रूपी कर्म मार्ग में गार्हस्थ धर्मी जो कि वर्ण और आश्रम पर आधारित है) को प्राप्त नहीं होती; क्योंकि वह कर्ममार्गी जिसने पूर्वजन्म में तीर्थों में शरीर छोड़ा था या निवास किया था या उत्तम नारी हेतु शिवलिंग पूजा की थी वही जब परलोक में लाखों वर्ष भोगकर पृथ्वी पर जन्म लेता है तब उसे पतिव्रता, श्रेष्ठ स्त्री प्राप्त होती है। या यूं कहो कि यदि कोई पाप भी होंगे तो वे तीर्थों की सेवा या शिवलिंग सेवा से भस्म हो गए अन्यथा वे कुलक्षणा पत्नि द्वारा पीड़ा के रूप में, परेशानी रूप में सामने आते। {यदि वह कर्मयोग का आश्रय ले तब ही क्योंकि अनन्य भक्ति योगी या ज्ञाननिष्ठ या नैष्ठिक ब्रह्मचारी तो एक मात्र प्रभु के होते हैं। वे सदा ही सुमति, हरिकेस (दण्डपाणि), नारद, हनुमान, सनत्कुमार, विवेकानंद, रामानंद तथा शंकराचार्य या श्रेष्ठ ऊर्ध्वरेता मुनि (नैष्ठिक संयमी) की भांति मात्र प्रभुमय परमोत्तम अनन्य भक्त ही होते हैं और अनन्य भक्ति की महिमा तो अनन्त है**, पद्म पुराण के स्वर्ग खण्ड में बताया है कि गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास रूपी कर्म मार्ग, जो कि वर्ण और आश्रम रूपी धर्म पर आधारित है, वह प्रभु की अनन्य भक्ति की एक कला के हजारवें अंश के भी अंश के बरावर भी नहीं है। इसलिए श्रीमद्भागवत 10/80/34 'राम चरित मानस, श्रीराम–नारद संवाद' सार तथा गीता में भी भगवान ने स्पष्ट ही कहा है कि**

**'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।'**

अर्थात् तुम क्यों व्यर्थ ही स्त्री, पुत्र, परिवार रूपी माया के बंधन में लिप्त होकर मेरे अनन्य चिंतन को त्यागते हो? अतः सर्व धर्म–कर्म त्यागकर एक मात्र मेरा होने में ही सच्चा कल्याण समझो; क्योंकि मैं गृहस्थियों के यज्ञ, प्रजा, संतान, दानादि से वानप्रस्थी या संन्यासी

या मात्र नैष्ठिक ब्रह्मचारी के निवृति मार्ग से भी प्रसन्न नहीं होता, मैं तो मात्र और मात्र केवल सर्वमय अद्वैत भाव में स्थित मेरी स्वरूपता को प्राप्त ज्ञाननिष्ठ के चरणों की सेवा एवं सर्वमय अद्वैत के पालन मात्र से ही परम प्रसन्न होकर 14 भुवनों का साम्राज्य एवं मेरी सर्वोपरि कैवल्य मुक्ति भी इसी जन्म में ही प्रदान कर देता हूँ।

पद्म पुराण, कृष्ण भागवत एवं देवी भागवत की धर्म परिभाषा के अनुसार गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास ही सामान्य धर्म–कर्म है, जिसमें गार्हस्थ धर्म भयंकर प्रवृत्ति रूपी अविद्या मार्ग है जो कि प्रभु की अनन्य भक्ति की एक कला के हजारवें अंश के भी बरावर भी नहीं है, अतः जो वासना को त्यागकर अधिकांशतः अथवा आठों पहर ही नारी रूप के चिंतन को त्यागकर प्रभु के चिन्तन में तन, मन, और धन लगाते हैं कल्याण केवल उन्हीं का होता है वासनाग्रस्त लोगों का नहीं।

वासना की भूख...रामा!

वासना की रामा!
जिसे लगती भयंकर भूख है,
वह पति नहीं रामा!
वासना का कोई रूप है।

वासना सताती फिर भी,
ब्रह्मा–सृष्टि का नाम लेता है।
स्वयं पर अंकुश नहीं प्यारे,
दूजा नाम क्यों लेता है।

गृहस्थ वही जो आदर्श कहाए,
नाशवान जगत क्यों रूलाए।
मानव सुअर नहीं, है देव समान,
फिर क्यों सुअर सा काम सताए।

आज्ञा पालन कर गुरूवर की,
काम से क्यों नरक में जाए।
राम के जैसा बन के देख,
बार–बार क्यों ठोकर खाए।

छिपकर आँचल से क्यों कहता है,
पाप बोया तो क्यों रोता है।
बबूल और रेगिस्तान सा फल पाकर,
क्यों भूतकाल पर रोता है।

तूने क्या सोचा कि,
कुकर्मफल से तू बच जाएगा।
;मूरख तू कितना भयंकरद्ध
जिसे तूने दी पीड़ा,
वही काल तेरा बन जाएगा।

स्मरण रहे जो प्रभु के सतत् चिन्तन के बाधक तत्व अर्थात् स्त्री चिन्तन रूपी विष को ईश्वर के सतत् ध्यान के कारण या विस्मरण के कारण त्याग देता है वही महान भक्त है। मात्र माँस के लोथड़े के ध्यान से तो लोथड़ा अर्थात् दुःख का हेतु ही प्राप्त होता है कल्याणकारी शिव नहीं।

अतः इस वासना को त्यागकर (कर्ममार्ग हेतु पतिव्रता व्रत धारी श्रेष्ठ स्त्री न मिले तो विवाह को ही त्यागकर, क्योंकि इस स्वर्ग खण्ड में शादी के बाद भी मात्र संयम, ब्रह्मचर्य अर्थात् एक पुत्र रत्न (पुं नामक नरक से निजात के लिए) के बाद आजीवन ब्रह्मचर्य अपनाने की आज्ञा सूत जी द्वारा दी गयी है।) **मेरे अनुसार तो गीता 18/66 को शिरोधार्य करके स्त्री या संसार की परवाह ही छोड़कर एक मात्र मार्कण्डेय पुराण के सुमति भक्त की भांति मात्र ईश्वर का अनन्य भक्त बनकर इस कलिकाल में शीघ्र ही अपना कल्याण कर लेना चाहिए।**

नारी संबंधी अथवा स्त्री के धर्म–कर्त्तव्य की गर्जना भी शास्त्र केवल तभी तक करते हैं, जब तक कि उसे अनन्य भक्ति, दिव्य अद्वैत ज्ञान, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की क्षमता, वैराग्य, मुमुक्षा या मात्र नित्य गीता–पाठ/जप/स्वाध्याय या साक्षात् श्री इष्ट की प्राप्ति नहीं हो जाती, तदुपरांत उसे सभी नारी कर्त्तव्य एवं बंधनों से निजात प्राप्त हो जाती है।

साधारण नारी 'जो कि अद्वैत ज्ञान, अनन्य भक्ति, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की क्षमता, वैराग्य, मुमुक्षा या मात्र नित्य गीता–पाठ/जप/स्वाध्याय से रहित होती है' को मीरा या गोपी की भांति अनन्य भक्ति की प्राप्ति के लिए पति को ही धर्म, तीर्थ, व्रत एवं परमेश्वर मानना चाहिए। ऐसा करने से वह निःसंदेह अनन्य भक्ति एवं चित्रलेखा (पार्वती माँ की सहेली जिसका नाम पूर्वजन्म में कुमारी था जो महाकाल जी की पत्नि बनी। यह महाकाल शिवजी के परम भक्त हैं।) की भांति दिव्य ज्ञान प्राप्त करती है। पतिव्रता व्रत के साथ गालव मुनि की आज्ञा से जातिगत शूद्रों (शुद्धि कार्य तथा सेवा करने वाले) एवं ब्राह्मणों, क्षत्रिय, वेश्यों को शीघ्र अनन्य भक्ति हेतु शालग्राम शिला/शिवलिंग की पूजा एवं भागवत/शिवपुराण श्रवण या स्वाध्याय अनिवार्य रूप से करना चाहिए। पतिव्रता के पुण्य से पिता, माता और पति के कुलों की 3–3 पीढ़ियों के लोग स्वर्ग लोक में सुख भोगते हैं। बिना पतिव्रता स्त्री के घर श्मशान के तुल्य होता है। पतिव्रता नारी एवं गंगा में कोई भेद नहीं है; परंतु कामी प्रत्यक्ष खून चूसने वाली राक्षसी ही होती है, **इसलिए नारद पुराण में कहा है कि जो विवाह का/की इच्छुक हो**

उसे भोगी, रोगी, ओछे विचारों की, कामी, अंगहीन अभक्त महत्वाकांक्षी, वाचाल एवं अपतिव्रता नारी/नर से भूलकर भी विवाह नहीं करना चाहिए ।

भक्तिमति तो और भी महान है। वैराग्यवान अनासक्त स्त्री अथवा वैराग्यवान पुरूष को मात्र 1 कल्प तक ब्रह्मलोक प्राप्त होता है; परन्तु भक्त को दिव्यतम। साधारण गृहस्थ हो तो 51वें वर्ष में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करके (यदि कालान्तर में वैराग्य एवं अनासक्ति प्राप्त हो जाये तो) ही ब्रह्मलोक पा सकता है या नित्य गीता के 1 अध्याय के पाठ करने वाले को इसी जन्म के बाद (चाहे वह कुछ करता हो या न करता हो कुटिया में रहता हो या वन में) रूद्र लोक प्राप्त होता है। स्त्रियों का पतिव्रता धर्म ठीक है; परंतु **जो गीता के अनुसार प्रभु का हो गया उसके सारे कर्त्तव्य या अकर्त्तव्य समाप्त कर दिये जाते हैं** अर्थात् वह स्वतंत्र है। सारे बंधनों से मुक्त है। इस प्रकार की भक्तिमति को कुछ भी विहित या अविहित अनिवार्य नहीं है।

(81) कुकर्मी स्त्रियों के कर्मफल एवं अयोग्य दूल्हे से नरक :

जो स्त्री पति को छोड़कर अकेले मिठाई खाती है वह गाँव में सुअरी होती है। जो पति को तू कहकर बोलती है वह गूंगी होती है, जो पर पुरूष का संग करती है वह पत्नि कुरूप तथा कानी होती है। जो स्त्री क्षणिक सुख के लिए अपना शील भंग करती है वह अपने माता–पिता और पति के कुल खानदान को नरक दिलाती है अतः स्त्री/युवती के चरित्र को देखकर ही विवाह करना चाहिए तथा युवती के माता–पिता का फर्ज है कि वह अपनी पुत्री को संस्कारी बनाकर योग्य वर (गुणवान, धनवान, भक्तवान) को ही कन्यादान करे। पुराणों में अपनी कन्या को उत्तम वर की प्राप्ति कराने वाले गृहस्थियों के कल्याण के विषय में कहा गया है कि जो पिता अपनी परम गति चाहे, वह अपनी पुत्री को योग्य वर को अर्पित करे। यदि पिता अपनी कन्या पापी, दरिद्र, शराबी, व्यसनों से लिप्त और परस्त्रीगामी एवं गुरूदीक्षा से रहित अथवा अंगहीन वर को अपनी कन्या देता है तो उस पिता को भयंकर नरकों की प्राप्ति होती है।

विस्तार हेतु अक्षय आनन्द एक अद्वितीय कृति के गृहस्थ संबंधी अध्यायों का स्वाध्याय किया जा सकता है।

(82) पुत्री को दिव्य संयम संबंधी संस्कार देने का एक प्रमुख कारण :

पुत्री को दिव्य संयम संबंधी संस्कार देने का एक प्रमुख कारण यह है कि जो भी पति अपनी पत्नि के साथ 48 वर्ष या 12 वर्ष तक निष्काम भाव से या फलार्पण करते हुए सत्संग श्रवण के साथ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है वह कल्याण (ब्रह्मनिष्ठ ज्ञानी अर्थात् सदगुरु, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, मुमुक्षा, कैवल्या का एक मात्र साधन तत्त्वमसि के हृदयंगम) को प्राप्त होता है

अतः परम हित हेतु सत्संग, स्वाध्याय तथा ब्रह्मचर्य अनिवार्य है; क्योंकि उपनिषद यह भी करते हैं कि **जो भी गृहस्थाश्रम से पूर्व ही वैराग्यवान, मुमुक्षु या ब्रह्मचर्य के पालन हेतु तत्पर हो गया अथवा अनन्य भक्त (जिससे प्रभु ने जातिगत म्लेच्छ को भी विप्र शिरोमणि और महापंडित कहा है।) या मात्र गीता जी के नित्य 1 अध्याय अथवा 1 श्लोक का ही पाठ करता हो या कुछ न करे तो मात्र भागवत जी के अनुसार नैष्ठिक ब्रह्मचर्य में तत्पर हो गया उसके लिए धर्म–कर्म के नियमों गृहस्थ आदि बंधनों का पालन अनिवार्य नहीं।** वह वैरागी, भक्त, मुमुक्षु या ज्ञानी स्वच्छंद रहे, चाहे संन्यासी (शंकराचार्य, रामानंद, जड़भरत, सनत्कुमार, हनुमान, कार्तिकेय, विवेकानन्द की भांति) उस पर ही निर्भर करता है। स्मरण रहे संन्यास, वानप्रस्थ तथा गृहस्थ आश्रम रूपी बंधन, नियम, कर्त्तव्य तथा मर्यादाएँ उस व्यक्ति को वैराग्य, मुमुक्षा, अनन्य भक्ति, ब्रह्मनिष्ठ गुरू या अद्वैत ज्ञान की प्राप्ति के लिए ही रखी गयी हैं न कि बेवजह। अतः उचित है कि या तो इन वर्ण–धर्म आश्रम का पालन करे या इन उत्तम गुणों की शीघ्र प्राप्ति हेतु एक मात्र ब्रह्मनिष्ठ के सत्संग का या भक्त के सत्संग का या मुमुक्षु अथवा वैराग्यवान की वाणी को सुनकर अति शीघ्र लक्ष्य प्राप्त करे। प्रभु को संतुष्ट करने का तरीका मात्र तत्त्वमसि में स्थित सद्गुरूदेव की संतुष्टि है अन्य कुछ नहीं।
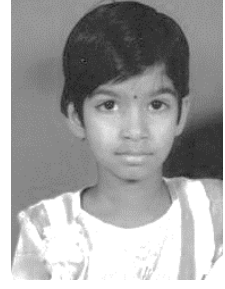
–आश्रम उपनिषद और श्रीमद्भागवत 10वां स्कंध

(83) कब तक गृहस्थादि के वर्ण, कर्म और धर्म अनिवार्य :

श्रीमद्भागवत् महापुराण, श्रीमद्भगवद्गीता एवं अन्य पुराणों के सारानुसार प्रत्येक वर्ण के व्यक्ति को जब तक वैराग्य, मुमुक्षा, अनन्य भक्ति 18/66, गुरू भक्ति 1/31 (जिसमें गृहस्थ, वानप्रस्थादि त्यागकर एकमात्र अद्वैतज्ञानी की चरणसेवा एवं अभिन्न वाणी श्रवण, मनन की ही शिव आज्ञा है), गीता (संपूर्ण फलदायी जिसमें प्रयाग, बदरी, मथुरा, काशी एवं पुष्कर सहित संपूर्ण महातीर्थ, संपूर्ण वर्ण–धर्म–कर्म सतत् उपस्थित रहते हैं), गुरूगीता (सर्व–अनन्त फलदायी), कैवल्य का हेतु अद्वैत तत्त्व या पंचाक्षरी (शिवाय नमः), पंचपदी रूपी महाशक्ति अथवा गुरू मंत्र के अनुष्ठान की इच्छा या नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पालन की क्षमता अथवा पुराण कथा श्रवण की तीव्रतम उत्कंठा या मात्र दुर्गा कवच (अर्थात् इष्ट कवच जो कि सर्वबन्धन काटकर शिवलोक दिलाता है) जाग्रत नहीं हो जाती तब तक उसे सामान्य मनुष्यों की भांति शास्त्रोक्त नियमों अथवा वेद के वर्ण–धर्म नियमों का पालन करना ही चाहिए, अन्यथा सांसारिक नियम के भंग होने से जगत की कार्य विधि में विक्षेप होता है तथा नरक प्राप्त होता है, परंतु वैराग्य तथा इससे भी श्रेष्ठ अनन्य भक्ति या सर्वश्रेष्ठ अद्वैतज्ञान रूपी पराभक्ति प्राप्त होने पर वह शास्त्रोक्त नियमों अथवा वेद के वर्ण–धर्मादि कर्म–कर्त्तव्यों से मुक्त कर दिया जाता है।

(84) नैष्ठिक ब्रह्मचर्य के पालन की महिमा एवं लोकों की स्थिति :

नैष्ठिक ब्रह्मचर्य के पालन मात्र से महान जनलोक प्राप्त हो जाता है, इस लोक में चिरंजीवी वेदव्यास एवं नारद जी के गुरु नैष्ठिक ब्रह्मचारी सनत्कुमार, सनक, सनन्दन एवं इनके प्रिय भाई निवास करते है; परंतु मात्र तपस्या करने वालों को इससे निम्न लोक महर्लोक ही प्राप्त हो पाता है।

–स्कन्दपुराण काशीखण्ड

श्री पद्म पुराण के स्वर्ग खण्डानुसार 'नैष्ठिक ब्रह्मचर्य के साथ' अनन्य भक्ति की महिमा तो और भी निराली है वैसे अनन्य भक्त की पहचान ही यह है कि वह सदा/हरपल शिवशक्ति या हरिशक्ति के श्रीचरणों में ही ध्यानमग्न रहे न कि नाशवान स्त्री चोले में, क्योंकि जो स्त्री का चिंतन करता है वह स्त्री के गर्भ की गन्दगी में ही प्रवेश करता है न कि परम माधुर्यतम प्रभु (उमावल्लभ या राधावल्लभ) के चरणों में। **अनन्य भक्ति तथा ब्रह्मचर्य के पालन की रक्षा हेतु ही राम चरित मानस में प्रभु श्री राम जी ने नारद जी को परम कल्याणार्थ विवाह करने से रोका था एवं गीता जी में भी पूर्णता हेतु सर्वधर्म त्याग कर (दण्डपाणि, जडभरत, ऋषभदेव, कपिल और चिरंजीवी हनुमान, वेदव्यासजी के गुरु नारद–सनत्कुमार, रामानंद, शंकराचार्य एवं मुनि पद हेतु संयम व्रतधारी) तथा कार्तिक जैसा बनने का ही संकेत है, इसके विपरीत तो (कपिल जी के अनुसार एवं मदालसा जी के अनुसार भी) मात्र जीवों को अविद्या मार्ग में फंसाना मात्र है।** और भी स्पष्ट जानना हो तो वशिष्ठ रामायण का स्वाध्याय किया जा सकता है। दिव्य हरिकृपा तो मात्र संयमशील (स्वार्थवश इंद्रिय तृप्ति न करने वाले अनन्य भक्तों) को ही प्राप्त हो पाती है। इसके विपरीत कैवल्य पद तो बिना गुरूसेवा (बशर्ते गुरू स्वयं अभिन्नभावी होना चाहिए) के हरि या शिवमूर्ति भक्तों को भी प्राप्त नहीं होता।

स्कंद पुराण में साक्षात् महादेव परमेश्वर ने कहा है कि, यदि परम पद की इच्छा हो तो चारों आश्रमों (गृहस्थ वानप्रस्थादि) को छोड़कर परम संयम के साथ अभिन्नमय गुरु की ही सेवा कर उनके अद्वैत–सत्संग का श्रवण करना चाहिए; क्योंकि श्रीमद्भागवत 10/80/34 (साक्षात कान्हा विग्रह) में स्पष्ट प्रभुवाणी है कि 'मैं ग्रहस्थ की प्रजावृद्धि, यज्ञादि क्रिया, तथा वानप्रस्थ एवं संन्यासी की शम, दम आदि तपस्या से प्रसन्न नहीं होता हूँ, मैं तो मात्र और मात्र अभेद दृष्टि रखने वाले गुरु की स्वतंत्र सेवा से ही प्रसन्न होता हूँ।

अतः कोटि गुना फल के लिए जगत के तीर्थादि को त्यागकर एकमात्र उन्हीं की शरण में रहना चाहिए। सदा ब्रह्मज्ञानी गुरूदेव की अद्वैत वाणी श्रवण ही करते रहना चाहिए। अन्य उपायों में परम सुख नहीं।

(85) निवृत्ति मार्ग एवं गृहस्थ में ब्रह्मचर्य :

मात्र निवृत्ति मार्ग ही तत्काल कैवल्या पद देता है, प्रवृति नहीं। मन एवं बुद्धि का समस्त भौतिक जड़ पदार्थों (वस्तु या शरीर) के प्रति अनासक्ति एवं कर्मफल का त्याग ही वास्तविक निवृति मार्ग है। स्वतंत्र तत्त्व चिंतन, सतत् अद्वैतमयता एवं महान गुरूभक्ति ही कल्याण का प्रधान कारक एवं प्रभु की महान आज्ञा है। (भागवत जी 10–80–34 नाहमिज्या प्रजातिभ्यां–''गीता 18–66 सर्वधर्मान्परित्यज्य एवं 4–34 का सार भी) दण्डपाणि, तुलसी शंकराचार्य, रामानंद, कपिल, वेदव्यासजी के गुरू सनत्कुमार एवं नारद जी भी जानते थे कि मानव 'जीव रूपी ईश्वर' का प्रथम लक्ष्य स्वयं शिव का अपरोक्ष अनुभव है न कि अविद्या मार्ग में लिप्त होकर पुनः 84 लाख योनि। श्री राम ने भी नारद जी से कहा था कि यदि कोई अग्नि या सर्प की ओर जाता है तो पुण्यात्मा गुरू, मदालसा जैसी माता उसे बचाते ही हैं एवं भागवत जी के अनुसार अकाल मृत्यु से बचने का सरल उपाय तथा बिना प्रयास के कल्पों तक मूर्तिमान वेदों के पास जाने हेतु ब्रह्मचर्य महान से भी महान व्रत है।

आश्रम उपनिषद एवं पद्म पुराण भी कहती है कि शीघ्र कल्याण हेतु सतत् 12, 48 वर्ष या आजीवन एक संतान के बाद सतत ब्रह्मचर्य (निवृति मार्ग का परम स्वरूप) अनिवार्य है। उपनिषद एवं श्रीमद्भागवत कहती है कि वैराग्य, मुमुक्षा, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य के साथ भक्ति के पालन या अद्वैत ज्ञान युक्त हो जाए तो उस एकान्त वासी वीतराग मुनि के लिए कुछ भी विहित या अविहित अनिवार्य नहीं, वह अकेला अर्थात् अद्वैत तत्त्व साक्षात् प्रभु तत्त्व ही है। वह चाहे तो बाल्यावस्था से ही संन्यास या एकत्व धारण कर सकता है। जैसे मेरे लिए कोई शास्त्राज्ञा या बंधन नहीं वैसे ही वह भी बन्धन से मुक्त, और तो और मेरे सर्वमय बोध के कारण मुझ साक्षात् शिव के यजन से भी मुक्त ही है। गीता में कृष्ण जी ने भी कहा है 'श्रद्धालु एवं जितेन्द्रिय भक्त को ही यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है कामकामी को नहीं'। यह तो कुछ भी नहीं ऐसे नैष्ठिक ही तो काशी के दण्डपाणि बनते हैं एवं महावीर हनुमान बनकर चार प्रकार के ब्रह्मचारियों एवं भक्तों में सर्वोपरि मुकुटमणि हैं। ऐसे भक्त या ज्ञानी ही पूर्ण रूपेण अभिन्नमय होकर संसार में बहुत बडी कल्याण पताका फहराते हैं। राष्ट्र समाज एवं स्वयं आत्मा के सच्चे साथी ऐसे ही धुरंधर होते हैं।

मात्र एकादशी व्रत एवं गीता स्वाध्याय से भी चारों आश्रमों का कर्मफल प्राप्त हो जाता है। हरि 28 नाम से भी 1000 कन्यादान, 10,000 गायदान तथा यज्ञों का फल तथा पुराणों से संपूर्ण दान–तीर्थादि फल प्राप्त और पापनष्ट हो जाते हैं, फिर चिन्ता कैसी?

परम परमोत्तम अभिन्नवादी गुरू की सेवा तो माता–पिता की सेवा से भी महान होती है। महारूद्र जी ने कहा है कि पूर्णता (अनन्य भक्ति एवं भक्ति की पराकाष्ठा रूपी अभिन्नज्ञान मयता) हेतु स्वाश्रमं (गृहस्थ वानप्रस्थादि) च स्वजातिं आदि को छोड़ देना चाहिए और क्षणभंगुर जीवन में हर पल समय के सदुपयोग हेतु ज्ञाननिष्ठ गुरू की सेवा/सान्निध्य पर ध्यान देना चाहिए।

(86) श्रेष्ठ सत्संग अतुलनीय फल :

1100 रूद्राक्ष धारण करके मनुष्य जिस फल को पाता है उसका वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता। 550 रूद्राक्ष के दानों का मुकुट पहना जा सकता है। हे पार्वती! रूद्राक्ष के समान फलदायिनी माला दूसरी नहीं; परंतु स्मरण रहे क्रिया, पूजा–अर्चनमय वाणी रूपी सामान्य सत्संग या पूजा–अर्चनमय वाणी रूपी सामान्य स्वाध्याय की अपेक्षा वैराग्य, प्रभु प्रेम में सतत् अश्रुधारा रूपी अनन्य भक्ति एवं परम सत्संग सर्वाधिक श्रेष्ठ है; परंतु प्रभु प्रेम में सतत् अश्रुधारा रूपी अनन्य भक्ति की प्राप्ति के लिए आरंभ में पूजादि क्रियाएं भी अनिवार्य है।

गुरूमंत्र (जप, अनुष्ठान), अपरिग्रह ब्रह्मचर्य तथा, सत्संग, स्वाध्याय के पालन की भी दिव्य महिमा है; क्योंकि महान उपनिषद कहते हैं कि तीर्थों में मात्र भ्रमण (वहाँ मात्र पूजा, प्रसाद, स्नान और दान मात्र) की अपेक्षा मंत्र अनुष्ठान (मंत्र पूर्वक पूजा करके सतत् जप का नियम) अधिक श्रेष्ठ है; परंतु पुरश्चरण के साथ ही यदि अधिक धन हो तो प्याऊ, धर्मशाला आदि दान, पुण्य करना ही चाहिए; क्योंकि धनवान भी आज्ञा से सेवकों द्वारा सारा कार्य करा सकता है। मंत्र अनुष्ठान की अपेक्षा स्वाध्याय (उपनिषदमय ब्रह्मविद्या–आत्मविद्या) एवं सत्संग (अद्वैत ज्ञाननिष्ठ) सर्वश्रेष्ठ है। स्वाध्याय एवं सत्संग की अपेक्षा सत्संग के सार को अंगीकृत करना और भी महान कल्याणकारी है। शूद्र एवं सामान्य स्त्रियाँ आरंभ में वेद, उपनिषद न पढ़कर कृपया पुराणों का स्वाध्याय करें। जब वे परिष्कृत हो जायेंगे और जब उन्हें मुमुक्षा, वैराग्य, भक्ति या पराविद्या, गुरूगीता प्राप्त हो जायेंगे तब सारे अधिकार पा लेंगे।

(87) सच्ची भिक्षावृत्ति : मैत्रेय उपनिषद

महादेव–हे मैत्रेय! अभेद दर्शन (एकत्व) ही ज्ञान है। अद्वैत भावना ही वास्तव में सच्ची भिक्षावृत्ति है एवं द्वैत ही अभक्ष्य (स्वीकार न करने योग्य) वस्तु है। भिक्षुक (अद्वैत का इच्छुक) को गुरू के अनुसार या भिक्षा की कामना माँगना चाहिए। हृदय रूपी आकाश में चैतन्य रूप सूर्य (परम तत्त्व) सदैव प्रकाशित है और फिर न वह अस्त होता है न उदय। फिर संध्या किस प्रकार की जाए अर्थात् कभी नहीं क्योंकि वह सदा ही हो रही है।

एकमेवाद्वितीयं यद्गुरोर्वाक्येन निश्चितम्।

यहाँ पर सभी कुछ एक ही है दूसरा कुछ नहीं। यह गुरू के उपदेश से निश्चित होता है। यह अद्वैत ही एकान्त है, मठ अथवा वन का मध्य भाग एकान्त नहीं है। यदि द्वैत बना रहे और जंगल या कोने में भी जाओ तो भी मुक्ति नहीं मिलती।

कर्मफलों का अर्पण एवं एकत्व ही संन्यास है अर्थात् जीव और परमात्मा की एकता का अनुभव एवं इस सत्य का हृदयंगम होना ही संन्यास है। कर्मों को छोड़कर और गृह त्याग के द्वैतभाव को न छोड़ने वाला संन्यासी नहीं। मात्र गृह त्यागी कहा जाता है।

हे मैत्रेय! जो मान, दान, दक्षिणा, अन्न, वस्त्र या प्रसिद्धि के लिए गृह त्याग कर संन्यास आश्रम में जाता है वह पतित होकर भ्रष्ट और पुनरागमन को प्राप्त करता है।

प्रस्तर, खण्ड, स्वर्ण या मिट्टी आदि की मूर्तियों की पूजा मात्र करके आत्म तत्त्व को न पहचानने वाले को मोक्ष नहीं मिलता अतः मोक्ष की इच्छा वालों को जगत की बाह्य पूजा त्यागकर आत्मा (स्वयं ब्रह्मतत्त्व अर्थात् सर्वमय शिव ही शिव) की पूजा करना चाहिए। उपनिषद के अनुसार कैवल्या रूपी कल्याण हेतु तत्त्व का चिंतन ही सर्वोपरि है। वेद, उपनिषद, पुराणादि का श्रवण, स्वाध्याय, चिंतन मध्यम है। मंत्रों का अनुष्ठान (साधना) अद्वैत हेतु अधम मार्ग है तथा तीर्थों में भ्रमण कर द्वैत में ही लगे रहना अधम से भी अधम है।

अतः सर्वमय शिव तत्त्व को देखकर स्वयं में भी पूर्ण परमात्मा देखकर स्वयं शिव की सेवा, पूजा करने वाला या ब्रह्म रूपी गुरू अर्थात् शिव तत्त्व की सेवा करने वाला ही कैवल्या का अधिकारी है अन्य नहीं। अतः स जीवः केवलः शिवः ही महासत्य है। जो सत्य अर्थात् अद्वैत रूपी भिक्षा गुरूदेव से ग्रहण करता है, वही परम ज्ञानी मेरा स्वरूप है भेदबुद्धि वाला नहीं।

(88) शत्रु की हार :

3 गोमती चक्र पर शत्रु का नाम लिखकर जमीन में दबा दे। शत्रु की हार का यह महान उपाय है।

(89) कोर्ट–कचहरी विवाद से निजात :

पेशी के समय कचहरी हेतु जाते वक्त गोमती चक्र को घर के बाहर रखे; तदुपरान्त सीधा चरण रखकर जावें तो सफलता प्राप्त होगी।

(90) मात्र कथा स्वाध्याय एवं माहात्म्य की महान महिमा :

कार्तिक मास के माहात्म्य, एकादशी कथा या पुराण कथा 'नित्य 1 पाठ मात्र' श्रवण ,या नाम स्मरण से भी निष्पापता एवं स्वर्ग की प्राप्ति हो जाती है। विश्वामित्र जी की वाणी "माहात्म्य" श्रवण कर शापित चूहा को भी ईश्वर की अनुकंपा से शरीर त्यागने के बाद दिव्य विमान, दिव्यपद एवं दिव्य रूप प्राप्त हुआ।

(91) कार्तिक मास में सोम महिमा एवं दरिद्रता दूर :

यदि कार्तिक मास (अगहन या वैशाख में) में सोमवार को कृतिका नक्षत्र होने पर शिव जी की पूजा की जाए तो भयंकर गरीबी भी सहज ही दूर हो जाती है। कार्तिक में प्रत्येक तिथि और वारों में की गई शिव पूजा से महान और फल (इच्छानुसार) प्राप्त होता है।

(92) वाक् सिद्धि :

कार्तिक मास के मंगलवार को स्वामी स्कंदजी की पूजा, दीपक, घण्टादान से वाक् सिद्धि होती है। कहने का तात्पर्य है कि जो कहा जाएगा वह सत्य होकर ही रहेगा।

(93) (अगहन) में केवल अन्नदान से संपूर्ण पाप भस्म :

मार्गशीर्ष (अगहन) में केवल अन्नदान करने से संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते है तथा आरोग्य, धर्म और भोग पदार्थ प्राप्त होते हैं। प्रभु की खुशी हेतु या निष्काम भाव से अन्न दान किया जाये तो सद्गुरू, भक्ति, ज्ञान तथा परम मोक्ष प्राप्त होता है।

(94) भक्त (पूजक) के चरणों के दर्शन मात्र से संपूर्ण पाप भस्म :

मार्गशीर्ष में आर्द्रा नक्षत्र या ज्येष्ठ मास में चतुर्दशी को महार्द्रा योग में शिवजी (या गुरूतत्त्व) की जो षोडश–उपचार से पूजा करता है वह महान पुण्य का भागी होता है। उस भक्त (पूजक) के चरणों के दर्शन मात्र से भी भयंकर पाप भस्म हो जाते हैं।

(95) कार्तिक मास की चतुर्थी को गणेश पूजन का महान फल :

कार्तिक मास की चतुर्थी को गणेश पूजन से महान भोगों की प्राप्ति होती है। भाद्रपद मास की चतुर्थी को गणपति पूजा से 1 वर्ष तक भोग प्राप्त एवं पाप नष्ट होते है कार्तिक और पौष मास में चारों वर्णों के लोग त्रिकाल स्नान, पंचाक्षरी जाप और प्रभु कथा के श्रावण मास से सब कुछ प्राप्त कर लेते हैं।

(96) आँवला महिमा अर्थात् आँवला का महान पुण्य फल :

आँवला की छाया में जो भी पुण्य होता है वह कोटि गुना पुण्य देता है। आँवला के स्मरण मात्र से गोदान का फल, दर्शन मात्र से दुगुना और फल खाने से तिगुना पुण्य होता है।

–स्कंद पुराण वैष्णव खण्ड कार्तिक मास माहात्म्य

आँवला जिस घर में सदा रखा रहता है वहाँ भूत–प्रेत, कूष्माण्ड और राक्षस नहीं जा सकते। जो कार्तिक मास में आँवला की छाया में बैठकर भोजन करता है उसके 1 वर्ष तक अन्न–संसर्ग से उत्पन्न हुए पाप का नाश हो जाता है।

(1) कार्तिक मास में तुलसी की माला और आँवले की माला धारण करने वाले को अनन्त पुण्य प्राप्त होता है।

(2) जिनके सिर के बाल आँवला युक्त जल से रंगे जाते हैं वे निष्पाप होकर दोष रहित होकर प्रभु को प्राप्त होते हैं।

(3) जो मनुष्य आँवला की छाया में बैठकर पिण्ड दान करता है, साथ ही इन्दिरा एकादशी व्रत तथा श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के सप्तम अध्याय का (श्राद्ध तिथि के समय) पाठ करता है या विष्णु पुराण के एक अध्याय मात्र का पाठ करता है, उसके पितर निश्चय ही भगवान विष्णु के प्रसाद से मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

जो व्यक्ति आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर एक भी जितेन्द्रिय ब्राह्मण दंपति या अनन्य भक्त, मुमुक्षा, वैरागी, संत या अद्वैतवादी (अभेद ज्ञानी) को भोजन कराता है, वह अक्षय पुण्य पाकर कृतकृत्य हो जाता है उसके अन्न दोष और अन्य पाप नष्ट हो जाते हैं।

आँवला वृक्ष के नीचे स्वाध्याय, पाठ अथवा श्रवण करने से अक्षय पुण्य फल प्राप्त होता है।

नवमी, सप्तमी, रविवार, चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण, संक्रांति, अमावस्या को आँवला से स्नान नहीं करना चाहिए; परंतु एकादशी को अनिवार्य रूप से आँवला से स्नान करे अन्य शेष तिथियाँ (1, 2, 3, 4, 5, 6, 8, 10, 11, 12, 13, 14, परंतु इनमें रविवार, अमावस्या आदि त्यागकर) ग्रहण योग्य हैं। कार्तिक मास में महान विशेष फलदायी है।

यह अंशभूत निश्चित ही

आशुतोष शिव सा कृष्ण रूप,
सदा मन को भायेगा।
मानो या ना मानो हमारा क्या जायेगा,
चक्रव्यूह से मुक्ति का करके गुंजन,
यह अंशभूत निश्चित ही;
आँखों से ओझल हो जायेगा।

सुनकर निश्चित ही तू,
भेदन चक्रव्यूह का कर जायेगा।
यदि रहा दंभ में तू;
खाक में मिल जायेगा।
यह अंशभूत निश्चित ही;
आँखों से ओझल हो जायेगा।

गुरूसेवा को परम औषधि जान,
सेवा से वैतरणी पार हो जायेगा।
पद, कीर्ति का यदि होगा गुमान,
पुनरागमन–गोद सो जायेगा।
यह अंशभूत निश्चित ही;
आँखों से ओझल हो जायेगा।

सद्‌गुरु का दर्शन ही,
जीवन अमर कर जायेगा।
रामेश्वरम् का चिंतन ही,
विजय हार पहनायेगा।
यह अंशभूत निश्चित ही;
आँखों से ओझल हो जायेगा।

नित्य के चिंतन सुमिरन से,
राग दूर हो जायेगा।
किया यदि रति का चिंतन,
चिता में जल जायेगा।
यह अंशभूत निश्चित ही;
आँखों से ओझल हो जायेगा।

अंजनी पुत्र के दर्शन से,
संयम में निखार आयेगा।
दूर होंगे जब कल्मष सारे,
यह आत्मा शिव हो जायेगा।
यह अंशभूत निश्चित ही;
आँखों से ओझल हो जायेगा।

(97) कार्तिक मास में इष्ट पूजा :

आश्विन की पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक शिव जी की प्रसन्नता हेतु आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (नवदुर्गा का पहला दिन) से कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तक माँ के प्रीत्यर्थे कार्तिक माह में स्नान करे। गणेश की खुशी हेतु आश्विन कृष्णपक्ष की चतुर्थी से कार्तिक कृष्ण चतुर्थी तक, श्री हरि जनार्दन की प्रसन्नता हेतु आश्विन शुक्ल पक्ष की एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक कार्तिक स्नान करने से और सूर्य प्रीति हेतु (सूर्य के तुला राशि पर स्थित होने तक) कार्तिक स्नान करे। कार्तिक में सदाशिव और भुवनेश्वरी स्वरूप श्री महाकृष्ण और राधा जी की पूजा करना चाहिए। जो कार्तिक मास में स्नान करता है वह जानकर या

अनजाने में ही क्यों न करे, सभी पापों से रहित हो जाता है तथा जो स्नान नहीं कर सके वह यदि स्नान कर्ता को कम्बल या रजाई दे तो भी पुण्य फल पा लेता है।

(98) महान धनी होने का उपाय :

एकादशी के अवसर पर जो अन्न नहीं खाता, अग्नि नहीं जलाता तथा बिना अग्नि में पकाये स्वयं वृक्षों पर पके हुए (नवमी के आसपास तोड़े हुए) फल खाता है उस पर कुबेर अत्यंत प्रसन्न होते है एवं उसे महान धनी बना देते हैं। मात्र एक रात्रि एकादशी को जागरण करने से करोड़ों पूर्व जन्मों के संचित पाप नष्ट हो जाते हैं। यदि साथ में जागरण स्थान के पास श्रीमद्भागवत या शालग्राम शिला हो तो एक–एक पहर में ही जागरण कर्ता को संपूर्ण तीर्थों, यज्ञों एवं दानों का फल प्राप्त हो जाता है एवं श्रीकृष्ण मंदिर में पहुँचने हेतु (इस रात्रि को) प्रत्येक कदम पर एक–एक अश्वमेध यज्ञ का पुण्य फल प्राप्त हो जाता है; परंतु 'श्रीकृष्णजी के अनुसार' जो मेरा भक्त इस दिन ज्ञाननिष्ठ गुरू की सेवा कर उनके चरणामृत को अपने मस्तक पर सींचता है एवं उनकी अद्वैत वाणी का श्रद्धा पूर्वक श्रवण करता है उसको मैं वह अमृत से महान एवं समस्त साधनों में श्रेष्ठ परम फल प्रदान करता हूँ जो कि साधारण या असाधारण यमों, नियमों, व्रतों, यज्ञों, दानों, तपस्याओं, जागरणों से भी प्राप्त नहीं हो सकता; परंतु जो शिष्य एकादशी को व्रत कर उपर्युक्त गुरूमय अमृत वचनों का सेवन करता है वह साक्षात् मेरा ही स्वरूप जानने योग्य है, उसके दर्शन मात्र से (या जो नित्य गुरू सान्निध्य फल प्राप्त करता है उसके दर्शन मात्र से) साक्षात् मेरे दर्शन का, शिव दर्शन का सूर्य आदि के दर्शन का परम पुण्य फल प्राप्त होता है एवं पुनर्जन्म प्राप्त नहीं होता। वह सदा के लिये कैवल्य मय हो जाता है।

7 मुखी रुद्राक्ष को शिवपुराणोक्त मंत्र के द्वारा धारण करने पर भी दरिद्रता एवं कर्ज दूर हो जाता है।

(99) संघर्षों, दुःख एवं भयंकर पीड़ाओं से मुक्ति हेतु दिव्य राम बाण स्तोत्र :

स्कंद पुराण में वर्णित दण्डपाणी स्तोत्र की अत्यंत महान से भी महान महिमा बतायी गयी है। यह स्तोत्र अतिशीघ्र व्यक्ति को उसी प्रकार शीतलता प्रदान करता है जिस प्रकार गंगा में स्नान से तुरंत ही शारीरिक शीतलता प्राप्त होती है। इस स्तोत्र का पाठ नित्य ही साक्षात् शिव पुत्र कार्तिकेय भी आज भी त्रिकाल संध्या में करते हैं। इस स्तोत्र के पाठ मात्र से वह फल प्राप्त होता है जो काशी में निवास करने वाले को एवं शिव चिंतन करने वाले को होता है। जो इस स्तोत्र का पाठ करता है उसे मृत्यु से पहले साक्षात् महादेव तारक मंत्र का उपदेश देते हैं जिससे वह सायुज्य मोक्ष (अपरोक्ष मय होने पर कैवल्या) प्राप्त कर लेता है। इस पाठ के करने वाले के शत्रु बिना प्रयत्न के नष्ट हो जाते हैं। इसके स्मरण मात्र से

संपूर्ण कार्य सिद्ध होना आरंभ हो जाते हैं। भूतकाल का कोई भी कार्य जो महान प्रयत्न से भी पूर्ण नहीं हो रहा वह पाठ के बाद से प्रभु दण्डपाणी (हरिकेस जो साक्षात् शिवस्वरूप हैं।) जी कृपा से पूर्णता को प्राप्त करने लगता है। जो व्यक्ति इस अष्टक को तीनों कालों में जपता है या सुनता है या लिखता है उसे पास बिना बुलाए ही संपूर्ण सुख सुविधाएँ धन, यश, कीर्ति एवं समस्त सिद्धियाँ आना आरंभ हो जाती हैं। साक्षात् काशी में भी बिना दण्डपाणी पूजन के कोई भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।

दण्डपाण्यष्टक स्तोत्र

स्कन्दजी कहते हैं :

महामते दण्डपाणे! यक्ष पूर्णभद्र धन्य हैं, माता कनककुण्डला भी धन्य हैं, जिनके उदर से आपका प्रादुर्भाव हुआ। यक्षपते! आपकी जय हो। पीले नेत्रों वाले धीरशिरोमणे! आपकी जय हो, पीले रंग की जटा धारण करने वाले देव! आपकी जय हो।

दण्डरूप महान आयुध धारण करने वाले वीर! तुम्हारी जय हो। अविमुक्त नामक महाक्षेत्र के सूत्रधार तीव्र तपस्वी दण्डनायक भयंकर मुख! विश्वनाथ प्रिय! तुम्हारी जय हो।

सौम्य स्वभाव वाले संतों के लिए तुम सौम्य मुख हो और दूसरों को भय पहुँचाने वाले पापियों के लिये भयंकर हो। काशी क्षेत्र में पापपूर्ण विचार रखने वाले मनुष्यों के लिये काल हो। भगवान महाकाल के परम प्रिय सबके प्राणदाता यक्षराज तुम्हारी जय हो।

तुम्हीं काशीवास, काशीनिवासियों को आनन्द तथा मोक्ष प्रदान करने वाले हो, तुम्हारी जय हो।

तुम्हारा शरीर बड़े–बड़े रत्नों की जगमगाती हुई ज्योति से प्रकाशमान है। तुम अभक्तों को महान सम्भ्रम और उद्भ्रम देने वाले हो और भक्तों के सम्भ्रम तथा उद्भ्रम का निवारण करने वाले हो। प्राणियों के अन्तकालीन श्रृंगार करने में परम चतुर तथा ज्ञान की निधि प्रदान करने वाले दण्डपाणे! तुम्हारी जय हो।

गौरीचरणारविन्दों के भ्रमर तथा मोक्ष का साक्षात्कार कराने में कुशल शिवभक्त शिरोमणी यक्षराज! तुम्हारी जय हो।

हे मुने! इस परम पुण्यमय यक्षराजाष्टक नामक स्तोत्र का मैं साक्षात् शिवपुत्र प्रतिदिन तीनों समय जप करता हूँ। जो बुद्धिमान अनन्य शिवभक्त, देवीभक्त, या हरि भक्त श्रद्धा पूर्वक दण्डपाण्यष्टक का पाठ करता है वह कभी विघ्नों से तिरस्कृत नहीं होता और काशी निवास का फल (बिना प्रयत्न के) पाता है तथा संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर लेता है।

(100) सर्वव्याप्त प्रभु फिर भी स्थान की महिमा :

भगवान हर जगह है। अतः इस सत्य को जानकर यदि कोई मूर्ति की अपेक्षा हवा, पानी, अग्नि में भी प्रभु को नैवेद्य का भोग लगाता है तो भी प्रभु वह नैवेद्य प्रेम से स्वीकार करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं; परंतु जिस स्थान पर सद्गुरू प्रभु का अभिन्न भावी ज्ञाननिष्ठ या अनन्य भक्त निवास करता हो या श्रीमद्देवी भागवत महापुराण, श्रीशिवपुराण, श्रीमद्भागवत, स्कंद पुराण या श्रीमद्भगवद्गीता अथवा परम स्तोत्र गुरूगीताजी हो या गंगा आदि पवित्र नदियाँ हो, अथवा जिस स्थान पर भजन कीर्तन से स्थान सिद्ध हो गया हो वहाँ पर पूजा–पाठ, जप, तप करने पर कई गुना फल प्राप्त होता है। गो के स्थान के समीप, तालाब या सामान्य नदी के किनारे पर भी फल का प्रतिशत घर की अपेक्षा उत्तम होता है। प्रभु जाप यदि रूद्राक्ष अथवा तुलसी माला से किया जाए तो वह भी सामान्य जप की तुलना में सहस्त्रों गुना फल देता है अतः प्रभु भले ही सर्वमय हों; परंतु उत्तम और अधिक फल हेतु स्थान एवं साधन भी उत्तम होना चाहिए।

(101) परम बुद्धिमान (साक्षात् बृहस्पति तुल्य) बनने हेतु शारदा कवच, याज्ञवल्क्य स्तोत्र एवं अन्य मन्त्र :

1. श्रीमहाकृष्ण द्वारा वर्णित (जिसे सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने प्राप्त किया था) विश्व–जय नामक सरस्वती कवच के नित्य जाप से एवं ऊँ **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा** नामक शारदा मंत्र से कोई भी प्राणी त्रिलोक में बुद्धि में प्रखरता लाकर दिव्य प्रज्ञा जगाकर कवियों का सम्राट, परम चतुर भाषण में प्रवीण एवं त्रिलोक विजयी हो सकता है, परंतु इस कवच की सिद्धि के लिये 5 लाख जप नियम पूर्वक अनिवार्य है। वास्तव में त्याग के बिना व्यक्ति का जीवन नीरस ही होता है। कवच की सिद्धि से माँ विशेष अनुग्रह भी करती है, जिससे वह भक्त सर्वज्ञ हो जाता है।

देवी भागवत महापुराण में वर्णित विश्वजय कवच (सरस्वती जी प्रधान कवच) के पालन से विश्व पर महाविजय (बुद्धि, ज्ञान, एवं विवेक के क्षेत्र में) सहज ही हो जाती है। यह कवच साक्षात् महाकृष्ण प्रभु ने ब्रह्माजी को एवं ब्रह्माजी ने भृगु की सेवा, प्रार्थना से खुश होकर कहा था इस कवच को धारण करने से ही शुक्राचार्य दैत्यों के गुरू बन गए। बृहस्पति जी ने भी मंत्र जाप के साथ यह स्तोत्र को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाया।

इसी कवच के प्रभाव से ही कणाद, गौतम, कण्व, पाणिनि, शाकटायन, कात्यायन आदि ग्रंथों की रचना करने में सफल हुए। वेदव्यासजी ने इसी कवच के प्रभाव से वेदों का विभाग और पुराणों का प्रणयन किया। **श्रीमद्देवीभागवत के 9वें स्कंध में इस कवच का वर्णन किया गया है।** इसको हरेक से कहने के योग्य नहीं। पाँच लाख जाप से यह (27 श्लोकी कवच) सिद्ध होता है। इस कवच से मानव कवियों का सम्राट, त्रैलोक्य विजयी, बृहस्पति के समान, परम चतुर होकर सर्वज्ञ हो जाता है।

2. याज्ञवल्क्य जी ने माँ शारदा की आराधना (सूर्यदेव की आज्ञा से कल्याणार्थ, शाप से मुक्ति का उपाय) करके सर्वस्व पाया। उनके द्वारा की हुई श्रीमद् देवीभागवत में वर्णित स्तुति याज्ञवल्क्य स्तोत्र नाम से प्रसिद्ध है। इस स्तोत्र के पाठ से भी कवीन्द्र पद प्राप्त होता है। भाषण कला में प्रवीणता प्राप्त होती है। कोई भयंकर मूर्ख ही क्यों न हो? इस याज्ञवल्क्य स्तोत्र को यदि सरस्वती जयंती से आरंभ कर नित्य 1 वर्ष तक नियमपूर्वक दोनों समय पाठ/श्रवण करता है तो वह निश्चय ही पण्डित, बुद्धिमान एवं महान हो जाता है। यह स्तोत्र भी विश्वजय कवच की भांति 27 श्लोक में है जो देवीभागवत में वर्णित है। कृपया वहीं से स्वाध्याय करें।

3. '**श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा**' यह महामंत्र भी ज्ञान प्राप्ति का अमोघ महामंत्र है जो कि हरि अवतार साक्षात् नारायण ऋषि ने वाल्मिकी जी को तथा वाल्मिकी जी से प्रार्थना करने पर वेदव्यास जी ने यह मंत्र प्राप्त किया। देवगुरू बृहस्पति जी ने अपनी प्रभुता इसी महामंत्र से मारीच की कृपा से प्राप्त की। सूर्यग्रहण के समय परशुराम जी ने शुक्र को यह रहस्य बताकर अमर किया, ज्ञाननिष्ठ किया।

चार लाख जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र को सिद्ध करने वाला देवगुरू के समान साक्षात् बृहस्पति ही हो जाता है। वर्तमान के समाचार पत्रों में इस मंत्र को एकाग्रता का दाता भी कहा जाता है।

4. जो महान मूर्ख होते हुए भी 1 महीने तक प्रतिदिन सरस्वती नदी में स्नान करता है तथा माँ के मंत्र का जाप करता है वह परम बुद्धिमान हो जाता है।

माता शारदा के मंत्रों को आरंभ करने हेतु माघ शुक्ल पंचमी उत्तम है। पहले गुरू और गणेश पूजन करके माँ शारदा की सेवा करें।

चौमासे में (श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक), पूर्णिमा के दिन, अक्षय नवमी तथा क्षय तिथि को, व्यतीपात, ग्रहण, जन्म नक्षत्र के दिन या अन्य पुण्य के दिन (जैसे दीपावली, कृष्ण जन्माष्टमी, शिवरात्रि आदि) जो सरस्वती नदी में स्नान करता है वह श्रीहरि का सारूप्य प्राप्त कर लेता है। और भी महत्वपूर्ण विद्यामय ज्ञान के लिए का स्वाध्याय करे।

(102) विद्या प्राप्ति हेतु श्रीकृष्ण मय दिव्य मंत्र :

1. **ऊँ कृष्ण कृष्ण महा कृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे।**
   रमा रमण विद्येश विद्यामाशु प्रयच्छ मे।।

यह 33 अक्षरों वाला महाविद्याप्रद श्रीकृष्ण मंत्र है इसके नारद ऋषि, अनुष्टुप छंद और श्रीकृष्ण देवता हैं। इस मंत्र के नित्य कम से कम 11, 21, 33, 51 मंत्र अथवा 1 माला जाप से प्रभु श्रीराधा प्रिय कन्हैया जी जप कर्ता को बुद्धि, विवेक, विद्या आदि देकर सर्व सुंदर गुणों एवं महान विवेक आदि से संपन्न कर देते हैं।

यदि 40 दिनों में इस महामंत्र का सवा लाख जाप किया जाए तो जप करने वाला निष्पाप होकर साक्षात् सरस्वती जी का स्वरूप तथा महान बुद्धिमान हो जाता है। जो अधिक माया रूपी धूर्तता में फंसने के कारण नित्य मात्र 5–6 माला आदि के कारण 40 दिनों में सवा लाख पूर्ण न कर सके उसे अनवरत् स्त्री संसर्ग से दूर रहकर 6 माह में अनुष्ठान को पूर्णता देना अनिवार्य है, तभी विशेष फल की प्राप्ति संभव है।

2. श्री रामचरित मानस की निम्न चौपाई को बसंत पंचमी से आरम्भ कर परीक्षा तक जपने से विद्या, विवेक में वृद्धि होकर परीक्षा में सफलता प्राप्त होती है।

"गुरु ग्रह गए पढन रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई।।"

3. **"योगेश्वर श्रीकृष्ण प्रसन्नो भव"** इस मंत्र को बसंत पंचमी को 108 बार जपकर, 31 बार लाल पेन से लिखकर परीक्षा के वक्त अपने पास रखने से भी सफलता का प्रतिशत बढ़ जाता है।
4. याददाश्त बढ़ाने के लिए–ऊँ ऐं स्मृत्यै नमः। इस मंत्र के नित्य जाप से स्मरण शक्ति में आश्चर्यजनक सुधार होता है।

(103) शिव रहस्य :

(महाशिवरात्रि, पंचाक्षरी, शिवलिंग, एवं शिवयोगी के पूजन का महान फल) तरक्की/प्रमोशन, श्रेष्ठ जीवन साथी, संतान, कामना पूर्ति, बुद्धि, वृद्धि, निरोगता हेतु :

1. आशुतोष शिव का भोलापन 'बड़ा ही षेला'

आशुतोष शिव वास्तव में बड़े ही षेले हैं। वे उस व्यक्ति को भी संपूर्ण तपस्याओं, व्रतों, नियमों, यज्ञों एवं दानादि का फल तत्क्षण ही दे डालते हैं, जिसने एक

भी शिवरात्रि को रात्रि जागरण एवं व्रत के साथ पंचाक्षरी (नमः शिवाय) से शिव लिंग की (बिल्वपत्र, कमल पुष्प या कुछ न हो तो जल मात्र से) पूजा की हो। वीरभद्र (जो आज त्रिलोक प्रसिद्ध हैं), राजा बलि, लोमश मुनि एवं अनगिनत ऐसे–ऐसे पदधारी हैं, जिनके पूर्व जन्म के कर्मों के विषय में जाना जाए तो रोंगटे खड़े हो जायें, फिर भी उन आशुतोष महादेव ने उनको भी मात्र इसी पंचाक्षरी एवं एक शिवरात्रि से ही वो परम पद दे डाला, जो बड़े से बड़े तपस्वियों को दुर्लभ है।

नमःशिवाय

अन्य शरीर सुखाने वाले सभी व्रतों की तुलना में शिवरात्रि, जन्माष्टमी (एक करोड़ एकादशी के तुल्य फलदाता) गुरुसेवा व्रत, गुरुचरणामृत एवं गंगा जल का नित्य पान ही सर्वश्रेष्ठ है। अतः गौरी पति महादेव का स्मरण (कम से कम शिवरात्रि को तो) अनिवार्य करें। और शीघ्र ही मनोकामना की पूर्णता को प्राप्त हो।

शिवलिंग के समीप (या ब्रह्मज्ञानी गुरू या अद्वैतवादी संत के समीप) अपनी शक्ति के अनुसार दान (दसांश अनिवार्य में अतिरिक्त, पालन–पोषण के बाद जो भी बचे उसी से श्रद्धा, विश्वास देखा जाता है।) करने से उस दान का 100 गुना फल प्राप्त होता है।

जो शिव जी को मात्र प्रणाम और नमस्कार करता है वह भक्त या ज्ञानी के कुल में पैदा होता है। जो मेरे आगे (शिवलिंग या गुरू के निकट गुरु की आज्ञा से) पुराण आदि का स्वाध्याय/पाठ करता है वह ज्ञाननिष्ठ होकर सर्वज्ञ परात्पर ब्रह्म हो जाता है।

2. निरोगता एवं धाम :

दूध और दही से शिवलिंग को स्नान कराने से निरोगता आती है। जल, दही, दूध और घी से स्नान कराने से 10 गुना फल प्राप्त होता है। जल, दही, दूध, घी से स्नान कराकर, गौधूम–चूर्ण द्वारा उबटन लगाकर फिर कपिला गाय के पंचगव्य से और गंगा जल से मुझे (शिव ब्रह्म को) स्नान कराने वाला और पूजा करने वाला मेरा धाम प्राप्त कर लेता है।

शिव मंदिर में दीपदान करने से उत्तम नेत्र शक्ति तथा कीर्ति प्राप्त होती है। जीव के द्वारा मेरी स्तुति से मोह का नाश हो जाता है एवं आरती करने से पीड़ा नष्ट होती है। शीतल चंदन अर्पण से मैं मानव के समस्त सन्ताप नष्ट कर देता हूँ।

3. शिवयोगी निर्मित एवं स्वयंभु शिवलिंग माहात्म्य :

इसी प्रकार नर्मदेश्वर–शिवलिंग, ज्ञानी या भक्तों द्वारा बनाई हुई अथवा महान स्वयंभु शिवलिंग की पूजा बिल्वपत्र और मात्र जल से करने पर अनंत लाभ तत्क्षण ही प्राप्त होते हैं। जो मात्र 1 शिवलिंग का निर्माण करता है, मात्र इसी पुण्य से वह शिवमय होकर

विहित–अविहित कर्मों से परे होकर सर्वज्ञ हो जाते हैं शास्त्र के सारे विधि निषेध उसके लिए हट जाते हैं और वह सर्वज्ञ हो जाता है।

जो शिवलिंग की ऊँ एवं शिवमूर्ति, पंचाक्षरी मंत्र के साथ पूजन करता है, वह सभी प्रकार की तपस्या, यज्ञ, दान एवं तीर्थ आदि का पुण्य फल प्राप्त कर लेता है तथा जो एक भी अद्वैतवादी शिवयोगी को भिक्षा मात्र देता है वह भी संपूर्ण तपस्याओं, व्रतों, नियमों, शमन–दमन, यज्ञों, दानों एवं समस्त ब्रह्माण्डों का दिव्य फल प्राप्त कर लेता है अतः शिवयोगी को साक्षात् परमेश्वर जानकर सदा उनकी सेवा–सान्निध्य तथा वाणी श्रवण में संलग्न रहें।

4. पंचाक्षरी द्वारा शिव पूजा एवं महान फल :

यदि मनुष्य पतित होकर सर्वथा कर्म करने के योग्य न रहे तो शिव पंचाक्षरी (शिवाय नमः जिसे विप्र या अनन्य भक्त ऊँ नमः शिवाय रूप में जपते हैं।) के अलावा अन्य मंत्र जपते हैं तो वे मानव नरकगामी हो सकते हैं; परंतु पंचाक्षर मंत्र के लिए ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। मात्र ऊँ नमः शिवाय न बोलकर शिवाय नमः बोले, स्कंद पुराण के अनुसार महाविशुद्ध (वैराग्य, मुमुक्षा, अनन्य भक्ति या दिव्य ज्ञान की प्राप्ति से या मात्र पुराण श्रवण से) होने से पहले शूद्र और स्त्री ऊँ न जपे।

जो मुझे पाने के लिए केवल जल पीकर और हवा खाकर (भोजन, फल त्यागरूपी) तपस्या करते हैं और नाना प्रकार के भयंकर कष्टदायी व्रतों द्वारा अपने शरीर को सुखाते हैं वे इन व्रतों (उपवासों) द्वारा मेरा लोक नहीं पा सकते, परंतु जो भी भक्ति और श्रद्धा पूर्वक पंचाक्षरी मंत्र से शिवरात्रि को मात्र एक बार या (मुख्य रूप से अष्टमी, चतुर्दशी, प्रदोषकाल और सोमवार को) मेरा पूजन कर लेता है वह भी मात्र इसी दिव्य पूजन से इस नमः शिवाय महामंत्र के प्रभाव से मेरे धाम में पहुँच जाते हैं।

स्कंद पुराण और शिव पुराण में वर्णित शिव महिमा पर विचार कीजिए जो महान कल्याणकारी है–हे श्रीकृष्ण! मैं उपमन्यु यह परम रहस्य तुमसे स्पष्ट कह रहा हूँ कि **तपस्या, यज्ञ, व्रत और नियम 'पंचाक्षर जप द्वारा शिव पूजन' (अभिन्न ज्ञाननिष्ठ या अनन्य भक्त में शिव की भावना करके या शिवलिंग अर्चन पूजन) की करोड़वी कला के समान भी नहीं है।** कोई मुक्त हो या माया के बंधन में बद्ध यदि वह ऊँ नमः शिवाय/या शिवाय नमः मंत्र द्वारा परब्रह्म (परमेष्ठि शिव) की पूजा कर लेता है तो वह अवश्य ही संसार पाश से छुटकारा पाने हेतु दिव्य ज्ञान पा लेता है।

हे केशव! ज्ञानदाता एक मात्र सदाशिव ही हैं और परम ज्ञान के द्वारा ही कैवल्या पद प्राप्त होता है अतः हे केशव! ब्रह्मा, विष्णु एवं रूद्र, महेश के एकमात्र स्वामी सदाशिव एवं

उनकी प्रिया परम उमा (जो सावित्री, लक्ष्मी, महारुद्राणी पार्वती, गंगा, मनसा, ऋद्धि–सिद्धि आदि की भी स्वामिनी हैं) की ही अनन्य भक्ति में रत रहो।

{लोमश ऋषि पूर्वजन्म में शूद्र थे उन्होंने मात्र एक बार शिवलिंग के लिए निष्काम भाव से जल चढ़ाकर कमल पुष्प से पूजा करते हुए शिवाय नमः बोला था; मात्र इसके प्रताप से आज आप जानते हो वह क्या हैं?

स्कन्द पुराण की यह कथा भी बड़ी रोचक है जिसके अनुसार पूर्वजन्म का जुआरी (जो वर्तमान में राजा बलि है जिससे प्रभु हरि ने वामन अवतार में 3 पग भूमि मांगी थी जो कि अगले मन्वंतर में इंद्र पद पाऐंगे एवं चिरंजीवी भी हुए।) एक वेश्या को सुगंधित पदार्थ एवं पान का बीड़ा देने जा रहा था, ठोकर लगी और वह वस्तु भूमि पर गिर गयी; परंतु उसने सोचा चलो इसे शिवलिंग को अर्पित करते हैं। उसने एक बार पंचाक्षरी से वह पूजा की, मात्र इस पुण्य के प्रताप से उसे पूर्व में 3 घड़ी का इंद्र पद प्राप्त हुआ तदोपरांत राजा विरोचन का पुत्र (प्रह्लाद कुल में प्रकट) हुआ और आगे उसे अनन्य भक्ति प्राप्त हुई तथा आज भी चतुर्मास में साक्षात् हरि उसके मुख्य द्वार पर पहरेदारी (लीलावश) करते हैं।

एक और कथा स्कंद पुराण में ही वर्णित है। वह हम अति संक्षेप में सुना रहे हैं। पूर्वजन्म का एक भयंकर चोर जिसने मात्र शिवरात्रि को (चोरी के उद्देश्य से मंदिर में जाने पर) शिव महिमा श्रवण के साथ जागरण किया। जनता मंदिर में रात्रि भर रही इस कारण उससे अनजाने में निराहार व्रत भी हो गया मात्र इसी पुण्य के प्रताप से वह निष्पाप हो गया और दक्ष यज्ञ के विनाश हेतु वे शिव जटा से प्रकट हुए जो आज भगवान का अभिन्न स्वरूप वीरभद्र नाम से प्रसिद्ध हैं। सोचो! प्रभु शिव की कितनी महिमा है।}

अतः हे श्रीकृष्ण! तुम पुत्र प्राप्ति के लिए उन्हीं परमेष्ठी शिव की शरण स्वीकारो। वह मोक्ष फल हेतु दिव्य विज्ञान भी दयावश (अत्यंत भोले होने के कारण) प्रदान करते हैं तथा संपूर्ण कामना भी सिद्ध करते हैं उन्होंने ही मुझे मात्र दूध माँगने पर दुग्ध का सागर ही प्रदान कर दिया। धन्य हैं साम्ब सदाशिव धन्य हे भोलेनाथ हे प्रभु! मेरा कल्याण करो कल्याण करो कल्याण करो। सुरभि एवं कामधेनु के विशुद्ध दुग्ध से बनी समस्त मधुर वस्तुओं और 56 प्रकार के व्यंजनों द्वारा आपको ऊँ नमः शिवाय महामंत्र के साथ मानसिक रूप से पूजन समर्पित है। हे नाथ! कृपा करो कृपा करो कृपा करो। हे गंगा! और दुर्गा सहित समस्त शक्तियों के स्वामी! मुझे पूर्णतः विशुद्ध एवं पावन बनाकर आपकी स्वरूपता प्रदान करो। आपको बिल्वपत्र, तुलसीदल एवं लक्षकोटि नीलकमल समर्पयामि.......मैं स्वयं आपको समर्पित हूँ। हे परब्रह्म! आपको ज्ञानदाता–वाणी धारण कर्ता रूप एवं दीक्षादाता रूप माध्यम से अर्थात् परात्पर मूर्ति के माध्यम से पुनः कोटि–कोटि नमन्।

महाशिवरात्रि व्रत से शिवलोक में प्रतिष्ठित होता है। जो शिवलिंग रूपी शिवजी को विल्ब पत्र चढ़ाता है। (नमः शिवाय मंत्र के साथ) वह अनेक युगों तक कैलास में निवास करता है और श्रेष्ठ शिवभक्ति पाकर परम विद्या और कैवल्य पद पा लेता है। संपूर्ण लोकों के स्वामी, देवता मात्र शिव या कृष्ण जी की भक्ति से ही लोकेष्ट हुए हैं। हे शिव–कृष्ण सच

बताऊं तो मेरे हृदय में आप दोनों के प्रति, आप दोनों के सौन्दर्य एवं महिमा को जानकर आपके विरह में तीव्र वेदना हो रही है। हे नाथ! आप दोनों का साक्षात्कार कब होगा?

प्रेम का अनुभव प्रेमी जाने

प्रेम का अनुभव प्रेमी जाने,
अश्रुशक्ति वही पहचाने।
नयन असुअन को,
विरह रूप माने।
प्रेम का अनुभव प्रेमी जाने,
अश्रुशक्ति वही पहचाने।

महारूप शम्भु सौन्दर्य सागर,
लक्ष रति–कामदेव नागर।
अंशभूत के कृष्ण ही जाने,
प्रेम–अवतार शेष बहाने।
प्रेम का अनुभव प्रेमी जान,
अश्रुशक्ति वही पहचाने।

समुद्र खारा असुअन से,
विरही सत्य केवल जाने।
जिनके अश्रु अनवरत् बहते,
उनको कृष्ण की राधा माने।
प्रेम का अनुभव प्रेमी जाने,
अश्रुशक्ति वही पहचाने।

कहाँ चले हो कृष्ण को लाने,
ज्ञाननिष्ठ को उनका रूप ही माने।
जो न मिलता तीर्थों में,
उसे सन्त चरणन् में जाने।
प्रेम का अनुभव प्रेमी जाने,
अश्रुशक्ति वही पहचाने।

5. शिवलिंग का अभिषेक एवं पूजा फल : महाशिवरात्रि में विशेष रक्षा

महाशिवरात्रि की रात्रि को परब्रह्म अर्थात् त्रिदेव के स्वामी सदाशिव जी अनन्त अग्नि स्तम्भ रूप से प्रकट हुए थे अतः इस रात्रि में शिव पूजन से अक्षय फल प्राप्त होता है।

उत्तर दिशा की ओर मुख करके निम्नलिखित सभी पूजा एवं अभिषेक करें। शिवपुराण के अनुसार विशेष तथा महान फल हेतु 'अभिषेकमय 10,000 मंत्र' एवं पूजन हेतु 1 लाख पुष्प अनिवार्य हैं। अधिक पूजन न बने तो मनोकामना की सिद्धि के लिए प्रदोष व्रत रखें या 40 दिन तक सवा लाख मंत्र अथवा स्थिति या अन्य क्रम से गीता जी का पाठ करें या 3 बार विधिपूर्वक शिवपुराण के पाठ से निष्पापता प्राप्त या कामना पूर्ण करें।

घर के संपूर्ण कलह नाश हेतु	:	दूध से अभिषेक
बुद्धि वृद्धि हेतु	:	दूध से अभिषेक
कामना पूर्ति	:	जल से अभिषेक
कामना पूर्ति	:	बिल्वपत्र से पूजन
भोग एवं मोक्ष	:	गंगा जल से अभिषेक
मोक्ष	:	आक, तुलसी–पत्र से पूजन
संतान/वंश हेतु	:	घी से अभिषेक
संतान/वंश हेतु	:	धतूरा पुष्प से पूजन
निरोगता हेतु	:	मधु से अभिषेक
दीर्घायु हेतु	:	दूर्वा से पूजन
श्रेष्ठ जीवन साथी	:	बेला से पूजन
अक्षय आनन्द हेतु	:	गन्ने के रस से अभिषेक

धन प्राप्ति हेतु सोमवार को 11 मधुरूपेण रुद्राक्ष शिवलिंग पर चढायें :

शिवरात्रि को रात्रिमय चारों पहरों की विशेष शिव पूजा का महान फल होता है। शिवलिंग को मात्र एक बार प्रणाम करने पर 15 अपराध दूर, स्नान कराने पर 20, पूजा करने पर 100 अपराध तत्क्षण भस्म होते हैं परंतु उपर्युक्त फलों को कोटि गुना करना हो तो सामान्य शिवलिंग की अपेक्षा पारद शिवलिंग या 12 ज्योतिर्लिंगों में से किसी एक की तन–मन–धन से सेवा करें या खरबों गुना फल हेतु मात्र अद्वैतज्ञानी में साक्षात् शिव–शंभु देखकर सेवा करें।

6. शिवलिंग की स्थापना करने का फल :

शिवलिंग की स्थापना करने से तथा मंदिर बनवाने से प्राणी 1 कल्प (14 इन्द्रों की मृत्यु समय) तक शिवलोक में निवास करता है।

अखण्ड बिल्वपत्रों और भांति–भांति के पुष्पों से शिवलिंग की पूजा करने से 1 लाख वर्षों तक स्वर्ग प्राप्ति, तदुपरांत राजा बनकर शिव भक्ति को प्राप्त होता है और शिव भक्ति करते–करते वह वीरभद्र, नदी, कार्तिकेय जी जैसा शिवप्रिय हो जाता है।

7. तरक्की/प्रमोशन के लिए शिवलिंग पर गोमती चक्र :

शिवालय में जाकर एक गोमती चक्र शिवलिंग पर चढ़ाने से तरक्की एवं प्रमोशन के सारे रास्ते खुल जाते है। परंतु स्मरण रहे स्थापित मूर्ति में कभी भी आवाहन एवं विसर्जन न करे एवं तरक्की या प्रमोशन होने पर सदगुरु देव को श्रद्धापूर्वक वस्त्रदान तथा मधुर भोजन अर्पित अवश्य करें।

8. 21 पीढ़ियों का उद्धार एवंशिवलोक 'रामेश्वर महालिंग माहात्म्य' :

(1) जो प्रातःकाल उठकर 3 बार रामनाथ (रामेश्वर) शब्द का उच्चारण करता है (रामेश्वर–रामेश्वर–रामेश्वर) उनका पहले दिन का पाप तत्काल नष्ट हो जाता है। प्राण त्याग के समय रामेश्वर शिव जी का स्मरण करे तो पुनर्जन्म नहीं होता। जो कहता है कि हे रामनाथ! कृष्णनाथ! हरिनाथ! रूद्रनाथ! हे सदाशिव! महादेव! करूणानिधे! हे परम गुरू! मेरी रक्षा कीजिए, मेरी रक्षा कीजिए, मेरी रक्षा कीजिए। उच्चारण से ही रक्षा हो जाती है।

(2) रामनाथ (रामेश्वर जो कि रामसेतु धनुष्कोटि में विराजमान है)! जगन्नाथ! धूर्जटे! नील लोहित! जो इस प्रकार सदा बोलता है उसे माया नहीं सताती। नीलकण्ठ! महादेव! रामेश्वर! सदाशिव! सदा ऐसा बोलने वाला प्राणी काम से कष्ट नहीं पाता (जितेन्द्रिय हो जाता है।)

रामेश्वर!

हे रामेश्वर! हे यमराज के शत्रु! हे कालकूट विष का भक्षण करने वाले शिव! (हे गुरूगीतेश्वर!) प्रतिदिन इस प्रकार का उच्चारण करने से क्रोध नहीं सताता।

(3) जो रामेश्वर महालिंग को गाय के दूध से स्नान कराता है वह अपनी 21 पीढ़ियों का उद्धार करके शिवलोक में पूजित होता है।

(4) जो दही से स्नान कराता है वह निष्पाप होकर विष्णु लोक में परम आदरणीय स्थान पाता है।

(5) नारियल के जल से कराया हुआ स्नान (रामेश्वर जी को) ब्रह्म हत्या जैसे पापों का नाश करता है।

(6) वस्त्र से छानकर शुद्ध किए हुए जल से स्नान कराने पर वरूण लोक।

(7) रामसेतु धनुष्कोटि में विराजमान एवं सर्वमय रामेश्वर! ऐसा उच्चारण करके जहाँ कहीं भी स्नान करे तो सेतु स्नान का फल प्राप्त होता है।

(8) जो रामेश्वर शिव के मंदिर की मरम्मत कराता या ईंट, सीमेन्ट आदि से मंदिर को बनाकर भव्य रूप देता है वह 10,000 ब्रह्म हत्याओं को जला डालता है। जो दीपदान करता है (प्रभु रामेश्वर के आगे) वह प्रकाश रूपी ब्रह्मविद्या पाकर कृतकृत्य हो जाता है।

श्री रामेश्वर शिव के उद्देश्य से (या गुरू में रामेश्वर शिव देखकर मात्र से) जो थोड़ा भी दान किया जाता है। वह सदा अक्षय फल दाता है।

(9) जो रामेश्वर महाक्षेत्र में निवास करता है वह कैवल्या पद पाता है। जो गंगा जल के द्वारा रामेश्वर नामक महालिंग को स्नान कराता है वह शिवजी के लिए भी आदरणीय हो जाता है।

(10) अश्वत्थामा का भयंकर पाप (सोते हुए पाण्डव संबंधियों की हत्या) सदाशिव जी की त्रिकाल सेवा तथा रामसेतु के धनुष्कोटि नामक तीर्थ में एक मास तक स्नान से ही भस्म हुआ था इस निष्पापता का ज्ञान इन्हें वेदव्यास जी ने (अश्वत्थामा के बार–बार प्रार्थना करने पर) दिया था अतः भयंकर पाप भी धनुष्कोटि में स्नान कर रामेश्वरम् महालिंग की सेवा करने से शीघ्र ही भस्मीभूत हो जाता है। 1 माह की तपस्या पूजा एवं 30वें दिन व्रत, रात्रि जागरण से उन्होंने प्रभु शिव के साक्षात् दर्शन भी प्राप्त किए तथा वरदान भी। इस प्रकार यह निष्पाप अश्वत्थामा अगले मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से 1 होंगे; परंतु सदैव स्मरण रहे जो ब्रह्मदाता गुरू (ऐसे दीक्षा गुरू जो कि ब्रह्मवेत्ता हैं अर्थात् अद्वैत ज्ञान से परिपूर्ण) हैं उनके परात्पर

शरीर में परमेष्ठी शिव रूपी रामेश्वर सदाशिव ही ब्रह्मदाता गुरू रूप में विराजमान रहते हैं अतः उनको भी साक्षात् विश्वनाथ, रामेश्वरम्, त्र्यम्बकेश्वर, मल्लिका अर्जुन, सोमनाथ, महाकालेश्वर आदि कहा गया है तथा उन ब्रह्मदाता गुरू 'परमेश्वर' का निवास स्थान ही काशी क्षेत्र, राम सेतु धनुष्कोटि, अवंतिका आदि कहा गया है अतः जो गुरूदेव को (शिवभाव से, ब्रह्मभाव से, रामेश्वरम भाव से) पूजा या सेवा करता है वह भी साक्षात् रामेश्वरम (दक्षिण दिशा का परम तीर्थ) और विश्वनाथ (काशी विश्वेश्वर) की सेवा, पूजा का फल तत्क्षण पा लेता है। वह भी संपूर्ण ब्रह्महत्या एवं अन्य जघन्य अपराधों से मुक्त हो जाता है। गुरू रूपी विश्वनाथ या रामेश्वरम् के दर्शन हेतु जाने पर भी भागवत जी की भांति पग–पग चलने पर ही एक–एक अश्वमेध यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है। धन्य है गुरू महिमा, काशी विश्वनाथ एवं रामेश्वरम्।

हे शिव! आपको गुरूनाम से, रामेश्वर नाम से तथा विश्वनाथ नाम से कोटि–कोटि नमन्। आपको शिवलोक की समस्त परम गायों द्वारा तथा सुरभि, कामधेनु, नंदिनी, कपिला गो द्वारा सारे उपचारों से (मानसिक रूप से) पूजा अर्पित है। दूध, दही, शहद, घी, शर्करा से स्नान, गंगाजल से स्नान अर्पित हो, वस्त्र अर्पित, भस्म धारण, रूद्राक्ष माला, त्रिशूल, डमरू अर्पित हैं बिल्वपत्र, नीलकमल, 56 भोग, ऊँ नमः शिवाय, पंचाक्षरी मंत्र के नाम सहित अर्पित हो। प्रभु! मैं सर्वमय शिवमय रहूँ। मुझसे कभी भी कोई गलती न हो। मेरे ब्रह्मचर्य व्रत की परम मुनियों (ऊर्ध्वरेता नैष्ठिक ब्रह्मचारी ब्राह्मण) की भांति रक्षा करो। मैं सदा अद्वैत भावी (एकमात्र शिव–ऊँ कार मय, सर्वमय) होकर गणेश रूप से, कृष्ण हरि अवतार रूप से, हरि रूप से, आपको पूजता रहूँ। आपके पंचाक्षरी मंत्र का जप या ऊँ कार का सर्वमय ध्यान करता हूँ। रूद्र महेश्वर रूप से भी आप सदाशिव को भजता रहूँ एवं आप गुरूवर (परमेष्ठी शिव) के हृदय में सदा निवास कर अभिन्न भावी होकर कैवल्य पद प्राप्त करूँ। हे प्रभु! आपकी जय हो जय हो जय हो.....

जो मानव रामेश्वरम् (सदाशिव रूप) नामक शिव–क्षेत्र की प्रसन्नता पूर्वक यात्रा करते हैं उन्हें पग–पग पर अश्वमेध यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है। श्री रामेश्वरम् महालिंग का दर्शन करने वाले पुरूष के दर्शन मात्र से दूसरे प्राणियों का पाप तत्काल नष्ट हो जाता है। जो नित्य गुरू तत्त्व का पराविद्या के माध्यम से सान्निध्य लेते हैं उनके दर्शन मात्र से पुनर्जन्म नहीं होता। श्री रामेश्वरम् (श्रीराम द्वारा पूज्यनीय सदाशिव रूपी रामेश्वर ज्योतिर्लिंग या महालिंग) की दिव्य महिमा है। जो एक बार भी रामेश्वरम् शिवलिंग का दर्शन कर लेता है वह भगवान शंकर के सायुज्य मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। (गुरूतत्त्वज्ञों, ज्ञाननिष्ठों एवं अनन्यभक्तों के हृदय में एवं उनके पास रखी दिव्य पुराण में सारे तीर्थ, ज्योतिर्लिंग समाविष्ट हैं; परंतु अन्य के लिए प्रत्येक तीर्थ अनिवार्य है।)

सत्य युग में 10 वर्षों में जो पुण्य किया जाता है, उसी को त्रेता में 1 वर्ष से ही प्राप्त किया जा सकता है, वही फल द्वापर में 1 मास में और कलियुग में 1 दिन में साध्य होता है;

परंतु जो मात्र भगवान रामेश्वरम् का दर्शन करते हैं उनको वही पुण्य कोटि गुना होकर एक–एक पल में (दर्शन समय में) ही प्राप्त होता है।

जो 1 समय, 2 समय या त्रिकाल संध्या के समय पर रामेश्वर नामक महादेव (शिव शम्भु) का स्मरण करता है या कीर्तन करता है वह पाप पुंजों से मुक्त हो जाता है। रामेश्वर शिवजी के स्मरण मात्र से यमराज की पीड़ा नहीं प्राप्त होती। जो प्रभु साम्ब सदाशिव को रामेश्वरम् नाम से प्रणाम (नमस्कार) करके पूजन करता है उनका जन्म लेना ही सफल है वह परम कृतार्थ हो जाता है। रामेश्वरम महालिंग में संपूर्ण 33 देवता, ऋषि–मुनि नामक महान ब्राह्मण तथा पितर विद्यमान होते हैं। जो इन प्रभु को सदा रामेश्वरम् रामेश्वरम् रामेश्वरम् रूप से ध्यान चिंतन करता है वह शीघ्र ही ब्रह्मज्ञान को प्राप्त कर कैवल्य पद भी पा लेता है अर्थात् सच्चिदानन्दमय अद्वैत रूप साम्ब सदाशिव को प्राप्त होकर सर्वज्ञ हो जाता है तथा पुनरागमन से रहित होकर पूर्ण हो जाता है।

करोड़ों जन्मों में किए गए जो कोई भी पाप हैं वे भगवान रामेश्वरम् (सदाशिव अर्थात् महादेव जो कि श्रीराम जी के हृदय में सदा बसते हैं) के दर्शन कर लेने पर तत्काल भस्मीभूत हो जाते हैं। अनन्य भक्ति और ब्रह्मज्ञान (सर्वयम ऊँ मय से मेरी स्वरूपता पाने पर) से मुक्ति सुनिश्चित है। **ऊर्ध्वरेता संन्यासियों को वेदान्त शास्त्र के श्रवण से जो मुक्ति प्राप्त होती है। वही मुक्ति सब आश्रम के लोगों को (अन्य पूजा जप–तप के बिना ही) मात्र रामेश्वरम् महालिंग के दर्शन से ही प्राप्त हो जाती है।**

सार रूप से कहा जाए तो जो भी (श्री कृष्ण 4/34 के अनुसार) ज्ञाननिष्ठ महात्मा की वाणी या उनके शब्द रूप स्वाध्याय के पास जाता है वह अतिशीघ्र (ब्रह्मज्ञान, अनन्य भक्ति, मुमुक्षा, वैराग्य या रामेश्वरम्, काशी विश्वनाथ, बदरी क्षेत्र अथवा गुरूतत्त्व को पाकर सहज ही उनकी कृपा के कारण) मोक्ष पद पा लेता है; क्योंकि वह ब्रह्मनिष्ठ की महिमा जानता है। ब्रह्मनिष्ठ अर्थात् ज्ञानी की सदैव श्रीहरि के आयुध सुदर्शन चक्र आदि एवं शिवायुध त्रिशूल आदि हर पल रक्षा करने में तत्पर होते हैं। यह आयुध साक्षात् प्रभु की तदीयता के कारण परम पूज्यनीय है। शिव आयुध ''त्रिशूल'' की महान महिमा है । शिव आयुध ''त्रिशूल के स्मरण से भी मानव की महा रक्षा होती है। यदि कोई प्रभु भक्त शिव जी के त्रिशूल का भयंकर संकट के समय स्मरण करता है तो वह शीघ्र ही प्रभु की रक्षा का पात्र हो जाता है।

हे त्रिशूल देवता! कृपया इस अंशभूत की सदा रक्षा करना; क्योंकि यह आत्मा सदैव शिव चरणों में निवास करती है।

जय जय जय शिव त्रिशूल

जय जय जय शिव त्रिशूल,
स्मरण से ही मिटते सारे शूल।
शिव धाम के दाता हो,
काशी प्रलय के तुम हो मूल।
जय जय जय शिव त्रिशूल,
स्मरण से मिटते सारे शूल।

क्षमा स्वामी से तुम करवाते,
हो जाती जो हमसे भूल।
सुदर्शन चक्र की भांति प्यारे,
तुम हो जग में परम न्यारे।
जय जय जय शिव त्रिशूल,
स्मरण से मिटते सारे शूल।

आपकी कृपा जो पाता है,
धन्य वह हो जाता है।
शरण में तुम्हारी आया हूँ,
क्षमा करो नाथ सारी भूल
जय जय जय शिव त्रिशूल,
स्मरण से मिटते सारे शूल।

भक्त हृदय को भाते हो,
शिव को तुम चाहते हो।
प्रिय पुष्प वैसे अर्पित,
जैसे शिव को आग का फूल।
जय जय जय शिव त्रिशूल,
स्मरण से मिटते सारे शूल।

ऊँ श्री रामेश्वराय नमः
ऊँ श्री रामेश्वराय नमः
ऊँ श्री रामेश्वराय नमः

(104) घर पर ही संपूर्ण तीर्थ :

ब्रह्मनिष्ठ गुरू, मुमुक्षा, भक्ति एवं अद्वैत ज्ञान हेतु सबसे सरलतम उपाय :

(प्रथम बिन्दु)–जो बालक अपने माता–पिता की सच्चे मन से सेवा करते हैं हर धर्म संगत आज्ञा का पालन करते हैं एवं जिनके सद्गुणों एवं सेवा से माता–पिता सदा संतुष्ट रहते हैं वे यदि अनन्य भक्त होने से पूर्व भी मृत्यु को प्राप्त हो गये तो उनको भी प्रभु श्रीहरि अपना परम पद बैकुण्ठ बड़ी ही सरलता से परम प्रसन्न होकर दे डालते हैं। अतः सर्वाधिक सरलतम इस महायज्ञ को कोई भी पुत्र कभी न छोड़े। परंतु स्मरण रहे वैराग्य, मुमुक्षा, अनन्य भक्ति एवं अद्वैत ज्ञान की प्राप्ति पर (गीता 18/66, शिवपुराण, रामचरितमानस मय राम–नारद संवाद, जनक–शुकदेव संवाद एवं भागवत पुराण के अनुसार) पुत्र पर कोई भी कर्त्तव्य एवं अकर्त्तव्य शेष नहीं रहता। जिन पतिव्रता स्त्रियों का एक मात्र धर्म पति बताया जाता है उन स्त्रियों के विहित एवं अविहित कर्म भी गोपियों, मीरा, गंगाबाई की भांति वैराग्य, अनन्य भक्ति, मुमुक्षा या अद्वैत ज्ञान प्राप्त होने पर नष्ट कर दिये जाते हैं; क्योंकि जन्म–जन्मांतरों के परम पुण्यों के दौरान ही अनन्य भक्ति एवं अभिन्न ज्ञान प्राप्त होता है। इस भक्ति एवं ज्ञान की प्राप्ति पर वह भक्त या ज्ञानी; नारद, जड़ भरत, शंकराचार्य, रामानन्दाचार्य, अंजनी पुत्र, सनत्कुमार, गौतम बुद्ध, चैतन्य महाप्रभु तथा विवेकानन्द की भांति नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन भी कर सकता है अथवा राष्ट्र धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिये गृहस्थ आश्रम या गृह भी त्याग सकता है। वह सदैव स्वतंत्र है क्योंकि उस पर शास्त्र आज्ञा नहीं देता। ऐसे ज्ञाननिष्ठों को मात्र एक दाना भिक्षान्न भी दे दिया जाये तो वह कोटि–कोटि जातिगत वेदज्ञ ब्राह्मणों की सेवा के फल का भी करोड़ों गुना फल देने वाला होता है।

पिता धर्म है, पिता स्वर्ग है, पिता ही संपूर्ण तपस्या का फल दाता है। पिता के प्रसन्न हो जाने पर संपूर्ण देवता प्रसन्न हो जाते हैं। जिसकी सेवा से माता–पिता नित्य तृप्त होते हैं उस पुत्र को प्रतिदिन साक्षात् गंगा स्नान का फल प्राप्त होता है।

माता सर्व तीर्थ मयी है और पिता संपूर्ण देवताओं का स्वरूप है। इसलिये सब तरह से माता–पिता की पूजन (गृहस्थ के कल्याण हेतु परम अनिवार्य है) करते रहें।

जो माता–पिता की प्रदक्षिणा (परिक्रमा) करता है उसके द्वारा तत्काल ही सात द्वीपों से युक्त समूची पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है। जो मूर्ख व्यक्ति माता–पिता की आज्ञा न होने पर भी तीर्थों में भ्रमण करता है (वह यदि अनन्य भक्त, मुमुक्षु, वैराग्यवान एवं एकत्वधारी न हो तो) वह पिता की हत्या का पाप बेवजह अपने सिर पर लेता है और मरने पर नरक प्राप्त होता है। जो पुत्र
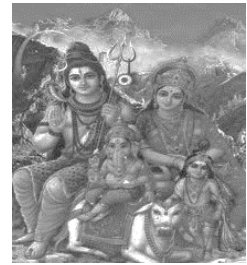
माता के बुलाये जाने पर तत्क्षण जी आज्ञा कहकर उनकी आज्ञा पालन हेतु आ जाता है उसे उसी क्षण अश्वमेध यज्ञ का पुण्य फल प्राप्त हो जाता है।

पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड में महादेव जी ने पार्वती के बार–बार प्रार्थना करने पर माता–पिता की और भी दिव्य महिमा का गान किया है।

महादेव : हे अन्नपूर्णा! आपके स्मरण मात्र से अन्न, धन–धान्य एवं समस्त पदार्थों की प्राप्ति का सुख स्मरण–कर्ता को प्राप्त हो जाता है। फिर भी कलियुग एवं समस्त युगों में एक आदर्श गृहस्थ परिवार के अंतर्गत माता–पिता की भी सेवा से महान पुण्य फल बताया गया है। समस्त तीर्थों (गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी, गंडकी, क्षिप्रा आदि) में किया हुआ स्नान (जो माता–पिता की आज्ञा से तीर्थ गमन कर निष्पाप कर स्वर्ग, ब्रह्मलोक एवं अन्य विशेष धाम प्राप्त कराते हैं) सभी यज्ञों का अनुष्ठान (राजसूय अश्वमेध, वाजपेय आदि) सब प्रकार के व्रत (यम, नियम, संकल्प एवं निराहार आदि) मंत्र एवं संपूर्ण दानों का फल भी माता–पिता के पूजन के 16वें अंश के बराबर भी नहीं है।

जो व्यक्ति अपने माता–पिता को वस्त्र एवं अन्न से स्वयं की ईमानदारी की कमाई रूपी धनार्जन से तृप्त करता है वह पृथ्वी सहित संपूर्ण पदार्थों को दान देने का फल प्राप्त कर लेता है परंतु जो माता–पिता को अपनी पत्नी अथवा बच्चों के स्वार्थ वश घर से अलग कर देता है अथवा जली कटी बातों से दिल दुःखाता है अथवा स्वास्थ्य खराब होने पर भी इलाज नहीं कराता वह कोटि कल्पों तक (यदि उसने सच्चे मन से माफी न मांगी तो) घोर नरकों में कष्ट प्राप्त करता है और वहाँ सोचता रहता है कि मैंने अपने एवं अपनी महत्वाकांक्षी एवं धर्मद्रोही पत्नी आदि के स्वार्थ में ये क्या कर डाला। हे भगवान! अब मैं क्या करूं? परंतु ऐसा करने अथवा विचार करने से कुछ नहीं होता।

अतः सभी स्वाध्याय प्रेमियों से अनुरोध है कि जीवन में कम से कम एक बार माता–पिता की पूजन कर प्रदक्षिणा करके समस्त भूमण्डल एवं आकाश आदि की प्रदक्षिणा का फल अवश्य पायें; क्यों व्यर्थ ही अपना समय, धन बर्बाद करते हो? परंतु स्मरण रहे यदि किसी के माता–पिता बालक की ईमानदारी, माता–पिता को तृप्त करने के बाद भूखों को अन्न दान, दया, गो सेवा, ब्रह्मचर्य पालन, मन का प्रभु स्मरण, यथार्थ साधु संत सेवा एवं ज्ञाननिष्ठ गुरूजनों की सेवा में अवरोध डालते हैं तो पुत्र यदि उनकी आज्ञा से अधर्म करता है तो तीनों को ही घोर कष्ट की प्राप्ति होती है परंतु जिस माता–पिता को अपने पुत्र की दीर्घ आयु, यश, पद, शरीर की दसों दिशाओं से रक्षा या उत्तम पुत्र (पोता) आदि की कामना हो तो पुत्र को एवं पुत्र अपने शिक्षित पिता को दुर्गा कवच या अमोघ शिव कवच, नारायण कवच, गणेश कवच अथवा सूर्य कवच का नित्य पाठ करने की प्रेरणा दे या स्वयं करे परंतु जिनके परदादा, दादा या (पिता जीवित न हो तो) उनके कल्याण हेतु इन्दिरा एकादशी व्रत, गीता सप्तम अध्याय का पाठ या उनके निमित्त विष्णु पुराण का मात्र एक अध्याय श्राद्ध काल में अवश्य पढ़े; क्योंकि विष्णु पुराण के मात्र एक अध्याय में वो शक्ति है जो पितृों के उद्धार

के लिये साक्षात् तत्क्षण ही कल्पवृक्ष का काम करती है। विस्तार से जानने हेतु निम्न अग्र लिखित बिन्दु अवश्य पढ़े।

(द्वितीय बिन्दु)–जो गृहस्थ ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी को (गंगा दसमी के दूसरे दिन) को मथुरा तीर्थ में यमुना स्नान करके उपवास पूर्वक श्रीकृष्ण की मूर्ति का

विष्णु पुराण

दर्शन करके पिण्ड दान करता है एवं इस पिण्ड दान से जो पितृों को तृप्त करने वाला दिव्य फल प्राप्त होता है वह सारा फल मात्र विष्णु पुराण के एक अध्याय को श्राद्ध काल में अथवा किसी विशेष पर्व के दिन अथवा आज ही स्नान कर कुशासन पर बैठकर श्रवण करने से अथवा सुनने मात्र से प्राप्त हो जाता है। यह स्वयं पितृों ने भी कहा था कि काश! कोई हमारे खानदान में ऐसा पुत्र उत्पन्न हो जो मथुरा तीर्थ में जाकर हमारे प्रीत्यर्थे यमुना स्नान करके व्रत पूर्वक श्रीकृष्ण की मूर्ति (युगल छवि अर्थात् राधेकृष्ण) का दर्शन करके हमें पिण्ड दान करे और हम परम कल्याण को प्राप्त हों या मात्र श्री विष्णु पुराण के मात्र एक अध्याय का फल हमको अर्पण करे अथवा नित्य गीता का पाठ करने वाले एवं सम्पूर्ण कर्मफलों को प्रभु को अर्पित करने वाले के मुख में द्वादशी के दिन या श्राद्ध के दिन पवित्र भोजन का हवन करें अर्थात खिलाएं। (उपर्युक्त संपूर्ण फल विष्णु पुराण के एक अध्याय से भी प्राप्त हो जाता है अथवा इतना भी न कर सके परंतु हम पितरों के कल्याण की परम इच्छा हो तो मात्र श्रीमद्भागवत महापुराण खरीदकर अपने घर के पवित्र स्थान में रखें; क्योंकि श्रीमद्भागवत की अनंत महिमा है। जिस घर में जब तक श्रीमद्भागवत रखी होती है तब तक उस पुराण को रखने मात्र से पितृ गण छप्पन भोग, दूध मलाई, मेवा मिष्ठान्न आदि से सहज ही तृप्त होते रहते हैं।)

(105) संपूर्ण रोगों के नाश हेतु भगवान सूर्य नारायण के 33 (21 पुराणों में वर्णित एवं 12 महादेव द्वारा गुप्त रूप से कार्तिकेयजी से वर्णित) नाम एवं दुर्गा मंत्र महिमा :

तपन, तापन, कर्ता, हर्ता, महेश्वर, लोक साक्षी, त्रिलोकेश, व्योमाधिप, दिवाकर, अग्नि गर्भ, महाविप्र, खग, सप्त–अश्ववाहन, पद्म हस्त,

धीराय नमः

तमोभेदी, ऋग्वेद, यजु:सामग, कालप्रिय, पुण्डरीक, मूल स्थान, भावित, (पुराणवर्णित 21 नाम जो कि सूर्य सहस्त्रनाम के समान फलदायक हैं। श्रीकृष्णजी के पुत्र को साक्षात् सूर्य देव ने ऐसा कहा) आदित्य, भास्कर, सूर्य, अर्क, भानु, दिवाकर, सुवर्णरेता, मित्र, पूषा, त्वष्टा, स्वयंभू, तिमिराश (शिव वर्णित 12 नाम) इन नामों में रोग नाश करने की अनंत शक्ति है। कोई भी

व्यक्ति यदि रविवार को एवं सप्तमी को व्रत कर प्रभु सूर्य देव को जल चढ़ाते हुए इन नामों से उन्हें पुकारता है वह भयंकर एवं नष्ट न होने वाले घातक रोगों से भी निजात पाकर धन, यश, कीर्ति से संपन्न हो जाता है। हालांकि आयुर्वेद की पुस्तकों में वर्णित उपचारों से भी भयंकर रोगों से शीघ्र ही छुटकारा पाया जा सकता है; परंतु जो चाहते हैं कि हमें कभी रोग छू भी न सके, तो फिर आदित्य प्रभु का स्मरण हर सप्तमी एवं रविवार को अपने इष्ट प्रीत्यर्थे अवश्य करे।

दीपावली की रात्रि में स्नान करके लगातार 3 रात्रि तक ध्यान, धूप, दीप एवं फलादि से माँ शेरावाली की पूजा करके 108–108 मंत्र जपे। दीपावली की महानिशा में की गई पूजा सहस्त्र गुना कल्याण करती है।

देहि सौभाग्यमारोग्यम् देहि देवि पर सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

(106) यात्रा की सफलता हेतु परम भक्त रामदूत रूद्र अवतार हनुमानजी के 12 नाम :

हनुमान, अंजनी सुत, वायु पुत्र, महाबली, रामेष्ट, फाल्गुन सखा, पिंगाक्ष, अमित विक्रम, उदधि, सीताशोक विनाशक, लक्ष्मण प्राणदाता, दशग्रीवस्य दर्पहा। जो व्यक्ति यात्रा से पहले श्री परम भक्त अंजनी पुत्र के इन 12 नामों का स्मरण करता है काल भी उस व्यक्ति से दूर भागता है। कालों के काल महाकाल का यह हनुमान स्वरूप भक्तों की रक्षा, दुष्टों के दमन, भूत प्रेतों का नाश कर्ता यात्रा काल में विजय दिलाने वाला एवं अनन्य भक्ति प्रदान कर साक्षात् प्रभु से मिलाने वाला है।

अतः कलियुग के परम वीर, परम शक्तिमान महाबलिष्ठ धर्मध्वज भक्ति ध्वज एवं विशुद्ध ज्ञानी हनुमानजी को भोले का शाश्वत कल्याण कर्ता शीघ्र हितकारी स्वरूप समझकर नित्य ध्यायें। वे सदा अमंगल को दूर करने वाले मंगल मूर्ति हैं। हनुमानजी की जय हो। हनुमानजी की जय हो। हनुमानजी की जय हो।

सीताशोक विनाशक

हे पवन पुत्र रामदूत अंजनी पुत्र रूद्र अवतार शंकर सुवन केसरी नंदन हे वानर राज! रावण के अहंकार का नाश कर्ता, लक्ष्मण प्राणदाता, सीता सुत स्वरूप हे स्वामी एवं स्वामी श्रीराम के परम हितकारी, कृपया सदा ही मुझ पर एवं मेरा कल्याण चाहने वालों पर कृपा

बनाये रखना। हे स्वामी मुझसे आपकी आराधना, सेवा, पूजा आदि कुछ भी नहीं होता। फिर भी मात्र दया कर अनुग्रह बनाये रखना। मुझे आपकी भांति विशुद्ध बना दीजिये। विशुद्ध बना दीजिये। विशुद्ध बना दीजिये। मेरे हृदय में साक्षात् मर्यादा पुरूषोत्तम सीता प्रिय श्रीराम को प्रकट कर दीजिये। श्रीराम को प्रकट कर दीजिये। श्रीराम को प्रकट कर दीजिये। कृपया ग्रन्थ रहस्य को जीवंत (मुक्ति का स्वरूप) कर दीजिये। जीवंत कर दीजिये। जीवंत कर दीजिये।

(107) जल दान से 'राजा पद'

वैशाख मास में **जल दान** की दिव्य महिमा है। नारद जी ने राजा अम्बरीष से कहा कि ''हे राजन्! ब्रह्मा (पिता) जी ने इस वैशाख मास को मासों में उत्तम घोषित किया है।

(1) सब दानों से जो पुण्य होता है और सब तीर्थों में जो फल होता है उसी को मनुष्य वैशाख मास में केवल प्यासे को जल दान (ज्ञान दाता गुरू, दीक्षा गुरू एवं माता पिता को जल से तृप्त करने से कोटि गुना फल) करके प्राप्त कर लेता है।

जलदान

(2) जो व्यक्ति वैशाख में सड़क के किनारे यात्रियों के लिए प्याऊ लगाता है उसे योग्य एवं दानी सुपुत्र प्राप्त होता है एवं विष्णुलोक में प्रतिष्ठित होता है। जो जलदान में असमर्थ है वह दूसरों को प्रेरणा देने से भी फल पा लेता है । स्कन्द पुराण में वेदव्यास जी ने एक बडी ही सुंदर सत्यकथा को पुराण का अभिन्न अंग बनाकर शामिल किया है, जिसमें पूर्वजन्म के एक पापी व्याध ने वैशाख के मास में एक ऋषि को जल भी न देकर सिर्फ जल स्त्रोत बताया था। मात्र इसी पुण्य के प्रताप से वह राजा के पद को प्राप्त हुआ था एवं साक्षात् स्वयं के हाथों से जल दान करने से सहस्त्रों राजसूय यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

(3) हे राजन्! जिसने वैशाख मास में प्याऊ लगाकर रास्ते के थके-माँदे मनुष्यों को संतुष्ट किया है उसने ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि देवताओं को सन्तुष्ट कर लिया। {जिसने संत, महात्मा, भक्त को तृप्त कर लिया उसे महान फल प्राप्त हो जाता है। यदि इस प्याऊ के जल की एक बूँद भी संतों के मुख में, ब्रह्मज्ञानी शिवयोगी के मुख में, भक्त या मुमुक्षु के मुख में पड़ गयी तो महान भाग्य एवं गौरव की बात समझना चाहिए और ब्रह्मनिष्ठ दीक्षागुरू को तृप्ति (जल, भोजन, धन, पदार्थ, छाता कंबल आदि) प्रदान कर दी तो समझे उसके समस्त ब्रह्माण्डों की अधिष्ठात्री माँ भुवनेश्वरी को परम प्रसन्न कर लिया} परंतु सकाम भाव से करने पर मोक्ष लाभ नहीं मिलता अतः निष्काम भाव (या पाप नाश हेतु) से करे।

(108) जल दान से 10,000 राजसूय यज्ञों का फल :

जो प्यास से पीड़ित महात्मा पुरूष के लिए शीतल जल को अर्पित करते हैं, वह उतने ही मात्र से 10,000 राजसूय यज्ञों का फल (जिसको करने में लाखों रूपये खर्च हो जाते हैं) पा लेता है उधर काशी पंचगंगा में स्नान मात्र से भी राजसूय एवं अश्वमेघ यज्ञ का पुण्य प्राप्त किया जा सकता है। शिव ही चराचर मय है इसलिए जीवों में साक्षात् शिव देखकर तृप्त करने से संपूर्ण फल प्राप्त हो जाता है। परंतु स्मरण रहे वस्त्र, धनादि दान के लिए योग्यता अवश्य देखे अन्यथा पाप फल प्राप्त होता है। जो त्रिकाल संध्या से हीन एवं परायी स्त्री को कुदृष्टि से देखने वाले ब्राह्मण को प्रणाम या कपड़े का एक अंश मात्र भी दान करता है उसे घोर कष्ट होता है अतः जल दान करने के अलावा अन्य वस्तु दान करने के लिए योग्यता अवश्य देखे।

(109) हवा दान से हरि–पार्षद फल एवं स्वयं जलपान से भी ज्ञान प्राप्त :

जो धूप से थके एवं परिश्रम से पीड़ित महात्मा पुरूष के लिए पंखा (वीजना) से हवा करता है वह मात्र इतने ही कार्य से (पूर्व पापों का नाश कर अर्थात्) निष्पाप होकर भगवान के पार्षद हो जाते हैं। कार्तिक व्रत के कुछ आंशिक फल से भी जय एवं विजय भगवान के द्वारपाल हुए। वास्तव में ग्रीष्म में हवा दान की महान महिमा है। जो मार्ग में थके हुए द्विज (पवित्र जातिगत), महाद्विज (अनन्यभक्त), परमद्विज (अद्वैतज्ञानी अर्थात् पराभक्त) को वस्त्र से भी हवा करता है वह उतने से ही मुक्त हो भगवान विष्णु का सायुज्य प्राप्त कर लेता है। महाद्विज (अनन्यभक्त) को हवा से कोटि गुना एवं परमद्विज (अद्वैतज्ञानी अर्थात पराभक्त) को वस्त्र से भी हवा करने से अरबों गुना फल प्राप्त हो जाता है। **जो प्रतिदिन प्रातःकाल ऊँ नमो नारायणाय रूपी अष्टाक्षरी मंत्र का जप करके ही जल पीता है, वह संपूर्ण पापों से मुक्त निरोगी तथा ज्ञानवान हो जाता है।**

(110) पुत्र प्राप्ति हेतु संतान गणपति स्तोत्र :

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च।
सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च ।।
गुरूदराय गुरूवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते।
गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने ।।
विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते।
नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने।।
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः।
प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने।।

शरणं भव देवेश संतति सुदृढ़ां कुरू।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक।।
ते सर्वे तव पूजार्थे निरताः स्युर्वरो मतः।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।

जो पुत्र प्राप्ति के इच्छुक हों वह यदि अनुष्ठान पूर्वक इस दिव्य संतान गणपति स्तोत्र का जाप करते या योग्य ब्राह्मण से 6 मास तक त्रिकाल संध्या में करवाते हैं तो निश्चय ही श्री गणपति की कृपा से दिव्य पुत्र–रत्न की प्राप्ति होती है।

वेद, शास्त्र और पुराणादि सदियों से स्पष्ट ही कहते आ रहे है कि हे मनुष्यों तुम क्यों व्यर्थ ही चिन्ता करते हो? मेरी शरण में आओ और दुःख दूर करो।

रहता क्यों है, तू उदास।

आजा पास,
बता दे आश।
क्यों हैं तू,
आज उदास।
संयम के
पालन से,
हरि हृदय में,
कर निवास।

आसक्त है
फिर भी,
क्यों रचा
भौतिक रास।

एक बात,
सुनले खास।
रहता क्यों है,
तू उदास।

इच्छा यदि, है
पूरी करना।
पुराण आज्ञा का,
न कर परिहास।
एक बात,
सुनले खास।
रहता क्यों है,
तू उदास।

कृष्ण बिन होता,
काव्य का नाश।
चाहे दोहा,
छन्द हो खास
एक बात,
सुनले खास।
रहता क्यों है,
तू उदास।

शिव का तू,
करले साथ।
आ जायेगी,
किस्मत हाथ।
एक बात,
सुनले खास।
रहता क्यों है,
तू उदास।

कमी देखकर,
दूसरों में,
क्यों करता,
व्यर्थ का, हास।
एक बात,
सुनले खास।

रहता क्यों है,
तू उदास।

जो करना है,
आज ही करले।
अन्यथा होगा,
तेरा उपहास।
एक बात,
सुनले खास।
रहता क्यों है,
तू उदास।

चुन ले तू,
महान कोई पाथ।
जिसमें हो,
सत्संग का साथ।
एक बात,
सुनले खास।
रहता क्यों है,
तू उदास।

अक्षय आनन्द का
वरण करके,
होगा तू
राम के पास।
एक बात,
सुनले खास।
रहता क्यों है,
तू उदास।

सुनना है यदि,
परम सत्य धर्म।
जान एक मात्र,
गुरू का मर्म
शेष रखा क्या,
तेरे जीवन में,
बन जा तू,
शिव का दास।

6 मास के,
अनुष्ठान से,
धन, यश, पुत्र
आयेगा निश्चित,
तेरे पास।
न हो तू उदास,
अब न हो तू उदास।

उदास न हो और अनिवार्य को पाने के अलावा एक मात्र भक्ति करते जाओ। तभी ठीक है; परन्तु जो व्यर्थ के पदार्थों को भोगने के लिए या व्यर्थ के कार्यकलापों के लिए समय नष्ट करते हैं, उनको तो देखकर ही राम राम राम! मेरी हँसी रुकती ही नहीं।

देखकर हँसी मुझे आती है।

तेरी बड़ी इमारत और उसकी,
सूखे कंठ की आधी रोटी
कैसे रास तुझे आती है।
सोचकर तेरी नीच भावना
दुर्भाग्य पर तेरे, हँसी भयंकर आती है।
मूर्खों के इस मेले में,
जड़भरत सी हँसी ही भाती है।

कुर्सी के लालच से,
जान पर बन आती है।
जान चाहे जाए फिर भी,
कुर्सी मन को भाती है।
पापी को रिश्वत ही सुहाती है।
मूर्खों के मेले में,
भयंकर हँसी मुझे आती है।

तेरे अकेले भोग–योग से,
क्या गरीब की क्षुधा मिट जाती है?
तू भोग कैसा भोग रहा,
क्या गर्भ की सुधी नहीं आती है।
स्वार्थ रूपी पाप से ग्रस्त,
मूर्खों के मेले में,
भयंकर हँसी मुझे आती है।

हठ करके क्यों अड़ा है,
काल सबके सिर खड़ा है।
फिर भी हठी मूर्खानन्द स्वामी,
माया के पीछे क्यों पड़ा है।
समझ अब तो गीता भी समझाती है,
मूर्खों के मेले में,
भयंकर हँसी मुझे आती है।

अच्छे लोगों की भी कमी नहीं है,
जो 'अमर' शहीद हो जाते हैं।
ऐसे पापियों से देश हो रहा खोखला,
जो मातृभूमि तो क्या, माँ का खून पी जाते हैं।
अपने कपूत को देख–देखकर अंखियां नीर बहाती है।
मूर्खों के मेले में,
भयंकर हँसी मुझे आती है।

क्या है तेरा? और क्या मेरा ?
व्यर्थ संग्रह क्यों करता है।
प्यास के लिए पानी दिया,
मदिरा पान क्यों करता है।
क्या समझ नहीं तुझे आती है,
मूर्खों के मेले में
भयंकर हँसी मुझे आती है।

झरते अश्रु दुखियन पर,
कृपा रास ही आती है।
हे कृष्णा दया करो,
अक्षय दुग्ध धारा धरा पर,
क्यों नहीं रसिया आती है।
मूर्खों के मेले में,
भयंकर हँसी मुझे आती है।

(111) कर्ज से मुक्ति हेतु :

1. जो साधक दीपावली को श्वेतार्क गणपति जी की स्थापना कर नित्य दूर्वा चढ़ाता है, उस व्यक्ति को शीघ्र ही कर्ज से मुक्ति मिलती है।

2. जो साधक कार्तिक अमावस्या के दिन को उपवास रखकर इसी शाम अर्थात् दीपावली की शाम को श्री महालक्ष्मी जी के लिए कमल पुष्प की शैया (बिस्तर) अर्पित एवं गीता रूप श्री कृष्ण जी को तुलसीदल अर्पित कर दीपदान सहित पूजा करता है एवं पूजा–पाठ करके योग्य ब्राह्मण एवं गरीब को भोजन करवाकर स्वयं ग्रहण करता है, उसके लिए मैया कुबेर अर्थात् धन के कोषाध्यक्ष का भंडार खोल देती है।

3. ऋण मोचन लक्ष्मी जप :

कर्ज से मुक्ति हेतु 21 माला का जप ''मात्र एक रात कार्तिक अमावस्या को उपवास रखकर दीपावली की रात को'' करना अनिवार्य है। मन्त्र इस प्रकार है।

ऊँ नमो ह्रीं श्री क्री श्रीं क्लीं

श्रीं लक्ष्मी मम् ग्रहे धनं चिन्ता दूर करोति स्वाहा।।

(112) साक्षात् परम तीर्थ एवं परम तीर्थ मूर्ति ''अभिन्नभावी ज्ञाननिष्ठ'' :

श्री हरि : जहाँ मेरे परम भक्त {खासकर अद्वैतवादी (अभिन्न भावी परम ज्ञानी) भक्त जिन्हें मैंने गीता में साक्षात् मेरा स्वरूप कहा है} रहते और अपने पैर धोते हैं, वह स्थान महान तीर्थ एवं परम पवित्र बन जाता है। यह बिल्कुल निश्चित है फिर उनके विषय में क्या कहना? जलमय तीर्थ वास्तविक तीर्थ नहीं हैं और न मृणमय एवं प्रस्तर मय मूर्तियाँ ही देवता हैं; क्योंकि वे कालान्तर में अल्प फल देते हैं एवं मूर्तियाँ भेद बुद्धि भी बढ़ाती हैं। द्वैतरूपी बंधन नष्ट नहीं करती। अहो, साक्षात् देवता तो अभेद ज्ञाननिष्ठ और निष्पृही प्रभु भक्तों को मानना चाहिए जिनके प्रभाव से या दर्शन मात्र से तुरंत पवित्रता प्राप्त हो जाती है। आगे महान एवं श्रेष्ठ भक्त (सात्त्विक परम भक्त द्वैतभावी से भी श्रेष्ठ अद्वैतवादी ज्ञानी) की महिमा में महादेव जी ने कहा है कि–

प्रभु का अनन्य भक्त ही मुझ शिव की दृष्टि में विप्र शिरोमणि तथा महासंन्यासी है उससे प्रसाद ग्रहण करना चाहिए उसे पुरस्कार देना चाहिए। हे देवी! स च पूज्यो यथा ह्यहम अर्थात् जैसी मेरी पूजा होती है वैसी ही पूजा, सेवा उसकी करनी चाहिए। यदि कोई उसकी (भक्त जाति से म्लेच्छ होने पर) अवहेलना करता है तो मैं उस पापी की श्री, यश, कुल सब

नष्ट कर देता हूँ; क्योंकि मुझे मेरे सात्त्विक भक्त, अद्वैत वादी ज्ञाननिष्ठ रूपी पराभक्त अर्थात् सर्वमय शिवत्व में स्थित अभेदमय ज्ञानी रूपी सद्गुरू के अपरोक्ष ज्ञानी भक्त से बढ़कर अन्य कोई भी प्रिय नहीं है।

(113) चातुर्मास्य में प्रिय वस्तु के त्याग का दिव्य फल :

देवशयनी से देवउठनी ही चातुर्मास्य कहलाता है। प्रभु कथा, गुरूदेव एवं संतों की सेवा, दर्शन, प्रभु पूजन तथा अन्न आदि दान में अनुराग चौमासे में दुर्लभ बताए गए हैं।

(1) जो मनुष्य पितरों के उद्देश्य से अन्न दान करता है वह पितर लोक जाता है तथा निष्पाप होता है।

(2) चौमासे में अन्नदान से पापों का नाश होता है। शत्रुओं को भी अन्न देने से लाभ ही होता है।

(3) चौमासे में दूध, दही एवं मट्ठा का दान महान फल दाता है।

(4) वस्त्र दान करने से प्रलय काल तक चन्द्रलोक में निवास होता है।

(5) जो चन्दन, अगुरू और धूप का दान करता है वह पुत्र–पोत्रों सहित विष्णु रूप होता है।

(6) जो प्रभु की खुशी हेतु चौमासे में विद्यादान, गौदान या भूमिदान करता है। वह प्रभुकृपा से अपने पूर्वजों का उद्धार कर देता है।

(7) जिस देवता को निमित्त बनाकर (कि हे इष्ट रूप आपकी खुशी के लिए)

चौमासे में गुड़, नमक, तेल, शहद, तिक्त पदार्थ, तिल और अन्न देता है वह उसी लोक (उसी इष्ट के लोक) में जाता है।

(8) हे नारद! इस चातुर्मास्य में विशेष रूप से गुरूभक्ति को अनिवार्य रखते हुए गो की भलीभांति सेवा, अग्नि में नित्य आहुति रूपी महाकर्म तथा यथार्थ ज्ञाननिष्ठ संत, साधु, भक्त या ब्राह्मण को दान देना चाहिए। जिसको देने का विचार हो गया हो उसे ही दे अन्य को नहीं।

(स्कंद पुराण ब्राह्म खण्ड चातुर्मास्य माहात्म्य)

(9) जो चातुर्मास्य में प्रभु के निमित्त प्रिय भोगों का पूर्ण त्याग करता है। उसे वे त्यागी वस्तु भविष्य में अक्षय रूप में प्राप्त होती हैं। धातु के बर्तनों को त्याग कर पलाश के पत्ते में भोजन करने वाला परम ज्ञान (हेतु सद्गुरू पाकर फिर सहज ही गुरूसेवा में तत्पर होकर दिव्य अद्वैत ज्ञान) पाकर ब्रह्मभाव (सर्वमय शिवत्व) पाता है। यदि मदार के पत्ते पर भोजन किया जाए तो अनुपम फल प्राप्त होता है। विशेषतः वट के पत्रों में भोजन करना चाहिए।

(10) प्रभु की प्रीति हेतु जो दंपती इन चार महिनों में ब्रह्मचर्य का पालन (रूपी सुख का त्याग) करते हैं उन्हें दिव्य शाश्वत पद हेतु अनन्य भक्ति प्राप्त होती है एवं पराक्रम प्राप्त होता है।

(11) संतमय आश्रम में जाकर चार महीने (अपने गृहस्थ आश्रम को छोड़ने से) सेवा करने से पुनर्जन्म नहीं होता।

(12) चातुर्मास्य में मिर्ची छोड़ने से राजा बनता है अतः चार महीने मिर्ची छोड़ दो तो अगले जन्म में या इसी, भविष्य में राजा बन जायेंगे/अन्यथा मिर्ची खाकर क्षणिक भोग ही प्राप्त होगा फिर कुछ नहीं मिलेगा।

(13) रेशमी वस्त्रों को पहनना बंद करने से अक्षय सुख प्राप्त होता है।

(14) जो प्रभु के स्वाध्याय सत्संग या गुरूसेवा हेतु भौतिक भोग या कीर्ति, धन, पद त्यागने का माध्यम बना है वह ब्रह्मज्ञान पाता है कैवल्य पद भी।

(15) चना एवं उड़द छोड़ने से पुनर्जन्म की प्राप्ति नहीं होती। इस हेतु निःसंदेह भविष्य में इस त्याग के बदले में सद्गुरूदेव की प्राप्ति होती है तभी पुनर्जन्म नहीं होता अर्थात् अपने समीप होते हुए भी जो उस प्रिय और स्वादिष्ट पदार्थों को त्यागता है वह अक्षय पुण्य पाता है।

(16) चातुर्मास्य में काले रंग का त्याग कर देना चाहिए यदि नीले रंग के वस्त्र दिख जाए तो उस दोष की शुद्धि सूर्य नारायण के दर्शन से हो जाती है।

(17) केशर के त्याग से (केशर होने पर भी उसका त्याग) राजा का प्रिय होता है।

(18) पुष्पों के त्याग से मनुष्य ज्ञानी होता है।

(19) शय्या के त्याग से (भले ही त्यागकाल में आराम की याद आवे) महान सुख की प्राप्ति होती है।

(20) सत्य धारण (असत्य भाषण त्याग) से मोक्ष का दरवाजा खुल जाता है। अतः वस्तु न त्याग पाए तो सत्य (महाकल्याण का उपाय) धारण अवश्य करें।

(21) पर निन्दा भयंकर पाप है इसे त्यागने से कीर्ति एवं निष्पापता प्राप्त होती है। सद्गुरूदेव अधिकांशतः पदार्थों को न छुड़वाकर निन्दा, असत्य, हिंसा, चोरी, परिग्रह ही छुड़वाते हैं। स्टार जगत के सभी रूपों से आसक्ति पुनरागमन का हेतु है अतः हमें सदा रूप लावण्या (स्त्री रूप सौन्दर्य) से बचना चाहिए क्योंकि कोई माने या ना माने काम की उत्पत्ति का मूल स्रोत स्पष्टतः नारी (स्त्री पिण्डात्मा) की झांकी ही है।

रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं

'सौन्दर्य' जगत का इष्ट नहीं,
रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं।
दर्शन भाव ही परिचायक है आसक्ति का,
जग में यह किसी का मीत नहीं।
सुन'होकर शान्त' यह कोई गीत नहीं,
रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं।

माया का भौतिक प्रपंच सारा,
है प्रत्यक्ष शव समान।
प्रभु का भजन करते–करते,
कर ले केवल तत्त्व गुमान।
मैं अंशभूत कहता झूठ नहीं,
रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं।

मांस पिण्ड में क्या रखा है,
नारी आसक्ति में सुख नहीं।
अब तो शिव का होजा तू,
क्यों तू करता प्रीत नहीं।
मैं अंशभूत कहता झूठ नहीं,
रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं।

अपने निजरूप को जान जरा,
तू वास्तव में गैर नहीं।
क्यों भटकता बंधन में,
हाड़ मांस का तू दास नहीं।
मैं अंशभूत कहता झूठ नहीं,
रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं।

मन पर जीभ का वश नहीं,
पशु क्यों छोड़ता लत नहीं।
जो रति सुख को हरियाली माने,
पतझड़ उससे दूर नहीं
मैं अंशभूत कहता झूठ नहीं,
रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं।

आसक्ति–नाव भंवर में डोले,
सच्चा भगत ही शिवहरि बोले।
जो बात न माने अंशभूत की,
वह सच में नर नहीं।
मैं अंशभूत कहता झूठ नहीं,
रूप लावण्य के दर्शन ठीक नहीं।

(22) चौमासे (श्रावण, भादो, क्वार, कार्तिक) में हजामत त्यागने से त्रिविध ताप नष्ट हो जाते हैं।

(23) नाखून न काटने से (भले ही बड़े–बड़े हो जाएं) एवं रोम धारण किए रहने से प्रतिदिन गंगा स्नान का फल प्राप्त होता है। (यह आश्चर्य की बात तो है परंतु ब्रह्माजी ने स्कंद पुराण के माध्यम से कहा है तो सत्य ही है।)

(25) चौमासे में 2 प्रकार का शौच (बाह्य शौच जैसे जल से नहाना, धोना एवं आंतरिक शौच जैसे हृदय की निर्मलता अपनाना चाहिए) एवं इंद्रियों का निग्रह करना चाहिए।

(26) जो मानव चातुर्मास्य में नित्य 1 समय भोजन करते हैं उसे इस त्याग के बदले द्वादशाह यज्ञ का फल मिलता है।

(27) प्रतिमास चान्द्रायण व्रत करने से असीमित फल प्राप्त होता है परंतु मात्र एक बार ऊँ नमः शिवाय के साथ शिव जी की पूजा करने मात्र से यह चान्द्रायण व्रत का फल पा लेता है।

(28) प्रभु के शयन काल में (चार मास में) कृच्छ्र व्रत सेवन से पाप भस्म होकर बैकुण्ठ में पार्षद बनते हैं; **परंतु जो व्यक्ति मात्र आरती के समय नित्य गरूड़ ध्वनि (घंटा ध्वनि) करता है उसको इसी महान कर्म से कृच्छ्र व्रत के सेवन का पुण्य मिलता है** तथा श्रीगरूड़–भक्त तत्क्षण ही भक्त की रक्षा हेतु बैकुण्ठ से ही उनके अनुयायियों को आज्ञा दे देते हैं।

(29) जो केवल दूध पीकर रहता है उसके सहस्त्रों पाप तत्काल विलीन हो जाते हैं।

(30) परिमिति भोजन कर्ता भी पापों से मुक्त होकर बैकुण्ठ जाता है।

(31)फलाहार (120 दिन अर्थात् 4 मास) करने वाला भी बड़े–बड़े पातक से मुक्त हो जाता है।

(32) जो प्रतिदिन चौमासे में केवल जल पीकर रहता है उसे रोज–रोज अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

(114) गृहस्थ के लिए भी व्रतों में सबसे उत्तम व्रत–ब्रह्मचर्य का पालन

विशेष तिथि में संयम करने से महान फल :

षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, चतुर्दशी तिथियों में, एकादशी (हरि रूप के प्रिय व्रत की तिथि) दीपावली, संक्रान्ति आदि पर्वों में ब्रह्मचर्य का पालन करे। ऋतुकाल को छोड़कर (ऋतुकाल में भी विशेष तिथि देखें) अन्य तिथियों में भी संयम से रहे। ऐसा करने वाला मेरा गृहस्थ भक्त भी मुझे प्रिय है; परंतु जो मेरे लिए समस्त प्रकार के भोगों का (इंद्रिय सुख एवं अन्य समस्त भौतिक सुखों का) परित्याग कर सदैव (हनुमान, कार्तिकेय, सनत्कुमार, सुमति, नारद, जड़भरत आदि) मेरे चिंतन में खोए रहता है तथा मेरे दिव्य यथार्थ ज्ञान का प्रसार करता है उससे बढ़कर मेरा प्रिय और कोई नहीं। **ब्रह्मचर्य महानतम तप है ब्रह्मचर्य का पालन कर्ता गृहस्थ भक्त भी 66 हजार वर्षों तक मेरे लोक में निवास करता है।**

–वराह, मार्कण्डेय पुराण एवं गीता सार

हे नारद! व्रतों में सबसे उत्तम व्रत है–ब्रह्मचर्य का पालन। ब्रह्मचर्य तपस्या का सार है और महान फल देने वाला है, इसलिए ब्रह्मचर्य को बढ़ावे। चौमासे में गृहस्थ भी संयम से रहे तो वह 66000 वर्षों तक क्षीरसागर में सुख पाते हैं।

व्यक्ति को सर्वोपरि प्रिय इंद्रिय भोग ही होता है जितने भी धान्य, स्वर्ण, पशु और सारी स्त्रियाँ हैं, वे सब के सब मिलकर भी उस पुरूष के मन को संतुष्ट नहीं कर सकते। जो कामनाओं के प्रहार से जर्जर हो रहा है। वह नमक, मिर्च–मसाले, चना, उड़द, केशर त्याग सकता है, निन्दा त्याग सकता है, नीला एवं काला रंग भी, संपूर्ण धन का दान भी; परंतु जो

भी व्यक्ति इंद्रियों का यह सुख त्यागता है या प्रभु कृपा से इस तरफ ध्यान ही नहीं जाता तो वह शाश्वत आत्मसुख को शीघ्र ही प्राप्त करता है। हे नारद! ब्रह्मचर्य के प्रभाव से उग्र तपस्या होती है। कम से कम सम्यक ज्ञान रूपी पूर्णता की प्राप्ति तक ब्रह्मचर्य से बढ़कर धर्म का उत्तम साधन (उपाय) दूसरा नहीं। कृष्ण भागवत जी में भी बताया है कि जो नैष्ठिक ब्रह्मचारी है वह अन्य कुछ दूसरा उपाय किए बिना ही ब्रह्मलोक प्राप्त कर लेता है एवं आगे 10/80/34 में साक्षात् परात्पर ब्रह्म श्री हरि ने कहा है कि "मैं प्रजापालन, घर–गार्हस्थ धर्म रूपी प्रवृति मार्ग, यज्ञ, दान, तपस्या, वानप्रस्थ, यहाँ तक कि संन्यास से भी प्रसन्न नहीं होता। मैं तो केवल और केवल श्रद्धा और संयम के साथ की गई अद्वैत–वादी ज्ञानी गुरू की सेवा एवं अमृत वाणी के चिंतन से ही प्रसन्न होता हूँ एवं प्रसन्न होकर अपना शाश्वत धाम सहज ही प्रदान कर देता हूँ।" जनक जी ने भी शुकदेव जी को स्पष्ट ही कहा है, कि जो प्रभु के अनुग्रह से ब्रह्मचर्य आश्रम के बीच (0–25 वर्ष के बीच) ही प्रभु के चरणों में रम गया है, उसे शेष तीनों आश्रमों की क्या आवश्यकता? श्रीमद्भागवत जी भी कहती है कि वैराग्य, मुमुक्षा, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रतमय, भक्ति या अद्वैत ज्ञानयुक्त हो जाए तो उस एकान्तवासी वीतराग मुनि के लिए कुछ भी विहित या अविहित अनिवार्य नहीं, वह चाहे तो बाल्यावस्था से ही संन्यास या एकत्व धारण कर सकता है। चाहे तो योग्य पतिव्रता, भक्तिमय–विचारों से ओतप्रोत स्त्री से विवाह भी कर एक संतान के बाद आजीवन या आश्रमोपनिषदानुसार सतत् 48 वर्ष तक पत्नि सहित संयम का पालन भी कर सकता है। जैसे मेरे लिए कोई शास्त्राज्ञा या बंधन नहीं वैसे ही वह भी बन्धन से मुक्त, और तो और मेरे सर्वमय बोध के कारण मुझ साक्षात् शिव के यजन से भी मुक्त ही है। गीता में कृष्ण जी ने भी कहा है 'श्रद्धालु एवं जितेन्द्रिय भक्त को ही यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है कामकामी को नही'।

अधिक न बन सके तो कम से कम चौमासे में (श्रावण, श्राद्ध, नवदुर्गा एवं कार्तिक में अनिवार्य) गृहस्थ को भी इस नियम का अवश्य ही पालन करना चाहिए। अन्य महिनों में ऋतुकाल को छोड़कर शेष सभी दिनों में गृहस्थ को ब्रह्मचर्य का पालन करना ही चाहिए। इससे कल्याण शीघ्र ही प्रशस्त होता है।

हम सब ब्रह्म (ऊँ) के ही विभिन्न–विभिन्न स्वरूप हैं तत्त्वतः 1 तत्त्व ही सर्वव्यापक हुआ है अतः स्त्री या पुरूष सभी शरीर की आत्माओं (ऊँ ही) में सदा सर्वमय ब्रह्म देखो। कल्याण होगा। चातुर्मास्य में ब्रह्मचर्य व्रत करने वाला जातिगत शूद्र भी हरि के स्वरूप को प्राप्त होता है क्योंकि प्रभु शिव तत्त्व की कृपा से यह शीघ्र ही सद्गुरू एवं मुमुक्षा पाने से कृतकृत्य हो जाता है।

मुमुक्षा ही पाथ है

भवरोग से निजात हेतु,
मुमुक्षा ही पाथ है।
कठिन डगर है मुक्ति की,
पथिक जन यह कहते रहते,
पर है सर्वज्ञ का मत ही और,
जो देते हैं मधुरता भारी।
यही कहते तो जिव्हा हारी,
रहा यदि गुरूवर सान्निध्य,
ईश्वर भी साथ है।
भवरोगों से निजात हेतु,
मुमुक्षा ही पाथ है।

करता मात्र जो भौतिक जतन,
संभावना कि खो दे रतन।
नास्तिक यूं ही भटकते हैं,
भटकते–भटकते निश दिन ही,
आँखों में खटकते हैं।
नहीं कर सकते अमृत पान,
सत्य तू केवल इतना जान,
भौतिक कर्म पर्याप्त नहीं।
यही तो गुप्त बात है,
भवरोग से निजात हेतु,
मुमुक्षा ही साथ है।

क्षणिक सुखों में न हो लिप्त,
जान नजाकत वक्त की,
एक क्षण भी यदि गया,
नहीं मिलेगा विराट या नया।
समझ बूँद गयी रक्त की,
जिस पर कृपा मेरे प्यारे,
वह निश्चित ही मेरे प्यारे,
भूमंडल का नाथ है।
भवरोग से निजात हेतु,
मुमुक्षा ही साथ है।

ब्रह्मज्ञान ही महासत्य है।
सर्वमय ब्रह्म देख जरा,
न कुछ कर पाये,
जीवन जगत का रंग भरा,
मिटे संपूर्ण जन्म मृत्यु और जरा,
निर्धनों के जीवन में,
क्लेश पुंज ही साथ है।
अद्वैत सत्य और अंशभूत,
यही सीधी सी बात है।
भवरोग से निजात हेतु,
मुमुक्षा ही साथ है।

(115) गुरूचरणामृत की महिमा :

चरणामृत

शीघ्र निष्पाप होने हेतु सर्वज्ञ सद्गुरू (स्मरण रहे अंधविश्वास के कारण साधारण, मूर्ख, कर्मकाण्डी या थोड़ी सी भक्ति मात्र में स्थित को सर्वज्ञ गुरू न समझे) या सद्गुरू स्वरूप ब्रह्मवेत्ता की थाली का बचा हुआ भोजन (अंश) ग्रहण करना चाहिए तथा सद्गुरू परमेश्वर (परागंगा) के चरणामृत (पादोदक) रूपी महागंगा का पान कर सिर पर धारण करना चाहिए; क्योंकि सद्गुरू के चरणामृत के स्पर्श मात्र से ही स्वर्ग, ब्रह्मलोक एवं प्रभुलोक रूपी अपवर्ग नामक महाफल प्राप्त हो जाता है। उर्वशी का पूर्वजन्म में कुतिया का शरीर था, एक भक्त के चरणों से स्पर्श पानी जब मात्र कुतिया से स्पर्श हुआ तो महाकल्याण हो गया। वही कुतिया निष्पाप होकर आज मधुर रूप लावण्य से युक्त होकर महासुंदरी कही जाती है जो कि परम ऋषि नारायण की जंघा से प्रकट हुई थी; तब सोचने वाली बात है कि सद्गुरू के चरणामृत के पान का फल कैसा होगा?

स्कंद पुराण में बताया है कि सात समुद्र पर्यन्त के जितने भी तीर्थ (गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, क्षिप्रा या प्रयाग का महानतम संगम तीर्थ आदि) उन सभी में हजार–हजार बार स्नान करने पर भी वह फल नहीं मिलता जो कि मात्र एक बिन्दु विशुद्ध सद्गुरू के चरणामृत का पान से प्राप्त हो जाता है। अतः हमें गुरू पादोदक का पान करना चाहिए तथा उनका भोजनांश भी ग्रहण करना चाहिए; क्योंकि नारद जी पूर्वजन्म में दासी पुत्र थे वे भी संत प्रसादी से ही भविष्य में ब्रह्माजी के मानस पुत्र हुए हैं। अर्थात् संपूर्ण तीर्थों का भटकाव छोड़कर मात्र अपरोक्ष ज्ञानी सद्गुरू तीर्थ में ही रमण करना चाहिए। सभी तीर्थों में जाने से लाखों रूपए भी खर्च होंगे तथा उतना फल भी नहीं प्राप्त होगा फिर क्या फायदा? विचार कीजिए?

(116) परमोत्तम से भी परम सर्वोपरि रहस्य :

अब मैं आपको एक ऐसा परम से भी परमोत्तम परम सर्वोपरि रहस्य बता रहा हूँ जिसको जानकर (परम ब्रह्म ऊँ कार तत्त्व, गुरुतत्त्व, अद्वैततत्त्व रूपी ज्ञाननिष्ठता तो अनिवार्य है ही, इसके अलावा यह परम अनिवार्य है, बिना इसके कोई भी गुरु के भी श्री परम गुरु, श्री परमकृष्ण एवं एवं श्री सदाशिव ''जिनके विषय में त्रिदेव भी नेति नेति कहते है'' जानकर) और कुछ शेष नहीं रहेगा।

चौमासे का एक परम रहस्य है, 16 अक्षरी चिन्तामणि मंत्र रहस्य। 7 करोड मंत्र, विद्येश्वर मंत्र एवं त्रिदेवों तथा त्रिदेवों के संपूर्ण सभी महामंत्र सदा ही इस महामंत्र की सेवा में संलग्न रहते हैं।

वह 16 अक्षरी चिन्तामणि मंत्र है–''गोपीजनवल्लभचरणान् शरणं प्रपद्ये''

गोपीजनवल्लभचरणान् शरणं प्रपद्ये ।

गोपीजनवल्लभचरणान् शरणं प्रपद्ये ।

गोपीजनवल्लभचरणान् शरणं प्रपद्ये ।

महामंत्रों के भी स्वामी इस मन्त्र के मात्र एक बार श्रद्धा या अश्रद्धा से भी वाचिक या उपांशु या तीव्रतम उच्चारणमय जप से (फिर चाहे कभी भी न कहे, परंतु कहता है तो बहुत अच्छी बात है) श्री परमकृष्ण एवं श्री सदाशिव (जो महारुद्र जी के भी स्वामी हैं) के परमोत्तम श्रेष्ठ भक्तों का सान्निध्य प्राप्त होता है, जिससे साधक जीते जी ही मुक्ति पद पाकर अमर हो जाता है।

पद्म पुराण के पाताल खण्ड में महारुद्र जी ने नारद जी से कहा है, कि **''हे नारद! इस मंत्र पर ब्राह्मण से लेकर चाण्डाल तक, परम पुण्यात्मा से लेकर भयंकर पापी तक का स्वतन्त्र अधिकार है।''** परंतु नास्तिक को यह न बताएं।

इस महामंत्र की अनन्त महिमा है, अन्य मंत्र अयोग्य व्यक्ति के द्वारा जपा जाने पर नरक दे सकते है, परंतु परमकृष्ण एवं श्री सदाशिव जी के यह दो मंत्र (''गोपीजनवल्लभचरणान् शरणं प्रपद्ये'' रूपी पंचपदी एवं नमः शिवाय रूपी पंचाक्षरी) सदा ही कल्याणकारी है।

इस महामंत्र की महान विशेषताओं में एक मुख्य विशेषता यह भी है कि, अन्य मंत्र बिना पुरश्चरण के एवं बिना न्यास के सिद्ध नहीं होते परंतु ''गोपीजनवल्लभचरणान् शरणं प्रपद्ये'' रूपी पंचपदी बिना पुरश्चरण के एवं बिना न्यास के ही सिद्ध होकर अमृत की वर्षा कर शिवस्वरूप ही बना देता है। धन्य है यह महामंत्र। धन्य है यह महामंत्र। धन्य है यह महामंत्र।

(117) योग्य ब्राह्मण को दान देने का फल :

श्रीमद्देवी भागवत सावित्री और धर्मराज संवाद (नवाँ स्कंध)

(अ) ब्राह्मण को अन्न देने वाला पुरूष शिवलोक में जाता है। जितने दाने अन्न के होते हैं उतने वर्षों तक वहीं रहता है।

(आ) ब्राह्मण को दूध देने वाली गाय दान करने से दान–दाता गो के शरीर में जितने रोएं हैं उतने वर्षों तक विष्णुलोक पाता है। स्मरण रहे यह गोदान यदि पर्व के समय करे तो 4 गुना फल, तीर्थ में करे तो 100 गुना फल, हरि तीर्थ में कोटि गुना फल प्राप्त होता है।

(इ) जो दु:खी गरीब ब्राह्मण को 2 वस्त्र देता है उसे 10000 वर्षों तक वायु लोक में निवास मिलता है।

(ई) वस्त्र सहित शालग्राम (मूर्ति हरि की) को ब्राह्मण के लिए अर्पण करने वाला बैकुण्ठ में निवास।

(उ) ब्राह्मण को हाथी दान करने से इंद्र की पूर्ण आयु तक (इन्द्र की आयु पर्यन्त) उनके आधे आसन पर विराजमान होता है।

(ऊ) वैशाख मास में ब्राह्मण को सत्तू दान करने से शिव मंदिर में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

यह तो परम ब्राह्मण (अद्वैत ज्ञानी/अनन्य भक्त/गीतापाठ कर्ता) को दान करने का फल हुआ। अब यहाँ हम उनकी भी अनिवार्य रूप से चर्चा करेंगे, जिन्होंने भयंकर गरीबी देखी है; परंतु इस जन्म में उन्होंने हमारे सम्मुख गुरूदेव का अपमान नहीं किया हो। इनकी गरीबी को देखकर भी दया उमड़ जाती है। लेकिन क्या करें; क्योंकि इन लोगों में कुछ तो ऐसे होते है, जो भले ही मर जाये; परंतु कभी कोई भी वस्तु स्वीकार नहीं करते। खेर जो भी हो ऐसे व्यक्तियों को भी दान देने से कल्याण होता है। लेकिन स्मरण रहे जो कल्याण (माँ जगदम्बा के अनुसार कोटि गुना) ब्रह्मनिष्ठ गुरु को वस्तु आदि अर्पित करने से होता है वह माया–मोह से ग्रस्त मनुष्यों को दान करने से नहीं होता। खेर जो भी हो हे ईश्वर! कृपया ब्रह्मनिष्ठ गुरुओं को ही सर्वप्रथम सभी वस्तुएं प्राप्त होती रहे तथा गरीबों की गरीबी भी मिट जाये ताकि दसों दिशाओं में आनन्द की लहर छा जाये।

ग्रीष्म में भी एक पत्ते से

फटी चादर ओढ़कर ही,
ऋतु शीत उनकी गुजरती है।
ग्रीष्म में भी एक पत्ते से,
भीषण गर्मी हरती है।

सुदामा को भी गुजरना पड़ा,
दरिद्रता के हाल से।
मिटा दो गरीबी इनकी,
तीक्ष्ण सुदर्शन की चाल से।

दया करो नाथ शिव शंकर!
कभी–कभार ही चूल्हा जलते हैं,
कितना भयंकर उनका संघर्ष
धुले चावल को भी दूध जानकर,
बच्चे उनके पलते हैं।

हे आशुतोष! दया करो, बस दया करो,
पीड़ा सबकी तुरंत हरो।
कष्ट हरण से हर तुम कहाते हो,
सब कुछ देकर भस्म तुम रमाते हो।

आप मेरे कर्ता, और भर्ता हो,
कैवल्या दाता एक मात्र धर्ता हो।
इष्ट आपको दुर्लभ क्या है?
आपसे रहित तत्त्व 'और' क्या है?

(118) मनचाही कामना पूर्ति :

ईशान कोण (पूर्व तथा उत्तर के मध्य) या उत्तर दिशा की ओर मुख करके जो शिव पुराणोक्त महास्तोत्र (योगेश्वर नामक योगमय) को इन तीन तिथियों (अष्टमी, चतुर्दशी तथा पूर्णिमा) को उपवास पूर्वक लगातार 1 मास तक अर्थ समझता हुआ जपता है वह मनचाही कामना को शीघ्र ही पूर्ण कर लेता है। कम से कम एक बार शिवलिंग रूप से शिवजी को स्नान कराकर पंचाक्षरी मंत्र से बिल्व, तुलसी, कमल, दुर्वा, धतुरा, पुष्प, आक पुष्प, नील कमल (या बिल्व पत्र के अलावा कुछ न भी हो तो कोई बात नहीं बिल्व भी न मिले तो मानसिक पूजा ही पर्याप्त है।) द्वारा चतुर्दशी या पूर्णिमा में से किसी एक तिथि को उपवास करता हुआ जाप करता है तो उसे आधा फल प्राप्त होता है। इस संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो इस पाठ से न प्राप्त हो सके।

(119) एकादशी व्रत से सभी तीर्थों का फल प्राप्त :

बदरी नामक पवित्र क्षेत्र (नर–नारायण ऋषि द्वारा पूजित बदरीनाथ महेश्वर धाम जो चार धामों में प्रमुख है।) तीनों लोकों में दुर्लभ है उसके स्मरण मात्र से महापातकी मनुष्य भी तत्काल पाप रहित हो जाते हैं। अन्य तीर्थों में संपूर्ण विधि–विधानों के पालन करने के साथ मृत्यु होने से मुक्ति प्राप्त होती है परंतु बदरी क्षेत्र के दर्शन एवं प्रसाद ग्रहण करने मात्र से ही मुक्ति मनुष्यों के हाथ में आ जाती है।

बदरी तीर्थ दर्शन महिमा :

स्कंद पुराण–10 बार वेदान्त दर्शन (6 दर्शनों में से एक महत्वपूर्ण दर्शन जिसमें 556 सूत्र हैं जो कि उपनिषद से ही लिए गए अंश हैं।) का श्रवण करने से जो पुण्य फल प्राप्त होता है वही फल बदरी तीर्थ के दर्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है। लेकिन यदि कोई इस महान तीर्थ में न जा पाये तो मात्र अपरा एकादशी (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष) को उपवासपूर्वक वामन (हरि) प्रभु की पूजा मात्र से उपर्युक्त फल प्राप्त कर सकता है।

(120) साक्षात् हरि के ही सदृश, शिव के सदृश, माँ भुवनेश्वरी का ही प्रत्यक्ष स्वरूप एवं अद्वैतवादी की सेवा का फल :

जिसके हृदय में नित्य हरि का रूप (वैष्णवों हेतु विष्णु, राम, कृष्ण, शैव हेतु शिवरूप, शाक्त हेतु माँ भुवनेश्वरी रूप), मुख में उन प्रभु का नाम, खाने हेतु श्री प्रभु का प्रसाद और मस्तक पर उन भगवान का चरणामृत (या ब्रह्मनिष्ठ गुरू का पादोदक) है, जो अद्वैत ज्ञाननिष्ठ गुरू की पादुका के दर्शन पूजन में रत है। गुरूचरण रज लगाने में तत्पर है तथा वह **जो** नित्य इष्ट कवच का पाठ, गुरू माहात्म्य, श्रीमद्भागवत एवं गीता का स्वाध्याय या श्रवण करते हुए प्रभु विरह में अश्रुधारा बहा रहा है एवं अपनी संपूर्ण सात्त्विक भक्ति फल (द्वैतभाव से की गई अनन्य भक्ति) प्रभु को अर्पित कर चुका। वह साक्षात् हरि के ही सदृश, शिव के सदृश, माँ भुवनेश्वरी का ही प्रत्यक्ष स्वरूप है यदि वह अद्वैत वादी गुरू की अभेद मय वाणी के अभ्यास से या ब्रह्मविद्या मय उपनिषद को हृदयंगम करके अभिन्न भावी हो जाए तो उसके पूजन सेवन से माँ भुवनेश्वरी (परम विशुद्ध स्वरूप) अपनी सेवा पूजा की अपेक्षा कोटि गुना फल देती हैं।
–(श्रीमद्देवीभागवत)

(121) संपूर्ण कर्मफल अर्पण का महान फल :

जो व्यक्ति अपने संपूर्ण कर्मफलों को परमात्मा को अर्पित कर देता है, वह श्री भगवद् गीता के अनुसार मोक्ष को प्राप्त होकर सदा के लिए संसार के दुःखों से मुक्त हो जाता है एवं कर्म करने के समय से ही यदि फलों को न चाहे तो तत्काल ही इहलोक में ही शान्ति को पाकर प्रभु के स्वरूप को भी प्राप्त करता है।

(122) स्फटिक माला धारण से महालाभ :

स्फटिक माला को गले में धारण करके (लक्ष्मी जी की चरण पादुकाओं का ध्यान करते हुए) जो भी कार्य किए जाते हैं; उनमें सफलता प्राप्त होती है। बशर्ते साधक दीक्षित हो, एवं अपने स्वार्थवश माता–पिता या गुरू का अपमान न करने वाला हो ।

(123) 100 कदम मात्र से 100 अश्वमेध यज्ञों का फल (इंद्र पद) :

जो श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ/स्वाध्याय करता है उसे प्रत्येक अक्षर के पाठ पर ही

प्रत्येक100पग पर

कपिला गो के दान का फल प्राप्त होता है जहाँ श्रीमद्भागवत या शिव पुराण रखी होती है वहाँ पर जाने वालों के लिए प्रत्येक पग पर 1–1 अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। 100 कदम चलने पर कोई भी सकामी पुरूष (100 अश्वमेध यज्ञों के फल से) इंद्र पद पा सकता है तथा निष्काम या मोक्ष भाव मय श्रवण से प्रभु का परम पद पा लेता है एवं आजीवन शाकाहारी रहने पर (मांस न

(इंद्रपद)

खाने पर) भी प्रत्येक वर्ष 1 अश्वमेध यज्ञ का पुण्य प्राप्त हो जाता है। वास्तव में प्रभु ने मात्र पुराणों से कितने महान दिव्य फल की प्राप्ति बताई है। पुराण वास्तव में संतों का हृदय है। अभिन्न भावी संत चाहे कैसी भी लीला कर रहे हों हमें सदा उनके अद्वैत को जानकर ही उनके समक्ष दास बनकर रहना चाहिए। वे चाहे ठहरे हुए पानी की भांति शांत हों चाहे गतिमान वायु की भांति चलायमान। फिर भी हमें उनकी आज्ञा का पालन करते हुए हमेशा अहंकार से रहित होकर सेवा–सुशुश्रा से युक्त रहना चाहिए।

ठहरा हुआ पानी हूँ

ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?
शांत रहो मेरी भांति,
जीवन अमृत तुल्य खिलेगा।
करते रहो ब्रह्मवाणी श्रवण,
अद्वैत तत्त्व अवश्य मिलेगा।
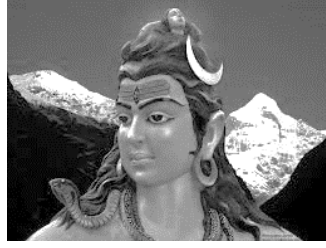
मैं तो मैं ही तू भी मैं,
क्यों भूलता निशदिन रे।
तू मेरी विश्रांति देख,
सच में मुझमें नित्य रमेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

जीने दो मुझे मेरे हाल,
क्यों होते हो व्यर्थ बेहाल।
हर पल ईश्वर देख रहा,
दुष्कर्म से निश्चित तू जलेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

रख इकन्नी तेरी तू,
स्वर्ग में जरा बता देना।
सोच ले थोड़ा सा जरा,
धन, संग्रह से क्या मिलेगा?
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

बताने की गर न हो हिम्मत,
तो फिर अधिक कंचन हेतु।
स्वयं के स्वार्थ भाव से,
फिरकर तुझे क्या मिलेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

है अधिक तो लगा गुरूकार्य में,
अक्षय आनन्द विज्ञान सार में,
पुराण, गीता प्रचारादि से,
शिव बनकर तू खिलेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

भोग लिप्तता से क्षरण ही समझो,
दुर्लभ जीवन व्यर्थ ही समझो।
हर श्वांस का उपयोग करके,
नित्य नवीन संसार मिलेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

पहला कर्त्तव्य निष्पापता जान,
चाहे अनुष्ठान, सत्संग, ब्रह्मचर्य,
और गुरूसेवा करते–करते हो देहान्त,
दरिद्रता रोग–शोक से तू बचेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

जीवन केवल दीर्घ स्वप्न है,
दारा सुत को नाशवान जानकर,
छोड़ मोह के बंधन सारे,
मोक्ष द्वार अवश्य खुलेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

विषय वासना पापों की गठरी,
फिर भी भोग नगरी में क्यों जाता है?
एक पल के भोगों से,
दुःखों का ही पहाड़ मिलेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

न मानो तो मत मानो,
संतों की वाणी सुनाई मैंने,
व्यर्थ अवहेलना क्यों करते हो?
द्वेष से केवल नरक ही होगा
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

क्यों समझते हो मुझे बेकार,
ईश्वर ने मुझसे कुछ कहा ही होगा।
कर चिंतन अंशभूत की भांति,
पाप शैल भी सहज हिलेगा।
ठहरा हुआ पानी हूँ,
पत्थर मारकर क्या मिलेगा?

(124) अध्यात्मोपनिषद : संचित कर्मफल की विलीनता

जिस प्रकार जाग्रत हो जाने पर स्वप्नवत संपूर्ण कर्म नष्ट हो जाते हैं उसी प्रकार गुरूकृपा से 'मैं ब्रह्म हूँ' (और सर्वमय ब्रह्म के अलावा कुछ भी नहीं है एकोऽहं बहुस्यामः से वही बहुत हुआ है) ऐसा ज्ञान (विज्ञान) होने पर (जो इसी अद्वैत ज्ञान में रमा है उसके लिए) करोड़ों कल्पों से अर्जित (संचित) कर्म (कर्मफल) विलीन (नष्ट) हो जाते हैं।

–याज्ञवल्क्य उपनिषद

(125) ज्ञानी श्रीगुरू की सेवा संबंध में श्रीकृष्णवाणी :

वैराग्य उत्पन्न होने पर ब्रह्मचर्य आश्रम से ही सहज (बिना गृहस्थाश्रम में प्रवेश किए बिना, बिना वानप्रस्थ गए बिना) संन्यास (बिना भय के) लिया जा सकता है, परंतु दसम स्कंद श्रीमद्भागवत (10–80–34) में प्रभु (पूर्णमय निजस्वरूप ही ऊँ कार ही) श्रीकृष्णजी ने सुदामा जी से कहा है कि–हे मित्र! मैं संन्यास धर्म, वानप्रस्थ या गृहस्थ धर्म से भी उतना संतुष्ट नहीं होता जितना कि ब्रह्मदाता (अद्वैत ज्ञानदाता) गुरू की सेवा–शुश्रुषा से होता हूँ।

(126) ब्रह्म का अंश ब्रह्म ही महावाक्य का मंथन ही एकमात्र महामंत्र

परम कल्याण हेतु प्रत्येक को यह विचार करते रहना चाहिए–

''मैं त्रिदेव की भांति उन परब्रह्म (परम प्रणव) स्वरूपिणी भगवती भुवनेश्वरी का ही अंश हूँ न कि दूसरा कोई। जब मैं भी ब्रह्म (ऊँ) ही हूँ ।। शिवोऽहं ।। तब मेरे पास क्लेश कैसे आ सकता है?'' इस परम सत्य (आत्मा) का ज्ञान आत्मसात करने पर हम अक्षय ब्रह्मरस का पान कर्ता एवं सर्वज्ञ हो जाते हैं। –देवी भागवत (अध्याय 25 चतुर्थ स्कन्ध)

(127) संग में क्रिया का फल :

यज्ञ कराने से, पढ़ाने से, एक पंक्ति में बैठकर भोजन करने से मनुष्य दूसरे के किए हुए पुण्य और पाप का चौथाई भाग प्राप्त कर लेता है। दूसरे के स्पर्श से, प्रशंसा (स्तुति) या निंदा से पुण्य या पाप का दसवां अंश प्राप्त होता है। चिंतन, श्रवण, दर्शन (अच्छा या बुरा) से, सामने वाले के पुण्य या पाप का शतांश प्राप्त हो जाता है अतः अच्छी संगति में रहे। गलत कार्य एवं गलत चिंतन करने वाले मित्रों तथा रिश्तेदारों के साथ न बैठे।

(128) हरि भार्या बनने का सरल उपाय :

कोई भी स्त्री एकादशी, कार्तिक व्रत स्नान, तुलसी वन की रक्षा तथा गुरू मंत्र का नित्य जाप करे तो सत्यभामा की भांति प्रभु की पटरानी हो सकती है।

कार्तिक व्रत की बड़ी भारी महिमा है। कार्तिक व्रत के प्रभाव से पूर्वजन्म की गुणवती कन्या द्वापर में श्रीकृष्ण भगवान की पटरानी (सत्यभामा, सप्राजित की पुत्री) हुई। अतः कल्याण कामी स्त्री एवं पुरूषों को कार्तिक व्रत अवश्य करना चाहिए अधिक न बने तो स्नान कर हरि (प्रभु) को तुलसी दल अवश्य चढ़ाए इससे सारे मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।

(129) प्रेरणा देने का फल :

यदि एकादशी व्रत, कुंभ स्नान, कार्तिक व्रत, मार्गशीर्ष, वैशाख या माघ मास के व्रत, नियम, स्नान, तीर्थ यात्रा या स्वाध्याय आदि की क्षमता न हो तो अन्य व्यक्तियों को कल्याण का यह उपाय बताने पर (यदि वह करता है तो) योग्य ब्राह्मणों से धन द्वारा करवाने पर, शिष्य द्वारा करवाने पर अथवा भृत्य वर्ग द्वारा करवाने पर भी फल प्राप्त किया जा सकता है। सकाम भक्ति (स्वयं के भोगार्थ हेतु किसी भी आश्रम में की गयी भक्ति) से पुनरागमन होता है अतः कर्मफल को एवं भक्ति फल को प्रभु को अर्पित करें तभी मोक्ष पद प्राप्त होगा।

(130) कुंभ पर्व महिमा : कार्तिक स्नान की भी आवश्यकता नहीं

(अ) प्रयाग क्षेत्र महिमा

कुंभ पर्व (जो कि प्रत्येक 12–12 वर्ष के अंतराल से उज्जैन, हरिद्वार, नासिक एवं प्रयाग तीर्थ भूमि पर होता है।) में स्नान की दिव्य महिमा है। सामान्य दिनों में ही (अर्थात् कोई विशेष नक्षत्र, ग्रहण या तिथि न होने पर भी) यदि कोई वैशाख के मास में 1 करोड़ बार (10000000 बार) नर्मदा में स्नान, कार्तिक महीने में हजार (1000) बार गंगा नदी में स्नान करे तथा माघ महीने में 100 बार किसी भी क्षेत्र में गंगा में स्नान करे तो जिस फल की प्राप्ति होती है वह फल मात्र तीर्थराज प्रयाग क्षेत्र में एक बार कुंभ पर्व पर स्नान करने मात्र से प्राप्त हो जाता है। (इसी कारण कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है, जो जीवन में कभी भी कार्तिक, माघ या वैशाख में गंगा आदि स्नान नहीं करते फिर भी मात्र कुंभ स्नान से संपूर्ण तीर्थफल पाकर पावन हो जाते है।)

–स्कंद पुराण (कुंभ माहात्म्य)

विष्णु पुराण में भी कहा गया है कि 1000 बार अश्वमेध यज्ञ करने से, 100 वाजपेय यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जिस महान फल की प्राप्ति होती है वही फल प्रयाग क्षेत्र के कुंभ में स्नान मात्र से प्राप्त हो जाता है अतः कुंभ पर्व पर प्रयाग क्षेत्र की महान महिमा है।

प्रयाग में (कभी भी) अक्षय वट का दर्शन मात्र करने पर ब्रह्म हत्या दूर हो जाती है।

प्रयाग में जो भी कोई गोघाती, चाण्डाल, शठ, दुष्टचित्त, बाल घाती या मूर्ख मरते हैं वह चतुर्भुज होकर अनन्त काल तक बैकुण्ठ में निवास करते हैं तथा स्नान मात्र से पाप भस्म होकर स्वर्ग का अधिकारी हो जाते हैं। जो भी प्रयाग प्रयाग कहता या जप करता है उसके भयंकर पाप भी स्मरण मात्र से ही भस्म हो जाते हैं।

प्रयाग के वटवृक्ष की रक्षा साक्षात् महेश्वर (हाथ में त्रिशुल लेकर) और संपूर्ण क्षेत्र की रक्षा श्री हरि (शिव प्रिय) करते हैं। प्रयाग गंगा की रक्षा 60000 धनुर्धर करते हैं प्रयाग वास्तव में महातीर्थ है।

(ब) नासिक कुंभ पर्व : नासिक कुंभ पर्व के माहात्म्य के अनुसार जो मानव 60 हजार वर्षों तक नित्य गंगा में स्नान करता है उसी स्नान का फल मानव मात्र नासिक की गोदावरी (गौतमी) में केवल एक बार (कुंभ पर्व के क्षणों में) स्नान करने मात्र से प्राप्त हो जाता है तथा एक लक्ष (100000) गाय दान का पुण्य भी प्राप्त होता है। वह संपूर्ण पापपुंजों का नाश (स्नान एवं त्र्यम्बकं ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से) करके सभी तीर्थों में स्नान का फल एवं महान लोक में सहस्त्रों वर्षों तक दिव्य भोग प्राप्त करता है तदुपरांत मुक्त हो जाता है।

–शिव पुराण रूद्र संहिता 24 अध्याय 27

(स) हरिद्वार कुंभ पर्व :

हरिद्वार कुंभ पर्व (बृहस्पति के कुंभ राशि पर और सूर्य के मेष राशि पर रहने के क्षणों पर) के समय जो भी गंगा स्नान करता है वह साक्षात् बृहस्पति के समान एवं सूर्यदेव के समान तेजस्वी हो जाता है तथा पुनर्जन्म से रहित हो जाता है।

हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृति वर्जनम।

(द) उज्जैन महिमा :

अवन्तिका पृथ्वी का नाभि देश है। 12 ज्यातिर्लिगों में महाकाल लिंग ही है। यह सप्तपुरियों में से एक है। नारद पुराण का कथन है कि अवन्ती तीर्थ तथा प्रभु महाकालेश्वर का माहात्म्य अपार है। जो कि शब्दों से वर्णित नहीं किया जा सकता। अर्थात् संपूर्ण फल व्यक्ति उज्जैन के कुंभ स्नान से तत्क्षण ही पा लेता है और जो महाकाल की नगरी में मात्र 1 बार भी रात्रि में भक्तिमय जागरण कर व्यतीत करता है वह शिवधाम प्राप्त कर लेता है।

कुचभपर्व

प्रभु महाकाल को नमस्कार कर लेने पर मृत्यु की कोई चिन्ता नहीं रहती। उज्जैन में यमदूत प्रवेश नहीं कर सकते, यहाँ कीट एवं पतंग भी मरने पर रूद्र के अनुचर होते हैं। स्कंद पुराण आवन्त्य खण्ड में यह रहस्य बताया है। साथ ही काशीखण्ड (7/93 से) में बताया है कि जो भी महाकाल महाकाल महाकाल इस प्रकार तीन बार उच्चारण कर शिव स्मरण करते हैं उनकी साक्षात् हरि एवं शिव पल–पल रक्षा करते हैं।

(131) 1 ग्रास अन्न भोजन से 3 पीढ़ियों का उद्धार :

जिसके घर में एक भी योगी पुरूष 1 ग्रास अन्न भी भोजन कर लेता है वह अपने सहित अपनी 3 पीढ़ियों का उद्धार (मात्र इसी पुण्य से) कर देता है। ऐसे माँ–बाप धन्य हैं भाग्यशाली हैं जिनके किसी पुण्य प्रताप से उसके यहाँ भक्त, ज्ञानी, योगी तथा अद्वैतवादी से युक्त होकर भी गुरू (शिव) में शिवबुद्धि करके सेवा करने वाला पुत्र प्रकट होता है। यदि यह योगी 1 ग्रास भी कहीं भोजन कर ले तो उस भोजन ग्रहण कराने वाले का उद्धार सहज ही (वह भी 3 पीढ़ी सहित) हो जाता है फिर विचार करने वाली बात है कि इस योगी (बशर्ते योग या एकत्व को पाकर भी गुरू में द्वैत बुद्धि से सेवा करने वाला हो) के परिवार की कितनी पीढ़ी मोक्ष को प्राप्त करेगी? परंतु याद रहे जिन ब्रह्मदाता ज्ञानी (गुरू) की कृपा से हमें एकत्व (अभिन्नता अर्थात् अद्वैत सिद्धि) प्राप्त होता है। उन ज्ञाननिष्ठ ब्रह्मदाता का ऋण किसी भी परिस्थिति में नहीं चुकाया जा सकता। अतः उत्तम है कि उन सद्गुरू देव को तन, मन और धन देने की सदा कोशिश करते रहो। स्कंद पुराण में माँ भुवनेश्वरी की वाणी (कि कभी भी ब्रह्मज्ञान देने वाले गुरू से द्रोह न करे शिव जी नाराज हो जाए तो यह ब्रह्मज्ञानी गुरू बचा सकते हैं परंतु ब्रह्मदाता के नाराज होने पर कोई भी मूर्त्यात्मा नहीं बचाता) को सार रूप से सदाशिव जी ने कहा है कि यदि याज्ञिक, योगी तथा तपस्वी भी गुरूदेव की सेवा त्याग दे तो वे भी मुक्त नहीं हो सकते। अतः सदा ब्रह्मज्ञानी गुरू (शिवजी) की सेवा–शुश्रुषा करते रहे। एक मात्र सद्गुरू ही कैवल्य दाता हैं।

प्रभु अब कैवल्या दे दो

यह क्या हो रहा प्रभु,
वही नित्य खाना पीना।
कब तक पड़ेगा यूं ही जीना।
कर्मफल अब समूचे ले लो,
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

दो वक्त की रोटी हेतु,
पार करता निशदिन सेतु,
अधिक नहीं तो प्रभु प्यारे,
स्वाध्याय की विघ्न 'भूख' ही ले लो,
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

चैत्र–वैशाख के हाय रे मच्छर,
कर देते ये जीवन खच्चर,

भव रोग से मुक्ति हेतु,
अद्वैत ज्ञान का दिव्य वर दे दो।
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

महत्त्वाकांक्षा से नाथ बचाओ।
राग रहित निवृत्त बनाओ।
ब्रह्मचर्य, अहिंसा, वैराग्य दे दो।
काम, क्रोध, मद–मत्सर ले लो।
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

सदा हो सर्वमय चिंतन तेरा,
ज्ञान प्रसार हो मेरा।
कुभाव से उबारने हेतु,
चाहे जैसा खेल तुम खेलो।
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

जग संबंधी रिश्ते सारे,
स्वार्थ भाव से सेवा करते।
मानसिक ताप को ये न हरते।
त्रिविध ताप कृष्ण–शिव ले लो।
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

कर्मकांड की नीति सारी,
करत–करत आत्मा हारी।
अब तो शंकर शिवत्व दे दो।
अहम् लोभ का क्षरण करके,
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

हे सदाशिव! क्षणिक भोग को क्यों बनाया?
इसने जीव का मन ललचाया।
एक पल बाद फिर पछताया।
भक्ति भाव अनन्य तुम दे दो,
प्रभु अब कैवल्या दे दो।

स्कंद पुराण के ब्रह्मखण्ड में बताया है कि यदि जातिगत ब्राह्मण योगी गुरूभक्त हो जाए तो वह दर्शन मात्र से भी अवश्य ही प्राणियों की पाप राशि का संहार कर देता है। यह

जातिगत ब्राह्मण परमोत्तम विप्र शिरोमणी कहा जाता है तथा यदि जातिगत शूद्र या जातिगत शिव या हरि (इष्ट) का सायुज्य.....प्राप्त कर लेता है। गुरूदेव की विशेष कृपा से यह दोनों कैवल्य पद प्राप्त कर सकते हैं।

(132) स्वाध्याय का महान फल :

संपूर्ण तीर्थो (स्नान और दर्शन), यज्ञों, दानों (कन्या दान, गौदान, अन्नदान, भूमिदान.......) एवं व्रत नियम आदि का फल (निष्पापता, निर्मल हृदय, वैराग्य, भक्ति, मुमुक्षा, अद्वैत ज्ञान एवं सकाम से समस्त ऐश्वर्य) भी मात्र पुराण के श्रवण या स्वाध्याय से प्राप्त हो जाता है। {अतः अधिक संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं, मात्र श्रीमद्देवीभागवत, शिवपुराण,

संसयाय

श्रीमद्भागवत या जो भी इष्ट हो उनके वाङ्मय स्वरूप (पुराण) का श्रवण या स्वाध्याय एवं चिन्तन अवश्य ही करें} 5 बार की पुराण श्रवण या स्वाध्याय आवृति से प्रभु दर्शन रूपी महान परिणाम भी ग्रन्थों में परिलक्षित है अतः स्वाध्याय को कभी न छोड़े। कभी–कभी गुरू की निषिद्ध आज्ञा {परीक्षावश या साधारण अज्ञानी गुरू के अज्ञान के कारण (स्मरण रहे जो अद्वैतमय नहीं वह भेद बुद्धि परख गुरू त्यागने योग्य है एवं भगवान दत्तात्रेय जी के अनुसार यदि गुरू भी अधर्म युक्त आज्ञा दे या साधारण वैदिक कर्मकाण्ड मार्ग पर ले जाने के लिये तत्परता रखे न कि अनन्य भक्ति या श्रेष्ठ अभिन्न ज्ञान सिखाये तो उस साधारण गुरू को त्यागकर सर्वमय अयमात्मा ब्रह्म, तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि वास्तविक आत्मज्ञान से युक्त सद्गुरू का ही वरण करें, जो स्वयं ही विज्ञान से रहित है अपरोक्ष ज्ञान के हृदयंगम से रहित है, तीर्थ मूर्तियों में ही भटकता रहता है न कि आत्मतीर्थ में रमण करने की कोशिश करता है वह स्वयं पुनः मृत्यु लोक में पैदा होकर कष्ट पाता है तो शिष्य को क्या मुक्त करेगा?)} दे तो उसे भी निःसंकोच त्याग देना ही धर्म है। धर्म अंधविश्वास नहीं अपितु निजस्वरूपता सिखाता है अतः सदा अज्ञानी गुरू से बचें।

–उपनिषद सार

(133) ब्राह्मणत्व एवं योग्यता :

जो भी (अनन्य भक्त या गुरू सेवक, मुमुक्षु, वैराग्यवान या ज्ञानी) मात्र एक बार मैत्रेयी उपनिषद का श्रवण (या स्वाध्याय) मात्र करता है वह स्वयं ब्रह्म हो जाता है परंतु स्मरण रहे जातिगत सामान्य शूद्र पुरूष या सामान्य अभक्त स्त्री उपनिषद न पढ़े, न ही वेद पढ़े। असाधारण बनना हो तो कम से कम 1 वर्ष तक सतत् गुरूसान्निध्य (गुरूगीता पाठ के माध्यम से या प्रत्यक्ष सेवा करके) एवं गुरू चरणामृत का पान करे। इससे वह इतना शुद्ध हो जायेगा जितना कि जातिगत ब्राह्मण भी नहीं होगा। देवी भागवत जी में प्रभु श्रीकृष्ण (हरि) ने

कहा है कि उस भक्त के दर्शन से किसी भी प्रकार का पापी ब्राह्मण भी पापों से मुक्त हो जाता है तथा भागवतजी में कहा है कि जिसके हृदय में गुरूदेव (ब्रह्मज्ञानी सद्गुरू) की सेवा करने हेतु छटपटाहट रहती है जो सदा गुरू रूपी ब्रह्म का ध्यान करता है वह मनुष्य रूप में साक्षात् देवता है तथा शिवपुराण के अनुसार वह ज्ञानी रूद्रलोक से आया हुआ (चारों वर्णों के कल्याणार्थ) साक्षात् रूद्र ही है उसे शरीर से मानव के समान होने पर भी प्राकृतिक न जानकर दिव्य जानना चाहिए।

अतः भक्तजन भयभीत न हों और पूर्णता प्राप्ति तक दण्डपाणि, हनुमान, नारद, रामानंदादि की भांति श्रीमद्भागवत जी दशम स्कंध, श्री गीता चतुर्थ अध्याय तथा गुरूगीता जी 1/31 के अमृत मंत्र की आज्ञा का तन, मन एवं धन से पालन करते रहें जिसमें बताया है कि मानव का प्रथम लक्ष्य शिवमयता रूपी अद्वैत ज्ञान है, न कि प्रजा धन पालन या अन्य भौतिक कर्म या गृहस्थादि। अतः इस हेतु अंधविश्वास को छोड़कर वास्तविक ज्ञानी गुरू के सान्निध्य में रहकर निष्काम भाव से सेवा करते रहो।

ज्ञाननिष्ठ, विरक्त, मुमुक्षु और मोक्ष की भी अपेक्षा न रखने वाला मेरा भक्त यह चारों प्रकारों के व्यक्ति आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास) की मर्यादा में बद्ध नहीं है वह चाहे तो आश्रमों और उनके चिन्हों को छोड़–छाडकर वेद–शास्त्रों के विधि निषेधों से परे होकर स्वच्छंद विचरे। चाहे बालकों के समान खेले या जड़वत रहे, पागलों की तरह बातचीत करे या अनियत आचार वान रहे। ऐसा साक्षात् प्रभु ने अपने अभिन्न स्वरूप में स्थित अद्वैत ज्ञाननिष्ठ, द्वैतवादी निष्कामभावी अनन्य भक्त, मोक्ष का इच्छुक तथा वैराग्य वान के लिये स्पष्ट कहा है। वैसे भी बुद्धिमान लोग सम्यक ज्ञान होने तक ब्रह्मचर्य का पालन निश्चय रूप से करते ही है। अतः भक्तगण भयभीत न हों और निःसंकोच भाव से बिना पारिवारिक स्थितियों से डरे अपनी भक्ति स्वतंत्र रूप से करते रहें क्योंकि वे सभी प्रकार के कर्त्तव्य कर्मों से मुक्त किये जा चुके हैं। जो साधारण प्राणी इन चारों प्रकार के व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) को साधारण समझकर साधारण कर्म रूपी अविद्या मार्ग पर चलने को विवश करता है या आज्ञा देता है वह पशुओं में नीच गधे के तुल्य है। अनन्य भक्तों (चाहे वह जाति का म्लेच्छ या संकर हो) के दर्शन मात्र से तो पापी जातिगत ब्राह्मण भी शुद्ध हो जाते हैं तो साधारण व्यक्तियों के कहने ही क्या एवं अभिन्न ज्ञानी की तो माँ जगदम्बा के अनुसार और भी महान महिमा है। जिसके अनुसार उस अभेद दृष्टा के दर्शन एवं पूजा मात्र से स्वयं माँ एवं समस्त शिव हरि आदि स्वरूप की तुलना में कोटि गुना फल तत्क्षण प्राप्त होता है। (यद्यपि वह अभिन्न ज्ञानी स्वयं उन्हीं का पुत्र एवं स्वरूप है।)

गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास मार्ग एवं वर्ण–कर्म–धर्म आदि तो उन साधारण मनुष्यों के लिए बनाए गए हैं जो न ही वैराग्य वान हैं न ही मुमुक्षु, अनन्य भक्त और न ही परम विशुद्ध तत्त्ववेत्ता। इसी कारण प्रभु ने केवल इन चारों को बंधन एवं नियमों से सदा मुक्त रखा है।

श्रीमद्भागवत एकादश स्कंध 18वां अध्याय श्लोक 28,29

(134) गंगा दशहरे पर मात्र एक बार गंगा स्नान की योगी दुर्लभ महिमा :

ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष की दसमी को गंगा जन्म के दिन केवल गंगा स्नान से भी वह परम गति होती है जो कि योगियों को भी दुर्लभ है। अतः ग्रीष्म काल (ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष दसमी अर्थात् निर्जला एकादशी के 1 दिन पूर्व का पावन दिवस) के मात्र 1 दिन की तपस्या (गंगा स्नान) से भी जीवन को पावन किया जा सकता है यह मात्र आधी घड़ी का परम अनुष्ठान कहा जाता है। गंगा माँ को प्रसन्न करने की एक और विधि है वह यह है कि गंगा जयंती पर ''अद्वैत ज्ञाननिष्ठ के चरणामृत की मात्र एक बूँद का पान करने या सिर पर धारण कर ली जाए''। ऐसा करने से भी गंगा प्रमुख सहित सप्त सागर पर्यन्त के समस्त तीर्थों का फल प्राप्त किया जा सकता है।

(135) सुरभि स्तोत्र महिमा :

यदि कोई तीर्थों में जाकर स्नान आदि नहीं कर पाए तो वह श्रीमद्देवीभागवत में वर्णित परम गो माता सुरभि माँ के स्तोत्र पाठ मात्र से संपूर्ण महाफल पा सकता है। वास्तव में श्रीमद्देवीभागवत महान है जिसके स्वाध्याय मात्र से संपूर्ण फल प्राप्त हो जाता है।

(136) प्रभु–कथा को सुनाने मात्र से (सौ कोटि) कल्पों से अधिक ब्रह्मलोक में निवास :

जो निष्कामी या निःस्वार्थी मनुष्य धन के लोभ से रहित होकर कल्याणमयी पुराणकथा को सुनाते हैं वे 10000000000 (सौ कोटि) कल्पों से अधिक ब्रह्मलोक में रहते हैं। पुराण सुनाने का जो दिव्य फल प्राप्त होता है वह पूजा, तीर्थ या मालादि की तुलना में लाखों गुना होता है।

(137) संतश्री को कंबल, वस्त्रादि दान मात्र से ब्रह्मलोक :

जो पुराणवेत्ता (या प्रधान रूप से ब्रह्मदाता अद्वैतवादी सद्गुरू या अभिन्नभावी संत को) को बैठने के लिए आसन, कंबल, वस्त्र, पलंग आदि (9 या 7 दिन हेतु या सदा के लिए) देते हैं वे ब्रह्मलोक (निश्चित अवधि तक) पाते हैं तथा शिवलिंग प्रतिष्ठा एवं मंदिर निर्माण से 1 कल्प तक शिवलोक, परंतु प्रभु–कथा को स्वयं के द्वारा सुनाने मात्र से सौ कोटि कल्पों से अधिक ब्रह्मलोक में निवास होता है; क्योंकि कार्य चाहे जैसा भी हो मात्र धन खर्च करने का पुण्य अलग (धनवानों में वह उत्तम है जिनका धन श्रीमद्भागवत या शिवपुराण कथा श्रवण में सदुपयोग होता है) एवं ज्ञान दान हेतु स्वयं की साक्षात् श्रम–दान सेवा का अलग।

(138) ब्रह्मज्ञान रूपी सर्वमय अद्वैत शिवत्व की अपरोक्षता :

ब्रह्मज्ञान वह है जिसकी प्राप्ति पर सर्वत्र (सर्वमय) शिव ही शिव का साक्षात्कार होता है। स्वयं और सर्वमय पूर्ण तत्त्व का साक्षात्कार होता है। ब्रह्म के सिवाय दूसरी किसी (नाशवान) वस्तु का स्मरण नहीं रहता। विज्ञान ही ब्रह्मज्ञान (परम तत्त्व) कहलाता है जिसके उदय होने पर मैं ब्रह्म हूँ, तुम ब्रह्म हो, सब कुछ ब्रह्म है ऐसा दृढ़ निश्चय हो जाता है। ऐसा ब्रह्मज्ञानी (हे देवी पार्वती!) जो और जैसा भी है सदा शिव का ही महान स्वरूप है। साक्षात् परात्पर ब्रह्म है क्योंकि यह भक्ति के परम फल (अभिन्न भाव) को पाकर अद्वैतवादी हो गया है। ब्रह्मज्ञान को जानकर साधक साधक न होकर ब्रह्मस्वरूप साक्षात् परात्पर ब्रह्म ही हो जाता है। उसके लिए कोई भी कर्त्तव्य या अकर्त्तव्य शेष नहीं रहता वह पूर्ण हो जाता है। उसके लिए तो साक्षात् शिव आज्ञा से शिव का यजन भी अनिवार्य नहीं परंतु चूँकि शिवजी ने ही उसे परम् दिव्य ज्ञान देकर अंशभूत घोषित किया है। इस कारण वह उन्हीं का शिष्य होने के नाते सदा ही सर्वमय अद्वैत होते हुए भी उनके प्रति वह शिष्य भाव से ही सेवा करता है। वास्तव में व्यक्ति परम गुरू शिव (परम कृष्णस्वरूप) की अनन्य भक्ति के बिना किसी भी प्रकार से ज्ञान नहीं पा सकता। और रही गुरूसेवा की बात तो सुनिए गुरू शिव तत्त्व के अलावा अन्य कोई शरीर या नाम धारी होता ही नहीं। और यदि वह कहता है कि मैं शिव नहीं या मैं शिवत्व से रहित हूँ तो निःसंकोच पुराण की आज्ञा से उस गुरू का त्याग कर ब्रह्मज्ञानी गुरू का ही वरण करना चाहिए। क्योंकि ब्रह्मज्ञानी ही सभी विहित एवं अविहित कर्मों से मुक्ति दिलाकर स्वच्छन्द अर्थात् मुक्ति युक्त कर सकता है। साधारण कामी, लोभी, निंदक या अज्ञानी नहीं। इन्हीं परम् गुरू के कारण अद्वैत ज्ञान प्राप्त होता है जिसको जानकर कुछ भी बाकी नहीं रहता।
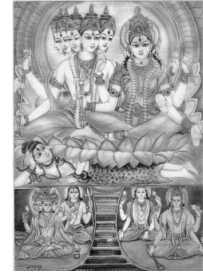
जानकर कुछ न बाक़ी रहा

कर्मफल जगत का खूब रहा,
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।
प्रभु बचाओ निश्चित ही,
कलियुग पाप में डूब रहा।
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।

महत्त्वाकांक्षी, ईर्ष्यालु पाकर,
पति–पत्नि में आज,
आठ पहर ही युद्ध रहा।

ब्रह्मचारी ही शुद्ध रहा।
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।

अविद्या के वश होकर जीव,
माया को नित्य मांग रहा।
ब्रह्मवेत्ताओं ने ठुकराया जिसको,
उसी को ये भोग रहा।
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।

दुनिया के दुःख देखकर भी,
अब भी नहीं चेत रहा।
पत्नि–पुत्र आसक्ति फल जानकर भी,
रास ये फिर भी कर रहा।
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।

राग में है दुःख ही दुःख,
वैराग्य में अमृत सुख,
क्यों तू अनजान रहा?
क्यों बात नहीं मान रहा?
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।
मैं ही कर्ता हूँ,

इस कुभाव से चिंतित रहा।
ईश्वर एक कर्ता मात्र,
अहम् तू क्यों दिखा रहा?
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।

दिव्य ग्रन्थ की वाणी हेतु,
ग्रन्थ रहस्य क्यों नहीं तलाश रहा?
उस जीव का विनाश निश्चित,
जो गुरुज्ञान न सुन रहा।
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।

चिंतामणि स्वरूप,
कामधेनु–दुग्ध दोहन,
स्वाध्याय से जो न कर रहा।
वही पापमूर्ति रहा।
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाक़ी रहा।

ग्रन्थ रहस्य है शाश्वत धाम,
कामना पूर्ति पूरण काम,
बुद्धिजीव ही जान रहा।
शेष कर्मकाण्ड को तान रहा,
कर्मफल जगत का खूब रहा।
जानकर कुछ न बाकी रहा।

अर्थात् अद्वैत गुरुमय ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति से ही पूर्णता प्राप्त होती है। इसी संदर्भ में देवी भागवत सप्तम स्कन्ध (माँ दुर्गा एवं हिमालय संवाद) में भी अद्वैत का विशुद्ध विश्लेषण किया गया है जिसके अंतर्गत–

हे हिमालय! द्वैतभाव रहित अद्वैतवादी ज्ञानी से कभी भी मेरा वियोग नहीं होता और उसका मुझसे वियोग (किसी भी काल में) नहीं होता क्योंकि अभिन्न भावी (ऊँ कार रूपी सर्वमयता से युक्त ब्रह्मज्ञानी) के लिए एक तत्त्व के अतिरिक्त अन्य कुछ होता ही नहीं। जब अन्य कुछ है ही नहीं तो मैं (या मेरा राधा, दुर्गा, लक्ष्मी, शारदा, सावित्री, गंगा आदि स्वरूप) और वह दूसरा कौन? केवल एक ही स्वयं ब्रह्म ही सर्वमय है। हे हिमालय राज! तुम यह निश्चित समझो कि ''वह मैं हूँ और मैं वह हूँ'' जहाँ ऐसा ज्ञानी रहता है, वहीं मेरे साक्षात् दर्शन हो सकते हैं। मैं न तीर्थों (चाहे वह कितना ही प्रसिद्ध हो) में निवास करती हूँ (चाहे आप वहाँ मेरी कितनी भी कैसी भी खोज करें; पर मैं वहाँ निवास नहीं करती, मात्र अल्प बुद्धि के लोगों के लिए कुछ पुण्य देने हेतु मेरी लीला से मूर्ति संग्रह मात्र हुआ है) न कैलास में और न बैकुण्ठ में ही। मैं तो अपने अद्वैतवादी ज्ञानी (पराभक्त) के हृदय कमल में ही रहती हूँ (वहाँ से मेरी आराधना, उपासना करने पर मैं एक पल में ही साधक को प्रत्यक्ष दर्शन दे सकती हूँ) जो मेरे ज्ञान परायण अनन्य भक्त (चाहे वह तत्त्वमसि का उपदेश सत्ता सद्गुरू रूप में हो या दीक्षा न देने वाला अन्य ब्रह्मनिष्ठ) की पूजा करता है वह मेरी पूजा से कोटि गुना अधिक फल पाता है।

ब्रह्म विद्या रूपी अद्वैत ज्ञान का दाता साक्षात् परमेश्वर ही है। इस विद्या का बदला नहीं चुकाया जा सकता इसीलिए विशुद्ध ज्ञानदाता गुरू के समीप शिष्य सदा ऋणी रहता है। वह ब्रह्मदाता गुरू माता–पिता एवं अन्य जातिगत ब्राह्मण या गो, गरीब, दरिद्र, समाज,

देश से भी अधिक पूज्य है क्योंकि एक मात्र ब्रह्मवेत्ता की सेवा से सभी का योगक्षेम वहन सहज ही होता है एवं उस ब्रह्मदाता गुरू के सेवन के सान्निध्य वालों का भी बिना अन्य प्रयास से मोक्ष हो जाता है। हे हिमालय! ब्रह्मदाता गुरू से कभी द्रोह न करें। वह साक्षात् परमेश्वर के सदृश होने से सबसे श्रेष्ठ है। शिव के रूष्ट होने से ब्रह्मज्ञानी अहं ब्रह्मास्मि में स्थित गुरू बचा सकते हैं। परंतु ब्रह्मज्ञानी गुरू के रूष्ट होने पर कोई नहीं बचा सकता।

इसलिए श्री जगदम्बा स्वरूप श्रीकृष्ण जी ने भी श्रीमद्भगवद्गीता (वेदों का सार तत्त्व 'उपनिषदों' का भी सार) में अर्जुन से 4/34 में स्पष्ट ही (सार रूप से) कहा है कि "हे अर्जुन! मानव यदि वास्तव में अपना परम कल्याण चाहता है तो उसे ब्रह्मवेत्ता ज्ञाननिष्ठ सोऽहं में स्थित सद्गुरू की शरणागति ही एकमात्र रूप से स्वीकार करना चाहिए।" अन्य उपायों से बहुत ही धीमी गति से कल्याण होता है।

स्वामी विवेकानन्द जी (अनन्य गुरूभक्त एवं ज्ञानी) ने भी ब्रह्मज्ञानियों के विषय में स्पष्ट ही कहा है कि यदि 12 कोस पैदल चलने पर भी मुझे ब्रह्मज्ञानी (अद्वैतवादी और ज्ञानी परम भक्त) जी का सान्निध्य, सत्संग, वाणी प्राप्त होती है तो भी मैं पैदल जाने को भी तैयार हूँ अतः हर हाल में ज्ञाननिष्ठों की विशेष महिमा है। हमें भी समय का परम सदुपयोग करने हेतु संतों की संगति ग्रहण करना चाहिए।

(139) वर्तमान में भी आंशिक अवतार प्रकट :

परमात्मा से जो शुद्ध ज्ञान प्रकट हुआ अर्थात् परमात्मा जो भी कहना चाहते हैं वह शब्द रूप में सर्वप्रथम ब्रह्माजी के चार मुखों से उत्पन्न वेदों के माध्यम से ही प्रकट हुआ है। वेदों को संक्षिप्त कर सार रूप 108 उपनिषद बनीं। उपनिषदों के लेखक की मनोबुद्धिमय महत्वपूर्ण अंशों से ही वेदान्त दर्शन का निर्माण हुआ (कुल 6 दर्शन प्रधान हैं जिन्हें षड्दर्शन कहा जाता है इन दर्शनों में से वेदान्त दर्शन बहुचर्चित हुआ) इस वेदान्त दर्शन का वर्णन पुराणों में (ईश्वर वाणी के द्वारा वेदान्त की प्रशंसा करते हुए) भी मिलता है और इन सबका सार श्रीगुरूगीता जी (देवी भागवत की माँ जो कि साक्षात् माँ भुवनेश्वरी जी एवं हिमालय के संवाद की ही संक्षिप्त व्याख्या है जो साक्षात् सदाशिव एवं भुवनेश्वरी जी की दिव्य वाणी) है एवं श्रीमद्भगवद् गीता भी है, जो कि प्रभु श्रीकृष्ण जी द्वारा प्रकट हुई। पुराणानुसार वर्तमान में भी आंशिक अवतार प्रकट होते रहते है, जिनके माध्यम से जो वाणी प्रगट होती है, वह साक्षात प्रलयंकारी एवं आशुतोष शिव की ही अमृत वाणी कही जाती है, परंतु प्रभु की अनुकंपा से ही उन्हें पहचाना जा सकता है।

(140) समदर्शिता : ब्रह्मभाव हेतु 8 लाख मंत्र जप :

ज्ञानीजन; विद्या युक्त ब्राह्मण, विनय युक्त विप्र, गो, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में भी समभाव (एक मात्र ब्रह्मभाव) से देखते हैं ऐसा समभावी ब्रह्मवेत्ता सच्चिदानन्दघन परब्रह्म परमात्मा के साथ एकीभाव हुआ सांख्य योगी शान्त ब्रह्म को प्राप्त होता है। {इस प्रकार कहा जा सकता है कि जो भी (अन्य स्वरूप ही) भेद बुद्धि करता है वह अभी अज्ञानी है अर्थात् जो सर्वमय मूल तत्त्व को ऊँ कार माध्यम से या अन्य शिव/हरि/शक्ति/इष्ट रूप माध्यम से नहीं देखता उसे मोक्ष (कैवल्य पद) किसी भी हालत में नहीं प्राप्त हो सकता।}

विकल्प रहित ज्ञान की अनन्यता हेतु नारद पुराणोक्त यह अद्वैत मंत्र का 8 लाख जप अनिवार्य है।

स ब्रह्मा स शिवो विप्र स हरिःसैव देवराट् ।
स सर्वरूपः सर्वाख्यः सोऽक्षरःपरमः स्वराट्।।

अथवा मात्र ज्ञाननिष्ठ गुरु की अद्वैतवाणी श्रवण कर कुछेक दिनों के अभ्यास मात्र से ही सदाशिव इष्ट की परम अनुकम्पा प्राप्त हो जाती है। हे शिव! आप ही प्रत्यक्ष (अपरोक्ष) गुरूतत्त्व हो। हे शिव! कृपा करो। परम अनुग्रह से मेरा जीवन सफल करो।

हे शिव! बिन आपके सूनापन लग रहा है।

हे शिव! बिन आपके सूनापन लग रहा है।
क्या करूँ रो–रोकर जीना पड़ रहा है।
शंभु मेरे दया करो,
संसार नीरस लग रहा है,
एक पल भी सदियों सा लग रहा है।

काम में जो रम रहा है,
संघर्ष में वो पिस रहा है।
हे आशुतोष! आखिर करूँ मैं क्या,
आप बिन अंशभूत जल रहा है।
एक पल भी सदियों सा लग रहा है।

स्वयं के भोग छोड़कर,
तप से तेज बढ़ रहा है।
मोह का कर दो देव! क्षरण,
काम परेशान कर रहा है।
एक पल भी सदियों सा लग रहा है।

गौरीनाथ! कृपालु, हे दयासागर!
आखिर मैं जाऊँ कहाँ,
मन कहीं भी नहीं लग रहा है।
हे शंभु! अब तो आओ,
एक पल भी सदियों सा लग रहा है।

मन आपको जान रहा है,
संसार से अंशभूत हार रहा है।
पार्वती वल्लभ विघ्न हटाओ,
गणेश तत्त्व आपको मान रहा है।
एक पल भी सदियों सा लग रहा है।

मायापति से होकर दूर,
मृगतृष्णा में फ़स रहा है।
निज धाम अपना छोड़कर,
जगत में ये रम रहा है।
एक पल भी सदियों सा लग रहा है।

सत्यम् शिवम् दया करो,
अंशभूत को अब पूर्ण करो।
कोई नहीं मुझे समझ रहा है,
आप बिन जीना पड़ रहा है।
एक पल भी सदियों सा लग रहा है।

(141) अनन्य भक्त बनने की युक्ति :

सकाम कर्म को पुनरागमन का हेतु कहा जाता है, परंतु कोई यदि निष्काम भाव से (जप, तप, क्रिया, व्रत, यज्ञ, दान तीर्थ, गोसेवा या गुरूसेवा, मात्र एकादशी व्रत, गीता, भागवत, उपनिषद, शिवपुराण श्रवण या मात्र कुंभपर्व पर गंगा स्नान अथवा घर में ही नित्य गंगा जल की एक बूँद का पान आदि) अध्यात्म को न करे तो इतना अवश्य कहे कि हे प्रभु! कृपया मुझे शीघ्र ही ऐसी सद्बुद्धि दो ताकि मैं निष्कामभावी होकर आपका अनन्य भक्त हो जाऊँ। इस विचार से हमारा शीघ्र ही कल्याण होता है। बुद्धि पवित्र होकर प्रभुमय हो जाती है। और इनमें से कोई एक उपाय व्यक्ति साधने लगता है, और यदि नहीं साधता तो समझो कि उसकी किस्मत में भयंकर अंधेरा है; क्योंकि ईश्वर की प्रेरणा होने पर भी वह अनसुनी कर रहा है।

(142) अद्वैत ज्ञानी की अभिन्न वाणी रूपी परम सत्संग की महिमा :

नाम स्मरण की अपेक्षा कवच, उपनिषद, सत्संग एवं अद्वैत ज्ञानी की अभिन्न वाणी रूपी परम सत्संग की महिमा :

श्रीमद्भागवत जैसे दिव्य पुराणों में वर्णित कवच का पुण्य फल नाम मंत्र की तुलना में अरबों गुना होता है अतः प्रार्थना है कि अपनी अज्ञानता के कारण कभी भी नाम मात्र को ध्यान स्तुति, श्रीमद्भागवत जैसे दिव्य पुराणों के कवच या उनमें निहित अद्वैत ज्ञानी की महिमा को लघु न माने।

उत्तर तन्त्र शास्त्र में साक्षात शिव जी ने नाम की तुलना में कवच को अरबों गुना बताया है एवं संपूर्ण नाम, ध्यान, तीर्थ, यज्ञ, दानादि की तुलना में ब्रह्मविद्या उपनिषद रूपी महाशास्त्र एवं अद्वैत ज्ञानी की अभिन्न वाणी रूपी परम सत्संग और भी श्रेष्ठ है। ज्ञानं नास्तिं गुरूं बिना–ज्ञानं नास्तिं गुरूं बिना–ज्ञानं नास्तिं गुरूं बिना।

वास्तव में गुरुकृपा से ही शाश्वत आनन्द की प्राप्ति होती है, बिना अद्वैतज्ञानी रूपी गुरु के बिना जब साक्षात् राम या रुद्र या कान्हा भी चित्त की विश्रान्ति नहीं पा सकते तो फिर आप, मैं अंशभूत या अन्य के क्या कहने।

मुझे विश्वास है कि हम सब को हमारे ज्ञानदाता श्रीगुरु की अनुकम्पा से विशेष अनुग्रह अवश्य प्राप्त होगा जो भेदबुद्धि का नाशक एवं कैवल्या का साक्षात् स्वरूप ही होगा और उसी दिन जीवन में वास्तविक मस्ती छायेगी।

एक शाम सुहानी आयेगी

एक शाम सुहानी आयेगी,
जीवन में मस्ती छायेगी।
छोड़ दे दुनिया के बन्धन,
किस्मत माधुर्यता पायेगी।
एक शाम सुहानी आयेगी,
जीवन में मस्ती छायेगी।

अनन्य भक्ति के पालन से,
आनन्द लहर समायेगी।
न माना तो प्यारे बन्धु,
जिन्दगी ठोकर खायेगी।
एक शाम सुहानी आयेगी,
जीवन में मस्ती छायेगी।

करले नित्य गुरुवर सेवा,
यही शिव को भायेगी।
परम केवल गुरुतत्त्व ही,
कृपा सहज ही आयेगी।
एक शाम सुहानी आयेगी,
जीवन में मस्ती छायेगी।

कर संतोष बहन संतोषी सा,
रक्षा अवश्य तू पायेगी।
जाना यदि निजबल तूने,
झांसी की रानी कहायेगी।
एक शाम सुहानी आयेगी,
जीवन में मस्ती छायेगी।

फिरते रहे चाहे दरिन्दे,
पावनता तू पायेगी।
दुर्गा कवच से काली भी,
खडग लेकर आयेगी।
एक शाम सुहानी आयेगी,
जीवन में मस्ती छायेगी।

(143) विशेष तीर्थादि में विशेष फल :

काशी में पंचगंगा तीर्थझतीर्थराज प्रयागझभागीरथी (विन्ध्यपर्वत से मिलने वाली)झद्वारकाझमथुराझकनखल (हरिद्वार)झगंगाद्वारझ अयोध्याझ बदरिकाश्रमझअवन्ती (उज्जैन,क्षिप्रा) झमुक्ति का क्षेत्रझचक्रक क्षेत्रझवराह क्षेत्रझविष्णु काशी और शिव काशीझकोल्हापुरीझ आर्यावर्त

यह तीर्थ फलान्तर का क्रम है।

परंतु स्मरण रहे प्रयाग में 1000 वर्ष तक निवास करने से जो फल प्राप्त होता है वह मथुरा पुरी में केवल अगहन में निवास करने से मिल जाता है।

सामान्य स्त्रियों को पति की आज्ञा लेकर कार्तिक मास का स्नान करना चाहिए क्योंकि पति से बिना पूछे जो भी स्नान या गृहस्थी का धर्म कार्य (यज्ञ आदि) किया जाता है वह पति की आयु का हर्ता है। जो पति की सेवा और आज्ञा पाले वही धर्मवती है। केवल स्नान और उपवास से धर्मवती नहीं हो जाती। (स्कंद पुराण वैष्णव खंड कार्तिक माहार), परंतु चाहे

जो भी हो ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा से बढ़कर अन्य कुछ भी नहीं। अन्य कुछ भी नहीं। अन्य कुछ भी नहीं।

हे मनुष्यगण! काल का कोई/कुछ भी भरोसा नहीं, अतः क्षणभंगुर सुखों को त्यागकर एकमात्र अभिन्नभावी सदगुरु का हो जा। सदगुरु का हो जा।

सांसारिक भौतिक दृष्टि छलावा के सिवाय अन्य कुछ भी नहीं।

यदि परम सौभाग्य या महान पुण्योदय से अभेद ज्ञान से परिपूर्ण ब्रह्मनिष्ठ योगी दीक्षा गुरू रूप में प्राप्त होवे तो उनमें गुरू, परम गुरू, परात्पर गुरू, तथा परमेष्ठी शिवस्वरूप परमेष्ठी गुरू की भावना करके सेवा करे। इस प्रकार तत्त्व रूप (शिव रूप या ऊँ कार रूप) को उनमें एवं सर्वमय देखने से सारे अवगुण नष्ट होकर ज्ञान पुंज प्राप्त हो जाता है। अद्वैत वादी गुरू में मानव बुद्धि महापापी होने का संकेत है अतः पाप भस्म हेतु प्रभु बुद्धि रखे। जो अभिन्न भावी सोऽहं में स्थित गुरू (ब्रह्म) में नर बुद्धि रखता है वह गुरूपत्नी गमन करने के समान पापी है। गुरू एवं संत महिमा वास्तव में अद्वितीय है अतः मेरी बात मान और बस........

मेरी एक बात मान ले

पद, कीर्ति को पाकर भी,
सभी लम्हें बीत जाये पल में,
फिर क्यों फिरे असुरी कल में,
इस सत्य को बस इतना जान ले।
बस मेरी एक बात मान ले।

कल जो सजाये थे भोगार्थ सपने,
सपने तो क्या काल के ग्रास से,
दूर हो जायेंगे समूचे ब्रह्माण्ड के अपने,
फिर क्यों संघर्ष यह जीते जी जान ले।
बस मेरी एक बात मान ले।

भूतकाल में जो पांव थे मखमल पर,
आज पड़े अर्थी की चारपाई पर
हो सकता है कि पाप के इस,
क्षण के बाद ही तू सच जान ले।
बस मेरी एक बात मान ले।

बंद कर अधर्म और अत्याचार,
मिटेगा इसी से सारा व्यभिचार,
हो सकता है कि क्षणभंगुर सुख के बाद,
काल तेरा पान ले।
बस मेरी एक बात मान ले।

मरते–मरते एक और नवीन पाप करके,
क्यों अपनी इज्जत नीलाम करते हो,
ऐसा न कर अन्यथा जग हंसेगा मौत पर,
अब तो गुरू दीक्षा का दान ले।
बस मेरी एक बात मान ले।

कल्याण हेतु अद्वैत वादी गुरूदेव को रिझा ले,
समय निकालकर थोड़ा सा जान ले,
अधिक आज्ञा न सही तो,
थोड़ा तो मान ले।
बस मेरी एक बात मान ले,
मेरी एक बात मान ले।

(144) मेरा अंश कौन? :

प्रत्येक प्राणी परम कल्याण (शिव) के अंश हैं पूर्णतः गहराई से अद्वैत सागर में गोता लगाने पर वही है इस हेतु जो भी कोई स्वयं को अंशभूत शिव कहकर ''शिवोऽहमस्मि–शिवोऽहमस्मि'' जपता है वह शीघ्र ही प्रभु का विशुद्ध स्वरूप हो जाता है तथा शिव (इष्ट) भी स्वीकार कर स्पष्ट प्रत्यक्ष या स्वप्न में कह देते हैं कि **''हाँ यह मेरा अंश है।''**

–शिव पुराण (कैलास संहिता सार)

(145) मुक्ति हेतु काल चक्र को पार कैसे करें? :

परमेश्वर शिव (निर्गुण, निराकार, परमेष्ठी शिव, ऊँ कार) की स्वाभाविक शक्ति विद्या है उसी विद्या शक्ति (पराविद्या शक्ति) से इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति और माया सहित अनेक शक्तियाँ तथा सदाशिव, ईश्वर, विद्या, विद्येश्वर, आदि पुरूष नारायण, परात्पर प्रकृति प्रकट हुए। शक्तिमान परमेष्ठी शिव ही वैद्य हैं और शक्तिरूपिणी शिवा (स्वयं उन्हीं की अपनी शक्ति का नाम) पराविद्या है। यद्यपि तत्त्वतः वे ही सर्वरूप (पंच मूर्त्यात्मा, ह्रीं, पंचक प्रकृति, अन्य दैवीय स्वरूप, जीव स्वरूप भी) हैं, परंतु अलग–अलग स्वरूप से कर्म, वैराग्य, सिद्धि, कला, ऐश्वर्य, भक्ति या अद्वैत ज्ञान का अंतर अवश्य है। जो इस तत्त्व को जानकर इन सभी स्वरूपों की खुशी के लिए इन परम गुरू का आश्रय लेता है या किसी भी अद्धैतज्ञानी में मात्र इन्हीं की कल्पना कर सेवा करता है, और उनकी अभिन्न वाणी का तत्त्व चिंतन करता है, मात्र वही काल चक्रेश्वर को अनायास ही पार कर सकता है अन्य साधारण नहीं।

–शिवपुराण वायवीय संहिता

(146) हे ईश्वर! धन्य है आपकी अनुकंपा :

काशी गंगा, प्रयाग गंगा, हरिद्वार–गंगा जैसे तीर्थ वास्तव में ईश्वर ने महाकल्याण के लिए ही भारत भूमि पर उत्पन्न किए हैं; परंतु इतना ही नहीं, प्रभु ने तो ऐसे–ऐसे स्तोत्र भी प्रकट किए हैं, जिनके नित्य पाठ से भी या उसमें लिखी मात्र एक बात से भी संपूर्ण महाफल तत्क्षण ही प्राप्त हो जाता है। हे ईश्वर आपकी महिमा धन्य है क्योंकि जो फल महान स्थल जनित तीर्थों के सेवन से प्राप्त होता है वही फल आपके स्तोत्र, पुराण, पाठ अथवा मात्र एकादशी के सेवन से ही प्राप्त हो जाता है। यहाँ तक कि ये भी बताया है कि जो पुत्र मात्र माँ की सुआज्ञा के पालन के लिए एक–एक कदम बढ़ाता है मात्र इसी प्रयास से ही उसे गंगा स्नान का पुण्य मिल जाता है। हे नाथ! वास्तव में आप महान हो। पुत्र के लिए गुरू, माता तथा पिता परम तीर्थ हैं तथा स्त्री के लिए पति महानतम तीर्थ बतलाया गया है। परंतु अनन्य भक्तों के लिए स्थल जनित तीर्थों की अनिवार्यता नहीं होती।

(147) प्रत्येक दैवीय शक्ति को इष्ट रूप से नमन :

शक्ति के उपासक शुक्ल पक्ष तृतीया, अष्टमी अथवा चतुर्दशी, नवरात्रि प्रमुख रूप से तथा शिवजी के उपासक कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी या पूर्णिमा तथा मुख्य रूप से महाशिवरात्रि, गणेश चतुर्थी, भैरव अष्टमी, राम नवमी, हनुमान जयंती व्रत करते हैं तथा उस व्रत के क्षणों में श्री गणेश स्मरण, शिवलिंग अर्चन व्रत के देव (इष्ट या स्वामी) में इष्ट बुद्धि करके स्तुति (जैसे–हे परमब्रह्म शिव ऊँ कार आप ही माँ भुवनेश्वरी रूप में या दुर्गा/राधा/सदाशिव/महारूद्र और महाकृष्ण रूप में लीलारत हो कृपया मेरे द्वारा अर्पित पूजा स्वीकार करो) करते हैं वे शीघ्र ही अद्वैतनिष्ठ सद्गुरू को पाकर फिर उनकी सेवा से शीघ्र ही पराविद्या पाकर साक्षात् शिव रूप (सदाशिव मूर्त्यात्मा, महेश तत्त्व, महारूद्र तत्त्व, कृष्ण तत्त्व, विष्णु तत्त्व, ब्रह्मा तत्त्व) हो जाते हैं। पराविज्ञान रूपी अद्वैत तत्त्व को सर्वमय पाकर सर्वज्ञ हो जाते हैं।

(148) भूमि एवं आकाश प्रदक्षिणा का फल मात्र 1 पल में :

जो अपने माता–पिता की (पार्वती और शंकरजी की कल्पना करके) पूजा, प्रदक्षिणा करता है वह साक्षात् समूची भूमि एवं आकाश की पूजा, प्रदक्षिणा (परिक्रमा) का फल पा लेता है। 7 बार माँ की परिक्रमा से 7 बार धरती की प्रदक्षिणा का फल प्राप्त होता है। श्री गणेश भगवान ने यही धर्मग्रंथों का हवाला देकर माता–पिता (गौरी शंकर) की सेवा, प्रदक्षिणा का महाफल पाया था। अनन्य भक्ति ऐसे ही मातृ–पितृ भक्त को प्राप्त होती हैं; परंतु ध्यान रहे तत्त्ववेत्ता सद्गुरू (वास्तव में अपरोक्ष ज्ञानी सोऽहं में स्थित, न कि शिष्य; न अंधविश्वास से उस

साधारण को दिव्य अद्वैतवादी मान रखा हो) की प्राप्ति के बाद उन सद्गुरू की सेवा, पूजा, अद्वैत वाणी के अभ्यास एवं प्रदक्षिणा से माता–पिता को भी मोक्ष पद प्राप्त हो जाता है। अतः गुरू प्राप्ति के बाद जितना अधिक से अधिक हो आप उन ब्रह्मदाता गुरू (रूपी परमेश्वर) की शरण में ही रहो इस परम उपाय से ही सर्वाधिक कल्याण आपके माता–पिता, स्वयं, एवं पूर्वजों का होता है।

(149) कल्याण का सही क्रम :

(1) ब्रह्मज्ञानी सद्गुरू (सान्निध्य, अद्वैतमय सत्संग और अभिन्नता)झ(2) सर्वमय अद्वैत ज्ञान का चिंतन और द्वैतभाव से गुरू (परम ब्रह्म) का चिंतनझ(3) अद्वैत ज्ञान का स्वाध्याय या द्वैतभाव से गुरू वाक्य का स्वाध्यायझ(4) प्रभु में द्वैत भाव से अनन्य भक्ति (जिसमें अपरिग्रह, गुरूमंत्र या पंचाक्षर मंत्र का सुमिरन, एकादशी आदि महाव्रत, परोपकार परंतु भागवत या शिवपुराण का श्रवण एवं ब्रह्मचर्य अनिवार्य शामिल हैं फिर भले माता–पिता नाराज ही क्यों न हो)झ(5) संसार के दुःखों को देखकर मुमुक्षा या वैराग्य के साथ अनुष्ठान, पुरश्चरण या तपस्याझ(6) राष्ट्र सेवा ब्रह्मचर्य पूर्वकझ(7) माता–पिता, गौ, भांजी एवं योग्य जितेन्द्रिय एवं त्रिकाल संध्यामय विप्रों की सेवा।

(150) पुराण अर्पण तथा योग्य ब्राह्मण को देने का संकल्प :

योग्य ब्राह्मण को 18 पुराणों में से कोई भी एक पुराण हाथ से लिखकर वस्त्र सहित दान करने से निष्पापता परलोक में कई कल्पों तक महान पद प्राप्त होता है। (नारद पुराण)

योग्य ब्राह्मण को देने का संकल्प हो गया हो तो उसे देना चाहिए अन्यथा 10 जन्मों का पुण्य नष्ट हो जाता है तथा सियार की योनि प्राप्त होती है तथा ब्राह्मण का धन या साग (भले ही स्वयं ब्राह्मण हो) चुराने पर (प्रायश्चित न होने पर या कर्मफल प्रभु को अर्पित न होने पर) वानर योनि प्राप्त होती ही है। आज भी परलोक में सौ करोड़ वाली मात्र एक विशाल महापुराण मौजूद है; परंतु ईश्वर की आज्ञा से मात्र 4 लाख श्लोकी पुराण भूमंडल पर प्रकट हुई एवं वेदव्यास जी की दया से 18 रूपों में विभक्त हो गई।

(151) पुराण पाठ/श्रवण में सभी साधारण शूद्रों का अधिकार :

सामान्य स्त्री या साधारण शूद्रों को वेद, उपनिषद (वेदों का सार संग्रह) नहीं पढ़ना चाहिए, मात्र पुराण श्रवण या स्वाध्याय से ही प्रभु की आराधना करना चाहिए। उन्हें सामान्य स्तर तक ऊँ (प्रणव) महामंत्र का जप भी मंत्रों के साथ नहीं करना चाहिए; परंतु यदि ब्रह्मनिष्ठ

गुरू की प्राप्ति से दीक्षा के दौरान प्रणव सहित मंत्र प्राप्त हो जाए तो समझे कि प्रभुकृपा से हम योग्य हो गये हैं। अतः बिना झिझक के ऊँमय मंत्र का पुरश्चरण भी किया जा सकता है। विनियोग, न्यास ध्यान एवं प्रभु पूजा के बाद जितना अधिक जप होगा उतना ही अधिक फल प्राप्त होगा। यदि और भी अधिक फल (सकाम से भौतिक या निष्काम से आध्यात्मिक) चाहिए तो इष्टमंत्र की 1/5/7 माला के बाद इष्ट संबंधी महापुराण का स्वाध्याय या श्रवण करते रहे, यह शीघ्र प्रभावी होता है, क्योंकि सत्संग/स्वाध्याय की प्रेरणा सभी महामंत्रों की ही आज्ञा होती है। वे कहते हैं कि हे भक्त! तुम अधिक मंत्र न जपकर मात्र स्वाध्याय/संतवाणी की शरण में जाओ तभी विवेक एवं अनन्य भक्ति में वृद्धि होगी। गीता 4/34 की भी यही आज्ञा है।

बिनु सत्संग विवेक न होई।
रामकृपा बिनु सुलभ न सोई।।

अतः प्रभु की अनुकंपा से जब भी ऐसा सौभाग्य आवे तब अद्वैतमय या कथामय सत्संग अनिवार्य रूप से श्रवण करे, परंतु स्मरण रहे जो अल्पज्ञ व्यासपीठ पर बैठकर भक्ति या अभिन्न ज्ञान वाणी को छोडकर मात्र कर्मकाण्ड की ही व्याख्या में लगा रहता है, उसके पास श्रवण हेतु न जाकर मात्र उस स्थान पर श्रीमद्भागवत जी को प्रणाम करके वापिस आ जाना चाहिए।

प्रभु सदाशिव (जो कि ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र आदि 33 देवताओं तथा कालचक्र के एकमात्र स्वामी है।) जी की शिवपुराण, परम उमा माँ भुवनेश्वरी जी की श्रीमद्देवी भागवत (जो कि तीनों देवों की एकमात्र माँ हैं।) पुराण, श्री कृष्णजी की भागवत पुराण या प्रभु की अन्य पुराण (कथा रूपी अमृत) का सदा–सर्वदा श्रवण करना चाहिए। जो सदा श्रवण/स्वाध्याय में समर्थ न हो तो 1 पहर, 1 घंटा, दो घड़ी (48 मि.), 1 घड़ी (24 मि.) अथवा 1 क्षण भी भक्तिपूर्वक श्रवण करता है उसकी कभी दुर्गति नहीं होती। संपूर्ण यज्ञों (अश्वमेध, वाजपेय आदि) और सब प्रकार के दानों (विद्यादान, महल दान, कपिला गो दान, ब्रह्माण्ड दान, अन्न दान, जलदान, भूमिदान, छाता, जूता आदि दान) से जो फल प्राप्त होता है वही फल मानव को 1 बार पुराण कथा का श्रवण करने मात्र से प्राप्त हो जाता है। भागवत माहात्म्य में बताया है कि नित्य जपकर्ता को प्रत्येक अक्षर के पाठ पर ही 1–1 कपिला गो के दान का पुण्य प्राप्त होता है। स्मरण रहे श्रीनारायण कवच श्रीमद्भागवत का ही अंश है।

(152) भोगार्थ प्रवचन करने वाले नरकगामी :

जिनके यहाँ श्रीमद्भागवत की कथा या वार्ता (रूपी सत्संग) होती है तथा जो लोग उस कथा के श्रवण में लगे रहते हैं उनकी (श्रवक, सत्संगियों की) सहायता अपने शरीर और धन से करना चाहिए। उन्हीं के अनुग्रह (या माध्यम) से स्वयं को भागवत सेवन का पुण्य एवं अन्य

लाभ सहज में ही प्राप्त होते हैं। श्रोता (कथा सुनने वाले) और वक्ता (कथा वाचक) भी दो प्रकार के होते हैं। एक धन कमाने के उद्देश्य से कथा कहते एवं सुनते हैं और दूसरे मात्र प्रभु श्रीकृष्ण को चाहते हैं। प्रभु को चाहने वाले यदि विधि में भी गलती करते हैं तो भी उनके लिए मात्र प्रेम ही सर्वोपरि माना जाता है (उन्हें कोई दोष नहीं लगता) परंतु सकामियों को बहुत सावधानी रखनी चाहिए। अतः भोगार्थ प्रवचन कभी नहीं करना चाहिए।

–स्कंदपुराण वैष्णव खण्ड श्रीमद्भागवत माहात्म्य

सदा ही श्रीमद्भागवत का सेवन बड़े प्रेम से किया जाए तो वह परम सर्वोत्तम है। 1 वर्ष में मात्र पूर्ण करने के उद्देश्य से (कभी आलस्य तो भी अश्रद्धा से) किया जाने वाला तामस सेवन है। 1 महीने तक धीरे–धीरे परंतु अति भागादौड़ी न करते हुए बड़ी ही श्रद्धा से श्रवण करना महान/उत्तम है परंतु उतावली के साथ 7 दिन में दौड़ाभागी करते हुए जो कथा करवाता है वह राजसिक है। दिन और प्रेम को अधिक देने पर फल (शांति, आनन्द) भी अधिक होता है।

आगे श्रीमद्भागवत जी में भी प्रभु श्रीकृष्ण जी ने कहा है कि श्री गुरु के अद्वैतमय सत्संग के श्रवण एवं मनन में जो शक्ति है वह अन्य कहीं नहीं। अतः महान सत्संग को कभी न त्यागे। काशी के ब्रह्मचारी कार्तिक जी के स्वामी स्कंदेश्वर महादेव के दर्शन मात्र से सत्यलोक प्राप्त हो जाता है।

(153) दान एवं कर्म के प्रकार :

द्रव्य (धनादि) 3 प्रकार के हैं। शुक्ल, शबल और कृष्ण। शुक्ल सर्वोत्तम है। वेदों को पढ़ाकर शिष्य से जो धन लिया जाता है वह सर्वोत्तम है। कन्या से, सूद, व्यापार, खेती और याचना (माँगना) से मिला धन शबल है। शुक्ल धन के दान (उत्तम पात्र को तीर्थादि में) से देवयोनि प्राप्त होकर वही फल प्राप्त, राजस भाव से शबल धन के द्वारा याचकों को दान से मानव योनि में भोग, तमोगुण से आवृत हो कृष्ण धन (पाप की कमाई से, चोरी से) से दान द्वारा पशु, पक्षी आदि योनियों में दान का फल प्राप्त होता है।

दान रहस्य को जानने हेतु स्कंद पुराण के इस श्लोक की व्याख्या अवश्य जाने जो कि माहेश्वर खण्ड–कुमारिका खण्ड में बताया गया–

द्विहेतु षडधिष्ठानं षडंग च द्विपाकयुक्।
चतुष्प्रकारं त्रिविधं त्रिनाशं दानमुच्यते।।

यह श्लोक आकाशवाणी द्वारा ब्रह्म ने कहा था जो कि अनेक वर्षों की तपस्या से राजा धर्मवर्मा को प्राप्त हुआ था, परंतु वह इसका अर्थ न जान सका तब उन्होंने घोषणा की थी कि जो इसका अर्थ बताएगा उसे मैं 7 लाख गो, 7 लाख स्वर्ण मुद्रा तथा 7 गांव दूंगा।

बिना मेहनत के प्रतिग्रह मांगने वाला ब्राह्मण यदि नित्य गीता नहीं जपता हो तो नरक में जाता है ।

उपर्युक्त श्लोक का अर्थ बताने पर या ऐसा ही कोई कार्य करने के बाद जो भी बचे (चाहे लाखों या हजारों हो) वह धन दान करने योग्य है।

दान का थोड़ा या सर्वस्व अर्पण यदि श्रद्धा से दिया जाए तो ही कल्याण करता है तथा दान को थोड़ा या अधिक बिना श्रद्धा के, क्लेश से दिया जाए तो इतना कल्याण नहीं होता। श्रद्धा से ही धर्म का साधन किया जाता है धन की बहुत बड़ी राशि से नहीं। यदि कोई करोड़पति भागवत पुराण के कार्यक्रम में मात्र 20 हजार देकर सोचे कि अब इतना ही बहुत है मेरे पास श्रवण को भी समय नहीं है तथा एक गरीब यदि अपनी आय का 50ः (चाहे वह 500 रूपए ही हो) देकर तन, मन, धन से सेवा भी करे तो उसे निःसंदेह उस अमीर की तुलना में महान फल प्राप्त होता है।

परिवार के पालन–पोषण के बाद जो बचे वही धन मधु के समान मीठा है परंतु यदि (स्कंद पुराण कुमारिका खंड) आत्मीय जन दुःख से जीवन निर्वाह कर रहे हो (अत्यधिक गरीबी के कारण) तो उस अवस्था में किसी अन्य सुखी मानव को देकर (और भी अधिक अमीर बनाने से तथा स्वयं के परिवार के दुःख बढ़ाने से) जो सोचता है कि मेरा कल्याण होगा तो यह उसकी भूल है इससे विष रूपी फल प्राप्त होता है।

कहीं–कहीं जो कथा आती है कि उसने अपनी पत्नि और पुत्र का भी, स्वयं का अन्न भी दूसरे को खिलाकर तृप्ति का अनुभव किया और स्वर्ग गया वह केवल एक प्रकार से ही सत्य है और वह ऐसे कि भिक्षुक भी भंयकर गरीब और भूखा था वह यदि समर्थ होता तो दाता को विष तुल्य फल मिलता।

मैं (प्रभु) अग्निमय यज्ञ में घी की आहुति या इस आयोजन में लाखों का खर्च करने से भी उतना प्रसन्न नहीं होता जितना कि मुझमें अपने कर्मफल समर्पित करने वाले ब्राह्मण (ज्ञाननिष्ठ चाहे किसी भी जाति का हो उपनिषद में यही परम विप्र है। भक्त चाहे जाति से म्लेच्छ हो शिवपुराण में यही विप्र शिरोमणी है, जातिगत ब्राह्मण जो उत्तम गुणों से युक्त एवं जितेन्द्रिय हो) के मुख से भोजन करते समय मुझे एक ग्रास में तृप्ति होती है।

कर्म तीन प्रकार के होते हैं। शुक्ल (पुण्य कर्म), कृष्ण (काला पापकर्म) और मिश्रित। इन तीनों तरह के कर्मों का फल सामान्य जीव भोगता है, परंतु संपूर्ण कर्मफलों को प्रभु या परमेष्ठी शिव (गुरूतत्त्व) को अर्पित करने पर किसी भी काल में कर्मों का भोग (फल, अच्छा, बुरा या मध्यम) प्राप्त नहीं होता और भक्ति प्राप्त हो जाती है।

–योग दर्शन 4/7 और गीता 18/12

(154) ब्रह्मा का पद, निष्पापता एवं कामना पूर्ति :

मार्कण्डेय पुराण पाराशर जी द्वारा रचित ग्रंथ है जिसमें माँ भुवनेश्वरी की दिव्य महिमा का गान एक विशिष्ट अंश के रूप में किया गया है। इसके माहात्म्य श्रवण या स्वाध्याय (सिद्ध कुंजिका स्तोत्र पाठ के बाद) मात्र से ही भयंकर पापों का तत्क्षण ही क्षरण हो जाता है। माँ भुवनेश्वरी जी की कृपा से कोई भी व्यक्ति भविष्य में साक्षात् ब्रह्मा का पद भी ग्रहण कर सकता है तो इन्द्र, मनुओं या राजाओं की बात ही क्या है? तथा नियमपूर्वक अनुष्ठान से संपूर्ण रोग, शोक पीड़ाएं दूर होकर कामनाओं की पूर्ति होती है।

(155) त्रिविध तापों से मुक्ति :

तापत्रयाग्नि तप्तानां अशांत प्राणीनां भुविः। गुरूरेव परागंगा तस्मै श्रीगुरवे नमः।। मंत्र का नित्य 11 माला 40 दिन तक जाप करने से त्रिविध तापों से मुक्ति मिलती है। सभी प्रकार के संकट निश्चय ही दूर हो जाते हैं परंतु माला, आसन, दिशा, समय अवश्य ही समान रहे दिशा न बदले निश्चित समय रहे। 40 दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन करे तदुपरांत दसांश माला जपे और गलती के लिए गुरूदेव से क्षमा प्रार्थना करे कि हे प्रभु! मुझे ज्यादा कुछ नहीं आता न ही मुझे सही उच्चारण आता है न ही कोई क्रिया विधि। कृपया मुझे क्षमा करें तथा मेरी रक्षा करे। मैं आपकी शरण में हूँ। मैं आपकी शरण में हूँ। मैं आपकी शरण में हूँ।

(156) गो दान पुण्य एवं पुराणवेत्ता महिमा :

आँवला के स्मरण मात्र से गोदान का पुण्य प्राप्त हो जाता है। जो मात्र एकादशी की कोई भी एक कथा पढ़ लेता है उसे 1000 गाय दान का पुण्य प्राप्त हो जाता है, वराह पुराण के 1 अध्याय से 1 कपिला गो (जो सहस्त्रों सामान्य गायों के बराबर मानी जाती है) को योग्य एवं जितेन्द्रिय ब्राह्मण को दान करने का पुण्य प्राप्त होता है। जो भागवत जी का नित्य थोड़ा भी स्वाध्याय करता है उसे प्रत्येक अक्षर के पढ़ने मात्र से ही 1–1 कपिला गाय दान का फल प्राप्त होता है अर्थात् 1 श्लोक से लगभग 40–50 कपिला गो दान के बराबर फल एकत्र हो जाता है तथा अन्य संपूर्ण तीर्थों, यज्ञ, दानों का फल भी। सकाम फल से पुनरागमन होता है। इस कारण अपवर्ग का लाभ नहीं हो पाता अर्थात् सकाम की अपेक्षा निष्कामता ही श्रेष्ठ है, परंतु जो भागवत के सार (वैराग्य, मुमुक्षा, अनन्य भक्ति या मुक्ति की इच्छा से परे अभिन्न ज्ञानमयता) को सतत् रूप से अपने में समा चुका अर्थात् साक्षात् भागवत की आत्मा जिसमें प्रवेश कर चुकी वह अभिन्नभावी सभी पाठमय स्वाध्यायों से कोटि गुना श्रेष्ठ बताया है, क्योंकि जैसे गणित का टीचर प्राप्त होने पर वही विषय वस्तु गणित पुस्तक के स्वाध्याय की

अपेक्षा शीघ्र बुद्धि में प्रवेश करने लगती है उसी प्रकार सदगुरु रूपी टीचर प्राप्त होने पर वही विषय वस्तु धार्मिक पुस्तक के स्वाध्याय की अपेक्षा शीघ्र बुद्धि में प्रवेश करने लगती है अर्थात् कहने का तात्पर्य है कि वास्तविक ज्ञानदाता प्राप्त होने पर पुस्तक की अपेक्षा विशेषज्ञ की ही सदा सुने। क्योंकि उसके माध्यम से साक्षात् पुराण ही बोलते है। स्वाध्याय के रूप में तो केवल जो लिखा है वही वाक्य सामने आता है, परंतु जब पुराणवेत्ता बोलता है तो संपूर्ण 18 पुराण ही अपना मंथन करके पूर्ण कल्याण को तत्क्षण प्रकट कर देते है।

(157) आयु एवं धनादि हेतु रूद्राक्ष प्रत्यक्ष कामधेनु :

1 मुखी रूद्राक्ष साक्षात् शिवजी का स्वरूप एवं महाकल्याणकारी है। पंचमुखी रूद्राक्ष रूद्र स्वरूप सारे पापों को दूर करने वाला है। 6 मुखी रूद्राक्ष कार्तिकेय जी का रूप है। 7 मुखी रूद्राक्ष धारण करने से दरिद्र भी महाधनवान हो जाता है। 8 मुखी रूद्राक्ष से पूर्णायु प्राप्त (क्योंकि यह भैरव जी का स्वरूप है।) एवं देहान्त के बाद रूद्र हो जाता है। 9 मुखी रूद्राक्ष नवदुर्गा स्वरूप है जो भी बायें हाथ में इसे धारण करता है वह निश्चय ही मुझ शिव के समान हो जाता है। 10 मुखी हरि का स्वरूप है जो कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। 11 मुखी रूद्र रूप है इससे विजय प्राप्त होती है। 14 मुखी परम शिवरूप है उसे भक्ति पूर्वक मस्तक पर धारण करें इससे समस्त पापों का नाश हो जाता है। धारण के नियम एवं मंत्र शिव पुराण में दिए गए हैं।अधिक फलार्थी को चाहिए कि वह फल के लिए मदिरा, मांस, लहसुन, प्याज त्याग दे।

हे देवी! 1100 रूद्राक्ष धारण करके मनुष्य जिस फल को पाता है उसका वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता। 550 रूद्राक्ष के दानों का मुकुट पहना जा सकता है। हे पार्वती! रूद्राक्ष के समान फलदायिनी माला दूसरी नहीं।

(158) देहान्त युक्त आत्मा का उद्धार :

पूर्वजों की भटकती हुई आत्मा या अन्य योनियों से उद्धार हेतु सबसे सरल उपाय श्रीमद्भगवद्गीता जी के सप्तम अध्याय का पाठ एवं आश्विन मास की इन्दिरा एकादशी है। योग्य ब्राह्मण से इस पाठ को (उसके देहान्त की तिथि जो कि श्राद्ध काल में निर्धारित हो) कराकर एवं शरद ऋतु की इस एकादशी को विधि सहित कर उस फल को उस आत्मा के नाम अर्पित करने से तत्क्षण ही वह आत्मा कल्याण को प्राप्त हो जाती है। पाठ के बाद एवं द्वादशी को (व्रत खोलने के दिन) क्षमता अनुसार अपने संपूर्ण कर्मफल प्रभु को अर्पित करने वाले एवं नित्य गीता के पाठ को करने वाले जितेन्द्रिय एवं संतोषी सद्गुरू/ब्रह्मवेत्ता संत (योगी) योग्य ब्राह्मण देवता को संतुष्ट करे। इससे कर्ता का भी महाकल्याण होता है। अन्य उपायों में श्री शिवपुराण का नवान्ह परायण या श्रीमद्भागवत पुराण का सप्ताह ज्ञान यज्ञ

परम श्रेष्ठ है, परंतु जिसके पास धन का अभाव हो वह प्रभु से तीव्रतर प्रार्थना करके मात्र सप्तम अध्याय पाठ माहात्म्य श्रवण के साथ आश्विन मास की कृष्णपक्ष एकादशी (इन्दिरा नामक) मात्र से ही प्रभु कल्याण कर देते हैं। अन्य उपायों में मार्कण्डेय पुराण के अध्याय 55 का स्तोत्र है उससे भी पूर्वजों को सैकड़ों वर्षों तक राहत प्राप्त होती है।

अज्ञानी ही ब्रह्मवेत्ता से दूर रहने के कारण महत्त्वाकांक्षी होते हैं इन महत्त्वाकांक्षियों की भयंकर इच्छाएँ होती हैं इसी कारण वह रात–दिन चिन्ता एवं तनाव से ग्रस्त रहते हैं यदि वे मृत्यु से पूर्व सचेत नहीं हुए तो देहान्त के बाद भी शरीर से रहित होकर भूखे प्यासे बिलखते हुए रोते ही रहते हैं इसी प्रकार के जीवों–प्रेत आत्माओं के लिए ही यहाँ ग्रन्थों का गुप्त एवं कल्याणकारी रहस्य बताया है।

आइये हम यहाँ महत्त्वाकांक्षियों की आकांक्षाओं के दर्शन (शब्द रूप में) करते हैं।

हवा में उड़ने का मन करे......

हवा में उड़ने का मन करे,
हो जाऊँ परी ये भी तन करे,
दुनिया में हो एक अलग ही,
सौन्दर्य सागर एक कामिनी का मन करे,
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

बंगला भव्य और विराट का मन करे,
हो जाऊँ महान ये तन करे,
धन लक्ष्मी का भण्डार हो।
कुबेर होने का मन करे,
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

हो जाऊँ स्वामी उर्वशी का,
उर्वशी ही क्या, समूची अप्सराओं का।
स्वामी होने का मन करे,
मारूती तो आम बात है, जहाज में बैठकर,
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

लूँ रिश्वत कितनी भी,
कानून व्यवस्था कुछ न करे।
नोटों की गद्दी पर सोउँ,
यही विचार सदा करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
यही विचार सदा करे।

बिना कमाई के ही ऐश करूँ,
ऐश्वर्या के साथ फिरूं,
अभिषेक होने का मन करे,
करते–करते भी अवारागर्दी,
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

क्षण–प्रतिक्षण भोगों में रत होकर,
सुख–मदिरा चखने का मन करे,
चाहे मैं करूँ कुछ भी मगर,
सदा स्वस्थ रहने का तन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

(अब देखिए वह इच्छाओं का गुलाम महत्त्वाकांक्षी और क्या–क्या सोचता है)

प्रधानमंत्री होने का मन करे,
अरे, प्रधान नहीं, ये तो लघु सोच है।
बनकर राष्ट्रपति भारत पर,
शासन करने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

पद और शोहरत हो सारे जहाँ में,
चक्रवर्ती सम्राट होने का दिल करे।
हो जय–जयकार धरा पर,
यशस्वी होने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

किलविश की हत्या करके,
शक्तिमान होने का मन करे।
मिले पूजा सदा ही,
भगवा पहनने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

नित्य मुफ्त का खाऊँ,
सदा मेहमानी करने का तन करे।
पहलवान होकर छा जाऊँ,
खली और सूमो होने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

कोई रोग–शोक न हो कभी भी,
व्याधि से मुक्त होने का मन करे।
देह सोये मखमल पर,
सदा आराम करने का तन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

नमक हलाली जाए भाड़ में,
रिश्वत खाने का मन करे।
यह तो नाश्ता है,
सरकारी खजाना खाने का तन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

सुरक्षा के दायरे में रहकर सदा,
होकर स्त्री कामियों को ठगने का तन करे।
जगत में वासनाग्रस्तों की कमी नहीं,
गुलाम इनको बनाकर लखपति होने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

काश मैं हो जाऊँ संजय,
अक्षय आनन्द रचने का मन करे।
वह तो शायद अपरिग्रही है,
मेरा तिजोरी भरने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

बिना बिल भरे, फोन पर,
घंटों तक बातें करने का मन करे।
सुनता रहूँ प्रेमिका वार्ता,
सदा यही तन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

टेलीविजन का महानायक बनूं,
काश होता बिगबी! रेखा के संग नाच–नाचकर,
बच्चन होने का तन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

राजनीति के पंचवर्षीय पद को पाकर,
महाकोष हड़पने का तन करे।
लोकार्पण करते–करते यूं ही,
लोकपति होने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

कुकर्मों का फल जानू फिर भी,
नयन इशारे का मन करे।
सब कुछ छोड़कर जाना फिर भी,
पोटली भर कर लाखों की बैंक में,
रखने का मन करे।
हवा में उड़ने का मन करे।
हो जाऊँ परी ये भी तन करे।

राम राम! देखा आपने एक संसारी मोहग्रस्त जीव की कैसी–कैसी विचारधारा होती है। ऐसी ही विचारधारा (जो कि गीता में भी महत्त्वाकांक्षियों के संदर्भ में वर्णित की गयी है) जब साधना, भक्ति न करने से मृत्यु तक भी पीछा नहीं छोड़ती तब उस महत्त्वाकांक्षी को भूत–प्रेत या अन्य 84 लाख योनियों में भटकते हुए ठोकरें खाना पड़ती है। उपर्युक्त इन्दिरा एकादशी का व्रत, गीता सप्तम अध्याय, मार्कण्डेय स्तोत्र तथा भागवत महापुराण का पाठ ऐसी आत्माओं का भी सहज ही उद्धार कर देता है अतः सदा ही इसके सेवन की कोशिश करते रहो एक बार तो अवश्य ही इसको पूर्ण रूपेण पूर्ण एकाग्रता से अवश्य ही पढ़े।

(159) अन्नमय कोश :

त्वचा, चर्म, मांस, रुधिर, अस्थि, वीर्य आदि का समूह युक्त फिजिकल वॉडी जो मात्र अन्न पर आधारित होता है। परंतु यह शारीरिक ज्ञान कल्याण का परम हेतु नहीं मात्र सामान्य जिज्ञासा ही जानने योग्य है। कल्याण हेतु तो अनन्य भक्ति एवं विशिष्ट अभिन्न ज्ञान ही है। अतः यदि किसी को यह कोश, विभिन्न प्रकार की वायु, अथवा अन्य लोक–लोकांतरों का ज्ञान न हो परंतु उसकी ईश्वर में विशेष प्रीति हो तो भी वह महानतम कहलाता है।

(160) शुभ लक्षणा पत्नी एवं अन्य कामना प्राप्ति के उपाय :

बेला अर्थात् मल्लिका के 1 लाख फूल शिवजी पर चढ़ाने से शिवजी अत्यंत शुभ लक्षणा पत्नी प्रदान करते हैं, जूही के फूलों से श्री शिवपूजा अथवा अन्न की स्वामिनी माँ पार्वती की पूजा–अर्चना या चिंतन करने पर घर में कभी भी अन्न की कमी नहीं होती। 1 लाख बिल्वपत्र (पंचाक्षर मंत्र के द्वारा) सकाम भाव से शिवलिंग पर चढ़ाने से संपूर्ण काम्य वस्तुएँ प्राप्त हो जाती हैं; परंतु निष्काम भाव से चढ़ाने पर ही मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है। शैफालिका के फूलों से शिवजी का पूजन किया जाए तो मन निर्मल होता है।

आजकल बहुत लोग वाहन माँगते हैं तो सुनिए–यदि पंचाक्षरी मंत्र के साथ चमेली के पुष्पों से भोलेनाथ शिवजी की पूजा की जाए तो मनुष्यों को वाहन प्राप्त होते हैं। नित्य 54 या 27 गेंदा पुष्प चढ़ाने से मकान बनने के सारे अवरोध दूर हो जाते हैं। तथा शिव पंचाक्षरी मंत्र अर्थात् ऊँ नमः शिवाय के जप को अनुष्ठान पूर्वक करने से तो अन्य कुछ उपाय के भी संपूर्ण कामनाओं की सिद्धि हो जाती है। स्कंद पुराण में तो स्पष्ट कहा है कि, जिन्होंने आज बिना किसी के कहे नमः शिवाय कहा है वह साक्षात् रुद्रदेव का ही स्वरूप समझा जाये।

वास्तव में धन्य हैं वे व्यक्ति जो परमात्मा के शिव–शक्ति, कृष्ण–राधा या अन्य अद्वैतमय स्वरूप के चिन्तन अथवा सर्वमय ऊँ कार भाव से भावित हैं। धन्य हैं वे लोग जो परमात्मा को सतत् अपने हृदय, मन और बुद्धि में बसाये हैं, धन्य हैं वे मानव जो परमात्मा की

सतत् अमर पावन कथाओं और लीलाओं का श्रवण कर परम अक्षय–आनन्द रूपी अमृत वर्षा में भीगकर अपने जीवन को सार्थक कर रहे हैं।

नमः शिवाय जप नमः शिवाय

गर तू चाहे,
कल्याण हो जाये।
सदा ही भजता रहे।
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
परम तत्त्व जान ले उनको,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

हाड़ मांस के लोथड़े,
समूचा धन, जीवन खा जाये।
स्मरण से काल स्वयं भय खाये।
सर्व तज त्यागकर,
भज ले बन्दे,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

भक्ति में है शक्ति अनन्त,
चिंतन से तू पावन हो जाये।
जगत चिन्तन में क्या रखा है?
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
स्त्री, पुत्र स्वार्थ के प्यारे,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

रुद्र भक्ति से सारे,
कल्मष दूर हो जाये।
अपरोक्ष ज्ञान पाकर,
साधक ही लक्ष्य हो जाये।
जतन छोड़ व्यर्थ के सारे।
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

कामारि कृपा से शीघ्र ही,
योगक्षेम तेरा वहन हो जाये।
जपता रह संघर्ष त्यागकर,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
परिग्रह में क्या रखा है,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

कमाले तू चाहे कितना भी,
एक दिन वह दूर हो जाये।
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
या फिर तू उसे छोड़ जाय,
मुक्ति हेतु भज केवल,
नमः शिवाय ऊँ नमः शिवाय।

यदि तू चाहे महान अमरता,
शिव भी तेरे हृदय बस जाये।
क्यों फिरता है मारा–मारा,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
किस्मत तेरी दास हो जाये,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

कर दृढ निश्चय,
जन्म मरण से परे हो जाये।
कर्म–राह त्यागकर भक्त हो जाये।
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
नागेश कृपा निर्भयता लाये,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

मौत का तेरी क्या भरोसा,
कब तेरा काल आ जाये।
परम पिता को भज ले प्यारे,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
छोड़ तृष्णा के बन्धन सारे,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

ध्यान से अक्षय आनन्द के,
जीव ही ब्रह्म हो जाये।
ज्ञान पाकर ब्रह्मत्व का,
चराचर ही ब्रह्म हो जाये।
सर्वज्ञता का एक ही महामन्त्र।
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

जितेन्द्रिय, श्रद्धालु ज्ञान को पाये,
स्त्री चिंतक नष्ट हो जाये।
काम का नाशक है कामारी,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
वर, यश, पद मुक्ति हेतु,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

अद्वैत गुरु के सेवन से,
निश्चित 'अंशभूत' शिव हो जाये।
कैवल्या हेतु कर ले चिन्तन,
नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय।
कृष्ण हरि का सार है प्यारे,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

मंत्री शंत्री राजा को,
स्वयं भोग भोगकर खाये।
भटकना बन्द कर अब तो तू,
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।
नमः शिवाय जप नमः शिवाय।

(161) पुत्र का तीर्थ गमन दोष नहीं :

यदि पुत्र अभिन्न ज्ञानी, अनन्य भक्त, मुमुक्षु या वैराग्यमय हो अथवा पिता से आज्ञा लेकर तीर्थ दर्शन करता हो या आज्ञा न मिलने पर भी जो गीता या भागवत के मात्र 1 श्लोक का भी नित्य पाठ करता है, उस पुत्र को तीर्थ गमन करने का पाप नहीं लगता। अन्यथा पिता की आज्ञा के बिना जो पुत्र तीर्थ यात्रा करता है उसे पिता की हत्या का पाप लगता है।

(162) मृत्यु क्षण पर उपाय से मोक्ष लाभ :

यदि मृत्यु के समय में किसी के गले में तुलसी या रूद्राक्ष हो तो उसे बिना अन्य प्रयास के प्रभु लोक प्राप्त हो जाता है। तुलसी स्पर्शित जल भी मृत्यु के 1 क्षण पूर्व भी प्राप्त हो जाए तो बैकुण्ठ प्राप्त हो जाता है परंतु ऐसा भाग्यशाली हरेक नहीं होता। अतः उत्तम तो यही है

कि हम अपने गले में रूद्राक्ष (इष्ट अनुसार) या तुलसी दाना डालकर रखे। इसके साथ और भी अन्य उपाय निम्न हैं।

(1) मृत्यु के पूर्व यदि प्रभु का नाम मात्र एक बार भी बोला जाए तो इष्ट के पार्षद अथवा शिवगण बनते हैं; परंतु जिसने श्रीमद्भागवत पुराण का नित्य स्वाध्याय या श्रवण किया हो उसे अन्य किसी प्रयास के ही सर्व फल प्राप्त हो जाते हैं।

(2) देहान्त से पूर्व यदि मात्र गंगाजल की मात्र 1 बूँद प्रभुकृपा से प्राप्त हो जाये या मात्र गंगा स्मरण ही हो जाए तो ब्रह्माजी की पूर्ण आयु के समय तक बैकुण्ठ में रहने का फल प्राप्त हो जाता है।

(3) मृत्यु से पूर्व यदि प्रयाग क्षेत्र का स्मरण हो जाए तो ब्रह्मलोक प्राप्त हो जाता है।

(163) दीपदान से अकाल मौत से रक्षा :

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को निम्न मंत्र से प्रदोष काल में दीपदान करने पर अकाल मौत नहीं होती।

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन च मया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतामिति।।

दीपावली के पहले की चतुर्दशी को प्रत्येक तेल में श्रीलक्ष्मी और प्रत्येक जल में गंगा निवास करती हैं। जो उस दिन (चतुर्दशी को) प्रातःकाल स्नान करता है वह यमलोक नहीं देखता।

(164) मात्र एक कमल के फूल से निष्पापता :

मात्र एक कमल के फूल से कमला पति (श्रीहरि) की सेवा करने से करोड़ों जन्मों के पापों का नाश हो जाता है।

(165) प्रत्येक तुलसीदल पर मुक्ता दान करने का फल :

100000 (1 लाख) तुलसी पत्र चढ़ाने पर श्रीहरि की कृपा से प्रत्येक दल पर मुक्ता दान करने का फल पाता है।

(166) शालग्राम शिला महिमा :

महर्षि गालव जी ने पैजवन शूद्र (सत्कर्मी गृहस्थ को भक्ति की प्राप्ति हेतु) के घर जाकर कहा कि यह सच है कि अभी तुमको वेद एवं वेदों के सार रूप उपनिषद को पढ़ने का अधिकार नहीं परंतु शालग्राम शिला के पूजन में सबका अधिकार है। चारों वर्ण के लोग इसके नियम पूर्वक दर्शन मात्र से भी तत्काल निष्पाप हो जाते हैं। (परंतु जातिगत शूद्रों में जो असत् शूद्र हैं जिसके घर में पवित्रता न हो, जो अशुद्ध रहता है। जहाँ शराबी रहते हों उस शूद्र को अधिकार नहीं है तथा ऐसी स्त्रियाँ जो पतिव्रता हैं वे भी अपनी भक्ति की वृद्धि के लिए, परिवार के कल्याण के लिए पति की सेवा करती हुई अनिवार्य रूप से महाकल्याण हेतु शालग्राम जी की पूजा कर सकती हैं।) (पराविद्या, ईश्वरीय पुराण, श्री यंत्र के दर्शन मात्र से भी पापों की गठरी जल जाती है) समस्त तीर्थ एवं देव मंदिर भी शालग्राम शिला का तुलसी दलों द्वारा पूजन होता है। वहाँ यमराज अपना मुँह नहीं दिखाते। जो शालग्राम शिला के आगे दीपदान करता है उनका कभी यमपुर में निवास नहीं होता।

चातुर्मास्य में पंचामृत से स्नान कराने पर बंधन कट जाते हैं। जो चातुर्मास्य में शालग्राम शिला के ऊपर तुलसीदल की माला चढ़ाता है उसकी सारी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। शालग्राम शिला के ऊपर चढ़ी माला को उठाकर नवीन माला चढ़ाए फिर उस (उठी माला) को मस्तक पर धारण करे ऐसा प्रभु का माला प्रसाद से ही सहस्त्रों पाप नष्ट हो जाते हैं।

(167) श्रीमद्भागवत पुराण घर में रखने का दिव्य फल :

श्रीमद्भागवत पुराण जितने दिनों तक घर में रहती है उतने दिनों तक पूर्वजों को दिव्य दूध, मेवा, मिठाई, मलाई आदि द्वारा परम तृप्ति होती है। जो नित्य मात्र एक श्लोक का भी जप करता है, वह निष्पाप होकर श्री हरि लोक 'बैकुण्ठ' पाकर अमर 'मुक्तिमय' हो जाता है।

(168) भक्त के दर्शन से महापापी भी शीघ्र निष्पाप :

प्रभु के अनन्य भक्त के दर्शन और स्पर्श मात्र से (श्रीमद्देवीभागवत) या कपिला गो के दान मात्र से (वराह पुराण अध्याय 112) कोई भी कैसा भी महापापी (ब्राह्मण का धन छीनने वाला, गो घाती, गर्भपात करने वाला, वेद निन्दक, नास्तिक, ब्राह्मणों का निन्दक, पीपल वृक्ष को काटने वाला, वह ब्राह्मण, राज्य कर्मचारी अथवा हिंसक) हो निष्पाप हो जाता है।

(169) वराह पुराण की पूजा मात्र से सायुज्य फल :

जो वराह पुराण (जिसका क्रम 12वां है इसके अतिरिक्त पहला ब्रह्म पुराण, दूसरा पद्म पुराण, तीसरा वायु पुराण, चौथा शिवपुराण, पाँचवा भागवत पुराण, 6वां नारद पुराण, 7वां मार्कण्डेय

पुराण, 8वां अग्नि पुराण, 9वां भविष्य पुराण, 10वां ब्रह्म वैवर्त, 11वां लिंग पुराण, 12वां वराह पुराण, 13वां स्कंद पुराण, 14वां वामन पुराण, 15वां कूर्म पुराण, 16वां मत्स्य पुराण, 17वां गरूड़ पुराण, 18वां ब्रह्माण्ड पुराण) की नित्य पूजा करता है। वह साक्षात् हरि की पूजा के समान फल प्राप्त करता है तथा अंत में सायुज्य मोक्ष।

(170) मात्र दान का महान फल :

वराह पुराण (अध्याय 112) में एक इतना महान उपाय बताया है जिसको अपनाने से वह (कर्ता) उतने करोड़ वर्षों तक ब्रह्मलोक में आनन्दपूर्वक निवास करता है जितने कि धेनु और बछड़े के रोमों की संख्या होती है। वह उपाय है उभय मुखी कपिला गौ का दान। जिस समय वह कपिला गो आधा प्रसव करने की स्थिति में, उसी समय श्रेष्ठ ब्राह्मण को वह दान कर दे। ब्राह्मण देव से संकल्प करवाकर पुच्छ ब्राह्मण के हाथ पर रख दे। यह उत्तम दान ही उपर्युक्त फल दाता है तथा सात द्वीपों वाली पृथ्वी का दान करने का फल भी पाकर कृतकृत्य हो जाता है। परंतु हीन व्यक्ति से दान लेने वाला ब्राह्मण पतित हो जाता है। उसके पितर नरक में पड़ते हैं। इस कपिला गो दान का माहात्म्य जो भी कोई प्रातःकाल उठकर 3 बार पढ़ता है उसके 1 वर्ष के संपूर्ण पाप भस्म हो जाते हैं एवं भुक्ति–मुक्ति भी प्राप्त होती है।

(171) कैवल्या का सूत्र 'अवधूत उपनिषद' :

जो योगी पुरूष आश्रम एवं वर्ण व्यवस्था से ऊपर उठकर आत्मा मात्र (सर्वमय ब्रह्म मात्र) में ही स्थित रहता है। वह वर्णाश्रम रहित योगी पुरूष अवधूत कहा जाता है। बहुदक, कुटीचक्र, हंस, परमहंस संन्यासी बहुत से बहुत सत्यलोक पहुँच पाते हैं परंतु गुरूकृपा पात्र अद्वैत ज्ञाननिष्ठ या अवधूत ही कैवल्या पद पाकर धन्य हो जाते हैं।

सत्कर्मों के परिपक्व हो जाने पर जब अनेक जन्मों के पश्चात् मुमुक्षा जाग्रत होती है तब वह सद्गुरू की सेवा (पराविद्या अर्थात् गुरूमहिमा प्राप्त होने पर) करके उनसे अद्वैत ज्ञान पाकर कैवल्य पद पाता है।

(172) मात्र मूर्ति के स्मरण से कैवल्य पद प्राप्त :

शिव एवं विष्णु के हरिहर रूप (आधा शिवस्वरूप आधा विष्णु रूप अर्धनारीश्वर की भांति) जो कि आज भी मन्दराचल पर्वत पर है इस परम पावन संयुक्त मूर्ति के स्मरण मात्र से पहाड़ जैसे भयंकर पाप भी भस्म हो जाते हैं तथा अभिन्न ज्ञान प्राप्त होने से परम कैवल्य पद भी प्राप्त होता है। जो भी शिव एवं हरि में एक तत्त्व न देखकर भेद करता है उसे नरक प्राप्त होता है। यह मूर्ति (संयुक्त रूप) योगियों के ध्यान का प्रमुख केन्द्र बिन्दु होता है।

(173) अपरिग्रही बनो :

श्रीरामः हे हनुमान! (सेतु माहात्म्य स्कंद पुराण) :

संग्रह का अंत विनाश है। (अतः अपरिग्रही बनो) अधिक ऊँचे पद पर (इच्छा के साथ चढ़ने वालों के लिए) चढ़ने का अर्थ नीचे की ओर तैयारी करना भी है क्योंकि पुण्य कर्मफल क्षीण हो जाने पर यह सुनिश्चित ही है। संयोग का अंत वियोग और जीवन का अंत मरण है। (कपिश्रेष्ठ)! जैसे समुद्र में बहते हुए काठ कुछ समय मिलते हैं फिर उन्हें अलग होना ही पड़ता है। वैसे ही संसार का नियम है। अतः बुद्धिमान सदा आत्मा–परमात्मा में एकाकार होता है नाशवान की तरफ ध्यान नहीं देते। इसी प्रकार स्त्री, पुत्र, भाई, क्षेत्र, धन आदि ये सब कुछ काल (50–60 वर्ष) के लिए एकत्र होते हैं और फिर अन्यत्र चले जाते हैं अतः बुद्धिमान इस नाशवान दौलत (नकली संबंध) को पाकर या न पाकर भी चिंता नहीं करते केवल परमात्मा में लय होने हेतु तप, जप, गुरूसेवा मात्र में ही (सर्वमय ब्रह्म ऊँ कार देखते हुए) आनंदित होते हैं और परम लक्ष्य पाकर भवरोग से मुक्त हो जाते हैं।

हे अंजनानंदन! तत्त्व रूप से एक अद्वैत ही परम सत्य है अतः जो इस दिव्य दृष्टि (अद्वैत दृष्टि) से विचार कर सब कुछ अभिन्नमय देखता है उससे (उस ऊँ भावी) द्वारा किया गया कर्म वास्तव में मेरा (मुझ ऊँ भावी का) कर्म है और जो मेरे द्वारा किया गया कर्म है वह वास्तव में अद्वैतवादी द्वारा ही किया गया है क्योंकि शरीर बदलने से, उपाधियाँ अलग–अलग होने पर भी तत्त्व मात्र एक ही ब्रह्म होता है अतः मेरे द्वारा की गयी शिवलिंग की स्थापना (से यदि तुम सोच रहे हो कि मुझ राम ने यह गलत किया है तो इस मिथ्या अज्ञान को त्याग दो) वास्तव में तुम्हारे द्वारा ही की गयी है.......

(174) बस यही ज्ञानी है :

जो शिव, हरि, भुवनेश्वरी, लक्ष्मी एवं स्वयं आदि में मात्र एक ही तत्त्व अर्थात् ऊँ को निहारता है, इष्ट 'महारुद्रात्मा शिव' होने पर जब कभी श्री हरि या राम रूपात्मा की कोई महान प्रशंसा करे तो भी उसी क्षण वही महाभाव रहे, जो कि अपने इष्ट की प्रशंसा करने पर होते है; क्योंकि सार रूप से सर्वमय ऊँ कार परम तत्त्व ही है।

(175) एकमात्र मेरा हो जा :

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। श्रीगीता 18/66

हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण धर्मों (कर्त्तव्य कर्मों) को मुझमें त्यागकर केवल मेरी शरण में आ जा। (गुरूसेवा, सत्संग, स्वाध्याय, लेखन कार्य से ज्ञान दान, वाणी द्वारा जीवों के अज्ञान का नाश करने हेतु पुराणों का उपदेश, एकादशी, माघ, वैशाख, मार्गशीर्ष, कार्तिक व्रत का उपदेश, कर्मफल त्याग और बदरी क्षेत्र का उपदेश दाता, गुरूचरणामृत के सेवन से शीघ्र कल्याण का बखान, मीरा की भांति मेरे विरह में अश्रु धारा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह अद्वैत तत्त्व से स्वयं सर्वमय स्थिति) मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा तू शोक मत कर। ब्रह्मा का लेख सामान्य व्यक्ति नहीं पढ़ सकता। खैर जो भी हो हमें एवं तुम्हें भी क्या? क्योंकि प्रभु ने यह 18/66 का आश्वासन देकर पूर्णतया यह निर्भय बना दिया है।

ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए

ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए,
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए,
चाहे काई आए, चाहे कोई जाए,
प्रारब्ध खेल समझ नहीं पाए।
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।

शिव कृपा बिन जीवन तरस जाए,
बिन तेरे हे शिव! रहा नहीं जाए,
विरह का दुःख सहा नहीं जाए।
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए।

वक्त के साथ निःसंदेह,
महाकली भी फूल हो जाए,
काश! कि भक्ति से शिव ही आये।
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए।

गुरूकृपा से मात्र हे प्यारे!
पतझड़ भी बहार हो जाये।
मृगतृष्णा भी प्यास बुझाये,
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए।

कल्याण हेतु चातुर्मास्य में,
गृहस्थ आश्रम त्याग दिया जाये।
मैं नहीं कहता पुराण गाये जाये,
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए।

यदि तुलसी रूद्राक्ष पहन लिया जाये,
भस्म त्रिपुण्ड/गोपिका श्रृंगार किया जाये।
पापी भी दर्शन योग्य हो जाये,
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए।

भक्त की पूजा प्रभु जैसी,
ज्ञानी भी साक्षात् ब्रह्मा समान,
ग्रन्थ रहस्य समझ लिया जाये।
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए।

विशुद्ध भावी अंशभूत विरचित,
ग्रन्थ रहस्य धारण किया जाये।
साधक ही ब्रह्मा हो जाये,
स्वरूप बोध से लड़ा नहीं जाए।
ब्रह्मा का लेख पढ़ा नहीं जाए।

(176) ब्रह्मज्ञानी गुरू की वाणी से शीघ्र कल्याण :

वर्ण एवं आश्रम धर्म से परे होकर (आत्मज्ञान सर्वमय ऊँ कार) ही कैवल्य मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है अतः ब्रह्मज्ञानी गुरू की वाणी से भक्ति और ज्ञान पाकर शीघ्र कल्याण करे अन्यथा आजीवन वर्णों में उलझने से मोक्ष नहीं मिलता।

अद्वैतवादी का प्रणाम :

अद्वैतवादी किसी को भी (सर्वमय स्वयं शिवरूप जानने के कारण) प्रणाम नहीं करता हैं अथवा करता है तो सभी में परमेश्वर शिवतत्त्व (स्वयं पूर्ण तत्त्व) को देखकर उस तत्त्व को ही प्रणाम करता है।

(177) ऊँ कार की महान महिमा :

समस्त कार्यों में प्रथम उच्चारण करने योग्य प्रणव (ऊँ कार जो कि सर्वमय परब्रह्म ही है) ही है, परंतु यह प्रणव जाप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, वैराग्यवान, मुमुक्षु, भक्त, गुरूगीता या भगवद्गीता का पाठ कर्ता, गुरूचरणामृत का पान कर्ता, योगी या ज्ञाननिष्ठ ब्रह्मवेत्ता (जिसकी नजरों में कोई न ही स्त्री है न ही पुरूष, सब कुछ ऊँ कार ही है) के लिए है। साधारण स्त्री या साधारण शूद्र इसे न जपे। यह तो संसार के मनुष्यों के लिए बताया।

(178) युगल इष्ट दंपति पर प्रभु की परमकृपा :

जो शिष्य/साधक/यजनकर्ता/तपस्वी/जपकर्ता/मुमुक्षु 'स्त्री (नारी शरीर पर दृष्टिपात तन, मनादि से अर्थात् कामनी संग), धन (कंचन) एवं लोकेष्णा (कीर्ति) त्यागकर श्रीमद्भागवत 10–80–34 एवं पद्म अनुसार गृहस्थ प्रजादि, वानप्रस्थादि धर्म–कर्म छोड़कर एकमात्र अद्वैतभावी ज्ञाननिष्ठ गुरु परमात्मा की शरण/वाणी तक जाने हेतु/उनकी प्राप्ति के लिए या अनन्य द्वैतमय भाव से युगल इष्ट दंपति (जैसे ऋद्धि–सिद्धि–गणेश, राधे–श्याम, गौरी–शंकर...) का चिंतन, सेवन, पूजन, कवचादि पाठ, स्वाध्याय ब्रह्मचर्य पूर्वक (या पद्म पुराण के अनुसार उत्तम पतिव्रता स्वरूप नारी रूप से विवाह कर 1 संतान बाद नियम पालन) करता है, वह प्रभु की परमकृपा प्राप्त कर लेता है।

(179) अद्वैत तत्त्व ही विश्रांति का मूल मंत्र :

मैं स्वयं शिव चराचर में व्याप्त हूँ मैं ही सब कुछ हूँ मुझ ब्रह्म (एकमात्र ऊँ ब्रह्म) के अतिरिक्त कहीं भी दूसरा कोई नहीं है। मैं एक ही सर्वव्याप्त होकर बहुत हुआ हूँ (एकोऽहं बहुस्यामः)

सदाशिव, महाकृष्ण त्रिदेव रूप से, मैं स्वयं पराशक्ति (ऊँ) ही लीलारत हूँ। जगत का प्रत्येक प्राणी भी मूल रूप से मैं ही हूँ। सभी ब्रह्मज्ञानी गुरू (सद्‌गुरू परमेश्वर जो ब्रह्मदाता हैं) अद्वैतवादी ज्ञाननिष्ठ, साधु संत, संन्यासी, श्रावक, जपकर्ता, तपस्वी, पूजनकर्ता भी मैं ही हूँ। सर्वमय मैं (प्रणव ऊँ) और केवल मैं ही हूँ। क्षीर सागर में मैं ही परम पुरूष हरि रूप से पालन कार्य कर रहा हूँ। रूद्रलोक से रूद्र मूर्त्यात्मा भी साक्षात् में ही हूँ। अनुग्रह कर्ता, गुणों से परे (गुणातीत), विश्वनाथ सदाशिव भी मैं ही हूँ। मेरे अलावा अन्य किसी की कहीं भी सत्ता नहीं है। अन्य स्वरूपों से मैं ही समस्त पदार्थ ग्रहणकर्ता हूँ। सोऽहं सोऽहं सोऽहं सोऽहमस्मि, शिवोऽहम, ऊँ कार ब्रह्म तत्त्वोऽहं। मैं ही विशुद्ध ज्ञान हूँ मैं जैसे यहाँ कह रहा हूँ कि गुरू एवं परम तत्त्व शिव एक ही है और वह मैं (ऊँ) स्वयं ही हूँ सर्वमय हूँ वैसे ही मैं स्वयं गुरूगीता रूप और अक्षय आनन्द एवं भगवद्‌गीता रूपी उपनिषदों के सार रूप से भी स्पष्ट कह रहा हूँ कि एक मात्र मुझ सार तत्त्व (अद्वैत) को देखो दूसरा कोई है ही नहीं। द्वैतभाव से अन्य कुछ देखना मूढ़ता है क्योंकि दूसरा कुछ बना ही नहीं। मक्खी, मच्छर, पतंगे, कुत्ता, बिल्ली, हाथी, घोड़ा, गाय, बैल, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि शरीरों की एक मात्र आत्मा मैं ही परमात्मा हूँ। अलग–अलग रूपों से अलग–अलग कर्मफल नियम के अंतर्गत लीलारत हूँ। मैं ही पंचब्रह्म परमात्मा हूँ। जहाँ–जहाँ मन, वाणी और बुद्धि नहीं जा पाती वहाँ–वहाँ भी मैं ही हूँ। समस्त नाशवान (दृश्य वस्तु) भी मेरी ही मूर्तियाँ हैं। परमूर्ति (सदाशिव, महेश, रूद्र), परात्पर मूर्ति (हरि, ब्रह्मज्ञानी मूर्त्यात्मा का शरीर) एवं अपर मूर्ति (साधारण देह जिनकी आत्मा मूल तत्त्व को सर्वमय नहीं देख रही) भी मेरी ही आकृति है। हवा, पानी अग्नि, मूर्ति मैं ही हूँ। इस मूर्ति या नाम के अलावा जो शून्य है वह भी मात्र मैं ही हूँ।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को ब्रह्म (ऊँ) की यह सर्वमय अद्वैतवाणी के श्रवण या स्वाध्याय मात्र से ज्ञान सिद्धि प्राप्त होकर सर्वज्ञता प्राप्त होती है।

माँ पार्वती जी ने भी लीलावश इस प्रणव का उच्चारण (चातुर्मास्य व्रत के बाद विशेष पुण्य पाकर ही) बाद में ही किया, क्योंकि शिव जी ने उन्हें इस रहस्य को स्कंद पुराण में स्पष्ट बताया था। विशेष रूप से ब्रह्मविद्या का अधिकारी वही है जिसकी बुद्धि और हृदय केवल ब्रह्म में ही स्थित होना चाहते हैं जिसे संसार या संसार की नाशवान वस्तुओं के प्रति आसक्ति नहीं है जो केवल संसार की नश्वरता को समझ चुका। वैसे भी नाशवान पदार्थ सच्चा सुख नहीं देते, जितना अधिक संग्रह करते हैं उतना ही अधिक दुःख होता है फिर क्यों न हम भौतिक प्रपंच को छोड़कर अध्यात्म की ओर प्रस्थान करें? संपूर्ण सृष्टि एवं सत्य का सार केवल पुनरागमन से मुक्ति के स्वरों का गुंजन करना ही है न कि दुःख, पीड़ा या संताप अथवा न ही स्त्री, पुत्र, कीर्ति अथवा भौतिक भोगार्थ धन की प्राप्ति। श्रीमद्‌भागवत में भी प्रभु श्रीकृष्ण ने स्पष्ट ही कहा है कि "मैं गृहस्थ के प्रजा वृद्धि या पालन आदि धर्म, वानप्रस्थ की तपस्या या संन्यासी के यम–नियमों से उतना प्रसन्न नहीं होता जितना कि ब्रह्मविद्या को देने वाले सद्‌गुरू की सेवा एवं उनके उपदेश अर्थात् ब्रह्मज्ञान (सर्वमय मात्र एक तत्त्व ऊँकार रूपी अद्वैत ज्ञान जिसकी प्राप्ति से अद्वैत अपरोक्ष हो जाता है) से संतुष्ट होता हूँ। परम सत्य

का बोध कराना ही मुझ महाकृष्ण का लक्ष्य है न कि व्यर्थ के संग्रह में जीव को भ्रांति में डालना''। (गीता 4/34 का सार यही है) (देवीभागवत सातवां एवं दसम स्कंद अध्याय 36, 80)

श्मशान अंतिम धाम रे।

नित्य क्यों तू संघर्ष करता,
श्मशान अंतिम धाम रे।
अब तो परिग्रह से मुक्त हो जा,
अंशभूत तेरा नाम रे,
श्मशान अंतिम धाम रे।

जगत में तेरा कोई नहीं है,
होजा शिव का दास रे।
दारा सुत में सुख नहीं है।
सुन रे ज्ञान सार रे,
श्मशान अंतिम धाम रे।

नित्य अर्थी को देखकर भी,
छोड़ता नहीं क्यों राग रे।
खटिया को समझ अर्थी ही,
खेल हरि से फाग रे।
श्मशान अंतिम धाम रे।

स्त्री, पुत्र, धन, बल, माया
सुख जीव को क्या देते रे।
प्रभु पर क्या नहीं भरोसा,
जो कर्ता योगक्षेम राम रे।
श्मशान अंतिम धाम रे।

राम काज को छोड़–छाड़कर,
रति सुख नीचों का काम रे।
शाश्वत आनन्द में जाग जरा,
तू ही सच्चा धाम रे।
श्मशान अंतिम धाम रे।
श्मशान अंतिम धाम रे।

(180) समस्त वेदों का सार :

समस्त वेदों का सार ब्रह्मनिष्ठ गुरू की शरण में जाकर उनकी सेवा–शुश्रुषा करके उनकी वाणी को आत्मसात कर ''मैं ब्रह्म हूँ'' (शिव पुराण अनुसार मानव के कल्याण का महामंत्र, जो सत्यता को धारण करने के विषय में बताता है) ''तुम ब्रह्म हो'' भाव में रमण करना है।

यही सार उपनिषदों में लिखा है यही उपनिषदों की वाणी वेदान्त दर्शन, पातंजल योग दर्शन, सांख्य दर्शन आदि में तथा श्रीकृष्ण वाणी/श्रीमद्भगवद्गीता में 4/34 पर और गुरूगीता स्तोत्र में सार रूप से कही गयी है अतः अन्य वेद, शास्त्र, मंत्र, यंत्र, तंत्र, ग्रंथ आदि को अनिवार्य न समझकर गुरू में प्रभु बुद्धि से शुश्रुषा और अद्वैत ज्ञान को प्रधान मानें, वही एक मात्र सत्य है।

(181) तिरूपति वेंकटेश्वर महिमा, दान प्रकार एवं दान महिमा :

विद्या अध्ययन, श्राद्ध, आदि क्रियाओं में, संक्रांति आदि पर्व में जो दान किया जाता है वह नैमित्तिक दान है। कुँआ बनवाना, बगीचे लगवाना, पोखर, धर्मशाला, गोशाला निर्माण, गुरू या संतगृह निर्माण हेतु जो धनादि का दान है वह ध्रुव दान (महादान) है।

प्रतिदिन जो भी कुछ दान (दीपदान, प्रसाद चढ़ाने हेतु, गरीबों की रोटी आदि) दिया जाता है वह त्रिक दान है। अपनी स्त्री, पुत्र, ऐश्वर्य, कीर्ति, रिश्तेदारी आदि में जो दान (खर्च) होता है वह काम्य दान कनिष्ठ दान है।

वेंकटेश्वर या श्रीहरि अर्थात तिरूपति बालाजी दक्षिण भारत–आंध्रप्रदेश के वेंकटाचल पर्वत पर किया हुआ भूमिदान (या गुरू क्षेत्र में संकल्प लेकर) जीविका हीन कुटुम्बी, दरिद्र ब्राह्मण को किया गया दान मोक्ष पद प्राप्त कराता है क्योंकि इस क्रिया के फलस्वरूप अद्वैत ज्ञान प्राप्त होता है।

जो भरण–पोषण करने योग्य व्यक्तियों को कष्ट देकर गरीबी के कारण किसी मृत व्यक्ति के लिए (अधिक खर्च युक्त न कि ओपचारिक मात्र) श्राद्ध करता है वह श्राद्ध दुःख देता है।

(182) माघ, कार्तिक और वैशाख के उत्तम व्रत की महिमा :

जो माघ एवं कार्तिक और वैशाख के उत्तम व्रत का अनुष्ठान, तुलसी वन की रक्षा, एकादशी तिथि को व्रत के साथ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय या गुरूमंत्र का जाप (हरि प्रीत्यर्थे या इष्ट प्रीत्यर्थे), स्वाध्याय, सत्संग, प्रभु की तुलसी से पूजा, सदा स्मरण करता है वह प्रभु का दर्शन भी पा लेता है। इस व्रत से बढ़कर न यज्ञ है न दान न तीर्थ ही।

(183) श्री भवानी के प्रकटोत्सव की महिमा :

श्री भवानी के प्रकटोत्सव ''चैत्र शुक्ल अष्टमी'' को जो कोई भी जगदम्बा के दर्शन एवं 100 परिक्रमा करता है, वह अत्यधिक भाग्यशाली ही मानने योग्य है।

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को प्रभु त्रिलोचन की पूजा मात्र से ही 1 कल्प तक शिवलोक प्राप्त। आशुतोष भोले की जय हो।

(184) "विप्र शिरोमणी" और महासंन्यासी कौन? :

हे परंतप! ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तथा शूद्रों के कर्म, स्वभाव से उत्पन्न गुणों द्वारा विभक्त किए गए हैं। 18/41 परंतु (देवीभागवत)–मेरी भक्ति प्राप्त होने पर ही वह इन द्विज जातियों से भी शिरोमणी ''विप्र शिरोमणी'' और महासंन्यासी हो जाता है। साथ ही गुरूकृपा से ब्रह्मज्ञान (सर्वमय शिवत्व) जान ले या गुरू में शिवबुद्धि से सेवा करे तो वह परम संन्यासी ही है।

(185) ऐसा ज्ञाता साक्षात् मैं ही :

सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में एकीभाव (अद्वैत) से स्थित पराभक्ति के द्वारा वह मुझ परमात्मा (ऊँ कार सर्वमय) को 'मैं जो हूँ और जितना हूँ' ठीक वैसा का वैसा तत्त्व से जानकर मुझमें ही सदा के लिए प्रविष्ट हो जाता है। ऐसा ज्ञाता और कोई नहीं मैं ही, होता हूँ।

(186) मात्र भगवान की आज्ञा से ही परम कल्याण :

तू यदि अहंकार के कारण मेरे वचनों को नहीं सुनेगा तो नष्ट हो जायेगा। (क्योंकि तेरे कुकर्म से तू पतित होगा ही। मेरी आज्ञा से गीता ज्ञान पाकर, गुरूसेवा कर दया, एकादशी व्रत करके पाप नष्ट होने से कल्याण तो होगा ही।)

(187) गृहस्थों में अम्बरीष जैसा गृहस्थ ही महान तथा ब्रह्मचारियों में सनत्कुमार जैसे दिव्यतम :

उत्तरोत्तर रूप से परम सत्यक्रम ब्रह्मचर्य व्रत के निश्चित नियम के साथ गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास, गीता पाठ के साथ अनन्य भक्ति एवं भक्ति की पराकाष्ठा अर्थात् अद्वैत ज्ञान है। गृहस्थों में अम्बरीष राजा जैसा गृहस्थ ही महान है, अन्य व्यक्ति तो मात्र अपनी भोग वासना की पूर्ति के लिये ही विवाह करते है, उन्होंने अपनी अनन्य भक्ति के लिये, प्रभुकथा के सतत् श्रवण के लिए, अद्वैत भाव में रमण के लिए, शिव आज्ञा 1/31 अर्थात् ज्ञानीगुरु की सेवा हेतु

शादी के मण्डप में भी जाना स्वीकार नहीं किया और मात्र फेंटा–कटार को भिजवा दिया। उससे सुलक्षणा राजकुमारी की योग्यता का भी परीक्षण हो गया तथा भक्ति में भी विघ्न नहीं आया। फेंटा–कटार को भिजवाकर भी अनन्य भक्ति के कारण उस राजकुमारी को भी भूल गया; फिर बाद में जो घटना घटी वह भी उनके अनुकूल रही ही। उपनिषद की आज्ञा 12 वर्ष/48 वर्ष तक संयम अथवा प्राजापत्यमय पूर्णता पाने तक उन्होंने किसी के भी कहने पर भी ब्रह्मचर्य का त्याग नहीं किया। निष्पापता, निर्मलता, परम अद्वैतता रूपी पूर्णता और ईश्वर के साक्षात्कार से जीवन धन्य कर लिया। ईश्वर आज्ञा से उनकी गृहस्थी सुलक्षणा पत्नि के साथ अनासक्त भाव से गतिमान रही और मुक्तिपद रूपी शाश्वतता पाकर जीवन को पावन किया। तथा ब्रह्मचारियों में सनत्कुमार जैसे दिव्यतम अनन्य भक्त ही महान हैं, जिन्होंने श्रीहरि की स्वतंत्र भक्ति के कारण विवाह ही नहीं किया और अपने पिता ब्रह्मा का शाप भी स्वीकार कर लिया।

वैसे साक्षात् श्री हरि के अनुसार सत्य तो यही है कि जो ज्ञानी, भक्त, मुमुक्षु, वैराग्यवान, प्रभु के लिये विषपानकर्ता, प्रभु विरह में सतत् अश्रुधारा बहाने वाला अथवा गीता के 10वें अध्याय का पाठकर्ता या 18/66 युक्त हो उसके लिये कुछ भी विहित या अविहित शेष नहीं।

जो आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करता है या जो अष्टमी चतुर्दशी को स्त्री संग नहीं करता, दूसरे के अन्न को खाकर निंदा नहीं करता वह बैकुण्ठ जाता है या जो माता–पिता की सेवा (उनमें मुझे देखकर) करता है वह भी मेरे लोक में जाता है या जो निःस्पृह है वह भी मेरे लोक में आनन्द करता है।

ब्रह्मचर्य की महान महिमा है। बताया गया है कि चारों वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण (वेद मंत्रो को रटने वाले वेदवेत्ता जातिगत विप्र)यदि दुराचारी है (अर्थात् पापों में रत है) तो वह शूद्र से भी घटिया है और जो केवल अग्निहोत्र तथा ब्रह्मचर्य (दान्त) का पालन कर्ता हो वह भले ही वेद नहीं जानता परंतु ब्राह्मण ही है। जो अजितेन्द्रिय हो वह ब्राह्मण नहीं है।

–महा. वन 3/3/111 और महा. सौ. 3.20

भागवत जी 10–80–34 नाहमिज्या प्रजातिभ्यां–''गीता 18–66 सर्वधर्मान्परित्यज्य तथा गीता 4–34 का सार भी यही है।

(188) गुरू प्रसाद महिमा :

ब्रह्महत्या, गो घात, मदिरा पान, चोरी, गुरूपत्निगमन, निन्दा, असत्य, कम नापा तोली, व्रत भंग, शरणागत को त्यागने का पाप आदि भयंकर पाप भी भगवान विष्णु के (बदरी क्षेत्र का) प्रसाद से तत्क्षण भस्म हो जाते हैं। स्मरण रहे धर्मग्रन्थों में सद्गुरू (ब्रह्मदाता) साक्षात् परमेश्वर शिव बताए गये हैं। वह ब्रह्मा, कृष्ण, विष्णु, महारूद्र, महाकृष्ण, सदाशिव एवं परब्रह्म

है। अतः कोई यदि बदरी क्षेत्र न जा पाए तो मात्र ब्रह्मनिष्ठ दीक्षागुरू के हाथ से प्रसाद (1 दाना भी) प्राप्त हो जाए तो भी सारे पाप एवं मल नष्ट होकर साधक विशुद्ध मोक्ष को पा लेता है। देवी भागवत में हिमालय जी को माँ भुवनेश्वरी जी ने जो उपदेश गुरूतत्त्व पर दिया है उसके सार को देखा जाए तो ब्रह्मदाता ही साक्षात् परमेश्वर है। उसकी पूजा से मैं कोटि गुना फल देती हूँ इसीलिए सर्वमय अद्वैत की सत्य भावना करने के बावजूद भी गुरू (शिव) में द्वैतभाव से ही सेवक बनकर सेवा करना चाहिए। तब सोचिए कि गुरूप्रसादी से कितने भयंकर पापपुंज भस्म होते हैं।

शिव पुराण में बताया है कि गुरू में शिव बुद्धि करके पूजा करने मात्र से सारे पाप क्षरित हो जाते हैं। सारे मल (अज्ञान, पाप, ताप, प्रारब्ध जनित पीड़ा आदि) नष्ट हो जाते हैं। स्कंद पुराण में इसी कथन की व्याख्या रूप में बताया है कि–

(अ) गुरूर्विश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चयः (वे साक्षात् परब्रह्म एवं विश्वनाथ हैं।)

(आ) अत्रिनेत्रः शिवः साक्षात् द्विबाहुश्च हरि स्मृतः। योऽचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरूः कथितः प्रिये। (गुरू ही शिव महारूद्र, विष्णु तथा ब्रह्मा हैं।)

(इ) शिवजी (लीलावश किसी स्वरूप से) यदि नाराज हो जाए तो ब्रह्मनिष्ठ गुरू (रूप से वही मूल शिवजी) बचा लेते हैं परंतु गुरू (एकत्व धारी ब्रह्मविद्या युक्त) नाराज हो जाएं तो कोई भी नहीं बचा सकता। अतः कोशिश करे कि हर हाल में गुरू के समीप रहकर सान्निध्य ले प्रसाद चढ़ाकर उन्हीं के हाथ से (अंश) प्राप्त करें। यदि नित्य नहीं जा सकते तो गुरूगीता पराविद्या रूपी स्तुति अवश्य जपे।

शिवपुराण में तो गुरूदेव के भक्त, शिव भक्तों के हाथ से प्रसाद ग्रहण करने से भी शीघ्र शुद्धि के विषय में बोला है फिर सोचो उसके गुरू (स्वयं के ब्रह्मनिष्ठ गुरू) की कितनी महिमा होगी यह विचार भी नहीं किया जा सकता।

(189) महादान :

शिवलिंग, शालग्राम एवं श्रीमद्भागवत महापुराण योग्य को दान करने मात्र का दिव्य फल मात्र शालग्राम शिला या शिवलिंग को किसी श्रद्धालु को (सेवा, पूजा करने हेतु) दान करने मात्र से जो फल मिलता है वह फल 7 समुद्र तक की पृथ्वी के दान के बराबर है। मात्र एक श्रीमद्भागवत महापुराण को योग्य ब्राह्मण, भक्त, सद्गुरू, अनन्य शिवभक्त (जो शिव और हरि की कथाओं में सदा मग्न रहे), वैष्णव भक्त या ज्ञानी (जो अद्वैत तत्त्व में स्थित होकर भी स्वयं के हरि रूप की महिमा सुनने को तत्पर रहे) को देने मात्र से कोटि–कोटि कल्पों तक बैकुण्ठ प्राप्त होता है।

(190) विवाह में गोत्र का महत्व :

लड़के का विवाह एक गोत्र तथा माता के गोत्र प्रवर वाली कन्या के साथ नहीं करना चाहिए। ऐसी कन्या बहिन होती है। (फिर चाहे यह किसी भी धर्म जाति में ही क्यों न हो) गोत्र में विवाह करने पर नरकमय पाप की ज्वाला का तीव्र कष्ट होता है। स्मरण रहे पाप करने की अर्थात् गोत्र में विवाह करने की क्रिया को भाग्य समझना मूढ़ता है।

(191) दीर्घायु का उपाय :

दीर्घायु 80–120, मध्यायु 40–80 तथा अल्पायु 30 से 40 वर्ष तक मानी जाती है। दुर्गा कवच का त्रिकाल पाठ करने वाला 100 वर्ष से पहले अपने शरीर को नही छोड़ सकता।

(192) माता की महिमा :

सबके द्वारा वन्दनीय संन्यासी को भी माता(दर्शन होने पर) की प्रयत्नपूर्वक (इष्ट बुद्धि से) *वन्दना करनी चाहिए;परतुं माता एवं पिता के परम कल्याण के लिये सदा ही ज्ञाननिष्ट गुरु की चरण सेवा तथा अद्वैतमय सत्संग श्रवण में महान रूप से तत्पर रहना चाहिए।*

–स्कंद पुराण काशी 11/50

(193) धनुष्कोटि तीर्थ से ब्रह्महत्या के पाप से भी मुक्ति संभव :

अश्वत्थामा का पाप भस्म हो गया, क्योंकि हत्या करने के बाद वे संतों की शरण में गए। तब अधिक प्रार्थना करने पर उससे वेदव्यासजी ने दक्षिण के समुद्र के तट पर जो परम पवित्र रामसेतु मोक्षदाता है उसके विषय में अवगत कराया और कहा–"धनुष्कोटि नामक एक महान तीर्थ है। वहाँ ब्रह्महत्या जैसा हाल का पाप भी भस्म हो जाते हैं। 30 दिनों तक इसमें स्नान से यह पाप दूर हो जाता है। –ब्राह्मखण्ड, सेतु माहात्म्य

(194) कार्तिक व्रत की महान महिमा :

कार्तिक व्रत के प्रभाव से एक साधारण युवती गुणवती रानी सत्यभामा हुई तथा धर्मदत्त नामक ब्राह्मण कार्तिक व्रत का 1/2 पुण्य किसी प्रेत आत्मा के उद्धार को देने के प्रताप से राजा दशरथ हुए। वास्तव में कितनी महिमा है कार्तिक मास में स्नान, व्रत तथा जप आदि की।

(195) वराह पुराण की दिव्य महिमा :

पितरों को यदि 100 वर्ष के लिए तृप्त करना हो तो वराह पुराण के इस कपिला माहात्म्य का पाठ अमावस्या को ब्राह्मणों (योग्य विप्रों) के सम्मुख करना चाहिये। माँ सुरभि और कामधेनु के समान कपिला गो की बहुत महिमा है।

(196) श्रीमद्भागवत का महान फल :

जो श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ करता है उसे प्रत्येक अक्षर पर 1–1 कपिला गो के दान का परम फल मिलता है अर्थात् प्रत्यक्ष दान की तुलना (रोम अनुसार करोड़ों वर्ष ब्रह्मलोक) में अनंत गुना फल मात्र श्रीमद्भागवत पाठ देती है।

जो प्रतिदिन भागवत के आधे श्लोक या एक चौथाई श्लोक का पाठ अथवा श्रवण करता है उसे 1000 गो दान का फल एवं निष्पापता प्राप्त होती है।
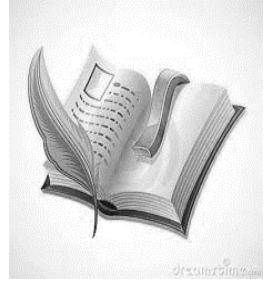
करोड़ों जन्मों के पुण्यों का उदय होने पर ही श्रीमद्भागवत मनुष्य के करकमलों में आती है एवं महापुण्यों के उदय होने पर मनुष्य इस परम ग्रन्थ का स्वाध्याय या श्रवण (सप्ताह तक नित्य) करता है एवं परम पुण्यों के उदय होने पर मनुष्य श्रीमद्भागवत के ज्ञान का चिंतन और मनन कर सकता है अन्यथा जीव का पुनर्जन्म निश्चित है।

संपूर्ण तीर्थों में स्नान एवं आश्रमों का भ्रमण करना उतना पवित्र नहीं है जितना श्रीमद्भागवत। जिसके घर में 1 श्लोक, आधा श्लोक अथवा 1 श्लोक का 1 ही चरण लिखा रहता है उसके घर में साक्षात् श्री हरि निवास करते हैं। जहाँ यह महापुराण होती है वहाँ नदी, नद और सरोवर रूप में प्रसिद्ध सातों समुद्र पर्यन्त के तीर्थ निवास करते हैं संपूर्ण महान से महान यज्ञ काशी सहित समस्त सात पुरियाँ और हिमालय सहित सभी पावन पर्वत वहाँ नित्य निवास करते हैं अर्थात् कहने का तात्पर्य है कि जिसके पास श्रीमद्भागवत रूपी परम अमृत है उसे संसार के किसी भी तीर्थ या अन्य क्षेत्रों में भटकने की जरूरत नहीं।

साक्षात् श्रीनारायण (श्रीहरि) प्रभु ने ब्रह्माजी से कहा है कि हे पुत्र! जो प्रतिदिन पवित्र चित्त होकर भागवत के 1 श्लोक का भी नित्य नियम से पाठ करता है वह संपूर्ण 18 पुराणों के पाठ का फल पा लेता है। जो मनुष्य इस पवित्र ज्ञान और वैराग्य तथा भक्ति से परिपूर्ण भागवत शास्त्र की पूजा मात्र करते हैं वे सारे पापों से मुक्त होकर देवताओं द्वारा पूजित होते हैं उन पर कलियुग, काल, यम आदि प्रभाव नहीं डाल सकते।

जितने दिनों तक घर में भागवत शास्त्र रहता है उतने दिनों तक पितर दूध, घी, मधु और मीठा जल प्राप्त कर परम आशीर्वाद देते हैं।

जो लोग विष्णु भक्त या योग्य स्वाध्याय प्रेमी योग्य ब्राह्मण को भक्ति पूर्वक भागवत शास्त्र समर्पण करते हैं वे हजारों करोड़ कल्पों तक बैकुण्ठ धाम में निवास करते हैं। जो मात्र अपने घर में इस शास्त्र का पूजन मात्र भी करते हैं उन्हें अन्य देवताओं के यजन की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि वे संपूर्ण देवता मात्र श्रीमद्भागवत के पूजन से ही तृप्त हो जाते हैं।

कलियुग में जिसके घर में भागवत शास्त्र मौजूद नहीं उसको (मैं श्री हरि परम सत्य घोषणा करता हूँ कि उसको) यमराज के पास से छुटकारा नहीं मिल सकता।

जो व्यक्ति संसार भर के सभी तीर्थों में भ्रमण करने के बाद भी तीर्थ स्थल पर हो रही भागवत कथा का 1 घड़ी अथवा आधी घड़ी भी श्रवण नहीं करता और बिना संत दर्शन यूं ही वापिस आ जाता है वह पशुओं में नीच गधे के तुल्य है।

सभी 17 पुराणों में केवल श्रीमद्भागवत के श्रवण और स्वाध्याय का ही दिव्य माहात्म्य वर्णन किया गया है क्योंकि जो सत्य है वह सदा सत्य ही होता है। आत्मा के ऊपर चढ़ी हुई कल्मष बिना भागवत के नहीं धुल सकती।

जिसे वास्तव में इसी जन्म में अनन्य भक्त अथवा जड़ भरत जैसा ज्ञानी होना है उसे श्रीमद्भागवत उतनी ही अनिवार्य है जैसे कि प्यासे को पानी।

जो मृत्यु क्षण से पूर्व इस पावन माया के विनाशक शुक शास्त्र के आधे या चौथाई श्लोक का भी श्रवण कर लेता है वह कभी भी गर्भवास का कष्ट नहीं सहता। तीर्थों में स्नान से केवल पूर्व पाप भस्म होते हैं परंतु संस्कार एवं भाव अथवा मनोविकार ज्यों के त्यों बने रहते हैं परंतु जो व्यक्ति एकाग्र चित्त होकर एक बार भी इस परम पवित्र भागवत रूपी जल से स्नान कर लेता है वह संपूर्ण पापों से मुक्त होता ही है उसके संस्कार, भाव, विचार, बुद्धि, चित्त सब कुछ परम पवित्र हरि के सदृश हो जाता है। पद्म पुराण में भी श्रीमहादेव शिव जी ने देवी पार्वती जी से स्पष्ट ही कहा है कि हे देवी! भागवत रहित मनुष्य वैसा ही है जैसा कि आत्मा के बिना शरीर, पानी के बिना जल स्रोत, मूर्ति के बिना मंदिर, सदस्यों के बिना घर, मोती के बिना हार। हे देवी! चित्त की विश्रांति सद्गुरूदेव के मुख से निकली हुई भागवत के श्रवण से ही होती है। इसलिये योग्य सद्गुरू जो भागवत जैसे पावन ग्रन्थों के ज्ञान से युक्त हों, का ही वरण करना चाहिए। क्योंकि भागवत में अद्वैत सार भलीभांति दृष्टिगोचर/परिलक्षित हुआ है और जहाँ भेदबुद्धि ही न हो वहाँ शिवत्व का सहज ही प्रादुर्भाव होता है और शिवत्व ही तो परम मुक्ति है परम धाम है परम पद है।

(197) प्रभु वराह के ध्यान मात्र से स्वर्ग लोक :

जो श्रद्धालु व्यक्ति द्वादशी के दिन व्रत रखकर प्रभु वराह (हरि) का ध्यान एवं ऊँ नमो नारायणाय कहकर सूर्य को देखकर प्रभु को अर्घ्य देता है। वह उतने हजार वर्षों तक स्वर्ग लोक में रहता है जितनी बूँद अंजली से गिरती है।

(198) अनिवार्य प्रयोजन :

इंद्रियों की समस्त चंचलताओं का निरोध अर्थात् भ्रमित बुद्धि का नाश होकर जब बुद्धि एकमात्र परमात्मा में अचल एवं स्थिर हो जाती है वही अवस्था परमयोग कहलाती है।

सब ओर से परिपूर्ण जलाशय के प्राप्त होने पर छोटे जलाशय में मनुष्य का जितना प्रयोजन रहता है, ब्रह्म को तत्त्व से (सर्वमय) जानने वाले ज्ञानी (उपनिषद अनुसार अद्वैतवादी ही ज्ञाननिष्ठ एवं परम ब्राह्मण है, उसी) का समस्त वेदों में उतना ही प्रयोजन रहता है। शांति हेतु आत्मा रूपी शाश्वत तत्त्व का ज्ञान अनिवार्य है जो मेरी भक्ति से ही स्थिर हो सकता है। यथार्थ में सर्वमय ऊँ कार तत्त्व के अलावा जगत् मिट्टी और पानी के सिवाय और कुछ नहीं है।

जगत् मिट्टी और पानी है।

कितना बड़ा तू महल बना ले,
चारपाई केवल तेरी है।
स्त्री, पुत्र खूब सजा ले,
अंतिम बारी तेरी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।
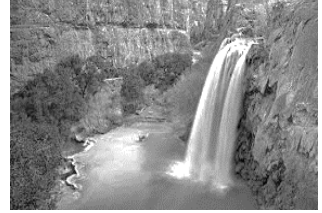
कर योग्य संत की सेवा पूजा,
उन जैसा नहीं कोई दूजा।
जीव सुन सत्य कहानी,
पूर्णत्व अद्वैत वाणी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

जगत के सुन्दर चेहरों में,
लुटते केवल कामी हैं।
देखना है तो परम को देख,
राम मय शिव ही दानी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

सद्‌गुरु को परम तीर्थ जान,
क्यों करता है झूठा मान।
ब्रह्मनिष्ठ में ही रहने वाले,
काशी, प्रयाग, और कन्याकुमारी है
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

जुआ, शराब और हिंसा,
श्राद्ध पर्व पर कामुकता।
विनाश काल की झांकी है,
होकर भी बूढ़ा क्यों कर बचकानी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

त्रयऐषणा अब तो छोड़,
काल लायेगा अंतिम मोड़।
समझ ले प्राणी प्रथम कर्त्तव्य,
विशुद्धता ही जिन्दगानी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

आज जो तू संत बना,
त्याग की ये निशानी है।
विज्ञान की अधिष्ठात्री,
दिव्य शक्ति ब्रह्माणी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

जिसको कुभाव से तू देख रहा,
भविष्य में निश्चित ही,
उसकी गंदगी का तू निवासी है।
जड़ नहीं चैतन्य तू रूहानी है,
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

क्यों भूलता है अपने को,
क्यों जाता है कोठे को।
गर न कर पाये संयम तू,
पत्नी सर्वसौख्य की रानी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

शहीदों को जो तू भूल रहा,
पतन की यह निशानी है।
तेरा आज जो स्वतंत्र अस्तित्व,
बलिदानों की ये निशानी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

ज्ञान दृष्टि खोल जरा,
तत्त्व से नहीं भेद किसी में।
मेरा परम और तेरा तुच्छ,
मूढ़ता की ये निशानी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

जो भी तुझे दिख रहा,
अज्ञान और मायारानी है।
भिन्न दृष्टि त्याग जरा,
भेद ही जगत कहानी है।
मैं सत्यम् शिवम् बोल रहा,
जगत् मिट्टी और पानी है।

(199) सदाशिव एवं रूद्र संवाद :

शिवपुराण की कोटि रूद्र संहिता में (काशी प्रसंग) जो भी सदाशिव एवं रूद्र (शंकर) के संवाद को पढ़ता है वह त्रिदेवों (हरि, शंकर, ब्रह्मा) के एकमात्र स्वामी, एकमात्र इन त्रिदेवों पर अनुग्रह करने वाले, परम दुर्गा (माँ भुवनेश्वरी जिन्होंने पंचक प्रकृति का निर्माण किया है। शारदा को ज्ञान, लक्ष्मी को धन, पार्वती को ऐश्वर्य, गायत्री को वेदों की माता, राधा को राधाशक्ति इन्हीं की कृपा से प्राप्त हुई) के पति सदाशिव (काशी विश्वनाथ) जी का अनन्य भक्त हो जाता है तथा परम तत्त्व (अद्वैत) को पाकर ब्रह्म ही हो जाता है ।

वह तत्त्व को पाकर रूद्र, हरि, एवं ब्रह्मादि के यजन (पूजन) से भी मुक्त हो जाता है क्योंकि अद्वैतवादी के लिए दूसरा कुछ भी नहीं, स्वयं ही सभी स्वरूपों में लीलाकर्ता एकमात्र ऊँ कार (ब्रह्म) ही है, परंतु फिर भी किसी कारणवश यदि हरि या हर रूप प्रकट हो जाए तो उस रूपात्मा के स्वतत्त्व में (अधिक ज्ञान और अधिक गुरू सान्निध्य के कारण) परब्रह्म (गुरू ब्रह्मदाता) को निहारकर (उस पल) सेवा अवश्य करनी चाहिए।

(200) शिव तत्त्व ही अष्टमूर्ति :

शिव तत्त्व ही अष्टमूर्ति रूप से लीलारत है। शिव ही शर्व, भव, रूद्र, उग्र, भीम पशुपति, ईशान और महादेव 8 नामों से निम्न अष्टमूर्तियों के द्वारा पूजित है। इनमें शिव ही की पूजा करना चाहिए क्योंकि इन मूर्तियों का तत्त्व शिव ही है।

पृथ्वी (धरती माँ), जल (नदी आदि का पानी), अग्नि (आग), वायु (हवा), आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य और चंद्रमा शिव ही की 8 मूर्ति है। सूर्य मूर्ति को ईशान कहते हैं। चंद्रमामूर्ति को महादेव नाम से भी पुकारा जाता है यह शिवजी की ही एक विशिष्ट मूर्ति है जो शीतलता प्रदान करती है। इन मूर्तियों का लय शिव में ही होता है। प्रत्येक आत्मा भी शिव ही का स्वरूप है जो देहधारी को स्वार्थवश कष्ट पहुँचाता है वह शिव जी को ही कष्ट देने का पापफल भोगता है।

हे पिताजी (कौथुम नामधारी)! मातृका में 52 अक्षर हैं। प्रथम अक्षर ऊँ कार है। 14 स्वर, 33 व्यंजन, अनुस्वर, विसर्ग, जिव्हा मूलीय तथा उपध्यानीय है। इस मातृका का प्रथम अक्षर ही सब कुछ है। अकार ब्रह्मा है।, उ कार प्रभु विष्णु हैं तथा म कार रूद्र महेश्वर का रूप है। यह तीनों गुणमय स्वरूप है परंतु ऊँ कार में मस्तक पर जो अनुस्वार रूप अर्द्धमात्रा है वह सर्वोत्कृष्ट भगवान गुणातीत सदाशिव का प्रतीक है जो कि पराशक्ति के एकमात्र स्वामी हैं। ऊँ कार की महिमा का वर्णन कोटि–कोटि ग्रन्थों के द्वारा या कोटि–कोटि मनुष्यों

द्वारा भी 10 हजार वर्षों में भी नहीं की जा सकती फिर मैं इस ऊँ कार रूपी गुरूतत्त्व के अलावा अन्य किसी का चिंतन क्यों करूं? आपने व्यर्थ ही 31,000 वर्ष तपस्या आदि में बर्बाद किए। यदि ज्ञाननिष्ठ की शरण में जाते (गीता 4/34 के अनुसार) तो शीघ्र ही ब्रह्मविद्या रूपी यह सर्वमय अद्वैतमय ऊँ तत्त्व कभी भी प्राप्त हो जाता।

(201) लोकों का वर्णन :

अग्नि लोक, नैर्ऋत्य लोक, वरूण लोक, वायु, कुबेर, ईशान लोक (जहाँ शिवभक्त रूद्ररूप से रहते हैं), चंद्रमा, बुध, शुक्र या अन्य लोकों की स्थिति पूर्ण रूप से जानना हो तो स्कंद पुराण का काशीखंड (पूर्वार्ध) अवश्य पढ़े।

(202) दान कैसे करें?:

देवताओं को अक्षत के साथ (दोनों स्थिति में जल और कुश अवश्य रहे) दान करने से उस दान को असुर नहीं ले सकते। इनके बिना जो दान दिया जाता है उस पर दैत्यों का अधिकार होता है। बिना मंत्र के जो कुछ प्रतिग्रह मिलता है वह प्रतिष्ठित नहीं होता अतः प्रभु के मंत्र को पढ़कर ही दान दिया जाना चाहिए।

(203) सूर्य पुत्री गाय

गाय को सूर्य पुत्री कहा गया है अतः फल खाकर उसको जूठे छिलके कभी भी नहीं खिलाना चाहिए, थाली का बचा जूठा भोजन भी जानबूझकर गाय (जिसमें 33 कोटी देवताओं का समूह, जिसमें 11 रुद्र और विष्णु सूर्य वरुण अंशुमान सहित , आठ वसु , मरुद्रण आदि हैं) को न खिलायें।

इससे सूर्य ग्रह तो प्रतिकूल होगा ही तथा शनि राहू केतु भी आपको नचा देंगे। क्योंकि गाय में इन ग्रहों के अधिष्ठाता शिव जी भी निवास करते हैं। गंगा यमुना नर्मदा कावेरी , गौतमी , क्षिप्रा आदि इन गौ माता में रहती हैं।

अतएव आपसे इस अक्षयरुद्र का अनुरोध है कि फलों के छिलके छीलकर अलग रखें उन छिलकों को गाय माता को खिलायें और संभव हो तो कभी कभार फल को काटकर ही पूरा खिलायें। मूर्ति में तो आप हरि या शिव देखकर आप 1 किलोग्राम आम , 1 किलोग्राम अंगूर, एक किलोग्राम केला आदि भगवान को खिलाते ही हो कभी कभार इस मूक देवता गाय के अंदर पराशक्ति , ठाकुर जी , शम्भु को देखकर भोग लगायें

तो यह अक्षयरुद्र अंशभूतशिव परम सत्य कहता है कि आप सफलता को नहीं ढूंढोगे अपितु सफलता ही आपको ढूंढ लेगी। धन ,यश, संतान सुख , स्त्रीसुख, तेज , अभ्युदय और अन्य उत्तरोत्तर तरक्की सब कुछ सहज मिलना आरंभ हो जायेगी।

यह गाय प्रत्यक्ष देवता है। देवमूर्ति से भी 1000 गुना अधिक फल देने वाली है। यह मूर्ति स्थापित करने से (घर में एक गाय का पालन पोषण करने से) आप पर विशेष कृपा होगी। तथा गायों , बेलों को कभी भी डंडे या पत्थर से न मारें यह भी ध्यान रखें। वे लोग सच में महामूर्ख हैं जो गाय को माता तो बोलते हैं पर जूठन खिलाते हैं।

(204) क्या करें क्या नहीं?:

फटा–फूटा आसन प्रयोग न करें, टूटी खाट, फूटे बर्तनों को त्याग दें। अग्नि और शिवलिंग के बीच में से न निकले, शिवलिंग और नंदिकेश्वर वृषभ के बीच से निकलने वाला भी पाप का भागी होता है। दो ब्राह्मण, पत्नि और पति, सूर्य और चंद्रमा की मूर्ति के बीच से भी न निकलें। एक वस्त्र पहनकर भोजन, पूजा न करे।

(205) व्यसन त्याग का फल :

जो व्यक्ति आजीवन मांस, तंबाकू तथा शराब का सेवन नहीं करता उसे 100 अश्वमेध यज्ञों का पुण्य प्राप्त हो जाता है। या मांस को त्यागकर शाकाहारी हो गया है। (स्कंद पुराण)

(206) शरणागत की रक्षा करने का महान फल :

शरणागत की रक्षा करने से जो महान फल प्राप्त होता है वह फल सहस्त्रों अश्वमेध यज्ञों तथा 100 वाजपेय यज्ञों को कराने से भी नहीं होता। अर्थात् अश्वमेध यज्ञ तथा वाजपेय यज्ञों की अपेक्षा शरणागत की रक्षा करें।

(207) भीष्मपंचक व्रत :

जो कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक (अर्थात् इन पाँच दिनों) अन्न न खाते हुए तथा सिंगाड़ा, बेर, कैथ को त्यागकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी भीष्मपितामह के लिये भीष्मपंचक व्रत करता है उसके सारे मनोरथ ठाकुरजी (कृष्ण भगवान) पूर्ण करते हैं।

(208) भूत–प्रेत दूर :

1. जिसके घर में सदा आँवला रखा रहता है या आँवले का वृक्ष होता है उसके घर में कभी भी भूत–प्रेत, कूष्माण्ड, राक्षस या अन्य अला बलाएं प्रवेश नहीं कर सकतीं। आँवला प्रभु को तुलसी के समान ही प्यारा है।

2. दो गोमती चक्र को 1100 बार इस मन्त्र से सिद्ध कर घर के मुखिया के ऊपर घुमाकर आग में डाल दे तो भूत–प्रेत का उपद्रव दूर हो जाता है।

ऊँ वं आरोग्यानिकरी रोगानशेषानमः

(209) चोरी के धन से पुण्य क्रिया से पाप :

जो चोरी करके पुण्य करता है उस पुण्य फल को मात्र वही पाता है जिसका वह धन है परंतु कर्ता को पाप लगता है। अतः चोरी के धन से कभी भी पुण्यादि कृत्य न करें।

(210) कोढ़ या चर्म रोग से छुटकारा :

जो भी व्यक्ति कोढ़ या चर्म रोग से छुटकारा पाना चाहे एवं 88 हजार श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन कराने का पुण्य प्राप्त करना चाहे वह योगिनी एकादशी का व्रत (पूर्ण नियम से) अवश्य करे।

(211) कार्तिक मास की दिव्य महिमा :

(जिसके पालन से एक साधारण युवती भी श्रीकृष्ण जी की पटरानी सत्यभामा हुई)

(1) कार्तिक के मास में नित्य प्रातःकाल (ब्रह्ममुहूर्त में) स्नान, वासुदेव श्री हरि की तुलसी दल या कमल से पूजन, भूमि पर शयन और पलाश के पत्ते में भोजन करने से करोड़ों जन्मों के भयंकर पाप भी भस्म हो जाते हैं।

(2) कार्तिक मास में जो भी अपने सम्पूर्ण कर्मफल शिवतत्त्व या हरि को अर्पित कर नित्य गीता या श्रीमद्भावगत महापुराण का पाठ, स्वाध्याय या सत्संग श्रवण करता है तथा गुरू, संत, माता–पिता या जितेन्द्रिय ब्राह्मण की सेवा करता है वह कभी भी कर्मों के बंधन में नहीं बंधता तथा कालान्तर में बैकुण्ठ धाम को प्राप्त कर आनन्द का भागी होता है।

(3) कार्तिक मास की एकादशी को भोजन के लिए अग्नि न जलावे तथा उपवास करे, रात्रि जागरण कर गीत, नृत्य, विष्णु सहस्त्रनाम, गीतापाठ या भागवत, स्कंदपुराण का स्वाध्याय

करता है उसे पल–पल कर करोड़ों यज्ञ, दान, तपस्या तथा तीर्थों का पुण्य प्राप्त होता है। एकादशी की रात्रि में दीपदान की भी महान महिमा है।

(4) जो अधिक से अधिक श्रद्धा एवं भक्ति से गुरू, तुलसी, आंवला, शिवलिंग एवं शालग्राम जी की सेवा पूजा करता है वह प्रभु की सारूप्य या सायुज्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

(5) विवाहित स्त्रियाँ अपने पति से 1 बार आज्ञा लेकर ही इन नियमों का पालन करें परंतु पति चरणों की सेवा भी नित्य करें। तो शीघ्र ही सर्वफल सुलभ हो जाते हैं।

(6) ऊँ नमो नारायण, ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय या गोपीजन वल्लभ चरणान् शरणम प्रपद्ये या ऊँ श्री राधे कृष्णाय नमः, ऊँ नमः शिवाय या गुरू मंत्र की नित्य 1 माला या कम से कम 1 माला कल्याण हेतु अवश्य जपे।

(7) कार्तिक नियम धारी आश्विन पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक सभी नियमों के सहित ब्रह्मचर्य का पालन करे तो प्रभु भोले शीघ्र ही घर–परिवार की सभी समस्याओं को नष्ट कर शांति तथा आनन्द प्रदान करते हैं। यह व्रत श्री हरि की प्रसन्नता हेतु दशहरा के अगले दिन (आश्विन शुक्ल एकादशी) से कार्तिक शुक्ल ग्यारस तक भी रखने से पूर्ण फल की प्राप्ति होती है।

(8) जो कार्तिक मास में शंख और घण्टा दान करता है वह विद्वान होता है तथा जो भी श्रीमद्भागवत महापुराण (ज्ञानदातागुरू/ दीक्षादाता गुरु/संत/भक्त/या योग्य संध्याकर्ता ब्राह्मण को) का दान करता है। वह सहस्त्र करोड़ों कल्पों तक प्रभु के दिव्य धाम में निवास करता है।

(9) **कार्तिक के मास में जो भी पुरूष परस्त्री गमन करता है या उसको कुदृष्टि से देखता है या नारियाँ अपने धर्म नियमों को त्यागकर परपुरूष का संग करती है वह घोर नरकों में जाकर पुनर्जन्म में सुअर, कुत्ता, बिल्ली, गधा आदि योनियों में जाता है तथा मानव बनने पर नेत्रहीन होता है तथा नपुंसक होता है।**

(10) जो कार्तिक मास में पराया अन्न नहीं खाता। अतिकृच्छ्र यज्ञ का फल प्राप्त हो जाता है तथा जो प्रभु शिव जी के पंचाक्षरी मंत्र के साथ रूद्राक्ष तथा भस्म धारण करता है तथा कार्तिक की पूर्णिमा को भगवान स्कंदजी के दर्शन करता है उसे संपूर्ण तीर्थों, यज्ञों तथा दानों का फल प्राप्त हो जाता है।

(11) जो कार्तिक के महिने में मात्र 1 बार भी अपने सद्गुरू के चरणामृत की मात्र 1 भी (या पत्नि अपने पति में परमेश्वर रूप निहारकर) पान कर लेता है उसे गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, गोदावरी, त्रिवेणी, क्षिप्रा, गण्डकी आदि सभी सप्त सागर पर्यन्त की महान

तीर्थों नदियों में स्नान करने का (तथा इससे सहस्त्रों गुना) फल प्राप्त हो जाता है अर्थात् संपूर्ण पाप भस्म/इच्छा हो तो स्वर्ग या इच्छा न हो तो अद्वैत ज्ञान पर पूर्णतः अंतःकरण की शुद्धि का शाश्वत कैवल्या पद पाकर पावन हो जाता है।

(12) जो कार्तिक के व्रत में असमर्थ है वह कार्तिक व्रतधारी भक्त ज्ञाननिष्ठ या ब्रह्मवेत्ता गुरू (परमेश्वर के सदृश) को ठंड से बचने हेतु कम्बल या रजाई दान करते हैं उन्हें भी कार्तिक स्नान या पुण्यफल प्राप्त होता है। जो इतना न कर सके तो अंतिम तीनों (त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा) में स्नान से भी संपूर्ण 1 मास के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है।

(13) ब्रह्माजी के अनुसार कार्तिक मास; माघ, वैशाख तथा अगहन से भी सर्वश्रेष्ठ है इसमें प्रातःकाल स्नान मात्र से संपूर्ण यज्ञ, दान, व्रत और नियमों का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

(14) कार्तिक मास में अवन्तीपुरी गोदावरी; सरस्वती, यमुना, नर्मदा, बेतवा, क्षिप्रा नदी, कोल्हापुरी से भी श्रेष्ठ है परंतु इस अवंति से भी श्रेष्ठ बदरिकाश्रम है तथा अन्य श्रेष्ठता का क्रम निम्न है।

उज्जैनढबदरिकाश्रमढअयोध्याढगंगाद्वारढकनखलढमथुराढद्वारकाढभागीरथी गंगा तीर्थराज प्रयागढकाशी में पंचगंगा तीर्थ

परंतु स्मरण रहे प्रयाग में 1000 वर्षों तक निवास करने से जो फल प्राप्त होता है वह अगहन के 30 दिनों में मात्र मथुरा पुरी में निवास करने से मिल जाता है।

(15) स्कंदपुराण में ब्राह्मखण्ड सेतु माहात्म्य में वर्णित जो हनुमान जी ने श्रीराम और माँ जानकी जी की स्तुति की है। उस स्तुति को जो कार्तिक मास में मात्र 1 बार भी श्रवण/स्वाध्याय कर लेता है वह महान ऐश्वर्य, धन, धान्य, क्षेत्र, आयु, विद्या, भक्ति आदि सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

(16) कार्तिक मास की त्रयोदशी के प्रदोष काल दीपदान के समय में जो यह कहता है कि ''दीपदान करने से मृत्यु, पाश, दण्ड, काल, माँ लक्ष्मी तथा शिवभक्त और सूर्यपुत्र यम प्रसन्न हो'' तो उसकी अकाल मृत्यु नष्ट होती है।

(17) जो कार्तिक शुक्ल द्वितीया को अपनी बहिन को वस्त्र, धन आदि देकर वही भोजन करता है उसे 1 वर्ष तक शत्रुओं का सामना नहीं करना पड़ता।

(18) कार्तिक में गुरू, तुलसी, आँवला और गो की भलीभांति सेवा, पूजा करना चाहिए। जो आंवले की छाया में ब्राह्मण दंपति को भोजन कराकर स्वयं भोजन करता है उससे भयंकर पाप भी नष्ट हो जाते हैं तथा वह अन्न दोष से मुक्त हो जाता है।

(212) विवाह के प्रकार :

(1) एक दूसरे से मैत्री होने से, दोनों की स्वेच्छा से जो विवाह होता है फिर चाहे माता पिता नाराज ही क्यों न हो जाएं वह गान्धर्व विवाह होता है।

(2) माता–पिता की मर्जी से परंतु साधारण स्थिति में ही विवाह प्राजापत्य विवाह कहलाता है।

(3) अलंकारों और सुंदर वस्त्रों से सजाकर अपनी कन्या को योग्य वर को बुलाकर जो मंत्रादि पूर्वके विवाह होता है वह ब्राह्म विवाह होता है।

(4) वर से 1 गाय और 1 बैल लेकर कन्या देने पर आर्ष विवाह कहलाता है।

(5) कन्या की मर्जी के विरूद्ध सामने ही बलपूर्वक कन्या को अपहरण कर लेने पर (यह क्रियमाण कर्म समझे) राक्षस विवाह होता है। (यह निन्दित है)

(6) पीठ पीछे धोखा देकर कन्या को छल से ले जाकर जो विवाह होता है वह पैशाच विवाह है। (यह महानिन्दित है) इस क्रियमाण भयंकर कर्म का परिणाम कुपुत्र रूप में 9–10 माह में ही दुःख रूप से प्राप्त होने लगता है।

(7) कन्या के माता–पिता को धन देकर जो विवाह किया जाता है वह आसुर विवाह कहलाता है।

नारद पुराण में बताया है कि कन्या के जन्म समय से सम वर्षों (18,20,22) में और वर के जन्म समय से विषम वर्षों (21,23,25,27) में होने वाला विवाह दोनों के सुख का मूल और प्रसन्नता बढ़ाने वाला होता है इसके विपरीत वर्षों में विवाह होना वर और कन्या दोनों के भयंकर घातक सिद्ध होता है।

इस वर्ष–नियम के साथ उचित महीनों का ध्यान भी सुख के लिये अनिवार्य है अन्यथा दुःखों का पहाड़ भी एक साथ आ सकता है। माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ ये चार मास विवाह के लिय सर्वश्रेष्ठ हैं। कार्तिक और मार्गशीर्ष ये मास मध्यम फल दाता हैं और अन्य मास निन्दित हैं जिसमें विवाह करने से दुःख प्राप्त होता है।

नक्षत्र का ध्यान रखा जाये तो और भी परम सुख प्राप्त किया जा सकता है। सूर्य जब आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करे तब से 10 नक्षत्र तक (अर्थात् आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र तक के नक्षत्रों में जब तक सूर्य रहे तब तक) विवाह, उपनयन तथा देवता की प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

रेवती, रोहणी, तीनों उत्तरा, अनुराधा, स्वाति, मृगशिरा, हस्त, मघा और मूल ये 11 नक्षत्र वेधरहित हों तो इन्हीं में स्त्री का विवाह शुभ कहा गया है। विवाह में वर को सूर्य का बल एवं कन्या को बृहस्पति का बल अवश्य प्राप्त होना चाहिये। यदि ये दोनों अनिष्ट कारक हो तो योग्य ब्राह्मण से यत्न पूर्वक इनकी पूजा करानी चाहिये।

(213) द्वारका की मृत्तिका परम पावन :

जो कार्तिक या अगहन के माह में जो गुरूचरण रज या द्वारका की मृत्तिका को हाथ में लेकर ललाट में ऊर्ध्वपुण्ड्र करता है उसके द्वारा किये जाने वाला सत्कर्मों (गीता पाठ, मंत्र जाप, तीर्थ, एकादशी आदि) का फल कोटि गुना हो जाता है अर्थात् कोटि गुनी गति से उसका अंतःकरण पवित्र हो जाता है।

(214) अश्रुधारा की महिमा :

इष्ट के विरह में–

जो कार्तिक मास में किसी भी समय मात्र एक पल के लिए भी हृदय से अपने इष्ट के विरह में गोपियों या मीरा की भांति अश्रुधारा से भूमि को पावन करता है उसको शीघ्र ही परम तत्त्व का साक्षात्कार होता है तथा वह इसी जन्म में ब्रह्मभाव को प्राप्त कर मुक्त हो जाता है।

मरे हुए प्राणियों के लिये–

मरे हुए प्राणियों के लिये भाई–बंधु जो इस भूतल पर आँसू बहाते हैं उन आँसुओं को मरे हुए जीव परलोक में पीते हैं अतः हे मुनिपुत्र! तुम शोक मत करो। परंतु जो प्रभु के वियोग में अश्रुधारा बहाता है, वह अनन्य भक्त शीघ्र ही परम अद्वैत ज्ञान को पाकर साक्षात् प्रभु का स्वरूप हो जाता है।

(215) ललाट में गोपी चंदन या भस्म की महिमा :

यदि गोपी चंदन या भस्म लगा शरीर या तुलसी अथवा रूद्राक्ष धारक प्राणी मृत्यु को प्राप्त हो जावे तो वह प्रभु के लोक को प्राप्त होता है। जिसके ललाट में गोपी चंदन या भस्म होती है उसे ग्रह जनित समस्या, राक्षस, यक्ष, पिशाच, नाग पीड़ित नहीं करते।

(216) घण्टा बजाने का फल :

जो कार्तिक या मार्गशीर्ष में मेरी पूजा के समय घण्टा बजाता है वह 100 करोड़ यज्ञों का पुण्य पा लेता है। मात्र शराब और मांस छोड़ने से भी 100 अश्वमेध यज्ञों का पुण्य फल प्राप्त होता है। जो घर में प्रभु मंदिर की घण्टी बजाता है उसे 100–100 चान्द्रायण व्रत का पुण्य मिलता है।

(217) शास्त्र माहात्म्य–

श्रीमद्देवीभागवत के अनुसार जिस यथार्थ पराविज्ञान की प्राप्ति व्रत–उपवास तथा नाम जप या मंत्रों के पुरश्चरण से सहस्रों वर्षों में होती है वही फल उपनिषदों और यथार्थ सम्यक् ज्ञान से परिपूर्ण ग्रंथों (गीताओं, पुराणों और वेदान्त आदि अन्य शास्त्रों) के अध्ययन मात्र से अतिशीघ्र होती है। इसी कारण मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए ग्रंथकारों ने अनेक उत्तम ग्रंथों का प्रसाद मनुष्यों को सहज ही दिया है।

● नाम जप वाले भी अनेक अपराध नित्य करते हैं पर वे यदि अपराधों की सूची जान लें तो उन अपराधों से बच जाते हैं। तथा शिवपुराण या देवीभागवत आदि से तो संपूर्ण पाप तक नष्ट हो जाते हैं

● नाम जप वाले भी शास्त्रों से ही अक्षय पुण्य की तिथियों को जानकर लाखों वर्षों का अनुष्ठानिक फल विशेष तिथि में एक ही घड़ी में पा लेते हैं।

● नाम जप करने वाले 40से 75 वर्ष के ऐसे भी मूर्ख हैं जो शास्त्र से विमुख हैं इस कारण आज तक उन्होनें कभी भी संध्यापूत जितेन्द्रिय ब्राह्मण, तपोनिष्ठ या अपने ब्रह्मविद् गुरु के चरणामृत का पान नहीं किया और 99प्रतिशत बुड्ढे लोग तो अपने ही अहंकार के कारण अल्प फल के कारण यूँ ही चिता पर ढेर हो गए। उन मूर्खो को शास्त्र अनुसंधान न करने के कारण गुरु चरणामृत और पादुका स्थापना की महिमा ही ज्ञात न हो सकी। वे बहुत से बहुत 10–11 तीर्थ में नहाये होंगे पर गुरुगीता से गुरु चरणामृत की महिमा न जान सके यदि थोड़ा–बहुत पढ़ लेते तो आजीवन ढोलक पेटी में ही न उलझते कभी कभार तो सप्त सागर पर्यंत के संपूर्ण तीर्थों का फल देने वाले गुरु के चरणोदक का पान करते और घर में सिंचन करके परम धाम के प्रथम अधिकारी होते।

●नाम जप वाले भी ऋतुकाल के नियम को ग्रंथों के स्वाध्याय या अध्ययन से ही जान पाते हैं अन्यथा 99 प्रतिशत महामूर्ख तो चतुर्थी , अष्टमी , एकादशी या अमावस्या की रात या बेचारी की संतान सातें या ऋषि पंचमी के उपवास की रात ही पत्नी को बिस्तर पर सुलाना नहीं भूलते और सुबह उठकर लाटसाहब नाम जप चालू करके अपने आपको तीसमारखा या परम भक्त (ध्रुव का बाप) समझते हैं।

● श्रीराम (रामेश्वरम स्थापना के समय) – हे हनुमान! तुमने मेरा नाम अनगिनत बार जपा फिर भी आश्चर्य है कि तुमको दुख हो रहा है अतः अब सुनों मेरा यथार्थ पराविज्ञान का उपदेश जिसको सुनकर तुम इस शिवलिंग लाने और प्रतिष्ठा न करने के कारण होने वाले दुख से क्षण में ही मुक्त होकर ब्रह्मभाव को पा लोगे तथा हे हनुमान! सुनों ,

साधारण मनुष्यों को जो ज्ञान अपने गुरु के उपदेश से होता है वही ज्ञान बुद्धिमान लोगों को उपनिषदों के अध्ययन मात्र से अतिशीघ्र हो जाता है और वे उपनिषदों को आत्मसात करके बिना गुरु के ही स्वयंभू गुरु (सांसिद्धिक गुरु) होकर विश्व के कोटी लोगों का भी उद्धार कर सकते हैं। शास्त्र कभी भी भ्रमित नहीं करते पर यदि मनुष्य को निषिद्ध गुरु मिल जाये तो वह शिष्य नष्ट तक हो सकता है अतः शास्त्र को ही अपना एकमात्र अद्वितीय परम हितेषी जानों।

● अर्जुन का अज्ञान भी गीता से दूर हुआ , मात्र नाम जप या मात्र दर्शन से भी बेचारे को दुख और संताप लगातार होता रहा। अतः उपदेश या गीतादि ही सर्वोत्कृष्ट है। पर चलते फिरते या भोजन स्नान आदि के समय नाम जप करें। पर अध्ययन को गौण मानने वाले सदा ही रोते हैं।

आदि आदि ।

अतः आध्यात्मिक ग्रंथ अवश्य ही पढ़े। मात्र नाम जप तक ही सीमित न रहें। तथा कथा पांडाल में जाकर चुपचाप माला को झोली में रख दें ; कान खोल कर चुपचाप नाम पर ध्यान न देकर महात्मा की वाणी को सुनें यह सत्संग विवेक की प्राप्ति के लिए ही राम जी ने दिया है अतः ढंग से एक दो घंटे सुन लेओ। गुरुवक्त्रे स्थितं ब्रह्म .... और एक बात जो ग्रंथ छुड़वाकर मात्र नाम जप का आदेश दे उस आदेश को बालबुद्धि वाला आदेश मानों।

उपदेश और शास्त्र भी चार प्रकार के होते हैं ।

1. गुणातीत अवस्था में पहुंचाने वाले
2. सतोगुणी बनाने वाले

3. रजोगुणी बनाकर भौतिक सुख देने की शिक्षा देने वाले (आजकल महाविद्यालय और स्कूल के टीचरों का यही काम है और राजसिक माता पिता का भी यही उद्योग चल रहा है कि कैसे भी पुत्र को ऐश्वर्यपूर्ण जीवन मिले इस कारण वे हर वर्ष बच्चों को अपनी पढ़ाई के लिए 5–5 महंगी मोटी मोटी किताबों को खरीदकर बड़े ही प्रेम से देते हैं और कोटा या ग्वालियर दिल्ली बम्बई की बड़ी बड़ी कोचिंग में एक साल में 90 हजार से 3 लाख तक की तगड़ी फीस भी कर्ज या लोन से भरते हैं पर कर्ज या लोन से कभी भी 9000 के आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं खरीदते क्योंकि उनके खून में ही रजोगुण भरा हुआ है । शायद ऐसे माँ बाप के संतान अल्प पुण्य वाले ही होते हैं इसी कारण गीता भी कहती है कि जो पूर्व जन्म में परम धाम नहीं पा सका(किसी गलती से) वह मेरी कृपा से इस जन्म में श्रीमान (ज्ञान वैराग्य से युक्त) के घर ही जन्म पाता है । खैर .... नसीब ही खोटा हो तो राजसिक माता पिता के बारे में क्या कहें।

4. चौथे प्रकार के उपदेश या ग्रंथ या चलचित्र तमोगुणी होते हैं जिनमें वासना भरी रहती है उनमें क्षणभंगुर दैहिक सुख भोग के उपाय ही भरे होते हैं जिसका परिणाम बलात्कार, परायी नारी के थोपड़े या स्तन, कटि आदि गुप्तांगो को देखने की आरजू;.......इसका परि पशु योनी और नरक फिर अगले जन्म में दरिद्र परिवार में पैदा।

(218) 'स्वधा'देवी धन्य हैं–

स्वधोच्चारणमात्रेण तीर्थस्नायी भवेन्नरः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो वाजपेयफलं लभेत्।।

अर्थ – ब्रह्मा जी बोले – 'स्वधा' शब्द के उच्चारण से मानव तीर्थ स्नायी हो जाता है. वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर वाजपेय यज्ञ के फल का अधिकारी हो जाता है.

स्वधा स्वधा स्वधेत्येवं यदि वारत्रयं स्मरेत्।
श्राद्धस्य फलमाप्नोति कालस्य तर्पणस्य च।।2।।

अर्थ – स्वधा, स्वधा, स्वधा इस प्रकार यदि तीन बार स्मरण किया जाए तो श्राद्ध, काल और तर्पण के फल पुरुष को प्राप्त हो जाते हैं.

श्राद्धकाले स्वधास्तोत्रं यः श्रृणोति समाहितः।
लभेच्छ्राद्धशतानां च पुण्यमेव न संशयः।।3।।

अर्थ – श्राद्ध के अवसर पर जो पुरुष सावधान होकर स्वधा देवी के स्तोत्र का श्रवण करता है, वह सौ श्राद्धों का पुण्य पा लेता है, इसमें संशय नहीं है।

(219) पिता की महिमा –

पुत्रका पिताके जीते–जी क्या करना चाहिये; कौन–सा कर्म करके बुद्धिमान् पुत्रको जन्म–जन्मान्तरोंमें परम कल्याणकी प्राप्ति हो सकती है। ये सब बातें यत्नपूर्वक बतानेकी कृपा कीजिये।

(सुनकर)

श्रीभगवान् बोले– विप्रवर ! (पद्म पुराण पाताल खंड अध्याय ४७)

●पिताजी को देवता के समान समझकर उनकी पूजा करनी चाहिये ।

●और पिता जिद्दी या हठी हो तो भी पुत्रकी भाँति उन पर स्नेह रखना चाहिये। पर क्रोध न करें । उनके द्वारा तीव्र रूप से कहने (चिल्लाने) पर भी प्रतिक्रिया न करें । इससे स्थितप्रज्ञता बढ़ती है।

●कभी मनसे भी उनकी सुआज्ञाका उल्लंघन नहीं करना चाहिये।

● जो पुत्र रोगी पिताकी भलीभाँति परिचर्या करता है, उसे पल पल की सेवा पर एक एक मन्वन्तर के सुख के अमृत फल भविष्य में अवश्य प्राप्त होते है अर्थात उसे अक्षय स्वर्गकी प्राप्ति होती है और वह सदा देवताओंद्वारा पूजित होता है।

●पिता जहाँ कहीं भी रहते हों वहीं गृहस्थ पुत्र को उनकी सेवा के लिए जाने का प्रयास करना चाहिए वही स्थान उस पुत्र के लिए तीर्थ स्थल का फल देता है और बीमार पिता को छोड़कर जो पुत्र तीर्थ यात्रा करता है उस पुत्र को पितृहत्या का पाप भोगना पड़ता है न कि पुण्य।

● पिता जब मरणासन्न होकर मृत्युके लक्षण देख रहे हों, उस समय भी उनका पूजन करके पुत्र देवताओंके समान हो जाता है।

● (पिताकी सद्गर्तिके निमित्त) विधिपूर्वक एक ही बार उपवास करनेसे जो लाभ होता है, अब उसका वर्णन करता हूँ; सुनो– हजार (1000) अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ करनेसे जो पुण्य होता है, वही पुण्य (पिताके निमित्त) उपवास करनेसे प्राप्त होता है। वही उपवास यदि तीर्थमें किया जाय तो उन दोनों यज्ञोंसे करोड़गुना अधिक फल होता है।

●जो श्रेष्ठ पुत्र अपने पिता को तीर्थ स्थल पर ले जाता है उसे पग पग पर 100–100 अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

● और पिता के प्राण यदि सहज ही गंगाजीके जल के निकट तीर्थ में छूट जाए तो पिता पुनः माताके दूधका पान नहीं करता, वरं मुक्त हो जाता है।

●अतः हे ब्राह्मण! माता पिता और ज्ञानदाता गुरु जब तक देह में हों तब तक इन तीनों को ही परम तीर्थ और तीर्थ की सहस्र परम मूर्तियाँ मानकर सेवा करना चाहिए । स्थल जनित तीर्थ मात्र उसी समय गृहस्थ पुत्र को फल देते हैं जबकि इन तीनों की आज्ञा से पुत्र तीर्थ स्थल पर जाये या साथ ले जाए।

श्रीराम का वनवास और तीर्थ गमन भी माता के कारण था न कि स्वयं के हित से ।

(220) हमारे ही परब्रह्म हैं शेष उनके अंश ।

शिव पुराण– शिव परब्रह्म हैं शेष उनके अंश ।

विष्णु पुराण – विष्णु परब्रह्म हैं शेष सब उनके अंश ।

गणेश पुराण – ब्रह्मा विष्णु और महेश सब महागणपति से उत्पन्न हैं।

भविष्य पुराण– सूर्य परब्रह्म है ब्रह्मा विष्णु और रुद्र इनके भक्त हैं।

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण– ह्रीं बीज की अधिष्ठात्री जो मणिद्वीप में निवास करती हैं इनके ही अंश से पार्वती, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि उत्पन्न हुई हैं।

अब मूल सिद्धांत और सार सुनें –

यह जितने भी चोले हैं जितने भी आवरण अर्थात रूप हैं उन चोलों के अंदर (आपकी देह के भी भीतर जो आत्मा है वह) जो मूल तत्व है वही परब्रह्म है कोई भी ऐसा रूप जो कभी न कभी बना है पहले नहीं था वह मात्र आवरण या चोला है जो नष्ट भी होता है।

यह चोले मात्र धारण किये जाते हैं।

और बात सूर्य देव की करें तो इस मन्वन्तर में दक्ष का जो पुनर्जन्म हुआ तब इनकी एक बेटी उत्पन्न हुई जिसका नाम अदिति हुआ तब अदिति का व्याह कश्यप जी से हुआ तो कश्यप के वीर्य में एक आत्मा ने प्रवेश किया जो भविष्य में विवस्वान हुये और अन्य जीवात्माओं का नाम वरुण और मित्र आदि हुए। अतः तो सोचिये यह विवस्वान

की देह (शरीर) को परब्रह्म कौन मान सकता है।

यहाँ तक कि वे सूर्य स्वयं कहते हैं कि – " मैं देह नहीं देहातीत हूँ "

ऐसा ही अन्य चोलों के विषय में समझो।

पर आधुनिक मूर्खानंद लोग मात्र चोलों के चक्कर में मरे जा रहे हैं और चोलो के कारण ही अन्य आवरणों को या उन आवरणों की आत्मा को अंश या कला या कलांश या कलांशांश या अंशांश कहकर मूढ़ता का परिचय देते फिरते हैं।

अरे भाई !

जिस रूप से प्रेम है उस रूप को भजो न ।

काहे किसी अन्य रूप नाम पर छुरी चलाते हो।

और जो सूर्य चमक रहा है जो प्रकाश देता है वह तो कश्यप के पुत्र विवस्वान या सविता के पैदा होने से पहले भी उदय और अस्त हुआ करता था। अतः यह नाम रूप आते और जाते हैं पर इन चोलों की आत्माओं को ही अयमात्मा ब्रह्म या सोऽहम् महावाक्य से परब्रह्म कहा जाता है न कि चोलों को (वे चोले चाहे योनी से निकले हों या अयोनिज इससे फर्क नहीं पड़ता; अयोनिज तो द्रोपदी या मारिषा भी थी पर इनका पूर्वजन्म हम अच्छी तरह से जानते हैं)●■●और बात रही शक्ति और ऐश्वर्य की कि कौन अधिक च्वूमतनिस है कौन यथार्थ में सबसे अधिक बलवान है तो इसका फैसला न तो कोई मनुष्य कर सकता है न ही वेद पुराण । क्योंकि वेद पुराण में तो हर रूप और हर नाम बढ़ चढ़कर बताया है।

अतः किसी एक पक्ष को लेकर दूसरे की निन्दा या दूसरे के प्रति मन में ओछापन अपनी संकीर्ण सोच की निशानी है जिसे कुएं का मेंढक कहते हैं।

अतः जो भी धाम चाहिए उस धाम के ईश्वर की सेवा (बिना भेद के) करो।

अन्यथा सच में आप नरक के भी लायक न होकर नरक में वेटिंग में लगे रहोगे।

(221) उपनिषदों का अद्वैत रूपी ज्ञानयोग

●अकारोकाररूपोऽस्मि मकरोऽस्मि सनातनः ।
ध्यातृध्यानविहीनोऽस्मि ध्येयहीनोऽस्मि सोऽस्म्यहम् ।

अकार', 'उकार' एवं 'मकार' रूप सनातन मैं ही हूँ।
मैं ध्याता, ध्यान एवं ध्येय से परे भी हूँ ।

सर्वत्रपूर्णस्वरूपोऽस्मि सच्चिदानन्दलक्षणः ।
सर्वतीर्थस्वरूपोऽस्मि परमात्मास्म्यहं शिवः।।

मैं सर्वत्र पूर्णरूप हूँ, सच्चिदानन्द के लक्षणों से युक्त हूँ। सम्पूर्ण तीर्थों का स्वरूप भी मैं हूँ और परमात्म स्वरूप कल्याणकारी भगवान् शिव भी मैं ही हूँ।।

●लक्ष्यालक्ष्यविहीनोऽस्मि लयहीनरसोऽस्म्यहम् ।
मातृमानविहीनोऽस्मि मेयहीनः शिवोऽस्म्यहम्।।

मैं लक्ष्य एवं अलक्ष्य से विहीन हूँ तथा लय न होने वाला रस स्वरूप हूँ। मैं ही प्रमाण, प्रमेय और प्रमाता से रहित तथा मैं ही शिव स्वरूप हूँ ।।

●न जगत्सर्वद्रष्टास्मि नेत्रादिरहितोस्म्यहम् ।
प्रवृद्धोऽस्मि प्रबुद्धोऽस्मि प्रसन्नोऽस्मि हरोऽस्म्यहम्।।

मैं इस संसार का सर्वद्रष्टा नहीं हूँ। मैं आँख आदि समस्त इन्द्रियों से रहित हूँ। मैं ही वृद्धि को प्राप्त करता हुआ, ज्ञानवान्, प्रसन्न एवं हर (पापों को हरने वाला) हूँ ।।

●सर्वेन्द्रियविहीनोऽस्मि सर्वकर्मकृदप्यहम् ।
सर्ववेदान्ततृप्तोऽस्मि सर्वदा सुलभोऽस्म्यहम् ।।

मैं सभी इन्द्रियों से रहित हूँ, तब भी समस्त कर्म करने वाला मैं स्वयं ही हूँ। समस्त वेदान्त द्वारा सर्वदा तृप्त एवं सर्व सुलभ मैं ही हूँ ।

●मुदितामुदिताख्योऽस्मि सर्वमौनफलोऽस्म्यहम् ।
नित्यचिन्मात्ररूपोऽस्मि सदा सच्चिन्मयोऽस्म्यहम् ।।

मैं आनन्द एवं शोक रूप हूँ,

सर्वदा मौन रहने का फल रूप हूँ।

नित्य चिद् रूप हूँ

तथा मैं ही सच्चिद् रूप भी हूँ।

●यत्किञ्चिदपि हीनोऽस्मि स्वल्पमप्यति नास्म्यहम् ।
हृदयग्रन्थिहीनोऽस्मि हृदयाम्बुजमध्यगः ।।

जो कुछ भी है, मैं उससे रहित हूँ, मैं अति अल्प और अत्यधिक भी नहीं हूँ। (मैं) हृदय की ग्रन्थि से रहित हूँ तथा हृदय कमल के मध्य में रहने वाला भी हूँ ।।

●षड्विकारविहीनोऽस्मि षट्कोषरहितोऽस्म्यहम् ।
अरिषड्वर्गमुक्तोऽस्मि अन्तरादन्तरोऽस्म्यहम् ।।

मैं (जन्म, अस्तित्व, विपरिणमन, विकास, अपक्षय और विनाश)

छः विकारों से रहित,

चर्म आदि छः कोशों (चर्म, मांस, रक्त, नाड़ी, मेद और मज्जा) से रहित

तथा काम, क्रोधादि षड् रिपुओं से हीन हूँ

और नितान्त अन्तः स्थान में रहने वाला हूँ ।

देशकालविमुक्तोऽस्मि दिगम्बरसुखोऽस्म्यहम् ।
नास्ति नास्ति विमुक्तोऽस्मि नकाररहितोऽस्म्यहम् ॥

मैं देश और काल से रहित हूँ, दिगम्बर एवं आनन्द स्वरूप हूँ। यह नहीं है, यह नहीं है–इससे में मुक्त हूँ अर्थात् मैं अभावशून्य हूँ तथा 'नकार' से रहित भी मैं ही हूँ ।

अखण्डाकाशरूपोऽस्मि ह्यखण्डाकारमस्म्यहम् ।
पञ्चमुक्तचित्तोऽस्मि प्रपञ्चरहितोऽस्म्यहम् ।।

अखण्ड आकाश स्वरूप हूँ, अखण्डाकार भी मैं ही हूँ, मैं सांसारिक प्रपञ्चों से परे चित्त वाला हूँ तथा संसार प्रपञ्चादि से रहित हूँ ।।

सर्वप्रकाशरूपोऽस्मि चिन्मात्रज्योतिरस्म्यहम् ।
कालत्रयविमुक्तोऽस्मि कामादिरहितोऽस्म्यहम् ॥

मैं सर्वप्रकाश स्वरूप हूँ तथा चैतन्य रूपी ज्योति भी मैं ही हूँ। तीनों कालों से परे अर्थात् मुक्त हूँ एवं में काम–क्रोधादि से रहित हूँ ॥

कायिकादिविमुक्तोऽस्मि निर्गुणः केवलोऽस्म्यहम् ।
मुक्तिहीनोऽस्मि मुक्तोऽस्मि मोक्षहीनोऽस्म्यहं सदा।।

मैं देह–अदेह (शरीर–अशरीर) से मुक्त हूँ,

निर्गुण हूँ
तथा मैं केवल एक हूँ।
मुक्ति रहित होते हुए भी मुक्त हूँ

तथा मैं सदैव मोक्षरहित हूँ ।।

सत्यासत्यादिहीनोऽस्मि सन्मात्रान्नास्म्यहं सदा ।
गन्तव्यदेशहीनोऽस्मि गमनादिविवर्जितः ।।

मैं) सत्य–असत्य से रहित हूँ, केवल मैं ही सत्य स्वरूप से (भिन्न) सभी कालों में नहीं हूँ। मैं गमनागमन से रहित हूँ अर्थात् मुझे कहीं जाना अथवा न जाना नहीं है एवं मेरा गन्तव्य (जाने का स्थान) भी नहीं है।

सर्वदा समरूपोऽस्मि शान्तोऽस्मि पुरुषोत्तमः।
एवं स्वानुभवो यस्य सोऽहमस्मि न संशयः ।।

(मैं) सर्वदा समरूप एवं शान्त परमात्मा (पुरुषोत्तम) हूँ। जिसका इस प्रकार से स्वानुभव है, वह (ब्रह्म) निश्चित ही मैं हूँ। इसमें किसी भी तरह का संशय नहीं है।

(222) तीन करोड़ बार नमः शिवाय

तीन करोड़ बार नमः शिवाय मंत्र से कोई भी द्विज साक्षात् भगवान शंकर के समान हो जाता है। और शिवाय नमः से स्त्री या दास भी कालान्तर में दासत्व या स्त्रीत्व से मुक्त होकर भगवानशंकर के समान । और दो करोड़ से क्षीरसागर के विष्णु जी के समान ।

तथा ब्रह्म वैवर्त पुराण की एक विद्या के 300000 पाठ से कोई भी मनुष्य बल , पराक्रम और शक्ति व सिद्धि में साक्षात् मुझ श्रीकृष्ण के समान हो जाता है परंतु हे विधे ! इस संसार में मनुष्य पशुता से ऊपर उठना ही नहीं चाहता, वह किसी को महात्मा या उच्चपद पर पदस्थ देखकर या किसी को लोक का ईश्वर समझकर उसकी जय जयकार तो कर सकता है पर स्वयं महात्मा नहीं बनना चाहता न ही ईश्वरत्व के लिए तप करना चाहता है इसे मात्र क्षणभर का सुख दे दो यह उसी में प्रसन्न होकर अपना जीवन नष्ट कर डालता है।

(इनको बस क्षणभङ्गुर जिह्वा या अन्य इन्द्रियों का सुख दे दो या 100000–200000 का लोभ वे मूर्ख उस सुख के चक्कर में अपनी जीवन ही समाप्त कर डालते हैं)

– अक्षयरुद्र अंशभूतशिव

(223) हविष्यान्न

श्रीमद्भागवत महापुराण के सप्ताह यज्ञ के दौरान वक्ता लोग तेल में तली वस्तु न खाएं। यह हविष्यान्न नहीं माना गया। और साधना , अनुष्ठान में हविष्यान्न ही खाया जाए यह भगवान शंकर ने पद्म पुराण में वर्णन किया है। तथा कथा के बीच जो वक्ता क्षौर कर्म करता है वह भी अनुचित है। जला हुआ तथा भगवान्को अर्पण न किया हुआ अन्न, बासा भोजन , जम्बीर और बिजौरा नीबू, खाली नमक भी वैष्णवको नहीं खाना चाहिये। यदि दैवात् कभी खा ले तो भगवन्नाम का स्मरण करना चाहिये।

1. हेमन्त ऋतुमें उत्पन्न होनेवाला सफेद धान जो सड़ा हुआ न हो,
2 मूँग,
3 तिल,

4.यव,
5.केराव,
5.कंगनी,
6.नीवार (तीना),
7.शाक,
8.हिलमोचिका (हिलसा),
9.कालशाक,
10.बथुवा,
11.मूली,
12.दूसरे–दूसरे मूल–शाक,
13.सेंधा और साँभर नमक,
14.गायका दही,
15.गाय का घी ,
16.बिना माखन निकाला हुआ गायका दूध,
17.कटहल,
18.आम,
19.हर्रे,
20.पिप्पली,
21. जीरा,
22.नारंगी,
23.इमली,
24.केला,
25.लवली (हरफा रेवरी),
26.आँवलेका फल,
27.गुड़के सिवा ईंखके रससे तैयार होनेवाली अन्य सभी वस्तुएँ (गुड़ छोड़कर)
28. बिना तेलके पकाया हुआ अन्न– इन सभी खाद्य पदार्थोंको मुनिलोग हविष्यान्न कहते हैं।

इनका ही भक्षण सीमित मात्रा में भक्त करें । इनमें भी कुछ कुछ तिथियों में मूली आदि निषेध है अतः वह उन उन तिथियों पर त्याग दे।

गृहस्थ आश्रम के मनुष्य अनुष्ठान काल में रतिभोग से दूर रहें और साधना न भी करें तो ऋतुकाल के नियम का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अतिभोग और अनुचित काल में स्त्रीभोग से उस मनुष्य को भक्त नहीं अपितु स्त्रीलम्पट कहा जाता है और ऐसा स्त्रीलम्पट मनुष्य न तो देवताओं को तृप्त करता है न ही पितरों को।

(नोट – अपराध नाशक श्लोक– अपराध सहस्राणि..... को जपने पर जानबूझकर किये गए अपराध दूर नहीं होते अतः मंत्र या श्लोक के भरोसे बार बार अपराध न करें मात्र हरि या शिव नाम से ही काम नहीं होता। पाप और अपराधों से भी दूर होना पड़ता है।

उदाहरण– एक मनुष्य राम राम बोलता है पर तब तक ईश्वर की कृपा का परिणाम नहीं देख सकता जब तक कि वह परायीनार को कामभाव से देखना बंद नहीं कर देता।

और चोरी , रिश्वत, लूट , हिंसा , गुरुद्रोह, माता पिता का घात आदि पाप बंद करने पर ही वह पूजा पाठ और साधना का सम्यक् फल पाता है।

अतः राम या शिव ही पर्याप्त नहीं खोटी नियत से भी दूर रहें । हालांकि नाम भी ठीक है कभी न कभी तो इससे जीव सुधरेगा ही पर जब तक ये सब पाप बंद नहीं होंगे तब तक एक प्रतिशत भी लाभ नहीं मिलने वाला। अतः 32 अपराध और अति संसर्ग से बचे तथा किस तिथि पर क्या ठीक है यह जानने के लिए हमारी पुस्तक (कालखण्ड) कभी भी ले सकते है।

(224) 64 भैरवों की पूजा–

शैव भक्त आठ भैरवों या 64 भैरवों की पूजा करके भी शिव जी के दर्शन पा सकते हैं। इन 64 भैरवों के नाम अति गुह्यतम हैं। पर संसार के अधिकांश लोग श्री कालभैरव या बटुक भैरव के विषय में जानते हैं। एक ग्रंथ के अनुसार 8 भैरव इस प्रकार हैं।

1. असिताङ्गभैरव,
2. रुरुभैरव,
3. चण्डभैरव,
4. क्रोधभैरव,
5. उन्मत्तभैरव,
6. कपालिभैरव,
7. भीषणभैरव तथा
8. संहारभैरव।

ब्राह्मी आदि मातृकाओं की पूजा करके इनको प्रसन्न करने से भी देवी पराशक्ति के दर्शन संभव है। ये आठों देवी परम पूजनीय हैं। आप सप्तशती में इनके बल को सभी मातृका पुरुष रूप में पढ़ ही चुके होगे।

और भगवान नरसिंह से प्रकट 32 मातृकाओं में से आठ देवी काली के शासन में रहकर काम करती हैं। देवी रक्तदंतिका का रूप मात्र अपने निश्छल भक्त के लिए है। वे अपने भक्त को अपने स्तन से ज्ञान और वैराग्य रूपी दूध आज भी पिलाती हैं। इनका वर्णन हम देवी रहस्य महाग्रंथ भाग प्रथम में कर चुके।

(225) बद्ध प्रेम और मुक्त प्रेम

प्रेम संसार से हो तो वह बद्ध प्रेम है जो बार बार पुनर्जन्म देता है भले ही हर जन्म में दोनों का मिलन होता रहे।

नारी से शुद्ध प्रेम (एक आत्मा जिसने नारी तन धारण किया है वह कभी पौरुष भाव से नरपिण्ड भी धारण करती है उससे वासनारहित प्रेम) भी मुक्त नहीं करता अपितु मोह में वृद्धि करता है पर मोह से मुक्त होने पर वह वैराग्यवान हो जाता है तब प्रेम (या चाहत अथवा उस तन की आत्मा से मिलन की उत्कट कामना या लगाव) प्रायः नष्ट हो जाता है। जो (नारी या नर जिसको हम प्यार का इजहार करके प्रेम का लक्ष्य मान बैठे वह स्वयं) किसी कर्मफल से 84 लाख योनी चक्र का जीव होकर यहाँ भ्रमण कर रहा है वह स्वयं बंधन में है भला आप उससे प्रेम करके कौन सी मुक्ति पा लोगे अर्थात उस आसक्त या महत्वाकांक्षी या अष्ट पाशों से युक्त नारी या नर से प्रेम करोगे तो किस प्रकार हृदय की भयंकर ग्रंथि कटेगी।

पर हाँ ....यदि हरि या शिव के लिए चाहत (प्रेम) उत्पन्न हो जाये तो वह प्रेम आपको मुक्त कर डालता है। नारी रूप ही यदि मुक्त करता तो हनुमान भी किसी नारी पिण्ड की आत्मा से ही लगाव रखना आरंभ कर देते।

यह प्रेम सांसारिक जीवन में खुशियाँ और प्रकृति मे हरियाली या घर में सुख की वर्षा अवश्य करता है पर इसके फल की तुलना हरि से प्रेम फल के समान नहीं इसी कारण मीरा ने नर पिण्ड से प्रेम नहीं किया। इस नर नारी के प्रेम में छिपी हुई एक वासना भी होती है। यदि वासना न होती तो वह पुरुष अपने नर मित्र को भी अपने हृदय का दान कर सकता था अथवा नारी अपनी सहेली को भी हृदय का दान कर डालती। पर ऐसा नहीं होता। एक नारी सदैव नर रूप पर ही मुग्ध होती है और एक पुरुष अपने से विपरीत लिंगी की ओर ही भागता है और उसी विपरीत लिंगी (अपने तन से भिन्न आवरण जो पुरुष की इन्द्रियों के सुख का मूल है) से ही प्रेम का प्रस्ताव रखता है। इसका कारण यही है कि उसे प्रेम शब्द के लिए विपरीत लिंग की ही आवश्यकता है।

अतः हे किशोर और किशोरियों! इस सांसारिक प्रेम को दरकिनार रखकर हरि से प्रेम करो। रात दिन my sweetheart my dear i cannot live without you..... ऐसे शब्दों के जप में समय नष्ट मत करो।

हरि हरि जपो
शिव शिव जपो।

जितना ध्यान तुम अपने भौतिक प्रेम (सुन्दर स्त्री रूप, या सुन्दर चरित्र वाली नारी रूप) पर लगाते हो उतना ही मेरे हरिहर पर लगाओ।

हरि का चरित्र और रूप इस नारी से अनंत गुना अधिक शुद्ध है।

हे वीर ब्रह्मचारी तू अपने मन को परम प्रभु में लगा। यह सांसारिक रूप और कुछ नहीं 8400000 योनियों का परिणाम है वे जीव–आत्माएं कभी नर तो कभी अप्सरा जैसी सुन्दर नारी आवरण में अपने अपने कर्म फल भोग रहे होते हैं।

हे पुरुष! नारी तन के पास जाकर स्पर्श सुख (वासना का अंश) लेता है और उस वासना को प्रेम नाम देता है क्या कभी तू उसके तन से विलग रह सकता है। प्रेमिका हो और उसके अति पास विवाह न होने तक तू गया ही न हो क्या यह संभव हुआ है। यदि तू उसके हृदय को अपने हृदय से युक्त करके प्रेम मान बैठा तो अनुचित है यदि तू उसकी सांसों को अपनी सांसों से स्पर्श कर बैठा तो यह वासना ही समझ।

प्रेम यथार्थ में शरीर के स्पर्श सुख से परे का नाम है।

(226) महाफल–

सोमवती अमावस्या सूर्यग्रहण के बराबर फलदायक कही गयी है।

राज्याभिषेक और अग्निकार्य सोमवारको प्रशस्त माना गया है,सोमवारमें लिपाईका कार्य एवं गृहका शुभारम्भ करना श्रेयस्कर है। भरणी नक्षत्र में(भरणी में चंद्र होने पर) गन्ध, कृष्ण वर्ण के पुष्प और नैवेद्य आदिउपचारों से यमराज का पूजन करे तो अपमृत्यु से बचे। मानसिक पूजा भी कर सकते हैं।

रविवार का भरणी और बुधवार का भरणी कालदंड के समान व हानिकारक है।

इसका स्वामी ग्रह शुक्र है।ये पहले जब बच्चे थे तब अंगिरा के शिष्य थे पर अंगिरा ने भेदभाव से ज्ञान देना चाहा तो अंगिरा को छोड़कर ये शुक्र बालक मनःकल्पित स्तोत्र से शिव जी की आराधना की और दर्शन के बाद गुरुदीक्षा प्राप्त की। वैसे भी शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 18 भी कहती है कि यदि गुरु से अधिक श्रेष्ठ व अधिक ज्ञानी पुरुष मिल जाये तो अपने पूर्व गुरु को भी त्याग कर नवीन गुरु की ही स्वतंत्र होकर सेवा करना चाहिए। इस नक्षत्र में गायत्री पुरश्चरण आरंभ न करें । ऐसा श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में मनाही है और अन्य छः नक्षत्र भी गायत्री पुरश्चरण आरंभ के लिए निषेध है जो हम उन नक्षत्र में लिख देंगे। पर जन्म नक्षत्र में भी गायत्री की साधना आरंभ मत करना। तथा अनुकूल नक्षत्र होने पर भी मंगल व शनिवार को गायत्री पुरश्चरण आरंभ न करें और

शुक्लपक्ष भी उत्तम समझें क्योंकि कृष्ण पक्ष पितरों के 15 दिन होते हैं। वैसे गुरुदीक्षा भी उत्कृष्ट फल के लिए शुक्ल पक्ष चुनें पर कभी अति मजबूरी हो तो प्रतिपदा से पंचमी के बीच चुनें लेकिन चौथ का त्याग कर दें। और गायत्री की साधना के लिए ये चार माह भी त्याग दें (आषाढ ,भाद्रपद ,पौष और मलमास) और शुक्लपक्ष में गायत्री पुरश्चरण आरंभ करें तो उसमें भी षष्ठी, अष्टमी, त्रयोदशी त्याग दे तथा रिक्ता तिथि (4,9,14) भी छोड़ दे अमावस्या भी त्याग दे यह गायत्री पुरश्चरण के लिए ठीक नहीं।

भरणी नक्षत्र में स्वामी की सेवा आरंभ मत करना।

नवीन वस्त्र धारण न करें।

नवीन वस्तुयें न खरीदें भरणी नक्षत्र में अनुचित व हानिकारक है।

रविवार को यह नक्षत्र भयंकर रूप से हानिकारक है।

इसमें यात्रा न करें पर अति मजबूरी हो तो नारायण कृत गणपति स्त्रोत जो हमने स्तोत्र निधिवन में लिखा है वह या हनुमान जी के 12 नाम जपकर जा सकते हैं। भरणी को पंचमी तिथि 100 प्रतिशत हानिकारक है यह ज्वालामुखी योग बन जाता है। प्रतिपदा को अग्निदेव की पूजा करें स्मरण रहे ये पावकप्रभु भी स्वामीकार्तिकेय के पिता ही हैं। और भगवान संकर्षण की भी यह तिथि है इस दिन गर्ग संहिता में निहित श्रीबलभद्र कवच के पाठ से परम रक्षा होती है। मासके अन्तमें पूर्णिमाके दिन घृत आदिसे महादेवको स्नान कराकर विधिपूर्वक उनकी पूजा करके श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको दुग्ध तथा घृतमिश्रित पके हुए यव तथा चावलका भोजन कराता है एवं विशेषरूपसे शान्तिमन्त्रोंका जप करता है और देवदेव परमेश्वर भव शिवजीको कपिल वर्णका गो–मिथुन (गाय तथा वृषभ) समर्पित करता है वह मनुष्य, उत्तम अग्निलोकको जाता है और अनेक लोकोंके सुखोंका भोग करके वहींपर मुक्त हो जाता है प्रत्येक वार या प्रत्येक तिथि का क्या फल है जानने के लिए अक्षयरुद्र की पुस्तक कालखंड पढे।

(227) हिमालय कृत शिवस्तोत्र व अभयंकर शिव कवच

जो भक्त अन्य कुछ भी साधना न करना चाहे उसे हिमालय कृत श्रीशिव स्तोत्र और श्रीनारायण प्रभु के द्वारा कहा गया स्वप्न में सुनकर प्रातःकाल याज्ञवल्क्य जी ने जो कवच रचा बस उसी श्री अभयंकर शिव कवच का दोनों समय पाठ अवश्य ही करना चाहिए। इन दोनों से ही सब कुछ मिल जायेगा।

हिमालयकृत शिव स्तोत्रः

हिमालय उवाच–

त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः ।
त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्वसंहारकारकः ॥

त्वमीश्वरो गुणातीतो ज्योतीरूपः सनातनः ।
प्रकृतिः प्रकृतीशश्च प्राकृतः प्रकृतेः परः ॥

नानारूपविधाता त्वं भक्तानां ध्यानहेतवे ।
येषु रूपेषु यत्प्रीतिस्तत्तद्रूपं बिभर्षि च ॥

सूर्यस्त्वं सृष्टिजनक आधारः सर्वतेजसाम् ।
सोमस्त्वं शस्य पाता च सततं शीतरश्मिना ॥

वायुस्त्वं वरुणस्त्वं च त्वमग्निः सर्वदाहकः ।
इन्द्रस्त्वं देवराजश्च कालो मृत्युर्यमस्तथा ॥

मृत्युञ्जयो मृत्युमृत्युः कालकालो यमान्तकः ।
वेदस्त्वं वेदकर्ता वेदवेदाङ्गपारगः ॥

विदुषां जनकस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ।
मन्त्रस्त्वं हि जपस्त्वं हि तपस्त्वं तत्फलप्रदः ॥

वाक् त्वं वागधिदेवी त्वं तत्कर्ता तद्गुरुः स्वयम् ।
अहो सरस्वतीबीजं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥

(इस स्तोत्र की महिमा कवच के बाद वर्णित है)

अब परम सुरक्षा के लिए शंकर जी का रक्षा कवच सुनें)

अथ श्रीशिवरक्षा स्तोत्रम्

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीशिवरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, श्रीसदाशिवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं शिवरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ।

चरितं देवदेवस्य महादेवस्य पावनम्।
अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम् ॥

गौरीविनायकोपेतं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रकम् ।
शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिवरक्षां पठेन्नरः ॥

गङ्गाधरः शिरः पातु भालमर्धेन्दुशेखरः ।
नयने मदनध्वंसी कर्णौ सर्पविभूषणः ॥

घ्राणं पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः ।
जिह्वां वागीश्वरः पातु कन्धरां शितिकन्धरः ॥

श्रीकण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्वधुरन्धरः ।
भुजौ भूभारसंहर्ता करौ पातु पिनाकधृक्।।

हृदयं शङ्करः पातु जठरं गिरिजापतिः।
नाभिं मृत्युञ्जयः पातु कटी व्याघ्राजिनाम्बरः ॥

सक्थिनी पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः ।
ऊरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः ॥

जङ्घे पातु जगत्कर्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः ।
चरणौ करुणासिन्धुः सर्वाङ्गानि सदाशिवः ॥

रूप से भविष्य की जानकारी।

1.जिस कन्याके केश घुँघराले, मुख मण्डलाकार अर्थात् गोल एवं नाभि दक्षिणावर्त होती है, वह कुलकी वृद्धि करनेवाली होती है ।

2.जो स्वर्णसदृश आभावाली होती है, जिसके हाथ लाल कमलके समान सुन्दर होते हैं, जो अत्यधिक मनोहर हो वह हजारों स्त्रियों में अद्वितीय तथा निश्चित ही पतिव्रता होती है। (पर इसका भी जन्म लग्न व लग्न वाले प्रथम व सप्तम घर के अन्य ग्रह देखकर ही विवाह करें क्योंकि 100 प्रतिशत गुणों का परीक्षण मात्र कुंडली देखकर वर्तमान में ठीक नहीं आजकल तुक्केमार जन्मतिथि से भी जन्म कुंडली बनी हो सकती है और रूप की बात करें तो कृतिम साधनों या पार्लर आदि की सहायता से कोई भी किसी की रियल दैहिकता का विश्लेषण नहीं कर सकता, आजकल तो बाल भी घुंघराले कोई भी कर सकता है और लीपापोती करके अप्सरा जैसी दिख सकती हैं और भी बहुत सी बाते हैं अतः आचरण देखें बस)

3.जो कन्या वक्र केशोंवाली और गोल नेत्रवाली होती है, वह निश्चित ही दुःख भोगनेवाली होती है तथा उसका पति शीघ्र ही मर जाता है। ऐसी नारी सौभाग्य की रक्षा के लिए यदि गौरी पूजन या देवी का व्रत करें तो अवश्य ही रक्षा होगी।

4.पूर्णचन्द्रके सदृश मुखमण्डलसे सुशोभित, बालसूर्यके समान लाल–लाल कान्तिवाली, विशाल नेत्रोंसे युक्त, बिम्बाफलकी भाँति ओष्ठवाली कन्या चिरकालतक सुखका उपभोग करती है।

5. अच्छी स्त्री वह है, जो पतिके कार्योंमें मन्त्रीके समान परामर्श देनेवाली होती है। सहयोगमें मित्रके समान बर्ताव करती है। स्नेहके व्यवहारमें भार्या अथवा माता तथा शयनकालमें वेश्याके समान सुख प्रदान करती है।

6. जिस कन्याके हाथमें अंकुश, कुण्डल और चक्रके चिह्न विद्यमान रहते हैं, वह पुत्र से सम्पन्न होती है और राजाको पतिके रूपमें वर करती है।फिर चाहे किसी गाँव या खण्डहर या अक्षेत्र (क्षत्रियहीन वर्ण)में ही पैदा क्यों न हुई हो

उदाहरण– **वेदव्यास जी की माँ मत्स्यगंधा** दैहिक लक्षण के कारण भाग्य विधाता ने सारी लीला रची फिर भले ही वह मछली से उत्पन्न हुई चाहे गरीब के घर पली।

और सौभाग्यवश इसे पराशर जी का संग प्राप्त हुआ और शान्तनु का। अर्थात् एक प्रकार से आध्यात्मिक (श्रीपराशर से वेदव्यास सा बेटा)और भौतिक दोनों लाभ (राजसुख) मिले ।

7. जिस स्त्रीके दोनों पार्श्व और स्तन–प्रदेश रोमसमन्वित होते हैं तथा अधरोष्ठ–भाग ऊँचा उठ हुआ होता है, वह निश्चित ही शीघ्र होने वाले पतिका नाश करनेवाली होती है।

8. जिसके हाथमें प्राकार और तोरणकी रेखाएँ दिखायी देती हैं, वह दासकुलमें भी उत्पन्न होकर रानीके पदको प्राप्त करती है।

9. जिस कन्याकी नाभि ऊपरकी ओर उठी हुई, मण्डलाकार एवं कपिलवर्णकी रोमावलियोंसे आवृत्त रहती है, वह कन्या राजकुलमें उत्पन्न • होकर दासीकी वृत्तिसे जीवनयापन करती है।

10. चलना–जिस स्त्रीके चलनेपर दोनों पैरकी अनामिका तथा अंगुष्ठ पृथिवीतलका स्पर्श नहीं करते हैं, वह शीघ्र ही पतिका नाश करती है तथा स्वयं स्वेच्छाचार पूर्वक जीवन बितानेवाली होती है। जो अच्छा लगता है वह वही करती है।

11.जिस स्त्रीके चलनेसे पृथिवीमें कम्पन हो उठता है, टेड़ी मेढ़ी जिसकी चाल हो जो खड़े खड़े कहीं भी कुछ भी खाती रहती है जिसकी लज्जा मिट चुकी जो बहुत तेज चलती है न

कि गजगामिनी और हर किसी से हाथों का स्पर्श करती फिरती है। वह पति के लिए घातक सिद्ध होती है और वह विवाह के बाद परपुरुष का गमन करती है।

12.सुन्दर मनोहारी नेत्रोंके होनेसे वह यदि परपुरुष का कुसंग न करे तो (वह)स्त्री सौभाग्यशालिनी, उज्ज्वल चमकते हुए दाँतों के होनेपर उत्तम भोजन प्राप्त करनेवाली, शरीरकी त्वचा सुन्दर एवं कोमल होनेसे उत्तम प्रकारकी शय्या सुख प्राप्त करने वाली होती है।

तथा

13. कोमल स्निग्ध चरणोंके होनेपर वह श्रेष्ठ वाहनका सुख प्राप्त करती है।

चिकने, ऊँचे उठे हुए ताम्रवर्णके समान लाल लाल नखोंसे युक्त, मत्स्य, अंकुश, पद्म, चक्र तथा लाङ्गल (हल) – चिह्नसे सुशोभित एवं पसीनेसे रहित और कोमल तलवाले स्त्रीके चरण सौभाग्यशाली होते हैं।

14. सुन्दर रोमविहीन जंघा, गजशुण्डके सदृश ऊरु, पीपलपत्रके समान विशाल उत्तम गुह्यभाग, **दक्षिणावर्त गम्भीर नाभि**, रोमरहित त्रिवली और **हृदयपर सुशोभित रोमरहित स्तन–प्रदेश** ये पुण्यात्मा और उत्तम सुख भोगने वाली स्त्रीके शुभ लक्षण हैं ऐसी स्त्री नाखून न बड़ाये और पति की पादुका का कभी भी उल्लंघन न करे तथा श्री लक्ष्मी का आराधन करे तो उसके पति का भाग्योदय शीघ्र हो जाता है और न भी करे तो अनिवार्य और दुर्लभ भोग अवश्य ही मिलते हैं पर आराधन से शतगुना लाभ होता है।

(228) रक्षक मंत्र

महामृत्युंजय और मृतसंजीवनी

मंत्र जो अग्नि पुराण में है। –'ॐ जूं सः वषट्'। ।

यही है अग्निपुराण का महामृत्युंजय मंत्र।

तथा

ॐ हं सः

हूं हूं सः

हः सौः

यह मृतसंजीवनी है।

(229) शत्रु अंधा होने का घण्टादेवि प्रयोग–

यह संग्राममें विजय दिलानेवाले कथा अग्निकार्य का वर्णन महादेव ने किया है कि हे देवी !

1. रातमें श्मशान में जाकर नंग–धड़ंग,
2. शिखा खोलकर, दक्षिणमुख बैठकर
3. जलती हुई चितामें मनुष्य का मांस, रुधिर, विष, भूसी और हड्डीके टुकड़े मिलाकर नीचे लिखे मन्त्रसे केवल आठ सौ बार शत्रुका नाम लेकर हवन करे –

ॐ नमो भगवति कौमारि लल लल लालय लालय घण्टादेवि!

अमुकं मारय मारय सहसा नमोऽस्तु ते भगवति विद्ये स्वाहा।'–

इस विद्यासे हवन करनेपर शत्रु अंधा हो जाता है॥

ज्वर दूर करने के लिए मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये ।

पिशाचाधिपतये आवश्य कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा ॥

विधि : : इस मन्त्र को 108 बार रुद्राक्ष की माला पर जप करने के बाद भोजपत्र पर इस मंत्र को कोयले से लिखकर ताबीज बना लें उस ताबीज को जब भी ज्वर आये तब दांयी भुजा पर बांध दे। और तीन दिन बंधा रहे।
(यह अनुभव सिद्ध है)

अथवा

एक और मंत्र बता रहे हैं वह भी शंभु महादेव का है।
पर उसके लिए बरगद का पत्ता चाहिए न कि भोजपत्र।
सुनें –

ॐ नमो भगवते रुद्राय ।

छिन्ध–छिन्ध ज्वराय–ज्वराय ॥
ज्वरोज्वेलित कपाल पाण।

ये हुं फट् स्वाहा ॥

विधि : इस मन्त्र का १०८ बार जप करके बरगद के पत्ते पर कोयले से ही इस मंत्र को लिखकर रोगी को दिखाने मात्र से ज्वर दूर होता है। (ताबीज की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी)

और जो वैष्णव हैं वे शिव स्वरूप श्रीकृष्ण मंत्र भी प्रयोग कर सकता है अथवा उपर्युक्त रुद्र मंत्र भी सभी का मंगल करता है।

श्री कृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च ।
उषा स्मरण मन्त्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते ॥

विधि : इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधने से ज्वर अति शीघ्र दूर होता है।

ओं नमो अजय पाल की दुहाई।
जो ज्वर रहे अमुक पिण्डे ।
तो महादेव की दुहाई ।
फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।
यह शाबर मंत्र है।

इसको सिद्ध करके झाड़ा करने से ज्वर दूर हो जाता है।
और एक बात –
मृत संजीवन कवच के 1000 पाठ से कोई भी निरोगी और दीर्घकालीन जीवन पा लेता है। तथा सिपाही या सैनिक 28 बार पाठ करके जाये तो वह शत्रु से मर नहीं सकता। और दीर्घकालीन सेवा कार्य करता है।

(230) नवग्रह स्तोत्र

सूर्यदेव–

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

जपा के फूल की तरह जिनकी कान्ति है, कश्यप से जो उत्पन्न हुए हैं, अन्धकार जिनका शत्रु है, जो सब पापों को नष्ट कर देते हैं, उन सूर्य भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।'

चंद्रदेव –

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

दही, शंख अथवा हिम के समान जिनकी दीप्ति है, जिनकी उत्पत्ति क्षीर–समुद्र से है, जो शिवजी के मुकुट पर अलंकार की तरह विराजमान रहते हैं, मैं उन चन्द्रदेव को प्रणाम करता हूँ।

मंगलग्रह –

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्ति हस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥

पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, विद्युत्पुंज के समान जिनकी प्रभा है, जो हाथों में शक्ति धारण किये रहते हैं, उन मंगल देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

बुधग्रह –

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

प्रियंगु की कली की तरह जिनका श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा नहीं है, उन सौम्य और गुणों से युक्त बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुरु–

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, कंचन के समान जिनकी प्रभा है, जो बुद्धि के अखण्ड भण्डार और तीनों लोकों के प्रभु हैं, उन बृहस्पति को मैं प्रणाम करता हूँ।

शुक्र–

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

तुषार, कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा है, जो दैत्यों के परम गुरु हैं, उन सब शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता शुक्राचार्यजी को मैं प्रणाम करता हूँ।'

शनिदेव–

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

नील अंजन के समान जिनकी दीप्ति है, जो सूर्य भगवान् के पुत्र तथा यमराज के बड़े भ्राता हैं, सूर्य की छाया से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन शनैश्चर देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

राहु–

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमामयम् ॥

जिनका केवल आधा शरीर है, जिनमें महान् पराक्रम है, जो चन्द्र और सूर्य को भी परास्त कर देते हैं, सिंहिका के गर्भ से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

केतु–

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है, जो समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ हैं, जो शिवभक्त व स्वयं रौद्र रूप और रौद्रात्मक हैं, ऐसे घोर रूपधारी केतु को मैं प्रणाम करता हूँ।

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥

व्यास के मुख से निकले हुए इस स्तोत्र का जो सावधानी पूर्वक दिन या रात्रि के समय पाठ करता है, उसकी सारी विघ्न बाधायें शान्त हो जाती हैं।

नरनारीनृपाणां च भवेद्दःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम् ॥

संसार के साधारण स्त्री पुरुष और राजाओं के भी दुःस्वप्न जन्य दोष दूर हो जाते हैं।

ग्रहनक्षत्रजाः पीडा स्तस्कराग्नि समुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

किसी भी ग्रह, नक्षत्र, चोर तथा अग्नि से जायमान पीड़ायें शान्त हो जाती हैं. इस प्रकार स्वयं व्यासजी कहते हैं, इसलिए इसमें कोई संशय नहीं करना चाहिए।

(231) गर्भाधान

लग्नसे सप्तम भावपर पापग्रहका योग या दृष्टि हो तो रोषपूर्वक रतिकर्म होगा। (दोनों में से एक की इच्छा नहीं होती)पर यह बलात्कार ही कहलाता है।

पर यह भी जन्म कुंडली में चतमकमपिदमक होता है अर्थात इससे तो यह सिद्ध हो रहा है कि अति कामी पति जो शोषक है वही मिलेगा न कि सज्जन।

और .....''....सप्तम भाव पर शुभग्रहका योग एवं दृष्टि हो तो प्रसन्नतापूर्वक पति–पत्नीका संयोग होता है ।

यह भी किसी पुण्य का प्रताप है । सही बात है भाई!

पाप और पुण्य सदा चिपके रहते हैं जीव से)

3.गर्भ आधानकालमें शुक्र, रवि, चन्द्रमा और मङ्गल अपने–अपने नवमांशमें हों, गुरु लग्नसे केन्द्र या त्रिकोणमें हो तो निश्चय ही संतान होती है ।

4. यदि रुसूर्यसे रुसप्तम रुभावमें रुमङ्गल और शनि हों तो वे रुपुरुषके रुलिये रुरोग तथा चन्द्रमासे सप्तममें हों तो स्त्रीके लिये रोगप्रद होते हैं।

5. सूर्यसे १२, २ में शनि और मङ्गल हों तो पुरुषके लिये घातक।

6. और चन्द्रमासे १२, २ में ये दोनों हों तो स्त्रीके लिये घातक होते हैं।

अथवा इन (शनि–मङ्गल) में एकसे युत और अन्यसे दृष्ट रवि हो तो वह पुरुषके लिये और चन्द्रमा यदि एकसे युत तथा अन्यसे दृष्ट हो तो वह स्त्रीके लिये घातक होता है ।

7. दिनमें गर्भाधान हो तो शुक्र मातृग्रह और सूर्य पितृग्रह होते हैं।

8. रात्रिमें गर्भाधान हो तो चन्द्रमा मातृग्रह और शनि पितृग्रह होते हैं।

पितृग्रह यदि विषम राशिमें हो तो पिताके लिये और मातृग्रह सम राशिमें हो तो माताके लिये शुभकारक होता है।

9. यदि पापग्रह बारहवें भावमें स्थित होकर पापग्रहसे देखा जाता और शुभग्रहसे न देखा जाता हो, अथवा लग्नमें शनि हो तथा उसपर क्षीण चन्द्रमा और मङ्गलकी दृष्टि हो तो गर्भाधान होनेसे स्त्रीका मरण होता है।

लग्न और चन्द्रमा दोनों या इनमेंसे एक भी रुदो रुपापग्रहोंके बीचमें हो तो गर्भाधान होनेपर स्त्री गर्भके सहित (साथ ही) या पृथक् मृत्युको प्राप्त होती है ...

10. लग्न अथवा चन्द्रमासे चतुर्थ स्थानमें पापग्रह हो, मङ्गल अष्टम भावमें हो अथवा लग्नसे ४, १२ वें स्थानमें मङ्गल और शनि हों तथा चन्द्रमा क्षीण हो तो भी गर्भवती स्त्रीका मरण होता है।

11. यदि लग्नमें मङ्गल और सप्तममेंरवि हों तो गर्भवती स्त्रीका शस्त्रद्वारा मरण होता है।

गर्भाधानकालमें जिस मासका स्वामी अस्त हो, उस मासमें गर्भका स्राव होता हैय इसलिये इस प्रकारके लग्नको गर्भाधानमें त्याग देना चाहिये

12. आधानकालिक लग्न या चन्द्रमाके साथ अथवा इन दोनोंसे ५, ६, ७, ४, १० वें स्थानमें सब शुभग्रह हों और ३, ६, ११ भावमें सब पापग्रह हों तथा लग्न और चन्द्रमापर सूर्यकी दृष्टि हो तो गर्भ सुखी रहता है ।

13. रवि, गुरु चन्द्रमा और लग्न– ये विषम राशि एवं विषम नवमांशमें हों अथवा रवि और गुरु विषम राशिमें स्थित हों तो पुत्रका जन्म समझना चाहिये।

14.उक्त सभी ग्रह यदि सम–राशि और सम–नवमांशमें हों अथवा मङ्गल, चन्द्रमा और शुक्र–ये सम–राशिमें हों तो विज्ञजनोंको कन्याका जन्म समझना चाहिये।

अथवा वे सब द्विस्वभाव राशिमें हों और बुधसे देखे जाते हों तो अपने–अपने पक्षके यमल (जुड़वीं संतान) – के जन्मकारक होते हैं। अर्थात् पुरुषग्रह दो पुत्रोंके और स्त्रीग्रह दो कन्याओंके जन्मदायक होते हैं।

(यदि दोनों प्रकारके ग्रह हों तो एक पुत्र और एक कन्याका जन्म समझना चाहिये।)

श्री स्वाहा देवी के महत्वपूर्ण नाम–

श्री स्वाहा देवी के महत्वपूर्ण नाम जो हर साधना को सफल बनाते है। पूजा–पाठ में चाहे किसी भी प्रकार से छोटी मोटी गलती हो जाये पर देवी के स्मरण मात्र से संपूर्ण फल प्राप्त हो जाता है। यह श्रीमद् देवीभागवत व ब्रह्मवैवर्त पुराण दोनों में ही वर्णित है।

ॐ स्वाहाद्या प्रकृतेरंशा मन्त्रतन्त्राङ्गरूपिणी।
मन्त्राणां फलदात्री च धात्री च जगतां सती।।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धा च सिद्धिदा सर्वदा नृणाम्।
हुताशदाहिकाशक्तिस्तत्प्राणाधिकरूपिणी।।
संसारसाररूपा च घोरसंसारतारिणी।
देवजीवनरूपा च देवपोषणकारिणी।।

(232) सप्तमी तिथि की महिमा

1. माघ शुक्ल पक्ष की सप्तमी – मन्वादि तिथि है इस दिन श्राद्ध से पितृगण 2000 साल तक परम तृप्त होते हैं
2. **दुर्गा मैया को गुड़का नैवेद्य अर्पण करके ब्राह्मणको–**सप्तमी तिथिको भगवतीको गुड़का नैवेद्य अर्पण करके ब्राह्मणको गुड़का दान करनेसे मनुष्य सभी प्रकारके शोकोंसे मुक्त हो जाता है ॥सप्तम्यां गुडनैवेद्यं देव्यै दत्त्वा द्विजाय च । गुडं दत्त्वा शोकहीनो जायते द्विजसत्तम ॥नोट –जो अत्यधिक शोकग्रस्त रहता हो वह तुलादान में गुड़ ही प्रयोग करे (यदि आपमें 70 किलो बजन है तो वह मनुष्य 70 किलो गुड़ खरीदकर) तुला पर बैठकर तदोपरान्त उस गुड़ को गौशाला में जाकर गायों को खिला दें अथवा ब्राह्मणों को। इससे भी अतिशीघ्र शोक नष्ट होने लगता है। प्रमाण– श्रीमद्देवीभागवत महापुराण अष्टम स्कन्ध अध्याय २४
3. तथा कृष्णपक्ष की सप्तमी को हर किसान यदि श्राद्ध करे तो उसको अथाह लाभ होता है।
4. रविवारी सप्तमी, सूर्यग्रहण के बराबर फलदायक कही गयी है। भविष्य पुराण और सूर्यपुराण में प्रभु सूर्यदेव के अद्वितीय स्तोत्र हैं और मात्र 3 बार आदित्य हृदय स्तोत्र के पाठ से विजय मिलती है पग पग पर लाभ होता है चाहे शैव हो या वैष्णव हर सप्तमी को अवश्य ही प्रभु सूर्य का भजन करें । भगवान श्रीराम ने भी संग्राम के समय मात्र 3 बार आदित्य हृदय स्तोत्र के पाठ से विजय प्राप्त की थी।
5. **आर्या सूर्य स्तोत्र धन दायक अर्थात दरिद्रता के नाश के लिये पाठ ।** हर सप्तमी को मात्र सात पाठ करें और चमत्कार देखें। ग्रहस्थ को वैसे भी परिवार की सुख शांति और सूर्य देव के सहज अनुग्रह के कारण कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए हर सप्तमी या हर रविवार को इष्ट देव महादेव या श्रीहरि के प्रीत्यर्थे पंच देव की उपासना के अंतर्गत आदित्य भगवान की कम से कम एक स्तुती करनी ही चाहिए ऐसा पद्म पुराण में शिव जी ने कार्तिकेय से स्पष्ट कहा है। श्री सूर्यार्या स्तोत्रम्–

शुकतुण्डच्छविसवितुश्चण्डरुचेः पुण्डकरीकवनबन्धोः।
मण्डलमुदितं वन्दे कुण्डलमाखण्डलाशायाः ॥1॥

कमल वन के पोषक भगवान सूर्य का तेज परम प्रचण्ड है। सुग्गे के ठोर की भाँति लाल सम्पूर्ण दिशाओं को कुण्डल की छवि प्रदान करने वाले, उनके उदयकालीन मण्डल को मैं प्रणाम करता हूँ।

यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्ट्चरणकमलोऽपि।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्रं स जयति धाम्नां निधिः सूर्य ॥2॥

जिनके उदय और अस्त होते समय देवताओं के मुकुट से घिसे हुए चरण कमल वाले शंकर जी भी लीलावश सभी को प्रेरणा देने के लिए अंजलि जोड़कर प्रणाम करते हैं, तेजों के पुंज उन भगवान् सूर्य की जय हो।

उदयाचलतिलकाय प्रणतोऽस्मि विवस्वते ग्रहेशाय।
अम्बरचूडामणये दिग्वनिताकर्णपूराय ॥3॥

उदयाचल पर्वत को सुशोभित करने वाले, ग्रहों के शासक, आकाश को चमकाने के लिए चूड़ामणि तथा पूर्व दिशारूपिणी नारी के कर्णफूल भगवान् सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ।

जयति जनानन्दकरः करनिकरनिरस्ततिमिरसङ्घातः।
लोकालोकालोकाः कमलारुणमण्डलः सूर्यः ॥4॥

सम्पूर्ण जनसमुदाय को आनन्दित करना जिनका स्वभाव है, जिनकी किरणों से राशि–राशि अन्धकार नष्ट हो जाते हैं और अखिल भूमण्डल प्रकाशित हो उठता है, उन लोकालोक पर्वत को आलोकित करने वाले लाल कमल के समान सुन्दर मण्डल वाले भगवान् सूर्य की जय हो।

प्रतिबोधितकमलवनःकृतघनटश्चक्रवाकमिथुनानाम्।
दर्शितसमस्तभुवनः परहितनिरतो रविः सदा जयति ॥5॥

जो कमलों को खिलाने वाले, चकवा–चकवी पक्षी के अलग हुए जोडेको मिलाकर प्रसन्न करने वाले हैं, सारे संसार को आलोकित करने में दूसरों के हित में सदा उद्यत रहते हैं, उन भगवान् सूर्य की जय हो।

अपनयतु सकलकलिकृतमलपटलं सुप्रतप्तकनकाभः।
अरविन्दवृन्दविघटनपटुतरकिरणोत्करः सविता ॥6॥

कमलों को खिलाने के लिए जिनकी किरणें परम निपुण हैं तथा जिनका दिव्य कलेवर तपाए हुए सुवर्ण के समान है, वे भगवान् सूर्य कलियुग सम्बद्ध समस्त पापों को दूर कर दें।

उदयाद्रिचारुचामर हयखुरपरिहितरेणुराग।
हरितहय हरितपरिकर गगनाङ्गदीपक नमस्तेऽस्तु ॥7॥

भगवान्! आप उदयाचल पर्वत के लिए सुन्दर चँवर का काम करते हैं। आपके हरे रंग वाले घोड़ों के पैर की धूलि से दूसरों का सदा हित होता है। आपके वाहन अश्व एवं परिजन–सभी का रंग हरा है तथा आकाश को प्रकाशित करने के लिए आप दीपक हैं। आप भगवान् सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ।

उदितवति त्वयि विकसति मुकुलीयति समस्तमसतमितबिम्बे।
नान्यस्मिन् दिनकरसकलं कमलायते भुवनम् ॥8॥

भगवन्! आपके उदय होने पर सारा संसार जागता और अस्त हो जाने पर निद्रा में विलीन हो जाता है। आपके आश्रित सम्पूर्ण संसार ही कमलवत् व्यवहार कर रहा है। प्रभो! आपके अतिरिक्त (हे परमतत्त्व रूप) अन्य किसी में ऐसी शक्ति नहीं है।

जयति रविरुदयसमये बालातपः कनकसंनिभो यस्य।
कुसुमाञ्जलिरिव जलधौ तरन्ति रथसप्तयः सप्त ॥9॥

जिनका प्रकाश उदयकाल में स्वल्प तथा पीत सुवर्ण के समान रहता है, आकाश में जिनके सात घोड़ों वाला रथ समुद्र में पुष्पांजलि की भाँति तैरता है एवं प्रकाश भी उत्तरोत्तर बढ़ने लगता है, उन भगवान् सूर्य की जय हो।

आर्याः साम्बपुरे सप्त आकाशात् पतिता भुवि।
यस्य कण्ठे गृहे वापि न स लक्ष्म्या वियुज्जते ॥10॥

भगवान् सूर्य की सात आर्या छन्दों में निबद्ध यह स्तुति सर्वप्रथम साम्ब की पुरी में आकाश से प्राप्त हुई थी। जो इसका अभ्यास करता है अथवा जिसके घर में यह स्थान पाती है, (रक्त चंदन या रोली से लिखी हुई) वह पुरुष भगवान् सूर्य की कृपा से कभी भी लक्ष्मी से हीन नहीं होता।

आर्याः सप्त सदा यस्तु सप्तम्यां सप्तधा जपेत्।
तस्य गेहं च देहं च पद्मा सत्यं न मुञ्चति ॥11॥

जो व्यक्ति प्रत्येक सप्तमी तिथि को इसके सात पाठ करता है, उसके शरीर और घर को कभी लक्ष्मी नहीं छोड़तीं–यह बिलकुल सत्य बात है।

निधिरेष दरिद्रणां रोगां परमौषधम्।
सिद्धिः सकलकार्याणां गाथेयं संस्मृता रवेः ॥12॥

भगवान् सूर्य की यह आर्या स्तुति दरिद्रों के लिए अटूट खजाना, रोगियों के लिए परम औषधि है। यह सबके सम्पूर्ण कार्यों को सिद्ध करने वाली है।और समय हो तो श्रीसूर्यसहस्र नामया यह पाठ करें

श्री सूर्य ने कहा–जाम्बवतीनन्दन साम्ब! सुनो। विशाल भुजा से शोभा पाने वाले साम्ब! इस सहस्रनाम के पाठ में बड़ा श्रम है, अतः अब इस तुम छोड़ दो। तुम कल्याणकारक स्तवराज का पाठ करो। इस स्तवराज में जितने गोपनीय, पवित्र और कल्याणकारक नाम हैं, उन सबका तुम्हारे सामने वर्णन करता हूँ। इसे सुनकर उन्हें हृदय में स्थान दो।

(233) वसुकी सृष्टिका वर्णन

वसुकी सृष्टिका वर्णन सुनो। जो देवगण अत्यन्त प्रकाशमान और सम्पूर्ण दिशाओंमें व्यापक हैं, वे वसु कहलाते हैं उनके नाम सुनो।

आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास–ये आठ वसु धर्म के सुपुत्र हैं। ये 8 ही द्वापर में गंगा जी व शान्तनु के पुत्र बनकर जन्म ले चुके हैं।शान्तनु पहले के जन्म में राजा थे, अच्छे पूर्त कर्मों से स्वर्ग मिला पर एक बार ब्रह्मलोक की सभा में गंगा जी की साडी खिसक गई तो ये देखते ही रहे तथा गंगा ने भी तुरंत पल्लू से अपने तन को नहीं ढका तो दोनों ही शाप को प्राप्त हुये। ये गंगा जी पूर्व जन्म में ऋषिकुल्या नामक बालिका थी पर तप से विष्णुपदी बनी और वैकुण्ठ में श्रीहरि की पत्नि भी बनी। एक बार सरस्वती गंगा व लक्ष्मी का किसी कारण झगडा हो गया था तो ये तीनों 5000 साल तक नदियां बनी। भागीरथ ने ही तप से गंगा जी को धरा पर उतारा था।

1. आप नामक वसु ' के चार पुत्र हैं– कृशान्त, वैतण्ड, साम्ब और मुनिबभ्रु। ये सब यज्ञ रक्षाके अधिकारी हैं।
2. ध्रुव नामक वसु के पुत्र काल हुए जो संसार पर अंकुश रखते हैं। इस प्रकार धर्म के ध्रुव और ध्रुव के काल हुए।

3. सोमके पुत्र वर्चा हुए।
4. धरके दो पुत्र हुए द्रविण और हव्यवाह।
5. अनिलके पुत्र प्राण, रमण और शिशिर थे।
6. अनलके कई पुत्र हुए, जो प्रायः अग्निके समान गुणवाले थे। अग्निपुत्र कुमार जो एक प्रकार से महारुद्र प्रभु का ही तेज था कुछ काल तक अनल नें धारण कर लिया था फिर 5000 वर्ष के बाद एक देवी ने भी इस वीर्य को अग्नि से " अग्नि उस तेज को न सह सके इस कारण"ले लिया पर इस देवी जो एक महानदी थी उसने भी 5000 वर्ष के बाद उस तेज को सरकंडों में छोड दिया तो उनका जन्म सरकंडोंमें ही हुआ। फिर उनके शाख, उपशाख और नैगमेय–ये तीन पुत्र हुए। पर कृत्तिकाओं ने पाला अतः उनकी सन्तान होनेके कारण कुमारको कार्तिकेय भी कहते हैं।
7. प्रत्यूषके पुत्र देवल नामके मुनि हुए।
8. **प्रभास नामक वसु से प्रजापति विश्वकर्मा जी का जन्म हुआ, जो शिल्पकलाके ज्ञाता हैं।** वे महल, घर, उद्यान, प्रतिमा, आभूषण, तालाब, उपवन और कूप आदिका निर्माण करनेवाले हैं। देवताओंके कारीगर वे ही हैं।

1. अजैकपाद्,
2. अहिर्बुध्न्य,
3. विरूपाक्ष,
4. रैवत,
5. हर,
6. बहुरूप,
7. त्र्यम्बक,
8. सावित्र,
9. जयन्त,
10. पिनाकी और

अपराजित ये ग्यारह रुद्र कहे गये हैं हालाँकि कुछ नामों में मतभेद भी है ये गणों के स्वामी हैं। इनके मानस संकल्पसे उत्पन्न चौरासी करोड़ पुत्र हैं, जो रुद्रगण कहलाते हैं। वे श्रेष्ठ त्रिशूल धारण किये रहते हैं। उन सबको अविनाशी माना गया है। जो गणेश्वर सम्पूर्ण दिशाओंमें रहकर सबकी रक्षा करते हैं, वे सब सुरभिके गर्भसे उत्पन्न उन्हींके पुत्र पौत्रादि हैं। 60 पुत्रियों में से सरूपा/स्वरूपा के भी 11 रुद्रों का जन्म हुआ था। और जिन सति अनुसूया का वर्णन प्रायः हर कथा में किया जाता है वे अनुसूया पूर्वकाल के जन्म में दक्ष की ही बेटी थी जिसका विवाह दक्ष ने अत्रि जी से किया था। उस काल की 24 बेटियों में ही

स्वधा और स्वाहा व सति ये प्रधान पुत्रियाँ थी। इन स्वाहा के पति ही अग्निदेव हैं। और वसिष्ठ को दामादचुनकर ऊर्जा नामक बेटी दी।

(234) गायत्री हृदय

(60 लाख गायत्री–जप का फल दाता)

'ॐ अस्य श्रीगायत्रीहृदयस्य नारायण ऋषिर्गायत्री छन्दः परमेश्वरी गायत्री देवता गायत्रीहृदयजपे विनियोगः

श्रीगायत्रीहृदय

द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम् । दन्तपङ्क्तावश्विनौ । उभे सन्ध्ये चोष्ठौ । मुखमग्निः । जिह्वा सरस्वती । ग्रीवायां तु

बृहस्पतिः । स्तनयोर्वसवोऽष्टौ । बाह्वोर्मरुतः । हृदये पर्जन्यः । आकाशमुदरम् । नाभावन्तरिक्षम् ।

कट्योरिन्द्राग्नी । जघने विज्ञानघनः प्रजापतिः । कैलास–मलये ऊरू । विश्वेदेवा जान्वोः । जङ्घायां कौशिकः । गुह्यमयने । ऊरू पितरः । पादौ पृथिवी । वनस्पत– योऽङ्गुलीषु । ऋषयो रोमाणि । नखानि मुहूर्तानि ।

अस्थिषु ग्रहाः । असृङ्मांसमृतवः । संवत्सरा वै निमिषम् । अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः । प्रवरां दिव्यां गायत्रीं

सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये ।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः । ॐ तत्पूर्वाजयाय नमः । तत्प्रातरादित्याय नमः ।

तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै नमः । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । सायंप्रातरधीयानो अपापो भवति ।

सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति । सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति । अवाच्यवचनात्पूतो भवति ।

अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति । अभोज्यभोजनापूतो भवति ।

अचोष्यचोषणात्पूतो भवति । असाध्यसाधनात्पूतो भवति ।

दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो भवति । सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति ।

पङ्क्तिदूषणात्पूतो भवति । अनृतवचनात्पूतो भवति ।

अथाब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति । अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टं भवति ।

फलश्रुति–

षष्टिशतसहस्रगायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति ।

अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयेत् । तस्य सिद्धिर्भवति ।

य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यत इति ।

ब्रह्मलोके महीयते । इत्याह भगवान् श्रीनारायणः ।

इति श्रीमद्देवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां

संहितायां द्वादशस्कन्धे गायत्रीहृदयं सम्पूर्णम् ॥ ४ ॥

10 या 28 बार पढे पर विनियोग बार बार नही पढना और फलश्रुति भी बार बार पडने की आवश्यकता नहीं

और गायत्री कवच पढ़े।

फिर सूर्य देव की प्रदक्षिणा।

जप फल अर्पण

फिर गायत्री जी का विसर्जन

(235) शिव–पंचाक्षरी का विनियोग ,न्यास और ध्यान :

विनियोग–

ॐ अस्य मंत्रस्य वामदेव ऋषि पँक्ति छंद, ईशान देवता, ॐ बीजाय नमः शक्तये, शिवायेति कीलकाय सदाशिव प्रसन्नतार्थे जपे विनियोगः

षडङ्गन्यास :

ॐ "ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः" ।
ॐ "नं तर्जनीभ्यां नमः" ।
ॐ "मं मध्यमाभ्यां नमः" ।
ॐ "शिं अनामिकाभ्यां नमः" ।
ॐ "वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः" ।
ॐ "यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः"।

हृदयादि न्यासः

ॐ ॐ हृदयाय नमः ।
ॐ नं शिरसे स्वाहा।
ॐ मं शिखायै वौषट।
ॐ शिं कवचाय हुम् ।
ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट
ॐ यं अस्त्राय फट ।

पञ्चमूर्ति न्यास :

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ मं अघोराय नमः मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ शिं सद्योजाताय नमःअनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ वां वामदेवाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ यं ईशानाय नमः इत्यंगुष्ठयो नमः ।
ॐ नं तत्पुरुषाय नमः मुखे ।
ॐ मं अघोराय नमः हृदये।
ॐ शिं सद्योजाताय नमः पादयोः ।
ॐ वां वामदेवाय नमः गुह्ये।
ॐ यं ईशानाय नमः मूर्ध्नि।

अब ध्यान– ग्रंथों में अनेक प्रकार का श्रीशिव–ध्यान कहा गया है। मन चाहे उस रूप का ध्यान करें।

हम श्रीमहेश्वर रूप का ध्यान बता रहे हैं। सीधे हाथ में पुष्प व चावल लेकर पद्मासन लगाकर या सामान्य रूप से बैठकर शांतचित्त से ध्यान करें, कभी पुष्प न मिलें तों परेशान न हों मानसिक रूप से ही हाथ में पुष्प रख लें।

शिव प्रभु का ध्यान –

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥
ॐ शिवाय नमः ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

चाँदीके पर्वतके समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमाको आभूषण–रूपसे धारण करते हैं, रत्नमय अलंकारोंसे जिनका शरीर उज्ज्वल है, जिनके हाथोंमें परशु, मृग, वर और अभय मुद्रा है, जो प्रसन्न हैं, पद्मके आसनपर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघकी खाल पहनते हैं, जो विश्वके आदि जगत् की उत्पत्तिके बीज और समस्त भयको हरनेवाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं।

''उन महेश्वरका प्रतिदिन इसी प्रकार ध्यान करे।''

इस रूप के ध्यान से और ध्यान के बाद पूजा '' मानसिक पूजा अग्रवर्णित है'' तथा संसार पावन कवच के 500000 पाठ से संपूर्ण ऐश्वर्य व 22 सिद्धियाँ भी मिल जाती है।

कवच अधिक न बनें तो कम से कम विनियोग,न्यास,ध्यान,पूजा के बाद 10 माला पंचाक्षरी अर्थात् नमः शिवाय जपके मात्र एक बार कवच अवश्य ही पढे।

गले में एक रुद्राक्ष की माला या कम से कम एक पंच मुखी रुद्राक्ष धारण और भस्म धारण के बाद ही यह विनियोग न्यास और जपादि करें।

मानसिक पूजा–

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।
(प्रभो! मैं पृथिवीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।)

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।
(प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।)

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।
(प्रभो! मैं वायुदेवके रूपमें धूप आपको प्रदान करता हूँ।)

ॐ रं तेजात्मकं दीपं दर्शयामि ।
(प्रभो! मैं तेज अर्थात अग्नि रूप में दीपक आपको प्रदान करता हूँ।)

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि ।
(प्रभो! मैं अमृतके समान नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।)

ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।
(प्रभो! मैं सर्वात्माके रूपमें संसारके सभी उपचारोंको आपके चरणोंमें समर्पित करता हूँ।)

इन मन्त्रोंसे भावनापूर्वक मानसपूजा की जा सकती है।

इसी मानस मंत्र से महादेव के प्रीत्यर्थे उनके अनेक रूपों '' ज्ञानदाता गुरु, मंत्रदाता गुरु, गणपति ,सुदर्शनबटुकजी ,परादुर्गा और महादेवजी की पूजा सबसे पहले करें तो 1000 गुना लाभ प्राप्त किया जा सकता है यद्यपि मूलतः सब कुछ एक ही है पर अलग अलग प्रधान बाह्य रूपों के कारण पूजन करना उसी प्रकार अनिवार्य है जिस प्रकार हमारे परिवार में यदि 6 सदस्य हैं तो सभी की तृप्ति के लिये 6 थाली भोजन अनिवार्य है।

(236) सर्वार्थ सिद्धि योग

नक्षत्र और वार के संयोग जिनमें सर्वार्थ सिद्धि योग निर्मित होते हैं:

1. रविवार– अश्विनी, हस्त, पुष्य, मूल, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद
2. सोमवार– श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा
3. मंगलवार– अश्विनी, उत्तरा भाद्रपद, कृतिका, अश्लेषा
4. बुधवार– रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृतिका, मृगशिरा
5. गुरुवार– रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य
6. शुक्रवार– रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण
7. शनिवार– श्रवण, रोहिणी, स्वाति

सर्वार्थ सिद्धि योग किसी भी नए कार्य को करने का सबसे अच्छा समय है।

(237) नंदा ,भद्रा तथा पूर्णा तिथि का रहस्य–

नंदा तिथि – 1,6,11 (अर्थात प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी) ; शुक्रवार को नंदा (1,6,11) बहुत उत्तम होती हैं। पर मंगलवार की यह(1,6,11) हानिकारक।

भद्रा तिथि – 2,7,11 ये तीन तिथि भद्रा तिथि हैं जो बुधवार को सर्वोत्तम लाभ देती हैं परंतु सोमवार और शुक्रवार को ये तिथि पड़ जाये तो अशुभ फल देती हैं।

पूर्णा तिथि – 5,10,15 ये पंचमी आदि पूर्णा तिथि हैं जो गुरुवार को महान फलदायक होती हैं भगवान शिव जी का लोमश कृत मृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ इन तिथियों में (100–100) करने पर आप और हम शतायु वर्ष तक नहीं मर सकते और न ही रोग हो सकते हैं फिर चाहे प्रारब्ध कैसा ही हो । पर पर पर जो करे वही पाये।

इस कारण गुरुवार में कभी यह पंचमी व दसमी पढ़े तो यह अनुष्ठान आरंभ कर देना। पर शनिवार की यह तिथि (5,10,15) हानिकारक हैं। शनिवार को पीपल की सेवा करना हो तो (4,9,14 को चुनें या शनिवार पर रोहिणी, श्रवण , स्वाति और शतभिषा उत्तम है(कृतिका शनिवार को हो तो उसकी पंचमी हानिकारक नहीं वैसे शनिवार की पंचमी हानिकारक है)

परंतु अन्य नक्षत्र उस शनिवार को हो तो चैक अवश्य कर लेना कुछ मारक, उत्पातकी, यमदण्डात्मक भी होते हैं जैसे कि – शनि रेवती, शनिवार का आश्लेषा , शनि– मघा , शनि–हस्त (यमघंट) , शनि– उत्तराफाल्गुनी (उत्पातकी)

अतः पीपल से दीर्घकालिक जीवन और विजय चाहिए तो शनि का रोहिणी नक्षत्र सर्वोत्कृष्ट है और श्रवण– स्वाति भी।

सात वारों के देवता –

1. रविवार के देव शिव हैं इस कारण एक पौराणिक मत से रविवार को शिववार भी कहते हैं। इसी कारण बिल्ववृक्ष की सेवा रविवार को करके महान लाभ होता है जो स्कन्दपुराण में लिखा है।
2. सोमवार के देव दुर्गा (पराशक्ति)
3 मंगलवार के बृहस्पति और कार्तिकेय
4. बुधवार के विष्णु
5. गुरुवार के ब्रह्मा
6. शुक्रवार की श्री अर्थात लक्ष्मी देवी यह अग्नि पुराण के अनुसार है शिव जी के एक महाग्रंथ में शुक्रवार के देव इंद्र भी घोषित हैं अतः आप चाहें तो शुक्रवार को किसी शुभ मुहूर्त अर्थात शुक्रवार के उत्तम नक्षत्र से इंद्र कृत लक्ष्मी अष्टकम् के 1000 पाठ से अतुलनीय धन संपदा पा सकते हो साथ–साथ एक लक्ष्मी कवच भी करें जो ब्रह्म वैवर्त पुराण तथा श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में मिल जायेगा अथवा हमारी स्तोत्र निधिवन में ये दोनों हैं ।

7. शनिवार के कुबेर हैं तथा यम देव को भी यह दिन शिव पुराण में अर्पण किया है इस दिन पीपल की पूजा से सब कुछ संभव है। तथा यम स्तोत्र (जिसके पाठ से किसी भी सदस्य की सात पीढ़ियों तक अकाल मौत नहीं होती वह हर शनिवार को पढ़े यह हमने शिव चरित मानस भाग द्वितीय में लिखा है । जो आप निशुल्क पीडीएफ फाइल इस अक्षयरुद्र से ले सकते हैं या अमेजन या फ्लिपकार्ट पर आर्डर करके 500 पृष्ठ का महाग्रंथ प्राप्त कर सकते हैं। लागत मूल्य पर चाहिए तो अक्षयरुद्र के पते पर 1000 बार श्रीदुर्गा लिखकर भेज दें 750₹ के लगभग में मिल जायेगा

(238) रुद्राष्टाध्यायी से अभिषेक के लिए शिव वास नियम

रुद्राष्टाध्यायी – जिसे यजुर्वेद में (पंचम अध्याय को रुद्र सूक्त और शतरुद्रीय की संज्ञा प्राप्त है) महाकल्याणकारी बताया है।

अतः आज उसकी अद्भुत और अद्वितीय महिमा सुनें।
रुद्राभिषेक के लिए शिव निवास का विचार अवश्य करें ।

किसी कामना, ग्रहशांति आदि के लिए किए जाने वाले रुद्राभिषेक में शिव निवास का विचार करने पर ही अनुष्ठान सफल होता है और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

प्रत्येक मास की तिथियों के अनुसार जब शिव निवास गौरी पार्श्व में, कैलाश पर्वत पर, नंदी की सवारी एवं ज्ञान वेला में होता है तो रुद्राभिषेक करने से सुख–समृद्धि, परिवार में आनंद मंगल और अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति होती है। आगे विस्तार से बताया जा रहा है।

"परन्तु शिव वास श्मशान, सभा अथवा क्रीड़ा में हो तो उन तिथियों में शिवार्चन करने से महा विपत्ति, संतान कष्ट व पीड़ादायक होता है।" अतः सावधान पहले विद्वान ब्राह्मणों से सही तिथि जानें तब ही मंगल होगा। उनकी बात अलग थी जो अपना जीवन ही दाव पर लगाकर जंगल में शिव प्राप्ति के लिए बिना जानकारी के भाग गए। उनके लिए ऐसे पलों में शम्भु कुछ भी नियम मियम नहीं देखते और तत्काल भागे भागे चले आते हैं।

पर गृहस्थ जीवन में सब कुछ अनिवार्य है।

रुद्राभिषेक करने की तिथियां बता रहे हैं ।

पर पहले सुनें –

ज्योर्तिलिंग–क्षेत्र एवं तीर्थस्थान में तथा शिवरात्रि, प्रदोष, श्रावण के सोमवार आदि पर्वो में शिव–वास का विचार किए बिना भी रुद्राभिषेक किया जा सकता है।

अन्य क्षणों में लाभ हेतु –

कृष्णपक्ष 1,5,8,11,12,15

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या। तथा

शुक्लपक्ष– 2,5,6,9,12,13

शुक्लपक्ष की द्वितीया, पंचमी, षष्ठी, नवमी, द्वादशी, त्रयोदशी तिथियों में अभिषेक करने से सुख–समृद्धि संतान प्राप्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

कालसर्प योग, गृहकलेश, व्यापार में नुकसान, शिक्षा में रुकावट सभी कार्यो की बाधाओं को दूर करने के लिए रुद्राभिषेक आपके अभीष्ट सिद्धि के लिए फलदायक है।

किसी कामना से किए जाने वाले रुद्राभिषेक में शिव–वास का विचार करने पर अनुष्ठान अवश्य सफल होता है और मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

शिव वास कब कब ?

1. प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, अष्टमी, अमावस्या तथा शुक्लपक्ष की द्वितीया व नवमी के दिन भगवान शिव माता गौरी के साथ होते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से सुख–समृद्धि उपलब्ध होती है।
2. कृष्णपक्ष की चतुर्थी, एकादशी तथा शुक्लपक्ष की पंचमी व द्वादशी तिथियों में भगवान शंकर कैलाश पर्वत पर होते हैं और उनकी अनुकंपा से परिवार में आनंद–मंगल होता है।
3. कृष्णपक्ष की पंचमी, द्वादशी तथा शुक्लपक्ष की षष्ठी व त्रयोदशी तिथियों में महादेव नंदी पर सवार होकर संपूर्ण विश्व में भ्रमण करते है।अतः इन तिथियों में रुद्राभिषेक करने पर अभीष्ट सिद्ध होता है।
4. कृष्णपक्ष की सप्तमी, चतुर्दशी तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, अष्टमी, पूर्णिमा में भगवान महाकाल श्मशान में समाधिस्थ रहते हैं।

अतएव इन तिथियों में किसी कामना की पूर्ति के लिए किए जाने वाले रुद्राभिषेक में आवाहन करने पर भगवान शिव की साधना भंग होती है, जिससे अभिषेककर्ता पर विपत्ति आ सकती है।

5. कृष्णपक्ष की द्वितीया, नवमी तथा शुक्लपक्ष की तृतीया व दशमी में महादेव देवताओं की सभा में उनकी समस्याएं सुनते हैं। इन तिथियों में सकाम अनुष्ठान करने पर संताप या दुख मिलता है।

6. कृष्णपक्ष की तृतीया, दशमी तथा शुक्लपक्ष की चतुर्थी व एकादशी में सदाशिव क्रीडारत रहते हैं। इन तिथियों में सकाम रुद्रार्चन संतान को कष्ट प्रदान करते है।
7. कृष्णपक्ष की षष्ठी, त्रयोदशी तथा शुक्लपक्ष की सप्तमी व चतुर्दशी में रुद्रदेव भोजन करते हैं।

इन तिथियों में सांसारिक कामना से किया गया रुद्राभिषेक पीडा देते हैं।

नोट –

इसके अतिरिक्त ज्योर्तिलिंग–क्षेत्र एवं तीर्थस्थान में तथा शिवरात्रि–प्रदोष, श्रावण के सोमवार आदि पर्वो में शिव–वास का विचार किए बिना भी रुद्राभिषेक किया जा सकता है।

वस्तुतः शिवलिंग का अभिषेक आशुतोष शिव को शीघ्र प्रसन्न करके साधक को उनका कृपा पात्र बना देता है और उनकी सारी समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

अतः हम यह कह सकते हैं कि रुद्राभिषेक से मनुष्य के सारे पाप–ताप धुल जाते हैं।

स्वयं श्रृष्टि कर्ता ब्रह्मा ने भी कहा है की जब हम अभिषेक करते है तो स्वयं महादेव साक्षात् उस अभिषेक को ग्रहण करते है।

विभिन्न प्रकार के अभिषेक का फल–

ऐसे तो अभिषेक साधारण रूप से जल से ही होता है । परन्तु विशेष अवसर पर या सोमवार, प्रदोष और शिवरात्रि आदि पर्व के दिनों मंत्र गोदुग्ध से विशेष रूप से अभिषेक किया जाता है।

विशेष पूजा में दूध, दही, घृत, शहद और चीनी से अलग–अलग अथवा सब को मिला कर पंचामृत से भी अभिषेक किया जाता है।

तंत्रों में रोग निवारण हेतु अन्य विभिन्न वस्तुओं से भी अभिषेक करने का विधान है।

इस प्रकार विविध द्रव्यों से शिवलिंग का विधिवत् अभिषेक करने पर अभीष्ट कामना की पूर्ति होती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि किसी भी पुराने नियमित रूप से पूजे जाने वाले शिवलिंग का अभिषेक बहुत ही उत्तम फल देता है।

किन्तु यदि पारद, स्फटिक, नर्मदेश्वर, अथवा पार्थिव शिवलिंग का अभिषेक किया जाय तो बहुत ही शीघ्र चमत्कारिक शुभ परिणाम मिलता है । रुद्राभिषेक का फल बहुत ही शीघ्र प्राप्त होता है ।

पुत्र प्राप्ति के लिए दुग्ध से और यदि संतान उत्पन्न होकर मृत पैदा हो तो गोदुग्ध से रुद्राभिषेक करें।

रुद्राभिषेक से योग्य तथा विद्वान संतान की प्राप्ति होती है।

ज्वर की शांति हेतु शीतल जल/गंगाजल से रुद्राभिषेक करें।

सहस्रनाम–मंत्रों का उच्चारण करते हुए घृत की धारा से रुद्राभिषेक करने पर वंश का विस्तार होता है।

प्रमेह रोग की शांति भी दुग्धाभिषेक से हो जातीहै।
शक्कर मिले दूध से अभिषेक करने पर जडबुद्धि वाला भी विद्वान हो जाता है।
जल से अभिषेक करने पर वर्षा होती है।
असाध्य रोगों को शांत करने के लिए कुशोदक से रुद्राभिषेक करें।
भवन–वाहन के लिए दही से रुद्राभिषेक करें।
लक्ष्मी प्राप्ति के लिये गन्ने के रस से रुद्राभिषेक करें।
धन–वृद्धि के लिए शहद एवं घी से अभिषेक करें।
तीर्थ के जल से अभिषेक करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है।
सरसों के तेल से अभिषेक करने पर शत्रु पराजित होता है।
शहद के द्वारा अभिषेक करने पर यक्ष्मा (तपेदिक) दूर हो जाती है।
पातकों को नष्ट करने की कामना होने पर भी शहद से रुद्राभिषेक करें।
गो दुग्ध से तथा शुद्ध घी द्वारा अभिषेक करने से आरोग्यता प्राप्त होती है।
पुत्र की कामनावाले व्यक्ति शक्कर मिश्रित जल से अभिषेक करें।

महारुद्र प्रयोगः– एकादशिनि रुद्री का फल अलग है, लघुरुद्र का अलग;अतिरुद्र आदि का अलग। एकादशिनि रुद्री से कृपा आरंभ हो जाती है पर शिव वास देखकर ही अभिषेक हो जिसका वर्णन अध्याय 200 में हुआ है। और अभिषेक के लिए सामग्री दूध गंगाजल आदि फल के अनुसार। पर महादेव जी की पूजा करके गले में रुद्राक्ष व ललाट पर भस्म अनिवार्य है चाहे नर हो अथवा नारी।

1. एक महारुद्र से राजभय दूर हो जायेगा तथा शत्रु का उच्चाटन भी। दीर्घायु भी। यश–कीर्ति–चतुर्वर्ग की प्राप्ति भी सहज होती है।
2. तीन महारुद्रों से दुष्कर कार्य भी सुख साध्य हो जाता है।
3. पांच महारुद्रों से राज्य प्राप्ति के साधन होते हैं।
4. सात महारुद्रों से सप्तलोक साधन होता है।
5. नौ महारुद्रों से मोक्ष पद के मार्ग प्राप्त होते हैं। कैवल्य मार्ग प्राप्त।

अतिरुद्र प्रयोगः–

1. एक अतिरुद्र से देवत्व की प्राप्ति होती है। डाकिनी–शाकिनी–अभिचारादि भय का निवारण होता है।

2. तीन अतिरुद्रों से संस्कार भूतादि बाधायें दूर होती हैं।
3. पांच अतिरुद्रों से ग्रहजन्य फल एवं व्याधि शांत होती है।
4. सात अतिरुद्रों से कर्मज व्याधियां शांत होती हैं।
5. नौ अतिरुद्रों से सर्वार्थसिद्धि होती है।

ग्यारह अतिरुद्रों से असाध्य का भी साधन होता है। इन रुद्राष्टाध्यायी के पाठ, अभिषेक आदि के द्वारा शिवकृपा से प्रारब्ध को भी मिटाने की क्षमता है।

(239) पुराणों को कैसे सुनें?

पुराणों को प्रातःकाल पढ़ने से या सुनने से ब्रह्मा जी प्रसन्न होते हैं।

सांयकाल में भगवान विष्णु तथा रात (निशीथ काल) में पढ़ने से भगवान शिव जी वरदान देते हैं तथा विश्व में कीर्ति व धन देते हैं। पर उस रात संयम से भी रहें।

कुशासन पर बैठकर ही पुराण सुनें या पढ़े अन्यथा फल अल्प हो जाता है। वस्त्र धुले व शुक्ल हो। देवता गुरु दिक्पाल, त्रिदेव आदि को नमन करके ही कथा सुनें। सिर पर पगड़ी या टोपी न हो।

वाचक उत्तर की ओर मुख करके कथा कहे तथा श्रोता का मुख इस कारण दक्षिण की ओर होगा ही जो परम कल्याणकारक है। यही नियम है 18 पुराणों तथा महाभारत के श्रवण का।

पर रामायण, हरिवंश पुराण और शास्त्र का इसका विपरीत नियम है।

जो मनुष्य अपने माता और पिता को कथा श्रवण करवाता है उस पुत्र को कथा सुनने का शत गुना फल मिलता है। पर पिता या माता अथवा घर का कोई अन्य सदस्य गंभीर रोग से ग्रसित हो और उसकी देखभाल करने वाला कोई न हो तो कथा या स्वाध्याय की प्रबल इच्छा होने पर भी कथा के लिए न जायें और नाम जप करते हुए श्री अच्युत अनंत और गोविन्द नाम का जप करते हुए उसकी सेवा से ही कथा का फल निश्चित ही मिलता है । पर समय और परिस्थिति सब कुछ अनुकूल हो तो घर पर आलस्य और प्रमाद से हानि ही होती है।

(240) राशि के अनुसार इष्ट व स्तोत्र ,कवच,चालीसा आदि की महिमा

सकामता के लिए राशि के अनुसार जप तप करने से महान लाभ होता है। पवित्र मुहूर्त मे साधना आरंभ करके नित्य 3 पाठ एक प्रभु के 1000 आव्रति तक जपे व कामना सिद्ध करें और परिवार को प्रसन्नता प्रदान करें। इधर उधर न भटकें।

मेष और वृश्चिक– इन दोनो राशि के स्वामी मंगल हैं और मंगलदेव की खुशी के लिये श्रीहनुमान व वामन प्रभु , देवी वसुन्धरा या मंगलदेव की ईष्ट मंगलचण्डिका जी के स्तोत्र , कवच या चालीसा का पाठ सर्वोत्तम है।

वृषभ और तुला – इन दोनो राशि के स्वामी शुक्र हैं और शुक्र की खुशी के लिये श्रीशिव, दुर्गाजी और लक्ष्मी जी इनमें से किसी एक के स्तोत्र का 1008 पाठ करने से या व्रत पूर्वक आराधना करने से शीध्र मनोकामना पूर्ण होगी। शिव पुराण के अनुसार मात्र 108 बार शिव सहस्र से भी संकटों का नाश हो जाता है , घोर संकट मिटाने के लिये 1008 पाठ करें। या देवी दुर्गा जी के 32 नामों की नामावली के 10 हजार पाठ करें या कम से कम 1000 पाठ और साथ मे नित्य एक कवच भी पढे।

कर्क– इसका स्वामी चंद्रमा है जो शिव जी व गौरी मैया की सेवा से अनुकूल हो जाता है।

मिथुन–इस राशि का स्वामी बुध है जो बुद्धि व विवेक का पर्याय है यह श्री गणेशजी, सरस्वती जी की सेवा से संतुष्ट हो जाते हैं।

मकर व कुंभ– इस राशि के स्वामी सूर्यसुत शनिदेव है जिनके गुरु भगवान शंकर जी हैं अतः भोलेनाथ जी का भजन करें या शनिदेव की प्रसन्नता के अन्य उपाय भी है।शनि चालीसा आदि अथवा पिप्पलाद प्रभु का सुमिरण करने से भी रक्षा होती है।शनिदेव की प्रसन्नता के लिये श्री कृष्ण जी की भक्ति भी सर्वोत्तम है।

सिंह–इस राशि के स्वामी सूर्यदेव है अतः इनकी खुशी के लिये गायत्री, शिव या हनुमान जी का भजन करे और आदित्य हृदय स्तोत्र भी नित्य पढ सकते हैं। और पराशक्ति की उपासना से तो नवग्रह ही अनुकूल हो जाते हैं। और गुरुगीता के पाठ से तो शिवा, शिव, राधा, माधव, वीर हनमान, भैरव जी, नृसिंह प्रभु , सभी दिक्पाल, नवग्रह नवशक्तियां व सभी मातृकायें आदि सभी संतुष्ट हो जाते हैं।

धनु व मीन– इन राशियो के स्वामी गुरु बृहस्पति है अतः गुरुसेवा, संत सेवा,सत्यनारायण जी का नारायण कवच या शिव जी के दक्षिणामूर्ति जी के मंत्र का जप करे या कोई भी एक स्तोत्र या मात्र गुरुगीता ही पर्याप्त है। यदि आपके गुरु हनुमान जी हैं तो आप उनकी सेवा भी कर सकते हो।

कन्या– इस राशि का स्वामी बुध है जो बुद्धि व विवेक का पर्याय है यह श्री गणेशजी, सरस्वती जी की सेवा से संतुष्ट हो जाते हैं। श्री हरि की सेवा कर सकते है।

(241) अलग अलग कार्यों के लिए योग

वैधृत से विषकुंभ तक कुल सत्ताईस योग होते हैं। इनमें भिन्न भिन्न कार्यों को किया जाता है। योग के गुणों के अनुसार सफलता का कारक होते हैं। विभिन्न योगों के फल इस प्रकार हैं–

1. विष कुंभ योग–नाम से ही अनुमान लगा लीजिये कि यह योग विष के समान है। इस योग में किया गया कार्य कैसा भी हो इसका परिणाम सदैव अशुभ ही होता है।
2. प्रीति–इस योग में प्रेम, परिवार, मित्रता जैसे कार्य करने से आजीवन आदर सत्कार मिलता रहता है।
3. आयुष्मान –इस योग में किया गया कार्य सदैव शुभदायी होगा।
4. शोभन–यह योग शुभ कार्यों को सफल प्रयोग लाभकारी बनाता है।
5. अतिगंड–इस योग में किसी काम का करना दुखदायी होता है। कार्यों में धोखा, गड़बड़ी और असफल होने की पूरी संभावना बनी रहती है।
6. सुकर्मा–किसी धार्मिक, नौकरी व्यावसायिक कार्य को इस योग में शुरू करना उत्तम फलदायी होता है।
7. घृति–इस योग में घर, व्यवसाय स्थल के निर्माण का शिलान्यास करने से सुख आराम सुविधा बनी रहती है।
8. शूल और गंड–यह दोनों योग दुःख, हानि, देते है। अतएव शुभ कार्यों को करने से बचें।
9. वृद्धि–इस योग में नया कर्म, व्यवसाय शुरू करने से निश्चित ही प्रगति होती है। इस योग में झगड़ा न करें।
10. ध्रुव–इस योग में स्थिर कार्य, मुख्य रूप से मकान की नींव डालना चाहिए।
11. व्याघात–इस योग में कार्य करना हर तरफ से बाधा दिलाएगा। अपने कहलाने वाले लोग साथ छोड़ जाते हैं।
12. हर्षण–यह योग अपने नाम के अनुसार जीवन में हर्ष और खुशी देता है।
13. वज्र–लड़ाई, झगड़ा, मुकदमा आदि वज्र योग में करना उत्तम रहता है।
14. सिद्धियोग–इस योग में किया गया कार्य हमेशा सफल होता है।
15. व्यतिपात–इस योग में किये गये कार्य से नुकसान, व्यर्थ का उपद्रव और अपमान का सामना करना पड़ता है।
16. वरियान–मंगलदायक कार्य वरियान योग में करना हितकारी होता है।
17. परिधि–किसी शत्रु से लड़ना हो तो इस योग में काम करें।

18. शिव–यह योग हर योग को सफलता तक पहुंचाता है चाहे प्रभु की पूजा हो या घर का कोई भी कार्य ।
19. साध्य–इस योग के तहत जिज्ञासु कुछ भी लिखने के उद्देश्य से काम करें चाहे अध्यापन हो या अध्ययन, परिणाम हमेशा उत्तम और अतिरिक्त कृपा के साथ अपने आप ही मिलता है। या यह समझ लीजिए कि जिसको लेखन कार्य में गति चाहिए वह इसी साध्य योग में कुछ भी महत्वपूर्ण कार्य का लेखन करें अथवा कुछ अबूझ मुहूर्त होते हैं उनमें भी कार्य सिद्ध होते हैं।
20. शुभ–यह योग नाम के अनुसार सदैव महान शुभ फल प्रदायक होता है।
21. शुक्ल योग–तंत्र–मंत्र, सिद्धि

साधना के जिज्ञासु जन शुक्ल योग में अपनी साधना प्रारंभ करें, साधक को अपनी साधना का पूर्ण फल मिलता है। कोई भी विघ्न उपस्थित नहीं होते।

अतः चाहें तो गुरुमंत्र की साधना आरंभ करें चाहे इष्ट के स्तोत्र या कवच

का अनुष्ठान। या तिथि या वार को देखकर तिथिदेव की साधना।

जैसे कि शुक्लयोग में पंचमी है तो भगवान संकर्षण या मनसा देवी की आराधना करें, रविवार हो तो सूर्य देव की। मंगलवार हो तो वीर हनुमान जी की।

22. ब्रह्म–ईश्वर की भक्ति व गुरु से ज्ञान या मंत्र प्राप्त करने के लिए उत्तम साधक जन इसी ब्रह्मयोग का इंतजार करते हैं। लगभग माह में एक बार आपको यह योग प्राप्त हो जाता है।

मंत्र सिद्धि हेतु ब्रह्म योग का मिल । जाना मील का पत्थर साबित होता है।

23. **ऐन्द्र– इस योग में पद की शपथ या किसी भी प्रतिष्ठित पद (मंत्री, शासकीय सेवा का प्रथम दिन, या अन्य पद अधिकार को ग्रहण करना बहुत शुभ होता है। उस पद पर कोई जब तक बैठे होते तब तक कोई अड़चन नहीं आती है तथा जातक अपना कार्यकाल शांति से पूरा करता है।**
24. वैघृत– यह योग का अंतिम पायदान है। इस योग में मित्रता, विवाह, लक्ष्मी अनुष्ठान, जैसे कार्य करना शुभ और स्थिर माना जाता है,

लेकिन यात्रा, भागदौड़ इत्यादि कार्यों में यह योग प्रतिकूल परिणाम देता है।

यदि हम इन योगों को ध्यान में रखकर अपने जीवन से जुड़े विभिन्न कार्य करें तो सफलता निःसंदेह हमारे कदम चूमेगी।

मंगलदायक कार्य

वरियान योग में प्रारंभ करना हितकारी होता है, मगर मर्यादा के विपरीत कार्य (पाप) कर्म को नुकसान पहुंचा सकता है, वहीं जब किसी शत्रु से लोहा लेना हो, उसका दमन करना हो तो परिधि योग में उक्त कार्य का प्रारंभ करने से विरोधी सदैव परेशान बना रहता है।

(ॐ नमः शिवाय)

दैनिक जीवन में मुहूर्त का बहुत महत्व है तथा मुहूर्त में योगों का विशेष महत्व होता है।

सूर्य व चन्द्र की विशेष दूरियों की स्थितियों को योग कहते हैं। योग 27 प्रकार के होते हैं। दूरियों के आधार पर बनने वाले 27 योगों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं– 1.विष्कुम्भ, 2.प्रीति, 3.आयुष्मान, 4.सौभाग्य, 5.शोभन, 6.अतिगण्ड, 7.सुकर्मा, 8.धृति, 9.शूल, 10.गण्ड, 11.वृद्धि, 12.ध्रुव, 13.व्याघात, 14.हर्षण, 15.वज्र, 16.सिद्धि, 17.व्यतिपात, 18.वरीयान, 19.परिध, 20.शिव, 21.सिद्ध, 22.साध्य, 23.शुभ, 24.शुक्ल, 25.ब्रह्म, 26.इन्द्र और 27.वैधृति। इसके अतिरिक्त अन्य योग भी होते हैं जैसे रविपुष्ययोग, गुरुपुष्य, अमृत–सिद्धि ,सर्वाथ सिद्धि व पुष्कर योग आदि।
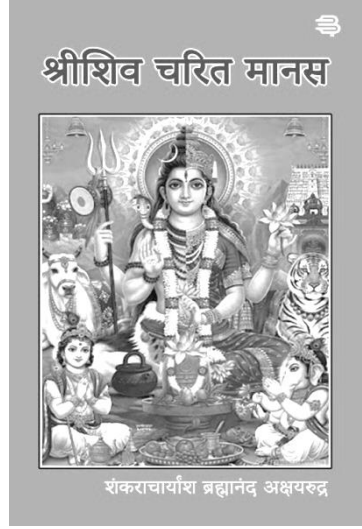
पुष्कर योग–

इस योग का निर्माण उस स्थिति में होता है जबकि सूर्य विशाखा नक्षत्र में होता है और चंद्रमा कृतिका नक्षत्र में होता है। सूर्य और चंद्र की यह अवस्था एक साथ होना अत्यंत दुर्लभ होने से इसे शुभ योगों में विशेष महत्व दिया गया है। यह योग सभी शुभ कार्यों के लिए उत्तम मुहूर्त होता है।

त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग–

वार, तिथि और नक्षत्र तीनों के संयोग से बनने वाले योग को द्विपुष्कर योग कहते हैं। इसके अलावा यदि रविवार, मंगलवार या शनिवार में द्वितीया, सप्तमी या द्वादशी तिथि के साथ पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ और पूर्वाभाद्रपद इन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र आता है तो त्रिपुष्कर योग बनता है।

(242) पंचाक्षरी मंत्र की महिमा और प्रयोग–

महाकल्याण के लिए समस्त व्रतोंमें देवदेव उमापतिकी पूजा करके विधिपूर्वक पंचाक्षरी विद्या (मन्त्र) – का जप करना चाहिये। जपसे ही विशेषकर व्रतोंकी पूर्णता होती है, अन्यथा नहीं इसमें सन्देह नहीं है। अतः व्रत के दिन तो अनिवार्य रूप से उत्तम पंचाक्षरी विद्याका जप अवश्य करना चाहिये । जपकालमें मकारान्त प्रणवका उच्चारण मनकी शुद्धि करनेवाला होता है। समाधिमें मानसिक जपका विधान है। तथा अन्य सब समय भी उपांशु जप ही करना चाहिये।

नाद और बिन्दुसे युक्त ओंकारके उच्चारणको विद्वान् पुरुष 'समानप्रणव' कहते हैं।

1. यदि प्रतिदिन आदरपूर्वक दस हजार(100 माला रुद्राक्ष से) पञ्चाक्षर–मन्त्र का जप किया जाय अथवा दोनों संध्याओंके समय एक–एक सहस्र (10–10 माला का)ही जप किया जाय तो अनुग्रह के कारण शिवपदकी प्राप्ति करानेवाला समझना चाहिये।
2. ब्राह्मणोंके लिये (सदाचारी और जितेन्द्रिय त्रिकालसंध्यापूत ब्राह्मण को ही ब्राह्मण कहा है विद्येश्वर संहिता) आदिमें प्रणवसे युक्त पञ्चाक्षर–मन्त्र अच्छा बताया गया है।
3. कलशसे किया हुआ स्नान, गायत्री का पुरश्चरण करने वाले विप्र से या हरि दर्शन करने वाले अनन्यभक्त''रूपी विप्र शिरोमणि'' सें **मन्त्रकी दीक्षा** मातृकाओंका न्यास, सत्यसे पवित्र अन्तःकरणवाला ब्राह्मण तथा **ज्ञानीगुरु** इन सबको उत्तम माना गया है।
4. द्विजोंके लिये 'नमः शिवाय' के उच्चारणका विधान है।
5. द्विजेतरोंकेलिये अन्तमें नमःपदके प्रयोगकी विधि है अर्थात् वे 'शिवाय नमः' इस मन्त्रका उच्चारण करें।
6. स्त्रियोंके लिये भी कहीं–कहीं विधिपूर्वक नमोऽन्त उच्चारणका ही विधान है अर्थात् वे भी 'शिवाय नमः' का ही जप करें। कोई–कोई ऋषि ब्राह्मणकी स्त्रियोंके लिये नमःपूर्वक शिवायके जपकी अनुमति देते हैं अर्थात् वे 'नमः शिवाय' का जप करें।
7. पञ्चाक्षर मन्त्रका पाँच करोड़ जप करके मनुष्य भगवान् श्रीसदाशिवके समान हो जाता है अर्थात् सदाशिवजी का रूप तथा इसके अलावा उनकी सभी कलाओं और ऐश्वर्यों को प्राप्त हो जाता है और संसारपावन कवच के 50000000 जप की भी यही महिमा है।

लिंग पुराण के पूर्व भाग के अनुसार ही हम यहां माहात्म्य बता रहे हैं क्योंकि माहात्म्य के लिए शास्त्र ही उत्तम प्रमाण है।

1. ऋषिगण बोले–''हे सूतजी!, पंचाक्षरीविद्या क्या है

2. इसका प्रभाव कैसा होता है ?
3. हे महाभाग ! क्रमसे इसकी विधि बताइये इसे सुननेकी हमलोगों की बड़ी, उत्सुकता है ।
4. तब सूतजी बोले–हे ऋषियो! पूर्वकालमें देवदेव रुद्र भगवान् शम्भुके द्वारा पार्वतीसे कहे गये इस पुण्यप्रद मन्त्र माहात्म्य को मैं संक्षेपमें बता रहा हूँ। उसी संवाद को सुनों–

श्रीदेवी बोलीं– हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे सर्वलोक–महेश्वर ! मैं यथार्थरूपसे पंचाक्षरमन्त्रका माहात्म्य चाहती हूँ।)

तब श्री शम्भु बोले–

1. हे देवि ! सौ करोड़ वर्षोंमें भी पंचाक्षरमन्त्रका माहात्म्य नहीं कहा जा सकता है अतः इसे संक्षेपमें सुनिये ।
2. प्रलयके उपस्थित होनेपर जब समस्त चराचर जगत् देवता तथा असुर, नाग एवं राक्षस नष्ट हो जाते हैं और आपसहित सभी पदार्थ प्रकृतिमें लीन होकर प्रलयको प्राप्त हो जाते हैं, उस समय एकमात्र मैं रह जाता हूँ दूसरा कुछ भी नहीं रह जाता है। उस समय सभी वेद तथा शास्त्र उसी पंचाक्षरमन्त्रमें स्थित रहते हैं ।
3. मेरी शक्तिसे अनुपालित होनेके कारण वे नष्ट नहीं होते हैं। मैं शिव एक होता हुआ भी उस समय प्रकृति तथा आत्माके भेदसे दो रूपोंमें रहता हूँ। मैं और पंचाक्षरी एक ही समान हैं।

भगवान् नारायण मायामय शरीर धारणकर जलके मध्यमें योगरूपी पर्यंकपर शयन करते हैं। उनके नाभिकमलसे पाँच मुखवाले ब्रह्मा उत्पन्न हुए तीनों लोकोंका सृजन करनेकी इच्छावाले उन ब्रह्मा ने इस कार्यमें, असमर्थ तथा सहायकविहीन होनेके कारण प्रारम्भमें अमित तेजवाले दस मानस पुत्रोंको उत्पन्न किया। उनकी वृद्धिके लिये –

ब्रह्माने मुझसे कहा–

''हे महादेव ! हे महेश्वर ! मेरे पुत्रोंको शक्ति प्रदान कीजिये।'

उनके ऐसा कहनेपर पाँच मुख धारण करनेवाले –

मैंने कमलयोनि (ब्रह्मा) – के लिये अपने, पाँचमुखोंसे पाँच अक्षरोंका उच्चारण किया।

अपने पाँच मुखोंसे उन अक्षरों,–को ग्रहण करते हुए लोकपितामह ब्रह्माने वाच्यवाचक भावसे परमेश्वरको जान लिया। हे देवि! तीनों लोकोंमें पूजित शिव पंचाक्षरोंसे वाच्य हैं और यह, परम पंचाक्षरमन्त्रउनके वाचकके रूपमें स्थित है । पाँच मुखवाले महात्मा ब्रह्माने विधिपूर्वक इसके प्रयोगको जानकर तथा सिद्धि प्राप्त करके जगत्के कल्याणके लिये अपने पुत्रोंको महान् अर्थवाले इस पंचाक्षरमन्त्रका उपदेश किया। तदनन्तर साक्षात् लोकपितामहसे इस मन्त्ररत्नको प्राप्तकर वे उन परात्पर देव शिवकी आराधना करनेमें तत्पर हो गये । तब त्रिदेवोंमें श्रेष्ठ भगवान् शिव प्रसन्न हो गये और

उन्होंने उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान तथा अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ प्रदान कीं । तत्पश्चात् उन, वरोंको प्राप्तकर वे विप्र मेरी आराधनाकी आकांक्षा करने लगे। मेरुके रम्य शिखरपर मुंजवान नामक पर्वत है। शोभासम्पन्न यह पर्वत मुझे प्रिय है और मेरे भूतोंके द्वारा भलीभाँति रक्षित है। हे देवि! पूर्वकालमें उस पर्वत, के समीप स्थित रहते हुए लोकसृष्टिके इच्छुक उन ऋषियोंने मेरे अनुग्रहहेतु वायुके आहारपर रहकर हजार दिव्य वर्षोंतक कठोर तप किया । **उनकी भक्ति देखकर मैं शीघ्र ही उनके समक्ष प्रकट हो गया और मैंने लोकोंके कल्याणकी इच्छासे उन महात्माओंको पंचाक्षरमन्त्र, उसके ऋषि, छन्द, देवता, शक्ति, बीजसहित पडंग न्यास, दिग्बन्ध तथा विनियोग पूर्ण रूपसे बता दिया।**

उस मन्त्रका माहात्म्य सुनकर उन तपोधन ऋषियोंने मन्त्रका विनियोग करके सभी अनुष्ठान पूर्ण किये। उसके बाद उन्होंने उस मन्त्रकी महिमासे लोकों, देवताओं, असुरों, मनुष्यों, वर्णों, वर्णविभागों तथा समस्त उत्तम धर्मोंको जो पूर्व कल्पमें उत्पन्न हुए थे– उन सबका श्रवण किया।

पंचाक्षरमन्त्रके प्रभावसे ही लोक, वेद, महर्षिगण, शाश्वत धर्म, देवता तथा यह सम्पूर्ण जगत् स्थित है।

अब मैं उसके विषयमें सब कुछ बताऊँगाय सावधान होकर सुनिये ।।

1. यह मन्त्र अल्प अक्षरोंवाला,
2. महान् अर्थोंवाला,
3. वेदोंका सार,
4. मुक्तिप्रद,
5. आज्ञासिद्ध,
6. असन्दिग्ध तथा
7. शिवस्वरूप है ।
8. यह मेरा मन्त्र अनेक सिद्धियोंसे युक्त,
9. अलौकिक,
10. लोगोंके चित्तको आनन्दित करनेवाला,
11. सुनिश्चित अर्थोवाला,
12. गम्भीर तथा
13. परमेश्वरस्वरूप है।
14. यह मन्त्र मुखसे सुखपूर्वक उच्चारणयोग्य,
15. सम्पूर्ण प्रयोजनोंको सिद्ध करनेवाला,
16. सभी विद्याओंका बीजस्वरूप,
17. आद्य (सबसे पहला) मन्त्र,

18. परम सुन्दर,
19. अति सूक्ष्म
20. एवं महान् अर्थोवाला है।
21. इसे वटवृक्षके बीजकी भाँति समझना चाहिये।
22. यह वेदस्वरूप,
23. तीनों गुणोंसे परे,
24. सर्वज्ञ,
25. सब कुछ करनेवाला तथा
26. सर्वसमर्थ है।
27. ॐ – यह एक अक्षरवाला मन्त्र है सर्वव्यापी शिव इसमें स्थित रहते हैं। पाँच अक्षररूपी शरीरवाले शिव स्वभावसे ही सूक्ष्म षडक्षर (छः अक्षरोंवाले) – मन्त्रमें वाच्य–वाचक भावसे विराजमान हैं। प्रमेयत्वके कारण शिव वाच्य हैं तथा मन्त्र उनका वाचक कहा गया है। यह वाच्य वाचक भाव (सम्बन्ध) उन दोनोंमें अनादि है। वेद अथवा शिवागममें षडक्षरमन्त्र स्थित हैः किंतु लोकमें पंचाक्षरमन्त्रको मुख्य माना गया है।
28. हे शिवे ! जिसके हृदयमें परमेश्वररूप यह मन्त्र (नमः शिवाय) स्थित है उसे बहुत मन्त्रों अथवा अतिविस्तृत शास्त्रोंसे क्या प्रयोजन!
29. जो विद्वान् विधानपूर्वक इसका ज्ञान प्राप्तकर इसे ठीक–ठीक जपता है, उसने मानो वेदोंका अध्ययन कर लिया और सबकुछ अनुष्ठित कर लिया।
30. मात्र यही शिवज्ञान है,
31. यही परम पद है
32. और यही ब्रह्मविद्या है अतः विद्वान्को नित्य इसका जप करना चाहिये ।
33. प्रणव (ॐ)–सहित छः अक्षरोंसे युक्त यह मन्त्र ॐनमः शिवाय , मेरा हृदय है।
34. यह गूढ़से भी गूढ़ है और साक्षात् सर्वोत्तम मोक्षज्ञान है ।

हे देवि !, अब मैं इस मन्त्रके और प्रत्येक अक्षरके ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, स्वर, वर्ण तथा स्थानका वर्णन करूँगा।

इस मन्त्रके ऋषि वामदेव तथा छन्द पंक्ति कहा गया है।

1. हे वरानने! इस मन्त्रका देवता स्वयं, मैं शिव ही हूँ।
2. पंचभूतस्वरूप 'न'कार आदि इसके बीज हैं।
3. प्रणवको सर्वव्यापी तथा शाश्वत आत्मा समझो।
4. हे सभी देवताओंसे नमस्कृत देवेशि! स्वयं, तुम ही इसकी शक्ति हो।
5. कुछ प्रणव तुम्हारा है और कुछ प्रणव हमारा है।
6. हे देवि! तुम्हारा प्रणव सभी मन्त्रोंका शक्तिस्वरूप है इसमें संशय नहीं

7. हे देवि!'अ','उ','म'मेरे प्रणवमें स्थित हैं। क्रमसे 'उ', 'म', 'अ' तुम्हारे प्रणवके हैं तुम इस उत्तम प्रणवको प्लुत तीन मात्राओंवाला जानो। ओंकारका स्वर उदात्त है, इसके ऋषि ब्रह्मा हैं, इसका शरीर श्वेत है, छन्द देवी गायत्री हैं और इसके अधिदेवता परमात्मा हैं। इसका पहला, दूसरा तथा चौथा वर्ण उदात्तय पाँचवाँ वर्ण स्वरित और मध्यम वर्ण निषध निषादस्वर, कहा गया है ।।

अब अक्षरों के देवों के बारे में श्रवण करें–

1. 'न' पीले रंगका है और स्थान पूर्वमुख (पूरबकी ओर मुखवाला) कहा गया है। इसके अधिदेवता इन्द्र हैं, इसका छन्द गायत्री है और इसके ऋषि गौतम हैं।
2. 'म' कृष्ण वर्णवाला है, इसका स्थान दक्षिणमुख है, इसका छन्द अनुष्टुप् है, इसके ऋषि अत्रि हैं और इसके अधिदेवता रुद्र कहे जाते हैं।
3. 'शि' धूम्र वर्णवाला है, इसका स्थान पश्चिममुख है, इसके ऋषि विश्वामित्र हैं, इसका छन्द त्रिष्टुप् है और इसके देवता विष्णु हैं।
4. 'वा' हेम वर्णवाला है, इसका स्थान उत्तरमुख है, इसके अधिदेवता ब्रह्मा हैं, इसका छन्द बृहती है और इसके ऋषि अंगिरा हैं।
5. 'य' लाल रंगवाला है, इसका स्थान ऊर्ध्वमुख है, इसका छन्द विराट् है, इसके ऋषि भरद्वाज हैं और इसके देवता स्कन्द कहे जाते हैं ।

हे शिवे !, अब मैं सभी सिद्धियाँ प्रदान करनेवाले, मंगलमय तथा समस्त पापोंका नाश करनेवाले इसके न्यासको बताऊँगा । न्यास तीन प्रकारका कहा जाता है।

1.उत्पत्ति,

2.स्थिति (पालन) तथा

3.संहार

इनके भेदसे यह तीन प्रकारका कहा गया हैय यह क्रमशः ब्रह्मचारियों, गृहस्थों तथा यतियों के लिये होता है। उत्पत्ति न्यास ब्रह्मचारियोंका, स्थिति न्यास गृहस्थोंका और संहृति (संहार) न्यास यतियोंका होता है अन्यथा सिद्धि नहीं प्राप्त हो सकती ।

अंगन्यास, करन्यास, देहन्यास – यह तीन प्रकारका न्यास होता है। हे वरानने! अब मैं उत्पत्ति आदि तीन भेदोंसे इन्हें भी आपको बताऊँगा।

1. सबसे पहले करन्यास उसके बाद देहन्यास पुनः अंगन्यास मन्त्रके अक्षरोंके क्रमसे करना चाहिये। सिरसे प्रारम्भ होकर पैरोंतकका न्यास उत्पत्तिन्यास कहा जाता है।
2. हे प्रिये ! पैरोंसे प्रारम्भ होकर सिरतकका न्यास संहारन्यास होता है।
3. हृदय, मुख और कण्ठका न्यास स्थितिन्यास कहा गया है।
4. हे शोभने ! यह न्यास क्रमशः , ब्रह्मचारियों, गृहस्थों तथा यतियोंके लिये है ।

न्यास पूर्वक जपा गया मंगलमय मंत्र ही शीघ्र सिद्ध होकर तत्काल रक्षा करता है।

1. यह मन्त्र अल्प अक्षरोंवाला, महान् अर्थोंवाला,
2. वेदोंका सार, मुक्तिप्रद,
3. आज्ञासिद्ध, असन्दिग्ध तथा शिवस्वरूप है ।

यह मेरा मन्त्र अनेक सिद्धियोंसे युक्त, अलौकिक, लोगोंके चित्तको आनन्दित करनेवाला, सुनिश्चित अर्थोंवाला, गम्भीर तथा परमेश्वरस्वरूप है । यह मन्त्र मुखसे सुखपूर्वक उच्चारणयोग्य, सम्पूर्ण प्रयोजनोंको सिद्ध करनेवाला, सभी विद्याओंका बीजस्वरूप, आद्य (सबसे पहला) मन्त्र, परम सुन्दर, अति सूक्ष्म एवं महान् अर्थोंवाला है। इसे वटवृक्षके बीजकी भाँति समझना चाहिये। यह वेदस्वरूप, तीनों गुणोंसे परे, सर्वज्ञ, सब करनेवाला तथा सर्वसमर्थ है ।

विनियोग न जाननेवालेका वह मन्त्र प्रभावहीन हो जाता है। जिसका जिस कार्यके साथ विशेष रूपसे संयोजन किया जाय, उसे विनियोग कहा गया है। यह इस लोकमें तथा परलोकमें फल प्रदान करता है। विनियोगसे आयु, आरोग्य, शरीरकी नित्यता, राज्य, ऐश्वर्य, उत्तम ज्ञान, स्वर्ग तथा मोक्ष– ये सब प्राप्त हो जाते हैं।

स्नानमें तथा प्रातः सायं, दोनों सन्ध्याओं ग्यारह बार पंचाक्षरमन्त्र से

1. प्रोक्षण,
2. अभिषेक
3. तथा अघमर्षण करना चाहिए।

1.एक लाख बार जप–

जो शुद्ध होकर पर्वतपर चढ़कर आलस्यरहित हो एक लाख बार मन्त्रका जप करता है। अथवा किसी महानदीके तटपर दो लाख बार जप करता है, वह दीर्घ आयु प्राप्त करता है 100 वर्ष तक निरोगी होकर वह उत्तम स्वास्थ्य पा लेता है। पर जो आलसी और अकर्मठ या भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं वे ही तीन तापों से ग्रस्त रहकर आजीवन दुख सहन करते हैं।

2. दस हजार होम

दूर्वांकुर, तिल, वाणी, गुरुच और घुटिका – इनका दस हजार होम **आयु की वृद्धि** करनेवाला होता है।

3. पीपल वृक्ष सहित प्रयोग–

बुद्धिमान् को चाहिये कि पीपलके वृक्षका आश्रय लेकर दो लाख जप करे शनिवारको पीपल वृक्षका स्पर्श करके जप से वह मनुष्य दीर्घ आयु प्राप्त करता है।

बुद्धिमान्को शनैश्चरके दिन ख्अपने, दोनों हाथोंसे पीपलके वृक्षका स्पर्श करना चाहिये और एक सौ आठ बार ख्मन्त्रका, जप करना चाहियेय यह भी अकाल मृत्युको दूर करनेवाला होता है ।

4. अर्ककी समिधाओंसे–

सूर्यकी ओर मुख करके एकाग्रचित्त होकर एक लाख जप करना चाहियेय अर्ककी समिधाओंसे प्रतिदिन एक सौ आठ (108) होम करनेवाला व्यक्ति, रोगसे मुक्त हो जाता है।

5. पलाश–

मनुष्यको समस्त रोगोंके शमनके लिये पलाश (छोला= ब्रह्मा वृक्ष) कीसमिधाओंसे होम करना चाहियेय इससे दस हजार होम करके मनुष्य रोगरहित हो जाता है।

6. जल प्रयोग ,108 बार–

प्रतिदिन एक सौ आठ बार जप करके सूर्यके समक्ष जल पीना चाहिये ऐसा करनेवाला एक महीनेमें ही सभी उदर– सम्बन्धी रोगोंसे मुक्त हो जाता है।

7. अन्न प्रयोग ,ग्यारह बार–

ग्यारह बार इस (नमः शिवाय)मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अन्न तथा अन्य भक्ष्य–पेय पदार्थ ग्रहण करना चाहिये इससे (अभिमन्त्रित से)विष भी अमृत हो जाता है।

1. नमः शिवाय
2. नमः शिवाय
3. नमः शिवाय
4. नमः शिवाय
5. नमः शिवाय
6. नमः शिवाय
7. नमः शिवाय
8. नमः शिवाय
9. नमः शिवाय
10. नमः शिवाय
11. नमः शिवाय

8.प्रतिदिन पूर्वाह्नमें एक सौ आठ आहुति देकर तथा सूर्योपस्थान करके एक लाख जप करना चाहिये ऐसा करनेवाला पूर्ण आरोग्य प्राप्त करता है।

9. जलसे स्नान– नदी के जलसे भरे हुए सुन्दर व स्वच्छ घड़ेको स्पर्श करते हुए दस हजार (10,000 अर्थात् 100 माला) जप करनेसे वह जल अभिमन्त्रित हो जाता है तथा उसी जलसे स्नान करनेसे सभी रोगोंकी चिकित्सा हो जाती है

10. अभिमन्त्रित न कर पाओ तो जप करके ही अन्न ग्रहण करें ।

पवित्र होकर प्रतिदिन अट्ठाईस बार रमन्त्रका, जप करके अन्न ग्रहण करना चाहिये और बादमें उतनी ही पलाश समिधाओंसे हवन करनेसे (व्यक्ति) आरोग्य प्राप्त करता है।

11. चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहणके अवसरपर पवित्र होकर विधिपूर्वक उपवास करके जबतक ग्रहणका मोक्ष हो, तबतक किसी रुसमुद्रगामिनी रुनदी में खड़े होकर कंठ या नाभि तक पानी में खड़े होकर सतत् जप करना चाहिये ।

और ग्रहण समाप्त होने पर एक हजार आठ (1008)अर्थात दस माला मन्त्रका जप करके ब्राह्मीरसका पान करना चाहिये।

ऐसा करनेवाला सभी शास्त्रोंकी धारण करनेवाली कल्याणमयी लौकिक प्रतिभा प्राप्त करता है और उसकी वाणी अतिमानुषी होकर देवी सरस्वतीकी वाणीके तुल्य हो जाती है ।

12. ग्रहपीड़ासे मुक्त –ग्रह तथा नक्षत्रके कारण कष्ट होनेपर मनुष्य भक्तिपूर्वक दस हजार जप करके तथा आठ हजार आहुति देकर ग्रहपीड़ासे मुक्त हो जाता है।

13. दुःस्वप्न दूर– दुःस्वप्न देखनेपर स्नान करके मनुष्यको दस हजार (10,000 अर्थात सौ माला ,रुद्राक्ष से) जप करना चाहियेय इसके बाद अग्नि में घृत की एक सौ आठ आहुति देनेसे उसे शीघ्र ही शान्ति प्राप्त होगी।

14. मनोकामना– चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहणके समय विधिपूर्वक लिङ्गका पूजन करके शुद्ध तथा एकाग्रचित्त होकर इन महादेवके समीप आदरपूर्वक दस हजार जप करना चाहिये हे देवि ! वह मनुष्य जो कुछ भी माँगता है, उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैय इसमें सन्देह नहीं है ।

15. पशुओंके रोगकी शान्ति–हाथियों, घोड़ों तथा विशेषकर गोजातिके पशुओंमें रोग उत्पन्न होनेपर शुद्ध होकर तथा भक्तियुक्त होकर विधिपूर्वक महीने भर मेरा पूजन करके समिधाकी दस हजार आहुति देनेसे मेरी कृपा से उन पशुओंके रोगकी शान्ति तथा उनकी वृद्धि होती हैय इसमें सन्देह नहीं है ।

16.शत्रुबाधा दूर– हे देवि ! उपद्रव तथा शत्रुबाधा उत्पन्न होनेपर जो व्यक्ति, पवित्र होकर पलाशकी समिधाओं से दस हजार होम करता है उसकी शान्ति होती है।

17.हे देवि ! आभिचारिक बाधा में भी ऐसा ही करना चाहिये ऐसा करनेसे उसकी शक्ति प्रकट होती है और शत्रुको पीड़ा उत्पन्न होती है।

18. पाप नष्ट–पाप नष्ट होने पर ही ज्ञान प्राप्त होता है , पापपुंज का समूह ही ज्ञान को दूर रखता है नित्य 10 माला एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक नमः शिवाय से व्यक्ति निष्पाप हो

जाता है निष्पापता के कारण उसका मन भी वश में हो जाता है और यह वश मे होने पर दसों दिशा से अमृत की वर्षा होती है।

19. विद्या–हे शुभे ! विद्या तथा लक्ष्मीकी विशुद्धिके लिये अंजलिमें जल लेकर मेरा ध्यान करके ग्यारह बार शिव– मन्त्रका जप करके उस जलसे अभिषेक करना चाहिये।

20.सभी तीर्थोंका फल – पाप–शोधनके लिये एक सौ आठ बार मन्त्रका जप करके स्नान करना चाहिये यह सभी तीर्थोंका फल देनेवाला, सभी पापोंको दूर करनेवाला तथा कल्याणकारक है।

नोट–

1. सन्ध्योपासनके छूट जानेपर मनुष्यको एक सौ बार मन्त्रका जप करना चाहिये।
2. सुअर, चाण्डाल, दुर्जन तथा कुक्कुटका स्पर्श किया हुआ अन्न नहीं खाना चाहिये
3. और किसी कारण वश खाना ही पड़ जाये तो खा लेनेपर एक सौ आठ बार मन्त्रका जप करना चाहिये ।

(243) पंचाक्षरी का लक्ष अनुष्ठान

1. शिव परब्रह्म हैं जो शान्त होकर आत्मबोध करानेवाले, गोपनीय तथा शिवज्ञानको प्रकाशित करनेवाले इस मन्त्रका शिवालय में पाँच लाख जप करता है, वह साक्षात् मुझ शिव के समान ही हो जाता है और हे भद्रे ! वह मनुष्य सुखपूर्वक पाँचों वायु पर प्राप्त कर लेता है।
2. हे सुमुखि ! जो शुद्ध होकर इन्द्रियों को वश में करके (नेत्र से भी परायी नार को कटाक्ष न करते हुए, धर्म का पालन करते हुए, एक समय उपवास पूर्वक) पुनः पाँच लाख मन्त्र जप करता है, वह पाँचों ज्ञान इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है।)
3. पुनः पाँच लाख विनियोग व न्यास सहित शिवालय में ब्रह्मचर्य पूर्वक जप से पाँच विषय पर विजय प्राप्त कर लेता है।
4. जो चौथी बार नमः शिवाय को 500000 बार शिवालय में जप लेता है (रुद्राक्ष धारण कर भस्म लगाकर और भूरे कंबल पर बैठकर) वह पृथ्वी आदि पंचभूतों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

5. हे वरानने! जो अपने, मनको नियन्त्रित करके प्रयत्नपूर्वक 20 लाख जप के बाद पुनः चार लाख बार मन्त्रका जप करता है, वह मन, बुद्धि आदि, अन्तःकरणोंपर पूर्णरूपसे विजय प्राप्त कर लेता है।
6. हे कमलमुखि ! पचीस लाख बार मन्त्रके जपसे मनुष्य पचीस तत्त्वोंपर विजय प्राप्त कर लेता है।
7. हे सुन्दरि ! जो 24 लाख जप के बाद– मध्यरात्रिमें वातरहित स्थानमें आदरपूर्वक दस हजार जप करता है, वह इस व्रतके द्वारा ब्रह्मसिद्धि प्राप्त कर लेता है।
8. जो मनुष्य , इस मंत्र के 24 लाख जप के बाद आलस्यरहित होकर मध्यरात्रिमें वातशून्य तथा ध्वनि– रहित स्थान में एक लाख बार जप करता है, वह मुझ शिव तथा तुम्हारे दर्शन (तुम पार्वती के दर्शन)भी कर लेता है इसमें सन्देह नहीं है। उस समय अन्धकारका विनाश हो जाता है और हृदयके बाहर तथा भीतर दीपककी भाँति प्रकाश हो जाता है।
9. .साधारण मानव को भी अतिशीघ्र कल्याण के लिए तथा सभी प्रकारकी सम्पदा तथा समृद्धिके लिये इस मंत्र दस हजार (10,000) जप नित्य करना चाहिये।
10. हे देवि !, जो पवित्र तथा भक्तियुक्त होकर बीजके सम्पुटसहित मन्त्रका सौ लाख (एक करोड़) जप करता है, वह मेरा सायुज्य प्राप्त कर लेता है इससे बढ़कर फल, क्या हो सकता है।
11. हे जगदम्बे !, मैंने तुम्हें पंचाक्षरमन्त्रके जपकी सम्पूर्ण विधि बता दी । जो इसे पढ़ता अथवा सुनता है, वह परम गति प्राप्त करता है। जो देवकर्म अथवा पितृकर्ममें शुद्ध ब्राह्मणोंको पंचाक्षर विधिके इस क्रमका श्रवण कराता है,वह भी परम धाम को निश्चित ही प्राप्त करता है।
12. जो मेरे पंचाक्षरी विद्या का एक करोड़ (10000000) सविधि जप करेगें वो साक्षात् आपके समान हो जायेगें।
13. जो दो करोड़ (20000000)जप करेगें वे क्षीरसागर के विष्णु जी के समान हो जायेगें,
14. जो तीन करोड़ (30000000) नमः शिवाय विद्या का आश्रय लेगें वो मुझ महारुद्र के समान हो जायेगें
15. जो चार करोड़ (40000000) का जाप ब्रह्मचर्य पूर्वक साधना के नियम सहित कर लेगें वे मेरे महेश्वर रूप होकर तिरोभाव में भी समर्थ हो जायेगें और जो
16. पाँच करोड़ (50000000) इस परमोत्तम विद्या का स्मरण कर लेगें वो मेरे परम मूल स्वरूप सदाशिव सदृश हो जायेगें इसमें कुछ भी संदेह नहीं करना चाहिए,

सभी कामनाओं की पूर्ति – यदि एक हजार दिनोंमें अर्थात् ''3साल तक'' प्रतिदिन एक सहस्र जपके क्रमसे पञ्चाक्षर–मन्त्रका दस लाख जप पूरा कर लिया जाय और प्रतिदिन त्रिकालसंध्यापूत ब्राह्मण को भोजन कराया जाय या ब्राह्मण न मिले तो गाय की उपमा भी

ब्राह्मण से की गई है अतः गाय को एक थाली भोजन 3 वर्ष तक खिलायें तो भी उस मन्त्रसे भी अभीष्ट कार्यकी सिद्धि होने लगती है।
1 दिन में 10 माला अर्थात् 1000 बार नमः शिवाय मात्र 10–15 मिनट नित्य लगेंगे।....
10 दिन में 100 माला 10,000 मंत्र
100 दिन में 1000 माला अर्थात् 100000 अर्थात् 1 लाख
1000 दिन में 10000 माला अर्थात् 1000000 अर्थात् 10 लाख

.... **अघोर नामक अवतार(22वें कल्प शिवकल्प में वर्ण काला)**

स्वयम्भू ब्रह्माके उस पीतवर्ण नामक कल्प के (14 इंद्र के बाद प्रलय के बाद अर्थात ब्रह्मा जी के मात्र एक दिन बीतने पर तथा रात्रि विश्राम के बाद) पुनः दूसरा कल्प प्रवृत्त हुआ। उसका नाम 'शिव' था । जब एकार्णवकी दशामें एक सहस्र दिव्यवर्ष व्यतीत हो गये, तब ब्रह्माजी प्रजाओंकी सृष्टि करनेकी इच्छासे दुःखी हो विचार करने लगे। और शिव जी का ध्यान करने लगे। उस समय उन महातेजस्वी ब्रह्माके समक्ष एक कुमार उत्पन्न हुआ।

1. उस महापराक्रमी बालकके शरीरका रंग काला था। वह अपने तेजसे उद्दीप्त हो रहा था ।
2. काला वस्त्र,
3. काली पगड़ी और
4. काला यज्ञोपवीत धारण किये हुए था।
5. उस बालक का मुकुट भी काला था। और
6. स्नानके पश्चात् अनुलेपन चन्दन भी काले रंगका ही था ।

उन भयंकरपराक्रमी, महामनस्वी, देवदेवेश्वर, अलौकिक, कृष्णपिंगलवर्णवाले अघोरको देखकर ब्रह्माजीने उनकी वन्दना की। तत्पश्चात् ब्रह्माजी उन भक्तवत्सल अविनाशी अघोर शिव की इष्ट वचनोंद्वारा उनकी स्तुति की ।
तब उनके पार्श्वभागसे कृष्णवर्णवाले तथा काले रंगका अनुलेपन धारण किये हुए चार महामनस्वी कुमार उत्पन्न हुए। वे सब–के सब परम तेजस्वी, अव्यक्तनामा तथा शिवसरीखे रूपवाले थे।
उनके नाम थे –
कृष्ण,
कृष्णशिख,
कृष्णास्य और
कृष्णकण्ठधृक् ।
इस प्रकार उत्पन्न होकर इन महात्माओंने ब्रह्माजीकी सृष्टिरचनाके निमित्त महान् अद्भुत 'घोर' नामक योगका प्रचार किया। (यह 'अघोर' नामक चौथा अवतार हुआ।)

(244) ईशान अवतार (विश्वरूप कल्प)

शिव पुराण के अंतर्गत ही आगे सूत जी ने कहा कि हे शौनक जी ! आप महान और उत्तम प्रारब्ध वाले व सौभाग्य से युक्त महाभाग हो जो परब्रह्म सदाशिव के लीला अवतारों का श्रवण कर रहे हो सदाशिव जी के इन पाँचो नामों का जिसने आजीवन नाम ही श्रवण नहीं किया उन मनुष्यों को जीव स्तर के ही जानना चाहिए। और इन नामों के सुमिरण वाले रुद्रगण ही हैं। हे शौनक जी आगे

नंदीश्वर प्रभु ने कहा कि – हे सनत्कुमार!

ब्रह्माका दूसरा अन्य दिन (कल्प) प्रारम्भ हुआ। वह परम अद्भुत था और 'विश्वरूप' नामसे विख्यात था। उस कल्पमें जब ब्रह्माजी पुत्रकी कामनासे मन–ही–मन शिवजीका ध्यान कर रहे थे, उसी समय महान् सिंहनाद करनेवाली विश्वरूपा सरस्वती प्रकट हुईं तथा उसीप्रकार परमेश्वर भगवान् ईशान प्रादुर्भूत हुए, जिनका वर्ण शुद्ध स्फटिकके समान उज्ज्वल था (यही ईश्वर ईशान हैं जो विशुद्ध स्फटिक के समान उज्ज्वल रूप में लीलारत हैं) और जो समस्त आभूषणोंसे विभूषित थे। उन अजन्मा, सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, सब कुछ प्रदान करनेवाले, सर्वस्वरूप, सुन्दर और सौम्य रूपवाले प्रभु ईशानको देखकर ब्रह्माजीने उन्हें प्रणाम किया।

तब शक्तिसहित विभु ईशानने भी ब्रह्माको सन्मार्ग का उपदेश देकर चार सुन्दर बालकोंकी कल्पना की।

उन उत्पन्न हुए शिशुओंका नाम था–

जटी,

मुण्डी,

शिखण्डी

और

अर्धमुण्ड ।

वे योगानुसार सद्धर्मका पालन करके योगगतिको प्राप्त हो गये। (यह 'ईशान' नामक पाँचवाँ अवतार हुआ।) सर्वज्ञ सनत्कुमारजी ! इस प्रकार मैंने जगत्की हितकामनासे सद्योजात आदि पाँच प्रमुख अवतारोंका प्राकट्य संक्षेपसे वर्णन किया।

उनका वह सारा लोकहितकारी व्यवहार याथातथ्यरूपसे ब्रह्माण्डमें वर्तमान है।

महेश्वरकी ईशान, पुरुष (तत्पुरुष), घोर, वामदेव और सद्योजात ब्रह्म– ये पाँच मूर्तियाँ विशेषरूपसे प्रसिद्ध हैं। इनमें ईशान, जो शिवस्वरूप तथा सबसे बड़ा है, पहला कहा जाता है।

ॐ ईशानाय नमः

ॐ ईशानाय नमः

ॐ ईशानाय नमः

वह साक्षात् प्रकृतिके भोक्ता क्षेत्रज्ञ (आत्मा)में निवास करता है।

शिवजीका दूसरा स्वरूप तत्पुरुष नामसे ख्यात है। वह गुणोंके आश्रयरूपतथा भोग्य सर्वज्ञमें अधिष्ठित है। पिनाकधारी शिवका जो रुअघोर नामक तीसरा स्वरूप है, वह धर्मके लिये अंगोंसहित रुबुद्धितत्त्वका विस्तार करके अंदर विराजमान रहता है।

वामदेव नामवाला शंकरका चौथा स्वरूप अहंकारका अधिष्ठान है। वह सदा अनेकों प्रकारका कार्य करता रहता है। विचारशील बुद्धिमानोंका कथन है कि –

श्री शंकर का रुईशानसंज्ञक स्वरूप सदा कर्ण, वाणी और सर्वव्यापी रुआकाशका अधीश्वर है तथा महेश्वरका पुरुष नामक रूप त्वक, पाणि और स्पर्शगुणविशिष्ट वायुका स्वामी है।

मनीषीगण अघोर नामवाले रूपको शरीर, रस, रूप और अग्निका अधिष्ठान बतलाते हैं।

परब्रह्म शंकरजीका वामदेव संज्ञक स्वरूप रसना, पायु, रस और जल का स्वामी कहा जाता है।

प्राण, उपस्थ, गन्ध और पृथ्वी का ईश्वर शिवजीका रुसद्योजात नामक रूप बताया जाता है। कल्याणकामी मनुष्योंको शंकरजीके इन स्वरूपोंकी सदा प्रयत्नपूर्वक वन्दना करनी चाहियेय क्योंकि ये श्रेयः प्राप्तिमें एकमात्र हेतु हैं। जो मनुष्य इन सद्योजात आदि अवतारोंके प्राकट्यको पढ़ता अथवा सुनता है, वह जगत्में समस्त काम्य भोगोंका उपभोग करके अन्तमें परमगतिको प्राप्त होता है।

(245) परम मुक्ति के मार्ग के विघ्न

1. आरंभ में मनुष्य निष्कामता छोडकर सकाम कर्म करना चाहता है और मानवीय भोगोंकी अभिलाषा करता है। यह पहला विघ्न है।
2. दान, व्रत या तप के उत्तमोत्तम फल, सुंदर स्त्री (या स्त्री के द्वारा परपुरुष) विद्या, माया, सोना–चाँदी आदि धन, सोने आदिके अतिरिक्त यश, वैभव स्वर्गलोक देवत्व आदि ।
3. सिद्धियाँ (इन्द्रत्व, रसायनसंग्रह, उसे बनानेकी क्रियाएँ, हवा में उड़नेकी शक्ति, जल और यज्ञ, अग्निमें प्रवेश करना और प्रवेश करके लोगों को प्रदर्शन करना ताकि वाह वाह हो , यश व नाम हो, श्राद्धों, समस्त दानों तथा नियम, व्रत, इष्ट, पूर्त एवं देव–पूजा आदिसे मिलनेवाले फलोंकी इच्छा करना।
4. जब चित्तकी ऐसी अवस्था हो तो योगी या साधक उसे कामनाओंकी ओरसे हटाये और परब्रह्मके चिन्तनमें लगाये। ऐसकरनेपर उसे विघ्नोंसे छुटकारा मिल जाता है।

5. इन विघ्नोंपर विजय पा लेनेके बाद योगीके सामने फिर दूसरे–दूसरे सात्त्विक, राजस और तामस विघ्न उपस्थित होते हैं। वे विघ्न देखें–

1. प्रातिभ,
2. श्रावण,
3. दैव,
4. भ्रम

और

5. आवर्त–

1. ये पाँच उपसर्ग योगियोंके योगमें विघ्न डालनेके लिये प्रकट होते हैं। इनका परिणाम बड़ा कटु होता है। जब सम्पूर्ण वेदोंके अर्थ, काव्य और शास्त्रोंके अर्थ, सम्पूर्ण विद्याएँ और शिल्पकला आदि अपने–आप योगीकी समझमें आ जायँ तो प्रतिभासे सम्बन्ध रखनेके कारण वह 'प्रातिभ' उपसर्ग कहलाता है।
2. जब योगी सहस्रों योजन दूरसे भी सम्पूर्ण शब्दोंको सुनने और उनके अभिप्रायको समझने लगता है, तब वह श्रवण–शक्तिसे सम्बन्ध रखनेके कारण श्रावण'उपसर्ग कहा जाता है।
3. जब वह देवताओंकी भाँति आठों दिशाओंकी वस्तुओंको प्रत्यक्ष देखने लगता है, तब उसे 'दैव' उपसर्ग कहते हैं। जब योगीका मन दोषके कारण सब प्रकारके आचारोंसे भ्रष्ट हो निराधार भटकने लगता है, तब वह 'भ्रम' कहलाता है। जलमें उठती हुई भँवरकी तरह जब ज्ञानका आवर्त सब ओर व्याप्त होकर चित्तको नष्ट कर देता है, तब वह 'आवर्त' नामक उपसर्ग कहा जाता है। इन महाघोर उपसर्गोंसे योगका नाश हो जानेके कारण सम्पूर्ण योगी देवतुल्य होकर भी बारंबार आवागमनके चक्रमें घूमते हैं इसलिये योगी पुरुष शुद्ध मनोमय उज्ज्वल कंबल ओढ़कर परब्रह्म परमात्मामें मनको लगाकर सदा उन्हींका चिन्तन करे। –रूपी गुहदेव मात्र
4. पृथ्वी आदि सात प्रकारकी सूक्ष्म धारणाएँ हैं, जिन्हें योगी मस्तकमें धारण करे। सबसे पहले पृथ्वीकी धारणा है। उसे धारण करनेसे योगीको सुख प्राप्त होता है। वह अपनेको साक्षात् पृथ्वी मानता है, अतः पार्थिव विषय गन्धका त्याग कर देता है। इसी प्रकार वह जलकी धारणासे सूक्ष्म रसका, तेजकी धारणासे सूक्ष्म रूपका, वायुकी धारणासे स्पर्शका तथा आकाशकी धारणासे सूक्ष्म प्रवृत्ति तथा शब्दका त्याग करता है। जब अपने मनसे धारणाके द्वारा सम्पूर्ण भूतोंके मनमें प्रवेश करता है, तब उस मानसी धारणाको धारण करनेके कारण उसका मन अत्यन्त सूक्ष्म हो जाता है।
5. इसी प्रकार योगवेत्ता पुरुष सम्पूर्ण जीवोंकी बुद्धिमें प्रवेश करके परम उत्तम सूक्ष्म बुद्धिको प्राप्त करता और फिर उसे त्याग देता है। जो योगी इन सातों सूक्ष्म

धारणाओंका अनुभव करके उन्हें त्याग देता है, उसको इस संसारमें फिर नहीं आना पड़ता ।

6. जितात्मा पुरुष क्रमशः इन सातों धारणाओंके सूक्ष्म रूपको देखे और त्याग करता जाय। ऐसा करनेसे वह परम सिद्धिको प्राप्त होता है।

जो गन्ध आदि विषयोंमें आसक्त होता है, उसका विनाश हो जाता है और उसे बारंबार संसारमें जन्म लेना पड़ता है। योगी पुरुष इन सातों धारणाओंको जीत लेनेके बाद यदि चाहे तो किसी भी सूक्ष्म भूतमें लीन हो सकता है। देवता, असुर, गन्धर्व, नाग और राक्षसोंके शरीरमें भी वह लीन हो जाता है, किन्तु कहीं भी आसक्त नहीं होता अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और कामावसायित्व– इन आठ ईश्वरीय गुणोंको जो निर्वाणकी सूचना देनेवाले हैं, योगी प्राप्त करता है।

1.सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म रूप धारण करना 'अणिमा' है .

2. शीघ्र–से–शीघ्र कोई काम कर लेना 'लघिमा' नामक गुण है।

3. सबके लिये पूज्यनीय हो जाना 'महिमा' कहलाता है। (यथार्थ संतों को यह सिद्धि सहज ही प्राप्त है)

4.जब कोई भी वस्तु अप्राप्य न रहे तो वह 'प्राप्ति' नामक सिद्धि है।

5.सर्वत्र व्यापक होनेसे योगीको 'प्राकाम्य' नामक सिद्धिकी प्राप्ति मानी जाती है। देवी महाकाली अतिशीघ्र ही अपने अनन्य भक्त को प्राकाम्यता देती हैं जब वह सब कुछ करनेमें समर्थ होने से ईश्वर हो जाता है तो उसकी वह सिद्धि 'ईशित्व' कहलाती है अर्थात ईश्वर शब्द को मात्र इसी सिद्धि के कारण कहा जाता है देवी षोडशी ६ ललिता की कृपा प्राप्त होने पर इसी कारण उनका भक्त अतिशीघ्र ईश्वर ही हो जाता है जिसके का उसमें और त्रिदेव में जो कोई भी भेद करता है उसका नाश हो जाता है ।

6. सबको वशमें कर लेनेसे 'वशित्व' की सिद्धि होती है। यह सिद्धि गणपति कृपा से अतिशीघ्र प्राप्त हो जाती है। यह योगीका सातवाँ गुण है। जो 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य से युक्त होकर भी सिद्ध हो जाती है और इससे सबके द्वारा उसको सहज अनुग्रह और स्नेह भाव भी प्राप्त होता है।
7. जिसके द्वारा इच्छाके अनुसार कहीं भी रहना आदि सब काम तत्काल हो सके, उसका नाम 'कामावसायित्व' है।

यह साक्षात कल्प वृक्ष ही है ये ऐश्वर्यके साधनभूत आठ गुण हैं। सिद्धियों की इच्छा न करके वह परम कैवल्यमय हो जाता है। यही मानव योनी का महान फल है जिसके लिए

देवता और असुर भी लालायित रहते हैं कि कब हमारा देव पद पूरा होगा ताकि भारत भूमि पर, भारत मात्र के किसी भी क्षेत्र में जन्म होगा।

51 शक्तिपीठ या सप्तपुरियों अथवा चारों धाम में से एक स्थान पर)जन्म हो सके।

मुक्त होनेसे उसका कभी जन्म नहीं होता। वह वृद्धि और नाशको भी नहीं प्राप्त होता. यही परम मुक्ति है.

(246) अमर हो जाओ

दीर्घकालिक जीवन के लिए एक अनिवार्य स्तोत्र और सुनें इस (अग्रवर्णित) स्तोत्र के 28 पाठ करके जो भी सिपाही या सैनिक युद्ध भूमि पर जायेगा वह शत्रुओं द्वारा मृत्यु को प्राप्त नहीं होता और विजय व यश पाकर ही लौटता है और सभी जन इस रक्षा स्तोत्र को शिवालय में कृपया 1000 बार जपकर सिद्ध कर अनुकूल बना लें।

पाठ से पहले गणपति, बटुक ,शिवा नामक अमृता देवी और मृत्युंजय भगवान के साथ शिवपरिवार की पूजा (वीरभद्र महाकाल नंदी कार्तिकेय और एकादश रुद्र सहित) करें फिर नित्य 11 ,21,27 या 51 पाठ (1008 होने तक) करें शाकाहार और ब्रह्मचर्य भी अनिवार्य है।

त्र्यम्बकेश्वर मृत्युंजय प्रभु के ध्यान व मानसिक पूजा करके ही यह पाठ करें।

त्र्यंम्बकदेव अष्टभुज हैं। उनके एक हाथमें अक्षमाला और दूसरेमें मृगमुद्रा है, दो हाथोंसे दो कलशों में अमृतरस लेकर उससे अपने मस्तकको आप्लावित कर रहे हैं और दो हाथोंसे उन्हीं कलशोंको थामे हुए हैं। शेष दो हाथ उन्होंने अपने अंकपर रख छोड़े हैं और उनमें दो अमृतपूर्ण घट हैं। वे श्वेत पद्म (सफेद कमल) पर विराजमान हैं, मुकुटपर बालचन्द्र सुशोभित है, मुखमण्डलपर तीन नेत्र शोभायमान हैं। ऐसे देवाधिदेव कैलासपति श्रीशंकरकी मैं शरण ग्रहण करता हूँ.

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ ।

अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्त्रवत्पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम्.......।

''एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम् ।
मृतसंजीवनं नाम कवचं प्रजपेत् सदा।।

सारात् सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम् ।
महादेवस्य कवचं मृतसञ्जीवनाभिधम् ।।

समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम् ।
श्रुत्वैतद् दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा।।''

यह गुप्त से भी गुप्त है मन को एकाग्र करके अमृता देवी शिवा व मृत्युञ्जयेश्वरम प्रभु में चित्त लगाकर ही इसका पाठ करें।

अथ मृतसंजीवन कवचम् :

जराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः ।
मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा।।

दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः।
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा ।।

अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः ।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु ।।

खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः ।
रक्षोरूपी महेशो मां नैऋत्यां सर्वदाऽवतु ।।

पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः ।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु ।।

गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः ।
वायव्यां मारुतात्मा मां शङ्करः पातु सर्वदा।।

शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शङ्करः प्रभुः ।।

शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः ।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः ।।

ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु ।
शिरो मे शङ्करः पातु ललाटं चन्द्रशेखरः ।।

भ्रू मध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रोऽवतु लोचने।
भ्रू युग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः।।

नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः ।
जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिर्दन्तान् मे गिरिशोऽवतु।।

मृत्युञ्जयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः ।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम ।।

पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः ।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वे मे पार्वतीपतिः ।।

कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः ।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः।।

जानुनी मे जगद्धर्ता जङ्घे मे जगदम्बिका ।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः।।

गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान् मम।
मृत्युञ्जयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः।।

सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः ।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम् ।।

महादेवजीने मृतसंजीवन नामक इस कवचको कहा है। इस कवचकी सहस्र आवृत्ति (1000 बार) पुरश्चरण कहा गया है।

1. जो अपने मनको एकाग्र करके नित्य एक बार इसका पाठ करता है,सुनता अथवा दूसरोंको सुनाता है,
2. वह अकाल मृत्युको जीतकर पूर्ण आयु (100 वर्ष निरोगी काया के साथ) का उपभोग करता है।
3. जो व्यक्ति इसे सिद्ध करके अपने हाथसे मरणासन्न व्यक्तिके शरीरका स्पर्श करते हुए इस मृतसंजीवन कवचका पाठ करता है, उस आसन्नमृत्यु प्राणीके भीतर चेतनता आ जाती है। फिर चाहे उसके भाग्य में अल्पायु ही क्यों न हो। फिर उसे भी कभी आधि–व्याधि नहीं होती।
4. यह मृतसंजीवन कवच कालके गालमें गये हुए व्यक्तिको भी जीवन प्रदान कर देता है
5. **वह मानवोत्तम 1000 पाठ करके नित्य त्रिकाल जपने वाला ,भविष्य में शिव कृपा से ज्ञानी और गुरुओं का भी गुरु होकर अणिमा आदि ऐश्वर्य को भी प्राप्त करता है ।**

युद्ध आरम्भ होनेके पूर्व जो भी भक्त त्रिपुण्ड लगाकर और रूद्राक्ष माला धारण कर शिवालय में इस मृतसंजीवन कवच का मात्र अट्ठाइस बार (२८ बार) पाठ करके रणभूमिमें उपस्थित होता है, वह उस समय सभी शत्रुओंसे अदृश्य रहता है ।

भक्तको सदा मृतसंजीवन नामक कवच का सुस्पष्ट पाठ करना चाहिये।

महादेव भगवान् शंकरका यह मृतसंजीवन नामक कवच तत्त्वका भी तत्त्व है, पुण्यप्रद है, गुह्यसे भी गुह्य और मंगल प्रदान करनेवाला है।

हिन्दी में– मृतसंजीवन नामक कवच

नमः शिवाय

जरासे अभय करनेवाले, निरन्तर यज्ञ करनेवाले, सभी देवताओंसे आराधित हे मृत्युंजय महादेव! आप पूर्व–दिशामें मेरी सदा रक्षा करें । अभय प्रदान करनेवाली शक्तिको धारण करनेवाले, तीन मुखोंवाले तथा छः भुजाओंवाले, अग्निरूपी प्रभु सदाशिव अग्निकोणमें मेरी सदा रक्षा करें। अट्ठारह भुजाओंसे युक्त, हाथमें दण्ड और अभयमुद्रा धारण करनेवाले, सर्वत्र व्याप्त यमरूपी महादेव शिव दक्षिण दिशामें मेरी सदा रक्षा करें ।

हाथमें खड्ग और अभयमुद्रा धारण करनेवाले, धैर्यशाली, दैत्यगणोंसे आराधित रक्षोरूपी महेश नैर्ऋत्यकोणमें मेरी सदा रक्षा करें । हाथमें अभयमुद्रा और पाश धारण करनेवाले, सभी रत्नाकरोंसे सेवित, वरुणस्वरूप महादेव भगवान् शंकर पश्चिम दिशामें मेरी सदा रक्षा करें । हाथोंमें गदा (घोटा)और अभयमुद्रा धारण करनेवाले, प्राणोंके रक्षक, सर्वदा गतिशील वायुस्वरूप शंकरजी वायव्यकोणमें मेरी सदा रक्षा करें । हाथों में शंख और अभयमुद्रा धारण करनेवाले नायक (सर्वमार्गद्रष्टा) सर्वात्मा सर्वव्यापक परमेश्वर भगवान् शिव समस्त दिशाओंके मध्यमें मेरी रक्षा करें ।

हाथों में त्रिशूल और अभयमुद्राको धारण करनेवाले, सभी विद्याओंके स्वामी, ईशानस्वरूप भगवान् परमेश्वर शिव ईशानकोणमें मेरी रक्षा करें। ब्रह्मरूपी शिव मेरे ऊर्ध्वभागमें तथा विश्वात्मस्वरूप शिव अधोभागमें मेरी सदा रक्षा करें। शंकर मेरे सिरकी और चन्द्रशेखर मेरे ललाटकी रक्षा करें । मेरे भौंहोंके मध्यमें सर्वलोकेश और दोनों नेत्रोंकी त्रिनेत्र भगवान् शंकर रक्षा करें, दोनों भौंहोंकी रक्षा गिरिश एवं दोनों कानोंकी रक्षा भगवान् महेश्वर करें । महादेव मेरी नासिकाकी तथा वृषभध्वज मेरे दोनों ओठों की सदा रक्षा करें। दक्षिणामूर्ति मेरी जिह्वाकी तथा गिरिश मेरे दाँतोंकी रक्षा करें ।

मृत्युंजय मेरे मुखकी एवं नागभूषण भगवान् शिव मेरे कण्ठकी रक्षा करें। पिनाकी मेरे दोनों हाथोंकी तथा त्रिशूली मेरे हृदयकी रक्षा करें । पंचवक्त्र मेरे दोनों स्तनोंकी और जगदीश्वर मेरे उदरकी रक्षा करें। विरूपाक्ष नाभिकी और पार्वतीपति पार्श्वभागकी रक्षा करें । गिरीश मेरे दोनों कटिभागोंकी तथा प्रमथाधिप पृष्ठभागकी रक्षा करें। महेश्वर मेरे गुह्यभागकी और भैरव मेरे दोनों ऊरुओंकी रक्षा करें । जगद्धर्ता मेरे दोनों घुटनोंकी, जगदम्बिका मेरे दोनों

जंघों की तथा लोकवन्दनीय सदाशिव निरन्तर मेरे दोनों पैरोंकी रक्षा करें । गिरीश मेरी भार्या की रक्षा करें तथा भव मेरे पुत्रोंकी रक्षा करें। मृत्युंजय मेरे आयुकी तथा गणनायक मेरे चित्तकी रक्षा करें । कालोंके काल सदाशिव मेरे सभी अंगोंकी रक्षा करें। हे वत्स!, देवताओंके लिये भी दुर्लभ इस पवित्र कवचका वर्णन मैंने तुमसे किया है।

जिस व्यक्ति के पास कभी मजबूरीवश कम समय हो तो अग्रवर्णित स्तुति से भी शिवकृपा से आयुष्य की रक्षा अवश्य ही हो जाती है।

(247) एक लाख श्लोक वाली शिवपुराण

मूल शिवपुराण की श्लोक संख्या एक लाख 100000 है पर आधुनिक उपलब्ध की श्लोक संख्या 24000 ।

1. विद्येश्वरसंहितामें दस हजार (10,000)श्लोक हैं।
2. रुद्रसंहिता (8000)
3. विनायकसंहिता (8000)
4. उमासंहिता (8000)
5. मातृसंहिता (8000)
6. एकादशरुद्रसंहितामें तेरह हजार (13000)
7. कैलाससंहितामें छः हजार (6000),
8. शतरुद्रसंहितामें तीन हजार (3000),
9. कोटिरुद्रसंहितामें नौ हजार(9000) ,
10. सहस्रकोटिरुद्रसंहितामें ग्यारह हजार11000),
11. वायवीयसंहितामें चार हजार (4000) तथा
12. धर्मसंहितामें बारह हजार (12000)श्लोक हैं।

इस प्रकार संख्या के अनुसार मूल शिवपुराण की श्लोक संख्या एक लाख है परंतु व्यासजीने उसे चौबीस हजार श्लोकोंमें संक्षिप्त कर दिया है। पुराणोंकी क्रमसंख्याके विचारसे इस शिवपुराणका स्थान चौथा है इसमें सात संहिताएँ हैं।

हे शिव! अब धाम आपका चाहता हूँ।

प्रसून–प्रसादी, पहर प्रत्येक में
अर्पित आपको करता हूँ।

प्राणाधार, प्राज्ञ प्राण तुम,
जीवन समर्पित करता हूँ।
कहाँ कहाँ भटका मैं,
हे शिव! हे हर!
अब धाम आपका चाहता हूँ।
बहु बहादुर बहार तुम,
वल्लभ तुम्हें ही मानता हूँ।
मंत्र, मंतव्य मंडित तुम्ही,
हे शिव! परमतत्त्व तुमको मानता हूँ।
कहाँ कहाँ भटका मैं,
हे शिव!..
अब धाम आपका चाहता हूँ।
मंशा, मजनू, माखन चोर का,
मैं अनुग्रह चाहता हूँ।
नाचीज, नाजुक, नामाकूल मैं
नाथ सहारा चाहता हूँ।
कहाँ कहाँ भटका मैं,
हे शिव!
अब धाम आपका चाहता हूँ।
मैं मनचला,
मधुकर माधुर्य का
होना तुम्हारा चाहता हूँ।
भक्त भागवत भद्र तुम्ही,
मन में बसाना चाहता हूँ।
हे शिव!
अब धाम आपका चाहता हूँ।
जोर, जेवरी के जोश से,
कुछ नहीं मैं चाहता हूँ।
एक पल की जिन्दगानी है अंशभूत की

परमपद कैवल्या चाहता हूँ।
कहाँ कहाँ भटका मैं,
हे शिव!
अब धाम आपका चाहता हूँ
हे हर! धाम आपका चाहता हूँ।

(248) गायत्री प्रयोग–

लक्ष्मीकी प्राप्ति–पुष्टि, श्री और लक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये द्विजको चाहिये कि पुष्पोंकी आहुति दे।

लक्ष्मी चाहनेवाला पुरुष लाल पुष्पोंसे हवन करे। इससे उसे लक्ष्मी प्राप्त हो जाती है।

बिल्वफलके खण्डों, पत्रों और पुष्पोंसे हवन करके पुरुष उत्तम लक्ष्मी प्राप्त कर लेता है। समिधाएँ भी बिल्ववृक्षकी ही होनी चाहिये ।

दूध और घृतसे मिश्रित हवन करे। सात दिनोंतक प्रतिदिन दो–दो सौ (200–200) आहुतियाँ देनेपर वह लक्ष्मी को पानेका अधिकारी होता है।

कन्या प्राप्त– तीन मधुओंसे युक्त लाजाका हवन करनेसे पुरुष को कन्या प्राप्त होती है। पुत्री रूप की कामना हो तो देवी गायत्री विदुषी पुत्री को भी प्रदान करती हैं। इस विधिका पालन करनेसे कन्या या स्त्री भी अभिलषित वर प्राप्त कर लेती है। एक सप्ताहतक लाल कमलकी सौ (100) आहुति देनेपर सुवर्णकी प्राप्ति होती है।

गायत्रीमन्त्रका उच्चारण करके सूर्यका तर्पण करनेसे भविष्य में जलमें छिपा हुआ सुवर्ण पुरुष प्राप्त कर लेता है। अन्न का हवन करनेसे अन्न के स्वामी हो जाते हैं। विस्तार के लिए देवी रहस्य देखें।

(249) तीन प्रकार के ताप अर्थात् त्रिविध ताप

ताप तीन प्रकार के कहे जाते हैं।

अ. आध्यात्मिक
ब. आधिदैविक
स. आधिभौतिक

तीनों तापों को जानकर, इनसे मुक्ति के लिए आध्यात्मिक सेवा अर्थात् गुरु, संत, स्तोत्र, मंत्र व तीर्थयात्रा आदि से ज्ञान और वैराग्य उत्पन्न होने पर पण्डितजन आत्यन्तिक प्रलय प्राप्त करते हैं जीते जी मुक्त हो जाते हैं।

अ. आध्यात्मिक ताप दो प्रकार के होते हैं–शारीरिक और मानसिक।

प्रथम–शारीरिक : शारीरिक ताप, देह में होने वाले रोग ही कहलाते हैं जो कुछ पूर्व पापों के कारण यमदेव द्वारा ही यमपुरी से छोडे जाते हैं परम निष्पाप या अनुकूलित भाग्य वाले मानव की देह सदा सुंदर व निरोगी होती है हालाँकि सभी संतो के संचित पाप भी शून्य ही होते हैं पर निरोगी मानवों का प्रारब्ध दैहिक रूप से बहुत ही अच्छा होता है। इनके भी कितने ही भेद हैं, वह सुनो–

शिरोरोग, पीनस, ज्वर, शूल, भगन्दर, गुल्म, बवासीर, सूजन, श्वास या दमा, नेत्ररोग, अतिसार और कुष्ठ आदि शारीरिक कष्ट भेद से दैहिक ताप के कितने ही भेद हैं।

द्वितीय–मानसिक : मानसिक ताप, भयंकर घातक होते हैं। नरक के महानतम बीज यही हैं, अन्य तापों से तो जन्म–जन्मांतरों के पाप भस्मीभूत होते हैं पर इन विकारों से नवीन पापों की वृद्धि होती है ये मात्र सत्संग से ही अतिशीघ्र नष्ट होते हैं।

अतः यह मानसिक तापों को सुनो–

काम,
क्रोध,
भय,
द्वेष,
लोभ,
मोह
विषाद,
शोक,
असूया अर्थात् लोगों के गुणों में दोषारोपण,
अपमान,
ईर्ष्या और
मात्सर्य आदि, भेदों से मानसिक ताप के अनेक भेद हैं।

ब. आधिदैविक–किसी पूर्व पाप से देव प्रकोप होने पर कम या अधिक मात्रा में ये कष्ट होते हैं पर तपस्वी लोग पापों के क्षय के लिये जानबूझ कर ऋतुओं का कष्ट पाते हैं यह तो निष्पाप होने का एक तरीका ही है।

शीत,
ग्रीष्म,
वर्षा,
वायु,
जल व
विद्युत् बिजली आदि से प्राप्त हुए दुःख को आधिदैविक कहते हैं।

(250) गायत्री न्यासकी विधि

यह संध्याका प्रधान अंग है।

पहले ॐकारका प्रयोग करके तब मन्त्रोंका उच्चारण करना चाहिये।

'ॐ भूः पादाभ्यां नमः' यही उच्चारण करनेका नियम है। ऐसे ही 'ॐ भुवः जानुभ्यां नमः',

'ॐ स्वः कटिभ्यां नमः',

'ॐ महः नाभ्यै नमः',

'ॐ जनः हृदयाय नमः',

' ॐ तपः कण्ठाय नमः',

और

'ॐ सत्यं ललाटाय नमः ।

' यह अंगन्यासका प्रकार है।

अब

करन्यास देखें (इनकी मुद्राएं भी सरल हैं साथ साथ में करते जायें)

यों करना चाहियेकृ'

ॐ तत्सवितुः अंगुष्ठाभ्यां नमः',

'ॐ वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः',

'ॐ भर्गो देवस्य मध्यमाभ्यां नमः',

'ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ',

' ॐ धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः

' तथा

'ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः '

इस प्रकार विद्वान् पुरुष अंगुष्ठ आदि न्यास करें।

अब

हृदयादि न्यास कहे जाते हैं

'ॐ ब्रह्मात्मने तत्सवितुर्हृदयाय नमः',

'ॐ विष्ण्वात्मने वरेण्यं शिरसे नमः',

'ॐ रुद्रात्मने भर्गो देवस्य शिखायै नमः'

, 'ॐ सत्यात्मने धीमहि कवचाय नमः',

'ॐ सर्वात्मने प्रचोदयात् नमः अस्त्राय फट्'–
इस प्रकार हृदयादि न्यास करना चाहिये।
इसके बाद
अक्षरन्यास
यह पापोंका विध्वंसक न्यास गायत्रीके प्रत्येक वर्णसे किया जाता है।
प्रथम प्रणवका उच्चारण करके वर्णन्यास करनेकी विधि बतलायी गयी है।
पहले
'तत' कारका उच्चारण करके पैरके दोनों अँगूठोंमें, '
स' कारका दोनों गुल्फोंमें, '
वि' कारका दोनों जाँघोंमें,
'तु' कारका दोनों जानुओंमें,
'व' कारका ऊरुओंमें,
'रे' कारका गुदामें, '
णि' कारका लिंगमें,
'य' कारका कटिभागमें,
'भ' कारका नाभिमण्डलमें,
'गो' कारका हृदयमें,
'दे' कारका दोनों स्तनोंमें,
'व' कारका हृदयमें, '
स्य' कारका कण्ठकूपमें,
'धी' कारका मुख देशमें, '
म' कारका तालुमें,
'हि' कारका नासिकाके अग्रभागमें,
'धि' कारका नेत्रमण्डलमें,
'यो' कारका भ्रूमध्यमें,
'यो' कारका ललाटमें,
'न' कारका मुखके पूर्वभागमें,
'प्र' कारका मुखके दक्षिणभागमें,
'चो' कारका मुखके पश्चिमभागमें,
'द' कारका मुखके उत्तर, भागमें,
'या' कारका मस्तकमें एवं
'त' कारका सम्पूर्ण शरीरमें न्यास करना चाहिये।
(पर कुछ महापुरुषों के अनुसार यह अक्षर न्यास अनिवार्य नहीं)
अब ध्यान

तदनन्तर जगज्जननी भगवती जगदम्बाका, जो महादेवी नामसे विख्यात हैं, ध्यान करना चाहिए।

प्रातःकालीन–

(भगवती गायत्रीका ध्यान –)

इन भगवती परमेश्वरीका श्रीविग्रह जपाकुसुमके समान प्रतिभासे सम्पन्न होकर भास रहा है। ये कुमारी– अवस्थामें विराजमान हैं। लालचन्दनसे अनुलिप्त होकर रक्तकमलके आसनपर आसीन हैं। इनकी माला भी लाल वर्णकी है।

चार मुखों और दो भुजाओंसे शोभा पानेवाली ये देवी लाल रंगके वस्त्र पहने हुए हैं। इनके प्रत्येक मुखमें दो–दो नेत्र हैं। इन्होंने स्स्रुक्, स्रुवा, जप–माला और कमण्डलु धारण कर रखा है।

सम्पूर्ण आभरण इनके दिव्य विग्रहको प्रकाशित कर रहे हैं। ये भगवती ऋग्वेदका अध्ययन कर रही हैं।

हंस इनका वाहन है। ब्रह्माजी इन्हें अपने हृदयमें विराजमान करके इनकी उपासना करते हैं।

इनके (ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद) चार पद हैं। (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊर्ध्व, अधर, अन्तरिक्ष और अवान्तर आदि दिशाएँ–इन) आठ कुक्षियोंसे ये शोभा पाती हैं। (व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्यौतिष, इतिहास पुराण और उपनिषद्–ये) भगवती महेश्वरीके सात सिर हैं।

अग्नि मुखके, रुद्र शिखाके और विष्णु चित्तके स्थानमें शोभा पाते हैं। इस प्रकार भगवती गायत्रीका ध्यान करना चाहिये।

ब्रह्मा जिनके कवच हैं, सांख्य–शास्त्र जिनका गोत्र कहा गया है तथा जो आदित्य–मण्डलमें विराजमान रहती हैं, उन भगवती महेश्वरीका अपने हृदयमें ध्यान करे।

(अब समयानुसार 24 मुद्रा हो सके तो बनायें)

(फिर पूजा)

अब द्विज को 100 अक्षरों वाला एक गायत्री का मंत्र मात्र एक बार उच्चारण करना चाहिए।

(ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

यह सौ अक्षरकी गायत्री है। इसमें 'भूर्भुवः स्वः' तीन व्याहृतियाँ नहीं गिनी जाती हैं ।

अब गायत्री–जप करें जो आप करते हो।

पर 10 बार ,28 या 108 बार या 10 माला।

10 से कम कोई भी द्विज न करें।

(251) सूतक (मरणाशौच) नहीं लगता।

आत्मत्यागिन्यो नाशौचोदकभाजनाः' (याज्ञवल्क्यस्मृति)

व्याधितस्य कदर्यस्य ऋणग्रस्तस्य सर्वदा। क्रियाहीनस्य मूर्खस्य स्त्रीजितस्य विशेषतः॥ व्यसनासक्तचित्तस्य पराधीनस्य नित्यशः। स्वाध्यायव्रतहीनस्य सततं सूतकं भवेत् ॥ (अत्रिसंहिता १०२–१०३) यह रहस्य एक सज्जन द्वारा प्राप्त हुआ।

●आत्महत्या करनेवालेका सूतक (मरणाशौच) नहीं लगता। (क्योंकि उसे प्रकृति ने नहीं मारा अपितु प्रकृति से छेड़छाड़ करके बलात् मरा है)

●कैसे मनुष्यों को कभी न बुलाये क्योंकि इन पर सूतक 24 घंटे लगा रहता है जिससे ये अशुद्ध होते हैं।

1. जो मनुष्य सदा रोगी (तन के अति भोग से या अभक्ष्य खाने से)

2. कृपण,

3. ऋणग्रस्त (अति कामनाओं, भोगों , दिखावटी ऐश्वर्य या महत्वाकांक्षाओं से ऋण लेकर परेशान)

4. क्रियाहीन,

5. मूर्ख (संध्या का त्याग करने वाला या सूर्योदय सूर्यास्त के समय भी अनुचित कृत्य कर्ता)

6. स्त्रीके वशीभूत (अपनी स्त्री पर भी अति मोहित तथा परायी नार का उपभोग करने वाला चाहे ब्राह्मण या संन्यासी कोई भी हो)

7. व्यसनमें आसक्त चित्तवाले (जर्दा सुपाड़ी, बीड़ी सिगरेट, मदिरा आदि की लत वाला)

8. पराधीन (अतिलोभ में आकर पापी की सेवा करने वाला)

9. स्वाध्याय–व्रतसे हीनतथा

10. श्रद्धा–त्यागसे रहित हैं (जो ऋतुकाल नियम पर या विशेष तिथियों पर श्रृद्धा नहीं रखकर उन तिथियों का सम्मान नहीं करता है) उन्हें सदा सूतक लगा रहता है।

(252) दुख दूर करो तप करो–

परेशानी और समस्या आने पर दुखी होने से या रोने से समाधान नहीं होता अतः रोना नहीं चाहिए।

और ऋषियों की आज्ञा मानकर माँ जगदम्बा की शरण स्वीकार कर लेना चाहिए, उनके पाठ का अनुष्ठानमयी संकल्प लेकर एक माह या 1,2 या तीन वर्ष तक (सुबह 5–7 और शाम 5से सात या रात्रि के नियम से जो भी अनुकूल समय हो) तपस्या में संलग्न होकर उनकी अनन्य भक्ति में खो जाना चाहिए। शेष उपाय गौण हैं, जो अल्पकालीन भोगों को देने वाले हैं।

यदि मानव ग्रहस्थ है, पत्नि बच्चे घर में हैं तो दिनभर ईमानदारी से कमाने का प्रयास करें और दो समय 1–1 या 2–2 घंटे जप करें । इसी परम तप से ही कष्ट दूर होगें, मात्र अश्रूधारा से कुछ भी समस्या हल नहीं होती अथवा सप्तशती के आरंभिक और प्रधान मेधा मुनि की आज्ञा न मानों तो रोते रहो तथा दास, गुलाम और आपको एक छोटा सा तुच्छ समझने वाले लोगों की सेवा करते रहो और आजीवन गिड़गिराते रहो और हीनभाव से अल्पज्ञमय बनकर जीवन काटते रहो.... मत भूलो हे मानव! आप अनंत शक्तियों के स्वामी हो आप वही हो साक्षात् वही जो वो है, परम है।

(253) यह आत्मा यथार्थ में परब्रह्म शिव ही है–

अविद्या ही जीवत्व का कारण है । हे ऋषियों ! अविद्या का नाश होने पर यह आत्मा यथार्थ में परब्रह्म शिव ही है। प्रमाण के लिए– कोटीरुद्र संहिता अध्याय 43 श्लोक 10 व 23 तथा गरुड पुराण आचार काण्ड अध्याय 239 की ब्रह्म गीता भी देखें। और कैलास संहिता अध्याय 19 व 18 (महावाक्यों के तात्पर्य) में भी देखें ।

● **अम्बिका व शम्भु** – ऐश्वर्यकी इच्छा रखनेवाले पुरुषको कर्ककी संक्रान्तिसे युक्त श्रावणमासमें नवमी तिथिको मृगशिरा नक्षत्रके योगमें सम्पूर्ण मनोवांछित भोगों और फलोंको देनेवाली अम्बिकाका पूजन करना चाहिये।

आश्विन– मासके शुक्लपक्षकी नवमी तिथि सम्पूर्ण अभीष्ट फलोंको देनेवाली है। उसी मासके कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको यदि रविवार पड़ा हो तो उस दिनका महत्त्व विशेष बढ़ जाता है। उसके साथ ही यदि आर्द्रा और महार्द्रा (सूर्यसंक्रान्तिसे युक्त आर्द्रा) का योग हो तो उक्त अवसरोंपर की हुई शिवपूजाका फल महान है।

माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशीको शिवजीकी की हुई पूजा सम्पूर्ण अभीष्ट फलोंको देनेवाली है। वह मनुष्योंकी आयु बढ़ाती है, मृत्युको दूर हटाती है और समस्त सिद्धियोंकी प्राप्ति कराती है ॥

ज्येष्ठमासमें चतुर्दशीको यदि महाद्र्राका योग हो अथवा मार्गशीर्षमासमें किसी भी तिथिको यदि आर्द्रा नक्षत्र हो तो उस अवसरपर विभिन्न वस्तुओंकी बनी हुई मूर्तिके रूपमें शिवजीकी जो सोलह उपचारोंसे पूजा करता है, उस पुण्यात्माके चरणोंका दर्शन करना चाहिये। भगवान् शिवकी पूजा मनुष्योंको भोग और मोक्ष देनेवाली है–ऐसा जानना चाहिये।

(254) धन प्राप्ति का सबसे सरल व्रत

सुनंद–"हे माँ! धन प्राप्ति का सबसे सरल व्रत कौन सा है?

माँ–श्री पंचमी जो क्षीरसागर की रमा नामक लक्ष्मी जी का एक वर्षीय व्रत है, मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष की पंचमी को यह आरंभ किया जाता है फिर प्रत्येक माह की शुक्लपक्ष की पंचमी को (12 माह की ही अलग अलग पंचमी) अलग अलग नामों (श्री, लक्ष्मी, कमला, सम्पत, रमा, नारायणी, पद्मा, धृति, स्थिति, पुष्टि, ऋद्धि तथा सिद्धि) से लक्ष्मी देवी की पूजा और व्रत भी करें ।

हे वत्स! शायद आपको पता नहीं, क्षीरसागर के विष्णु जी ने भी इसी व्रत को विधि सहित करने के कारण ही उन रमा देवी को पत्नि रूप में पाया और इंद्रादि देवों ने समुद्र मंथन से पहले इस व्रत को किया था जब इन्हीं देवी ने सभी को सागर मंथन की आज्ञा दी थी।

हे प्रभु की आह्लादिनी शक्ति (श्रीराधे)! तीर्थ भूमि पर रहने वाले कीट, पशु पक्षी आदि सब मात्र शाप या कुछ विशेष गलतियों के कारण दंड भोग रहे हैं यह मैंने सुना है वे सभी (जिनको शाप है) वहाँ मृत्यु होने पर सदा के लिये पुनर्जन्म से मुक्त हो जायेंगे, पर कुछ मनुष्य लाख प्रयास करने के बाद भी मृत्यु के समय उन तीर्थों से बाहर कर दिये जाते हैं और बाहर ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं, ऐसा क्यों?,

मथुरा, काशी, कांची, द्वारिका, अवंतिका (उज्जैन), अयोध्या, हरिद्वार आदि तीर्थों में जन्म लेने की अपेक्षा वहाँ मृत्यु होना अधिक महत्वपूर्ण है।

(255) देवी स्वधा माहात्म्य.........

जो आश्विन मास के कृष्णपक्ष में (श्राद्ध काल में) 16 ही दिन संयम और ब्रह्मचर्य पूर्वक इनका ध्यान, पूजन और स्तवन करता है वह संपूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है व उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता, सफलता के मार्ग में जो भी विघ्न हैं वे सभी देवी स्वधा की कृपा से सदा के लिये दूर हो जाती हैं। ध्यान करने के बाद अपने पास रखी शालग्राम शिला या शालग्राम प्रभु न हो तो कलश पर इनका आवाहन करना चाहिए और आवाहन के बाद गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य अर्पित करने के लिए इस मंत्र का प्रयोग करना चाहिए

"ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधादेव्यै स्वाहा" विस्तार के लिए हम सभी का महाग्रंथ देवी रहस्य पढे।

(256) पग पग पर विजय के लिए माधव स्तोत्रम्

जयस्वरूपं जयदं जयेशं जयकारणम् ।

प्रवरं जयदानां च वन्दे तमपराजितम् ॥

विश्वं विश्वेश्वरेशं च विश्वेशं विश्वकारणम् ।

विश्वाधारं च विश्वस्तं विश्वकारणकारणम् ॥

विश्वरक्षाकारणं च विश्वघ्नं विश्वजं परम् ।

फलबीजं फलाधारं फलं च तत्फलप्रदम् ॥

तेजःस्वरूपं तेजोदं सर्वतेजस्विनां वरम् ।

जो भी भक्त इस स्तोत्र का पाठ करके कहीं भी यात्रा करता है उसको पग पग पर विजय और श्री की प्राप्ति होती है। जिन लोगों को वर्षों से अथक परिश्रम करने पर भी सफलता नहीं मिल पा रही वह भी समस्त विपरीत ग्रहों को मात्र 1 मास में ही इस पाठ से पूर्णतः अनुकूल कर विजय पताका फहराता हैं यह सब मात्र इस कारण होता है कि सभी ग्रहों को इस स्तोत्र के पाठकर्ता में मात्र श्रीहरि ही दिखाई देने लगते हैं जिस कारण सभी ग्रह उसको विजय माला पहनाते हैं।

– ब्रह्म वैवर्त पुराण ब्रह्मखण्ड अध्याय 3 से

(257) दुःस्वप्ननाशक व यशप्राप्ति हेतु श्री कृष्ण स्तोत्र

कृष्णं वन्दे गुणातीतं गोविन्दमेकमक्षरम् ।
अव्यक्तमव्ययं व्यक्तं गोपवेषविधायिनम् ।।

किशोरवयसं शान्तं गोपीकान्तं मनोहरम् ।
नवीननीरदश्यामं कोटिकन्दर्पसुन्दरम् ।।

वृन्दावनवनाभ्यर्णे रासमण्डलसंस्थितम् ।
रासेश्वरं रासवास रासोल्लाससमुत्सुकम्।।

(258) अन्न का दान–

●मार्गशीर्षमासमें केवल अन्न का दान करनेवाले मनुष्यको सम्पूर्ण अभीष्ट फलोंकी प्राप्ति हो जाती है। मार्गशीर्षमासमें अन्नका दान करनेवाले मनुष्यके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, वह अभीष्ट–सिद्धि, आरोग्य, धर्म, वेदका सम्यक् ज्ञान, उत्तम अनुष्ठानका फल, इहलोक और परलोकमें महान् भोग तथा अन्तमें सनातन योग (मोक्ष) तथा वेदान्तज्ञानकी सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

– शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 16

(259) नैवेद्य अर्पण करनेसे आयु बढ़ती है

पहले मन से पूजा करना चाहिए तदोपरान्त जो भी उपचारादि आदि हो उससे करें जो वस्तु प्रयास के बाद भी उपलब्ध न हो सकी हो उसके लिए दुख न करें और जो भी हो उससे सप्रेम पूजन करें। प्रभु भाव से भी उस पूजन का फल दे देते हैं विस्तार से शिवगीता में अद्भुत पूजा रहस्य है। और शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 16 में भी अद्भुत ज्ञान –

●देवताका अभिषेक करनेसे आत्मशुद्धि होती है,
●गन्धसे पुण्यकी प्राप्ति होती है,
●धूप निवेदन करनेसे धनकी प्राप्ति होती है (बांस से बनी अगरबत्ती न जलाये)

●दीप दिखानेसे ज्ञानका उदय होता है ।
●नैवेद्य अर्पण करनेसे आयु बढ़ती है और तृप्ति होती है,और
●ताम्बूल समर्पण करनेसे भोगकी उपलब्धि होती है।

इसलिये स्नान आदि छः उपचारोंको यत्नपूर्वक अर्पित करे ॥ १६–१७ ॥

शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 16

● नमस्कार और जप– ये दोनों सम्पूर्ण अभीष्ट फलको देनेवाले हैं। इसलिये भोग और मोक्षकी इच्छा रखनेवाले लोगोंको पूजाके अन्तमें सदा ही जप और नमस्कार करना चाहिये।

(260) युगल श्रीराधामाधव स्तोत्र–

गृहस्थ भक्तों को अपने परम मंगल के लिये सदा ही युगल सेवा करना चाहिये ब्रह्मवैवर्त पुराण और पद्म पुराण में तो यह तक बताया है कि जो भी भक्त श्री राधा जी की नित्य पूजा '' मानसिक या प्रत्यक्ष'' न करके मात्र कृष्ण प्रभु का भजन करता है वह 100 जन्मों बाद ही गोलोक जा पाता है। और पहले माता का ही स्मरण करके फिर पिता का करने से सिद्धिलाभ होता हैं यथा– जय श्री गौरीशंकर , सीताराम, राधेश्याम आदि

युगल स्तोत्रम्

'नमः कृष्णायै कृष्णाय राधायै माधवाय च।
परिपूर्णतमायै परिपूर्णतमाय च ।।
घनश्यामाय देवाय श्यामायै सततं नमः।
रासेश्वराय सततं रासेश्वर्यै नमो नमः ।।
गोलोकातीतलीलाय लीलावत्यै नमो नमः ।
असंख्याण्डाधिदेव्यै चासंख्याण्डनिधये नमः ।।
भूभारहाराय भुवंगताभ्यां मच्छान्तये चात्र समागताभ्याम् ।
परस्परं संवितविग्रहाभ्यां नमो युवाभ्यां हरिराधिकाभ्याम् ।।

–गर्ग०संहिता मथुरा खंड अध्याय २० से

स्तोत्र की श्रृंखला में आगे पद्म पुराण में निहित एक अभ्युदय स्तोत्र है इसको भोजपत्र पर लिखकर अपने घर में किसी भी ग्रंथ में रखकर, नित्य तीनों समय मात्र प्रणाम भी किया

जाए तो निश्चित ही भविष्य में धन और यश लाभ होता है तथा श्रीहरिहर के साथ पितर भी परम तृप्त हो जाते हैं। यह स्तोत्र भगवान श्रीशंकर को अतिप्रिय है।

(261) भगवती बहुत दयालु हैं

भगवती बहुत दयालु हैं आप चिन्ता छोड़कर साधना आरंभ कर दो बस।

एक दिन ऐसा था जब हमने किसी से 100₹ रुपये उधार लिए थे पर आज 21 पुस्तकों के लेखक हैं और सोच सकते हो कि जो देवी कृपा करके इस अक्षयरुद्र से दो वर्ष में 21 पुस्तकें लिखवाने का सौभाग्य दे सकती हैं और आप जैसे परम भक्तों से मिला सकती हैं तथा साक्षात् परम वीर हनुमान जी से मिलवा सकती हैं वे देवी क्या नहीं कर सकती ??????

पर पुनः कहते हैं कि –

कोई भी एक स्तोत्र चुनकर साधना आरंभ करो इधर उधर मत भटको।

और शक्तिपीठमयी अष्टोत्तरशतनाम को निश्चित ही भोजपत्र पर केसर या अष्टगंध से लिख लीजिए। और जब तक 1100 पाठ न हो तब तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहें और हविष्यान्न ग्रहण करें।

और 100दिन मोबाइल से दूर रहें बस इष्ट पर ध्यान दें। शेष समय में इष्ट की कथा को पढ़ते रहें।

दया

जब तक मनुष्य (नारी या नर) दयालु नहीं होगा, जब तक पापकर्म नही छोडेगा तब तक उसको कोई भी जप तप व्रत–उपवास फल नहीं देगी।

इसीलिए हे सावित्री! अनेक नारियाँ व्रत–उपवास करके भी इस विश्व में विधवा देखने को मिलती हैं। पापी या व्याभिचारिणी नारी यदि पूर्व जन्म के पुण्य–संचय से युक्त है तो ही अनेक पाप करके भी वैधव्य का दुख नहीं भोगती परंतु उसके यह पाप उसका पुनर्जन्म नष्ट कर देते हैं अर्थात वह अगले जन्म में निर्धन , दुखी , योनीरोग से ग्रस्त, विधवा या प्राकृतिक प्रकोप को सहती है।

(262) घोर अज्ञान

मूर्ख लोग सूखकर पापड़ हो गए पर यथार्थ पराविज्ञान तो दूर साधारण बात भी नहीं समझ सके।

1. 60 साल के होने पर भी सिद्ध कुंजिका का ज्ञान नहीं।
2. 60 के होने पर भी व्यपोहन स्तोत्र का अता पता नहीं जिसमें सभी रूपों से अद्‌भुत प्रार्थना है।
3. ऋतुकाल के 16 दिनों का भान नहीं ।
4. बत्तीस अपराधों का पता नहीं।
5. साधन चतुष्ट्य का पता नहीं।
6. यम नियम का पता नहीं।
7. भगवान की पंचोपचार पूजा की ही सामग्री ही पता नहीं।
8. सकाम पूजा के लिए अनिवार्य पटल और पद्यति का नॉलेज नहीं।
9.गाय के गोबर को लांध जाते हैं।
10. एकादशी पर चावल खाकर, भिक्षुक को खाली हाथ भगाकर तथा पत्नी के व्रत (ऋषि पंचमी या संतान साते आदि) की रात को संभोग करके व्रत खंडन करते हैं और यह बकते हैं कि भगवान तो भाव के भूखे हैं और भगवान प्रेम या संसर्ग शब्द से काहे नाराज होने लगे इस पत्नी पर तो मेरा सदा अधिकार है। कलियुग केवल नाम अधारा अतः मैं नाम से तर जाऊँगा पर एकादशी को चावल अवश्य खाऊँगा तथा बिना संसर्ग के नहीं रह पाऊँगा।

(263) रावण के गुण व अवगुण–

रावण महादेव का भजन अवश्य करता था पर भजन का तात्पर्य यह नहीं कि आप श्रीशंकर के बल पर किसी अप्सरा का बलात्कार करो।

या वेदवती जैसी तपस्वनी का शील भंग करो (या बलात्कार का प्रयास)

इसी कारण इसके पापों की सजा इसे भगवान श्रीराम ने दी

अतएव जो लोग रावण के कुकर्मों को देखकर या पढ़कर भी (वाल्मीकि रामायण में प्रमाण है अतः) इसको प्रेरणास्रोत मान रहे हैं वे ठीक नहीं कर रहे।

प्रेरणास्रोत के लिए आदर्श पुरुष (भरत , लक्ष्मण, जटायु आदि) का उदाहरण दिया जाता है जो भक्ति के साथ व्यवहार से भी शुद्ध हो। न कि आदर्श भक्तों को छोड़कर बलात्कारियों का उदाहरण। बाद में वो शुद्ध हो गया तो इसका मतलब यह नहीं कि उसके पूर्व सभी कर्मों को आदर्श मानें।

001.

तान् भक्षयित्वा तत्रस्थान् महर्षीन् यज्ञमागतान् ।
वितृप्तो रुधिरैस्तेषां पुनः सम्प्रययौ महीम् ।।२०।।.

उस यज्ञमें आकर बैठे हुए महर्षियोंको खाकर उनके रक्तसे पूर्णतः तृप्त हो रावण फिर पृथ्वीपर विचरने लगा ।।२०।।

उत्तरकांड, अष्टादश सर्ग

002.

ऋषीन् यक्षान् सगन्धर्वान् ब्राह्मणानसुरांस्तदा ।
अतिक्रामति दुर्धर्षो वरदानेन मोहितः ॥

'आपके वरदानसे मोहित होकर वह इतना उद्दण्ड हो गया है कि ऋषियों, यक्षों, गन्धर्वों, असुरों तथा ब्राह्मणोंको पीड़ा देता और उनका अपमान करता फिरता है।

उत्सादयति लोकांस्त्रीन् स्त्रियश्चाप्युपकर्षति।
तस्मात् तस्य वधो दृष्टो मानुषेभ्यः परंतप ॥

'शत्रुओंको संताप देनेवाले देव! वह तीनों लोकोंको पीड़ा देता और स्त्रियोंका भी अपहरण कर लेता है; अतः उसका वध मनुष्यके हाथसे ही निश्चित हुआ है'॥

वाल्मीकि रामायण, बाल कांड

003.

पितामहस्य भवनं गच्छन्तीं पुञ्जिकस्थलाम् ।
चञ्चूर्यमाणामद्राक्षमाकाशेऽग्निशिखामिव ।।

'एक बार मैंने आकाशमें अग्नि–शिखाके समान प्रकाशित होती हुई पुञ्जिकस्थला नामकी अप्सराको देखा, जो पितामह ब्रह्माजीके भवनकी ओर जा रही थी। वह अप्सरा मेरे भयसे लुकती–छिपती आगे बढ़ रही थी ।।.

सा प्रसह्य मया भुक्ता कृता विवसना ततः ।
स्वयम्भूभवनं प्राप्ता लोलिता नलिनी यथा ।।

'मैंने बलपूर्वक उसके वस्त्र उतार दिये और हठात् उसका उपभोग किया। इसके बाद वह ब्रह्माजीके भवनमें गयी। उसकी दशा हाथीद्वारा मसलकर फेंकी हुई कमलिनीके समान हो रही थी ।।१२।।

तच्च तस्य तथा मन्ये ज्ञातमासीन्महात्मनः ।
अथ संकुपितो वेधा मामिदं वाक्यमब्रवीत् ।।१३।।

'मैं समझता हूँ कि मेरे द्वारा उसकी जो दुर्दशा की गयी थी, वह पितामह ब्रह्माजीको ज्ञात हो गयी। इससे वे अत्यन्त कुपित हो उठे और मुझसे इस प्रकार बोले ।।

अद्यप्रभृति यामन्यां बलान्नारीं गमिष्यसि ।
तदा ते शतधा मूर्धा फलिष्यति न संशयः ।।

'आजसे यदि तू किसी दूसरी नारीके साथ बलपूर्वक समागम करेगा तो तेरे मस्तकके सौ टुकड़े हो जायँगे, इसमें संशय नहीं है' ।

(264) नारी और वेद अध्ययन अनुचित या उचित

1. लोगों ने डरा दिया ताकि वह आजीवन चूल्हा फूंक–फूंक कर और बच्चों को पाल पाल कर जीवन नष्ट कर दे और शठ बनी रहे। पर कर्म गलत हैं तो वेद मत पढना।
2. नारी का वेद अध्ययन जायज है। अतः डरो मत यदि आप जिज्ञासु हो तो अवश्य ही वेद पढ़े। प्रमाण–अत्र सिद्धा शिवा नाम ब्राह्मणी वेदे पारगा ।अधीत्य सकलान् वेदान लेभेऽसन्देहमक्षयम् ।।–महाभारत उद्योग पर्व १६० । १८
3. "शिवा नामक ब्राह्मणी वेदों में पारंगत थी, उसने सब वेदों को पढ़कर मोक्ष पद प्राप्त किया।
4. महाभारत शन्ति पर्व अध्याय ३२० में 'सुलभा' नामक ब्रह्मवादिनी सन्यासिनी का वर्णन है, जिसने राजा जनक के साथ शास्त्रार्थ किया था।

5. इसी अध्याय के श्लोक ८२ में सुलभा ने अपना परिचय देते हुए कहा है –प्रधानो नाम राजर्षि व्यक्तं ते श्रोतमागतः। कुले तस्य समुत्पन्ना सुलभां नाम विद्वि माम् ॥ सोहं तस्मिन् कुले जाता भर्तर्यसति मद्विधे ॥ विनीता मोक्षधमषु धराम्येका मुनिव्रतम्॥–महाभारत शांति पर्व ३२० । ८२ अर्थात मैं सुप्रसिद्ध क्षत्रिय कुल में उत्पन्न सुलभा हूँ। अपने अनुरूप पति के (विश्व में) न मिलने से मैंने गुरुओं से शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त करके महाव्रत ग्रहण किया है।
6. पाण्डव–पत्नी द्रौपदी की विद्वत्ता का वर्णन करते हुए श्री आचार्य आनंदतीर्थ (माधवाचार्य जी) ने "महाभारत निर्णय में लिखा है
7. वेदाश्चप्युत्तम स्त्रीभिःकृष्णात्ताभिरिहाखिलाः। अर्थात् उत्तम स्त्रियों को कृष्णा (द्रौपदी) की तरह वेद पढ़ने चाहिए।

(265) अग्निशमन स्तोत्र

तत्काल संकट नाशक और अग्नि भय दूर ग्वालबाल कृत श्रीकृष्णस्तोत्र –

यथा संरक्षितं ब्रह्मन् सर्वापत्स्वेव नः कुलम् ।
तथा रक्षां कुरु पुनर्दावाग्नेर्मधुसूदन ॥1

त्वमिष्टदेवतास्माकं त्वमेव कुलदेवता।
वह्निर्वा वरुणो वापि चन्द्रो वा सूर्य एव वा ॥2

यमः कुबेरः पवन ईशानाद्याश्च देवताः ।
ब्रह्मेशशेषधर्मेन्द्रा मुनीन्द्रा मनवः स्मृताः ॥3

मानवाश्च तथा दैत्या यक्षराक्षसकिन्नराः ।
ये ये चराचराश्चौव सर्वे तव विभूतयः ॥4

स्रष्टा पाता च संहर्ता जगतां च जगत्पते।
आविर्भावस्तिरोभावः सर्वेषां च तवेच्छया।।5

अभयं देहि गोविन्द वह्निसंहरणं कुरु ।
वयं त्वां शरणं यामो रक्ष नः शरणागतान् ॥6

मंदिर निर्माण से या संकल्प मात्र से ही संपूर्ण पाप नष्ट–

यह प्रसंग अग्नि पुराण का है बड़े ही ध्यान से अध्ययन करें इस अध्याय के पाठ मात्र से भी अनेक जन्मों के भयंकर संचित पाप भी नष्ट हो जाते हैं और प्रभु शिव जी की कृपा भी प्राप्त होती है।

अग्निदेव कहते हैं–
मुनिवर वसिष्ठ! भगवान् वासुदेव आदि विभिन्न देवताओंके निमित्त मन्दिरका निर्माण करानेसे जिस फल आदिकी प्राप्ति होती है, अब मैं उसीका वर्णन करूँगा। जो देवताके लिये मन्दिर जलाशय आदिके निर्माण करानेकी इच्छा करता है, उसका वह शुभ संकल्प ही उसके हजारों जन्मोंके पापोंका नाश कर देता है।

1. जो मनसे भावनाद्वारा भी मन्दिरका निर्माण करते हैं, उनके सैकड़ों जन्मोंके पापोंका नाश हो जाता है। जो लोग भगवान् श्रीकृष्णके लिये किसी दूसरेके द्वारा बनवाये जाते हुए मन्दिरके निर्माण कार्यका अनुमोदन मात्र कर देते हैं, वे भी समस्त पापोंसे मुक्त हो उन अच्युतदेवके लोक को प्राप्त होते हैं।
2. भगवान् विष्णु (या इष्ट राधा,दुर्गा शिव,राम आदि)के निमित्त मन्दिरका निर्माण करके मनुष्य अपने भूतपूर्व तथा भविष्यमें होनेवाले दस हजार कुलोंको तत्काल विष्णु लोकमें जानेका अधिकारी बना देता है।
3. श्रीकृष्ण तथा सदाशिव जी के मन्दिर का निर्माण करनेवाले मनुष्यके पितर नरकके क्लेशोंसे तत्काल छुटकारा पा जाते हैं और दिव्य वस्त्राभूषणोंसे अलंकृत बड़े हर्षके साथ विष्णुधाममें निवास करते हैं।
4. देवालयका निर्माण ब्रह्महत्या आदि पापोंके पुञ्ज का नाश करनेवाला है।
5. यज्ञोंसे जिस फलकी प्राप्ति नहीं होती है, वह भी देवालयका निर्माण करानेमात्रसे प्राप्त हो जाता है।
6. देवालयका निर्माण करा देनेपर समस्त तीर्थोंमें स्नान करनेका फल प्राप्त हो जाता है।
7. देवता–ब्राह्मण गौ, संत धर्म आदि के लिये रणभूमिमें मारे जानेवाले धर्मात्मा शूरवीरोंको जिस फल आदिकी प्राप्ति होती है, वही देवालयके निर्माणसे भी सुलभ होता है।
8. कोई शठता या कंजूसी के कारण भी या बालपन में खेल खेल में भी धूल मिट्टीसे भी छोटा सा देवालय बनवा दे तो वह उसे स्वर्ग या दिव्यलोक प्रदान करनेवाला होता है।
9. एकायतन (एक ही देवविग्रहके लिये एक कमरे का) मन्दिर बनवानेवाले पुरुषको स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है।
10. त्र्यायतन–मन्दिरका निर्माता ब्रह्मलोकमें निवास पाता है।

11. पञ्चायतन–मन्दिरका निर्माण करनेवालेको शिवलोककी प्राप्ति होती है ।
12. अष्टायतन–मन्दिरके निर्माणसे श्रीहरिकी संनिधिमें
13. कोटी कोटी युगों तक साक्षात् हरि के समीप ही रहनेका सौभाग्य प्राप्त होता है।
14. जो (सामर्थ्य के अनुसार)षोडशायतन मन्दिरका निर्माण कराता है, वह भोग और मोक्ष, दोनों पाता है।
15. श्रीहरिके मन्दिरकी तीन श्रेणियाँ हैं– कनिष्ठ,मध्यम और श्रेष्ठ। इनका निर्माण, करानेसे क्रमशः स्वर्गलोक, विष्णुलोक तथा परमपद (मोक्ष)की प्राप्ति होती है।
16. धनी मनुष्य भगवान् विष्णुका उत्तम श्रेणीका मन्दिर बनवाकर जिस फलको प्राप्त करता है, उसे ही निर्धन मनुष्य निम्नश्रेणीका मन्दिर बनवाकर भी प्राप्त कर लेता है।
17. गरीब के लिए भावना ही अनिवार्य है और सामर्थ्य के अनुसार अति छोटा मंदिर भी महान पुण्यों को देने वाला ही सिद्ध होता है अतः किसी पूर्व पाप से यदि वर्तमान में दरिद्र हो तो चिंता न करके भावना और श्रृद्धा से अति छोटा मंदिर (100 या 200ईटों का भी और मिट्टी से लिपा हुआ भी) बनाकर भक्तिपरायण हो जावें।
18. धन–उपार्जन करके उसमेंसे थोड़ा–सा ही खर्च ईश्वरीय कार्य के लिए या देव–मन्दिर बनवाने के लिए कर ले तो बहुत अधिक पुण्य एवं भगवान्का वरदान तक प्राप्त कर सकता है।पर भौतिक भोगों की अति स्पृहाओं ने ही मानव का पतन किया है।
19. एक लाख या एक हजार या एक सौ अथवा उसका आधा (५०) मुद्रा ही खर्च करके भगवान् विष्णुका मन्दिर बनवानेवाला मनुष्य उस नित्य धामको प्राप्त होता है, जहाँ साक्षात् गरुडकी ध्वजा फहरानेवाले भगवान् विष्णु विराजमान होते हैं।
20. जो लोग बचपनमें खेलते समय धूलिसे भगवान् विष्णुका मन्दिर बनाते हैं, वे भी उनके धामको प्राप्त होते हैं।
21. तीर्थमें, पवित्र स्थानमें, सिद्धक्षेत्रमें तथा किसी आश्रमपर जो भगवान् विष्णुका मन्दिर बनवाते हैं, उन्हें अन्यत्र मन्दिर बनानेका जो फल बताया गया है, उससे तीन गुना अधिक फल मिलता है।
22. जो लोग भगवान् विष्णुके मन्दिरको चूनेसे लिपाते और उसपर बन्धूकके फूलका चित्र बनाते हैं, वे अन्तमें भगवान्के धाममें पहुँच जाते हैं।
23. भगवान्का जो मन्दिर गिर गया हो, गिर रहा हो, अथवा आधा गिर चुका हो, उसका जो मनुष्य जीर्णोद्धार करता है, वह नवीन मन्दिर बनवानेकी अपेक्षा दूना पुण्यफल प्राप्त करता है।
24. जो गिरे हुए विष्णु या शिव मन्दिरको पुनः बनवाता और गिरे हुएकी रक्षा करता है, वह मनुष्य साक्षात् भगवान् विष्णु की स्वरूपता प्राप्त करता है।

25. भगवान् के मन्दिरकी ईंटें जबतक रहती हैं, तबतक उसका बनवानेवाला विष्णुलोकमें कुलसहित प्रतिष्ठित होता है।
26. इस संसारमें और परलोकमें वही पुण्यवान् और पूजनीय है जो भगवान् श्रीकृष्णका मन्दिर बनवाता है, वही पुण्यवान् उत्पन्न हुआ है, उसीने अपने कुलकी रक्षा की है।
27. जो भगवान् विष्णु, शिव, सूर्य और देवी आदिका मन्दिर बनवाता है, वही इस लोकमें कीर्तिका भागी होता है।
28. सदा धनकी रक्षामें लगे रहनेवाले मूर्ख मनुष्यको बड़े कष्टसे कमाये हुए अधिक धनसे क्या लाभ हुआ, यदि वह उससे श्रीकृष्णका मन्दिर ही नहीं बनवाता। जिसका धन पितरों, ब्राह्मणों और देवताओंके उपयोगमें नहीं आता तथा बन्धु–बान्धवोंके भी उपयोगमें नहीं आ सका, उसके धनकी प्राप्ति व्यर्थ हुई।
29. जैसे प्राणियोंकी मृत्यु निश्चित है, उसी प्रकार कमाये हुए धनका नाश भी निश्चित है। मूर्ख मनुष्य ही क्षणभङ्गुर जीवन और चञ्चल धनके मोहमें बँधा रहता है। जब धन दानके लिये, प्राणियोंके उपभोगके लिये, कीर्तिके लिये और धर्मके लिये काममें नहीं लाया जा सके तो उस धनका मालिक बननेमें क्या लाभ है? इसलिये प्रारब्धसे मिले अथवा पुरुषार्थसे, किसी भी उपायसे धनको प्राप्तकर उसे उत्तम ब्राह्मणोंको दान दे, अथवा कोई स्थिर कीर्ति बनवावे।
30. चूँकि कीर्तिसे भी बढ़कर मन्दिर बनवाना है, इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य विष्णु आदि देवताओंका मन्दिर आदि बनवावे। भक्तिमान् श्रेष्ठ पुरुषोंके द्वारा यदि भगवान्के मन्दिरका निर्माण और उसमें भगवान्का प्रवेश (स्थापन आदि) हुआ तो यह समझना चाहिये कि उसने समस्त चराचर त्रिभुवनको रहनेके लिये भवन बनवा दिया
31. तृणपर्यन्त जो कुछ भी भूत, वर्तमान, भविष्य, स्थूल, सूक्ष्म और इससे भिन्न है, वह सब भगवान् विष्णुसे प्रकट हुआ है। उन देवाधिदेव सर्वव्यापक महात्मा विष्णुका मन्दिरमें स्थापन करके मनुष्य पुनः संसारमें जन्म नहीं लेता (मुक्त हो जाता है)। जिस प्रकार विष्णुका मन्दिर बनवानेमें फल बताया गया है, उसी प्रकार अन्य देवताओं शिव, ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, दुर्गा और लक्ष्मी आदिका भी मन्दिर बनवानेसे होता है।
32. मन्दिर बनवानेसे अधिक पुण्य किसी खाली मंदिर में देवताकी प्रतिमा बनवानेमें है।
33. देव–प्रतिमाकी स्थापना–सम्बन्धी जो यज्ञ होता है, उसके फलका तो अन्त ही नहीं है।
34. कच्ची मिट्टीकी प्रतिमासे लकड़ीकी प्रतिमा उत्तम है, उससे ईंटकी, उससे भी पत्थरकी और उससे भी अधिक सुवर्ण आदि धातुओंकी प्रतिमाका फल है।
35. देवमन्दिरका प्रारम्भ करने मात्रसे सात जन्मोंके किये हुए पापका नाश हो जाता है तथा बनवानेवाला मनुष्य स्वर्गलोकका अधिकारी होता हैय वह नरकमें नहीं जाता। इतना ही नहीं, वह मनुष्य अपनी सहस्रों पीढ़ी का उद्धार करके उसे विष्णुलोकमें

पहुँचा देता है। यमराजने अपने दूतोंसे देवमन्दिर बनानेवालोंको लक्ष्य करके ऐसा कहा था।

आगे यम बोले–

1. देवालय और देव–प्रतिमाका निर्माण तथा उसकी पूजा आदि करने वाले मनुष्योंको तुमलोग नरकमें न ले आना तथा जो देव–मन्दिर आदि नहीं बनवाते,या दान देने से रोकते हैं या मूर्ति स्थापित करने में विघ्न डालते हैं।
2. उन्हें खास तौरपर पकड़ लाना। जाओ! तुमलोग संसारमें विचरो और न्यायपूर्वक मेरी आज्ञाका पालन करो। संसारके कोई भी प्राणी कभी तुम्हारी आज्ञा नहीं टाल सकेंगे। केवल उन लोगोंको तुम छोड़ देना जो कि जगत्पिता भगवान् अनन्तकी शरणमें जा चुके हैंय क्योंकि उन लोगोंकी स्थिति यहाँ (यमलोकमें) नहीं होती। संसारमें जहाँ भी भगवान्में चित्त लगाये हुए, भगवान्की ही शरणमें पड़े हुए भगवद्भक्त महात्मा सदा भगवान् विष्णुकी पूजा करते हों, उन्हें दूरसे ही छोड़कर तुमलोग चले जाना।
3. जो स्थिर होते, सोते, चलते, उठते, गिरते, पड़ते या खड़े होते समय भगवान् श्रीकृ ष्णका नाम–कीर्तन करते हैं, या प्रभु की कथाओं में संलग्न होते हैं उन्हें दूरसे ही त्याग देना।
4. जो नित्य–नैमित्तिक कर्मोंद्वारा भगवान् जनार्दनकी पूजा करते हैं, उनकी ओर तुमलोग आँख उठाकर देखना भी नहीं क्योंकि भगवान्का व्रत करनेवाले लोग भगवान्को ही प्राप्त होते हैं '। भगवान के भक्तों के अच्छे या बुरे कर्मों के फलों को वे ही देते हैं तुम उनके भक्तों को दूर से ही छोड़ देना।
5. जो लोग फूल, धूप, वस्त्र और अत्यन्त प्रिय आभूषणोंद्वारा भगवान्की पूजा करते हैं, उनका स्पर्श न करना क्योंकि वे मनुष्य भगवान् श्रीकृष्णके धामको पहुँच चुके हैं।
6. जो भगवान्के मन्दिरमें लेप करते या बुहारी लगाते हैं, उनके पुत्रोंको तथा उनके वंशको भी छोड़ देना। जिन्होंने वर्तमान में भगवान् विष्णुका मन्दिर बनवाया हो, उनके वंशमें सौ पीढ़ी तकके मनुष्योंकी ओर तुमलोग बुरे भावसे न देखना। जो लकड़ीका, पत्थरका अथवा मिट्टीका ही देवालय भगवान् –विष्णुके लिये बनवाता है, वह समस्त पापोंसे मुक्त हो जाता है।' अतः हे भक्तों मरने से पहले एक मंदिर अवश्य ही बनवाना या किसी मन्दिर के लिए मूर्ति स्थापित करवाना या जीर्णोद्धार करवाना। अथवा कहीं बन रहा हो तो किसी दिन भरपेट भोजन न करके कम से कम एक ईंट का दान अवश्य ही कर देना।भगवान अति से भी अति दयालु है।....

(266) भगवद्भक्तों की सेवा करें

1. जो संसार–सागरके पार जाना चाहता हो, वह भगवद्भक्तों के भक्तोंकी सेवा करे,
2. उनके दर्शन करें,
3. उन निष्काम भक्तों के हाथ से प्रसाद ग्रहण करें।
4. जिस पर जीवन में कभी भी किसी विशुद्ध भक्त की दृष्टि पड़ गई उसकी मुक्ति बिना जप तप और बिना संयम के भी सहज हो जाती है अतः किसी भी कारणवश यदि यम नियम या अन्य साधना भजन न हो पायें तो भक्तों से विनम्र भाव से ही अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करें कलियुग में ये भक्त ही प्रत्यक्ष विष्णु ही मानने योग्य हैं अतः भूलकर भी भक्तों का तिरस्कार न करें।
5. वे स्नान किये हों या धूल से युक्त अथवा किसी भी अवस्था में हों वे साक्षात् प्रभु के ही स्वरूप हैं। क्योंकि वे सब पापोंको हर लेनेवाले हैं।
6. गायक का पातक से त्राण करने वाला ही गायत्री कही जाती है अतः वे वेदमाता के ही तुल्य हैं। उनसे बैर न लें अन्यथा त्रिदेव भी नहीं रक्षित कर सकते।
7. दर्शन, स्मरण, पूजन, ध्यान अथवा प्रणाममात्र कर लेनेपर भगवान् गोविन्द के भक्त दुस्तर भवसागरसे उद्धार कर देते हैं। जो सोते, खाते, चलते, ठहरते, उठते और बोलते हुए भी भगवान् विष्णुके नामका चिन्तन करता है, उसे प्रतिदिन बारम्बार नमस्कार है।
8. जिनका मन भगवान् विष्णुकी भक्तिमें अनुरक्त है, उनका अहोभाग्य है, अहोभाग्य है अहोभाग्य है। क्योंकि योगियोंके लिये भी दुर्लभ मुक्ति उन भक्तोंके हाथ में ही रहती है।
9. जानकर या बिना जाने भी जो लोग भगवान्की पूजा करते हुये भक्तों को नमन करते हैं, उन्हें अविनाशी भगवान् नारायण अवश्य मोक्ष देते हैं।
10. सब भाई बन्धु अनित्य हैं। धन–वैभव भी सदा रहनेवाला नहीं है और मृत्यु सदा समीप खड़ी रहती है–यह सोचकर धर्मका संचय तो करना ही चाहिये पर अनन्य और परम भक्ति का सामर्थ्य न हो तो भक्तों की वंदना और उनको प्रणाम मात्र भी भवरोग का नाशक है।

भक्त जब वैकुण्ठ में जाता है तो उसको प्रणाम करने वाले भी सहज ही उसी दिशा की ओर सहज ही जाते हैं और भक्त यदि परम धाम में प्रवेश के बाद यदि उस प्रणामकर्ता का एक बार भी स्मरण कर ले तो सुमिरन मात्र से प्रणाम कर्ता भी वैकुण्ठ में पहुँच जाता है ।

(267) पुराणों के नाम–

1. साक्षात् चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं जिसमें वक्ता हैं, उस प्रथम पुराणको इसीलिये ब्रह्मपुराण कहा गया है ।
2. जिसमें पद्मकल्पका माहात्म्य कहा गया है, वह दूसरा पद्मपुराण कहा गया है।
3. पराशरने जिस पुराणको कहा है, वह विष्णुका ज्ञान करानेवाला पुराण विष्णुपुराण कहा गया है। पिता एवं पुत्रमें अभेद होनेके कारण यह व्यासरचित भी माना जाता है।
4. जिसके पूर्व तथा उत्तरखण्डमें शिवजीका विस्तृत चरित्र है, उसे पुराणज्ञ शिवपुराण कहते हैं।
5. जिसमें भगवती दुर्गाका चरित्र है, उसे देवीभागवत नामक पुराण कहा गया है।
6. नारदजीद्वारा कहा गया पुराण नारदीय पुराण कहा जाता है ।
7. हे तण्डि मुने! जिसमें मार्कण्डेय महामुनि वक्ता हैं, उसे सातवाँ मार्कण्डेयपुराण कहा गया है
8. अग्निद्वारा कथित होनेसे अग्निपुराण
9. भविष्यका वर्णन होनेसे भविष्यपुराण कहा गया है ।
10. ब्रह्मके विवर्तका आख्यान होनेसे ब्रह्मवैवर्त– पुराण कहा जाता है
11. तथा लिंगचरित्रका वर्णन होनेसे लिंगपुराण कहा जाता है।
12. हे मुने! भगवान् वराहका वर्णन होनेसे बारहवाँ वाराहपुराण है,
13. जिसमें साक्षात् महेश्वर वक्ता हैं और स्वयं स्कन्द श्रोता हैं, उसे स्कन्दपुराण कहा गया है।
14. वामनका चरित्र होनेसे वामनपुराण है।
15. कूर्मका चरित्र होनेसे कूर्मपुराण है तथा
16. मत्स्यके द्वारा कथित (सोलहवाँ) मत्स्यपुराण है।
17. जिसके वक्ता स्वयं गरुड हैं, वह (सत्रहवाँ) गरुडपुराण है।
18. ब्रह्माण्डके चरित्रका वर्णन होनेके कारण (अठारहवाँ) ब्रह्माण्डपुराण कहा गया है।

(268) दिशाशूल

शनि, सोम को पूर्व में,
गुरुवार को दक्षिण में
सूर्य, शुक्र को पश्चिम में,
बुध, मंगल को उत्तर में शूल रहता है।
यात्रा में वाम पृष्ठ दिशाशूल शुभ होता है।

दिशाशूल में यात्रा करना हो तो –

1. **रविवार को घी,**
2. **सोमवार को दूध,**
3. **मंगल को गुड़,**
4. **बुध को तिल,**
5. **गुरु को दही,**
6. **शुक्र को यव,**
7. **शनि को उड़द खाकर यात्रा करना शुभ होता है।**

(269) परम कल्याण का हेतु कड़वा सच

तप, यज्ञ, शम, दम, संतोष, क्षमा, नम्रता, सत्य, दया, अस्तेय, अपरिग्रह, अहिंसा, दुर्व्यसनों का अथाव, पवित्र दृष्टि, दान, पुराणों का स्वाध्याय, सत्संग, गुरू सान्निध्य, स्तोत्र आदि से प्रभु स्तुति, व्रत, उपवास, कीर्तन, भगवद्भजन आदि के द्वारा जब अपना चित्त निर्मल हो जाये तभी संतानोत्पत्ति करनी चाहिए। ब्रह्माजी ने भी एक बार जब मनु को सृष्टि का आदेश दिया तब उन्होंने इसी अमृत वाणी को पालन के लिए अपनी पत्नी के साथ तपस्या आरंभ की। उन्होंने दीर्घ काल की तपस्या से प्रभु को प्रसन्न किया। प्रभु कृपा से उनका चित्त एवं मन, बुद्धि पूर्णतः परिशुद्ध हो गया तब उन्होंने मात्र ब्रह्मा जी कार्य में सहयोग के लिए प्रजा के विषय में विचार किया। उन्होंने ईश्वर की कृपा से जान लिया कि संतान उत्पादन का मुख्य उद्देश्य केवल यह है कि संतान ईश्वर की परम भक्त एवं उत्तम गुण वाली हो तथा अपने पूर्वजों को अपने दिव्य कर्मों को पूर्णरूपेण संतुष्ट कर सके। अर्थात् संपूर्ण उत्तम कर्मों के साथ में पवित्र तिथियों, पर्वों तथा त्यौहारों, श्राद्ध पक्ष, प्रभु जयंती अर्थात् प्रभु प्रकटोत्सव, वर्ष की चार नवरात्रियाँ, प्रातः, संध्या, एवं अन्य विशेष काल, ग्रहण काल, तीर्थ भूमि आदि विशेष स्थानों में

स्त्री प्रसंग का विचार मन में भी न लाये। और प्रमुख रूप से इन उपर्युक्त गुण धर्मों के साथ ऋतुकाल नियमों का विशेष रूप से पालन करे। इस ऋतुकाल नियम (मासिक धर्म की पहली रात्रि से 16वीं रात्रि तक) के अंतर्गत स्त्री समागम हेतु मासिक चक्र को छोड़कर मात्र 12 दिन निहित हैं। इन 12 दिनों में भी कुछ दिन ऐसे हैं जिसकी रात्रि में पत्नी संसर्ग से ऐसी कन्या अथवा पुत्र प्राप्त होता है जो अपने माता–पिता के साथ देश धर्म एवं संस्कृति का ही पतन कर देता है। और कुछ तिथियाँ ऐसी हैं जिसमें स्त्री सहवास करने से परम वीतरागी, अनन्य भक्त, मुमुक्षु, ज्ञाननिष्ठ, तथा अपने चित्त को निर्मल बनाने के लिए अनुष्ठान करने की क्षमता वाला पुत्र अथवा कन्या ही जन्म लेती है। अतः जो भी दंपत्ति वास्तव में अपना तथा अपने परिवार का कल्याण करना चाहे उसे ऋतुकाल के नियमों का अनिवार्य रूप से पालन करना चाहिए। अन्यथा उनका जीवन व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। न तो वह दंपत्ति ही सुखी रह पाती है न ही संतान और भविष्य में पूर्णतः अंधकार छा जाता है। फिर वही दंपत्ति ईश्वर, देवता, अथवा कुलदेवी को कोसने लगती है कि हे ईश्वर! आपने मुझसे किस जन्म का बदला लिया अथवा क्या मेरा भाग्य ही खराब था जो तूने ऐसी संतान दी जिसने मेरा मान–सम्मान ही नष्ट कर दिया।..........वह मूर्ख दंपत्ति क्यों नहीं सोचते कि ईश्वर किसी के साथ भी अन्याय नहीं करता उस ईश्वर ने तो परम सुख के साधन धर्मग्रन्थें के माध्यम से सहज ही प्रकट किये हैं यदि वह व्यक्ति उसका स्वाध्याय ही नहीं करेगा अथवा परम संतों के मुख से श्रवण नहीं करेगा तो दुःख तो होगा ही। ईश्वर ने प्रत्येक सफलता का सूत्र पुराणों में वर्णित किया है इसमें साक्षात् राम जैसे महान पुत्र की प्राप्ति पार्वती जैसी दिव्य कन्या की प्राप्ति संपूर्ण धन वैभव की प्राप्ति के साथ ऐसे–ऐसे सरल उपाय बताये हैं जिनके कुछ ही दिनों के पालन एवं सेवन से साक्षात् प्रभु के दर्शन तक हो जाते हैं फिर क्यों मूर्ख व्यक्ति अपना अनमोल समय यूं ही बर्वाद कर रहा है। यदि कोई ऐसी समस्या जिसका समाधान संसार के वश में नहीं वह भी मात्र गीता के 1 परम मंत्र का सवा लाख बार 40 दिनों के नियम पूर्वक अनुष्ठान से साक्षात् श्रीहरि की वाणी द्वारा स्वप्न में हल हो जाती है एवं परम गीता (गुरुगीता) के मात्र 21 दिन की साधना से साक्षात् श्रीरामदूत अंजनी पुत्र के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं तो फिर अन्य जड़ वस्तु या धन, यश, कीर्ति की प्राप्ति में संदेह ही क्या है? बस मात्र अनुष्ठान की देरी है और सब कुछ अपना है। मूर्खता तो अकर्मठ व्यक्ति के चित्त में ही होती है। जब मात्र पिपासा एवं क्षुधा ही बिना कर्म के नहीं मिट सकती अर्थात् एक प्यासा व्यक्ति भी जब तक पानी को नहीं पीता भले ही पानी का पात्र हाथ में हो तब तक क्या उसकी प्यास शांत हो सकती है नहीं नहीं।

इस विश्व में आपने ऐसे–ऐसे व्यक्तियों के बारे में सुना होगा जो बचपन में दरिद्र थे और आज विश्व के महान धनी व्यक्तियों में गिने जाते हैं अथवा ऐसे व्यक्ति जो भयंकर मूढ़ हैं आज परम बुद्धि के स्वामी कहे जाते हैं उनकी सफलता के पीछे अध्यात्म ही है। क्योंकि साधारण कर्म तो प्रत्येक व्यक्ति करता है परंतु यदि कर्म से पहले उस परम सत्ता का हाथ (साधना अथवा प्रार्थना के बल पर) अपने सिर पर रखवा ले तो वह क्या प्राप्त नहीं कर

सकता? एक महान अंग्रेज दार्शनिक ने स्पष्ट ही कहा है **Everything is possible in this world** बिना आध्यात्मिक पुरूषार्थ के कोई भी व्यक्ति मात्र भाग्य के बल पर कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। अनन्य भक्तों की बात अलग है उनके लिए तो संपूर्ण सिद्धियाँ एवं नव निधियाँ हाथ जोड़कर खड़ी रहती हैं और सोचती हैं कि हे ईश्वर! क्या मेरा ऐसा सौभाग्य नहीं है कि मैं अपना सब कुछ इस भक्त को अर्पित कर सकूं क्योंकि हे श्रीहरि! आपका ये परम भक्त मुझसे कुछ लेना स्वीकार ही नहीं कर रहा। आपकी कृपा से यह पूर्णतः अनासक्त अर्थात् निःस्पृह हो गया..................और रही सामान्य जन की बात तो मैं उसको मैं पहले संसार में नचाती हूँ फिर भी बिना अनुष्ठान के एक कोड़ी भी नहीं देती।

खैर जो भी हो हम यहाँ गृहस्थ के जीवन में सुखों की वर्षा के लिए पुराणों के सारभूत तत्त्व को पेश कर रहे हैं मानना या मानना व्यक्ति के पुण्यों पर निर्भर करता है। **कामवासना से स्त्री सेवन (स्त्री संसर्ग) तो एक प्रकार का पाप ही है।** इस भक्त चरितांक के महाराज मनु प्रसंग में बताया है कि वासना के भाव से उत्पन्न की गई संतान में वासना की प्रधानता होगी ही। अतः यदि हममें ही वासना (नाशवान एवं दुर्गंध शरीर को भोगने की इच्छा जिसके प्रति गीता 5/22 में साक्षात् श्रीहरि ने कहा है कि हे अर्जुन! यद्यपि इन्द्रियों एवं विषयों से उत्पन्न होने वाले जितने भी क्षणिक भोग हैं वे वर्तमान में भले ही सुख स्वरूप प्रतीत होते हैं परंतु बुद्धिमान एवं मेरा परम भक्त उन क्षणिक भोगों में नहीं रमता क्योंकि वे परिणाम में भयंकर विष के तुल्य होते हैं। जैसे यदि कोई बालक अग्नि की ओर अपना हाथ बढ़ाता है तो माँ उसका हाथ वहाँ जाने से रोकती है और थोड़ा बड़ा हो तो वह मात्र कहकर बचने का आग्रह करती है परंतु न माने तो कष्ट तो उसे भोगना ही पड़ेगा) भरी पड़ी है तो हमें ये आशा नहीं करनी चाहिए कि हमारा बेटा पर नारी के प्रति या स्त्री शरीर के प्रति शुद्ध भाव रखेगा ही।

भक्त प्रह्लाद ने तो यहाँ तक कहा है कि ईश्वर जिस पर दया करते हैं अथवा जो ईश्वर से अनुग्रह माँगने के लिये प्रार्थना करता है उसी का चित्त धर्म की यथार्थ गहराई में लगता है। अन्य जीव तो मात्र यह सोचते रहते हैं कि यह मैं हूँ और ये दूसरा है। अतः इस दूसरे शरीर के साथ भोग भोगने चाहिए अथवा मैं खुश रहूँ दूसरों से क्या प्रयोजन? इस प्रकार की भेद बुद्धि ईश्वर की माया से मोहित होने के कारण होती है परंतु स्मरण रहे इसमें दोष ईश्वर का नहीं न ही माया का। क्योंकि परमात्मा ने कहा है कि जो मुझ परमात्मा को अपनी आत्मा रूप में जानता है अथवा जानने के लिए मेरी भक्ति अथवा गुरूसेवा एवं सत्संग रूपी परभक्ति में तल्लीन है उसको माया तू नहीं सता सकती। परंतु जो व्यक्ति दिन–रात धन, स्त्री, अथवा पुत्र या लोकेष्णा में ही व्यस्त रहते हैं उनको तो माया नचायेगी ही।

प्रह्लादजी भी सदा अपने साथी बालकों को समझाते थे कि भाइयों (267 भक्त चरिता.) ये जन्म व्यर्थ नष्ट करने योग्य नहीं है। यदि इस जन्म में भगवान को नहीं पाया गया तो बहुत बड़ी हानि हो जायेगी। घर, द्वार, स्त्री, पुत्र, राज्य, आदि तो दुःख ही देने वाले हैं। अधिक धन की आसक्ति भी जीव को भयंकर पीड़ा देती है। इनमें मोह करके तो नरक जाना

पड़ता है। इन्द्रियों के विषयों से हटा लेने में ही सुख और शांति है। भगवान को पाने का साधन सबसे अच्छे रूप में इस कुमारावस्था में ही हो सकता है। इसी अवस्था में प्रभु भजन करने पर शीघ्र ही कल्मषें एवं पाप की परत नष्ट होती है। बड़े होने पर तो स्त्री, पुत्र, एवं इनके भरत पोषण के लिये धन, पदार्थ आदि की चिंता मन को बाँध लेती है और भला वृद्धावस्था में कोई चिंतन, भक्ति कैसे कर सकता है। जिसने आराम से ईश्वर का भजन नहीं किया वह अन्य अवस्थाओं में मात्र औपचारिक भक्ति ही कर सकता है। अतः जिसको वास्तव में कल्याण चाहिये उसे स्त्री शरीर का दास न होकर प्रभु का दास होना चाहिए।

गृहस्थ अथवा किसी भी पुरूष को परस्त्री का सेवन कदापि नहीं करना चाहिये। जो व्यक्ति पराई नारी का उपभोग करता है वह अगले जन्म में स्त्री होकर विधवा ही हो जाता है और उसका इस संसार में सम्मान पूर्वक रहना असंभव है। गृहस्थ को क्रोध नहीं करना चाहिये। सदैव दया और संतोष का सेवन करना चाहिये। पदम् पुराण के सृष्टि खण्ड (53/60) में बताया है कि निष्काम होना ही सर्वव्रत है क्रोध को त्याग देना ही तीर्थों का सेवन है और दया ही जप का महान प्रसाद अर्थात् मंत्र जप के तुल्य है और संतोष ही परम धन है। भोग का आनन्द तो मादक होता है दुर्गुणों को जन्म देता है क्षणिक होता है और उसका अंत कष्ट, रोग, शत्रुता, तथा नरक में होता है किन्तु त्याग का आनन्द तो सच्चा आनन्द है वह हृदय को निर्मल कर देता है। उससे समस्त सद्गुण जाग उठते हैं वह जीव को भगवान के चरणों में ले जाता है। (भक्त चरिता. 460)

गृहस्थ जीवन बिना पतिव्रता स्त्री के गृहस्थ नहीं कहलाता वह तो मात्र दुःखालय के सिवाय कुछ भी नहीं। श्रीमद्देवीभागवत में श्रीहरि ने कहा है कि जिस पुरूष की स्त्री पतिव्रता न हो उस पुरूष को अपने गृह को त्याग कर जंगल में कहीं अधिक सुख प्राप्त होता है तथा शिवपुराण में भी कहा गया है कि जिस गृहस्थी में पतिव्रता स्त्री न हो उस गृहस्थी का पुरूष कभी भी सुखी नहीं रह सकता। ऐसी साधारण स्त्री प्रत्यक्ष राक्षसी एवं जरावस्था की भांति होती है जो उस पुरूष को दिन–रात खाती रहती है अतः इस जीवन को यदि गृहस्थ के माध्यम से पावन बनाना हो तो पहले पुरूष को अपना चित्त निर्मल करना होगा। तदुपरांत योग्य युवती से विवाह कर ऋतुकाल धर्म का पालन करना होगा परंतु इस गृहस्थ में भी जो व्यक्ति अनन्य भक्ति को प्राप्त हो जाये उसके लिये कोई भी नियम या अन्य कर्त्तव्य अकर्त्तव्य अनिवार्य नहीं होते। और जहाँ तक संतान की बात है तो उसके लिए तो तपस्या अनिवार्य है ही। और वह भी एक को नहीं दोनों को ही क्योंकि संतान की उत्पत्ति में मात्र पुरूष ही हेतु नहीं स्त्री भी है।

गृहस्थ को संयम साधना के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिये। जो व्यक्ति सतत् 48 वर्ष अथवा 12 वर्ष गृहस्थ में ब्रह्मचर्य का पालन करता है (बशर्ते स्वयं कामभाव से परे हो स्त्री का चरित्र अथवा संयम ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिये उत्तम है परंतु वह यदि जप, तप, और संयम साधने से इंकार करे तो स्वयं को तो संत तुकाराम की भांति पालन करना चाहिए। मीरा के जीवनकाल में यद्यपि मीरा पूर्णरूपेण जितेन्द्रिय थी परंतु पति की भावना के कारण

उन्होंने स्पष्ट ही बोल दिया कि स्वामी मैं तो गृहस्थ व्यवहार नहीं करूंगी अतः आप दूसरा विवाह कर लीजिए क्योंकि मेरा मन सन्तान, पुत्र सुख अथवा यश, कीर्ति नहीं चाहता। ठाकुर की कृपा से मैं तीन प्रकार ऐषणाओं से रहित हूँ अतः आप दूसरा विवाह कर लीजिए कहने का तात्पर्य है कि जोड़ा अच्छा न हो तो स्वयं को ही अनन्य भक्त हो जाना चाहिए।)

पुरूष यदि सत्संग या स्वाध्याय से अथवा गुरूकृपा से जितेन्द्रिय हो जाये तो उसके लिए शेष दोनों आश्रम (गृहस्थ वा वानप्रस्थ) अनिवार्य नहीं। वह चाहे तो इसी ब्रह्मचर्य आश्रम से सीधे ही संन्यास ले सकता है। उपनिषदों के अनुसार व्यक्ति चाहे व्रती हो, चाहे अव्रती, चाहे अग्निहोत्री हो अथवा नहीं जब भी उसके चित्त में वैराग्य उत्पन्न हो जाए अथवा मुमुक्षा जाग्रत हो जाए या अनन्य भक्ति अथवा ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाए तब शास्त्र तत्क्षण ही अपने उस साधक को समस्त नियमों एवं कर्तव्यों से मुक्त कर देते हैं।

– भक्त चरितांक एवं अक्षय आनन्द सार

श्री पीपल की महान महिमा :

पीपल के दर्शन मात्र से भयंकर पाप भस्म हो जाते है। प्रणाम मात्र करने से 1000 गौ दान का फल एवं सोमवती अमावस्या के स्नान का फल तत्क्षण प्राप्त हो जाता है तथा अश्वत्थ की 7 वार प्रदक्षिणा करने से 10,000 गौ दान का फल और दर्शन मात्र से भयंकर पाप भस्म हो जाते है।

पीपल की जड़ के पास बैठकर तप, जप होम, स्तोत्र या अन्य दान पुण्य किया जाता है तो एक करोड़ गुना फल प्राप्त होता है।शनिवार को की गई पीपल पूजा धनवान बना देती है।

(270) श्रीमद्देवीभागवत की महान महिमा :

जो फल तपस्या, व्रत, तीर्थ, दान, नियम, यज्ञ, हवन आदि करने पर भी दुर्लभ होता है वह मात्र नौ दिन के नवाह् देवीभागवत ज्ञान यज्ञ के श्रवण या स्वाध्याय से प्राप्त हो जाता है। जो पुरूष या स्त्री देवीभागवत के 1 श्लोक या आधा श्लोक या 1 चौथाई का भी भक्ति पूर्वक नित्य पाठ करता है उस पर भी वात्सल्य की मूर्ति जगदम्बा सदा प्रसन्न रहती हैं। पूतना आदि बाल गृह कृत्य एवं भूत प्रेत जनित जो भय है वह भी श्रीमद्देवीभागवत के श्रवण से पास भी नहीं फटक सकते। जो स्त्री बन्ध्या, काकबन्ध्या और मृतवत्सा अर्थात् मरे हुए बच्चों को जन्म देने वाली हो वह भी मात्र नौ दिन की यह पावन कथा से दीर्घजीवी पुत्र की जननी बनकर सौभाग्यशाली हो जाती है। इसके श्रवण से समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। जिसके घर में श्रीमद्देवीभागवत पुस्तक का नित्य गंध, पुष्प, धूप–दीप तथा नैवेद्य से क्रमशः

पूजन होता है वह घर परम तीर्थ बनकर संपूर्ण तीर्थों का फल दाता हो जाता है। जो अष्टमी, नवमी या चतुर्दशी में से एक भी दिन भक्ति के साथ यह कथा सुनता है या पढ़ता है उसे माँ परम सिद्धि एवं वह अद्वैत ज्ञान प्रदान करती हैं जो अत्यधिक दुर्लभ है।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

देवी (पराशक्ति भुवनेश्वरी) को नमस्कार है। महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है। हम लोग नियम पूर्वक भगवती जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

त्रिलोकी में त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महारूद्र) जननी माँ जगदम्बा से बढ़कर परम वात्सल्य एवं परम कृपा हेतु अन्य कोई दूसरा देव नहीं।